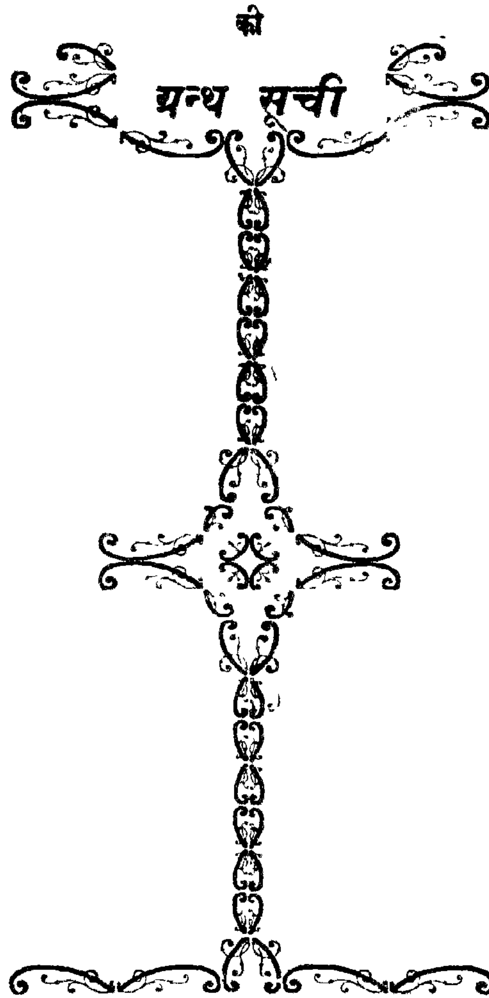
आमेर शास्त्र भण्डार जयपुर

की

ग्रन्थ सूची



श्री दि० जैन महावीर अतिशय क्षेत्र कमेटी

जयपुर

आमेर शास्त्र भण्डार, जयपुर

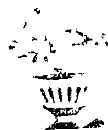
की

ग्रन्थ सूची

सम्पादक:-

कस्तूरचन्द कासलीवाल

एम० ए०, शास्त्री



प्रकाशक:—

रामचन्द्र खिन्दूका

मन्त्री:—श्री दि० जैन महावीर अतिशय क्षेत्र कमेटी

महावीर पार्क रोड, जयपुर।

प्रथम संस्करण | ज्येष्ठ वी० नि० २४७५ | ३०० प्रति

मूल्य ५)

मुद्रक—
पं० भंवरलाल जैन न्यायतीर्थ
श्री वीर प्रेस, जयपुर।

प्राक्कथन

प्राचीन काल मे मन्दिरो मे बड़े बड़े शास्त्र भण्डार हुआ करते थे। इन शास्त्र भण्डारों का प्रबन्ध समाज द्वारा होता था। कुछ ऐसे भी शास्त्र भण्डार थे जिनका प्रबन्ध भट्टारकों के हाथों में था। भट्टारक-संस्था ने प्राचीन काल मे जैन साहित्य की अपूर्व सेवा ही नही की किन्तु उसे नष्ट होने से भी बचाया है। नवीन साहित्य के सर्जन मे तो इस संस्था का महत्त्वपूर्ण हाथ रहा है। लेकिन जब इनका पतन होने लगा तो इनकी असावधानी से सैकडों शास्त्र दीमक के शिकार बन गये. सैकड़ो स्वयमेव गल गये और सैकडों शास्त्रो को विदेशियो के हाथों मे बेच डाला गया। इस तरह जैन साहित्य का अधिकाश भाग सदा के लिये लुप्त हो गया। लेकिन इतना होने पर भी जैन शास्त्र-भण्डारो मे अब भी अमूल्य साहित्य बिखरा पड़ा है और उसको प्रकाश मे लाने का कोई प्रबन्ध नहीं किया जाता। यदि अब भी इस बिखरे हुये साहित्य का ही संकलन किया जावे तो हजारो की संख्या मे अप्रकाशित तथा अज्ञात ग्रन्थ मिल सकते हैं।

आमेर शास्त्र भण्डार, जयपुर जिसका विस्तृत परिचय पाठक गण श्री मन्त्री महोदय के वक्तव्य से जान सकेंगे, राजस्थान मे ही क्या, सम्पूर्ण भारत के जैन शास्त्र भण्डारो मे प्राचीन तथा महत्त्वपूर्ण है। इसमे संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, हिन्दी आदि भाषाओं के १६०० के लगभग हस्तलिखित ग्रन्थों का बहुत ही अच्छा संग्रह है। जिनमें बहुत से ऐसे ग्रन्थ है जो अभी तक न तो कहीं से प्रकाशित ही हुये हैं और न सर्वसाधारण की जानकारी में ही आये हैं। अपभ्रंश साहित्य के लिये तो उक्त भण्डार भारत मे अपनी कोटिका शायद अकेला ही है। इस भाषा के अधिकाश ग्रन्थ अभी तक अप्रकाशित है। हिन्दी साहित्य भी यहा काफी मात्रा मे है। १५ वीं शताब्दी से लेकर १६ वीं शताब्दी का बहुत सा साहित्य यहा मिल सकता है। भट्टारक सकलकीर्त्ति, ब्रह्मजिनदास, भट्टारक ज्ञानभूषण, पं० धर्मदास, ब्रह्म रायमल्ल, पं० रूपचन्द, पं० अखयराज आदि अनेक ज्ञात एवं अज्ञात कवियों और लेखकों के साहित्य का यहा अच्छा संग्रह है।

संस्कृत भाषा का साहित्य भी कम महत्त्वपूर्ण नहीं है। काव्य, न्याय, धर्मशास्त्र, दर्शन, ज्योतिष, आयुर्वेद आदि सभी विषयों के प्राचीन ग्रन्थों की प्रतिया है। कुछ ऐसा साहित्य भी है जो अभी तक प्रकाशित नहीं हुआ हैं।

इस भण्डार मे संस्कृत प्राकृत आदि भाषाओं के लगभग निम्न संख्या वाले ग्रन्थ है —

संस्कृत	५००
हिन्दी	१५०
अपभ्रंश	७०
प्राकृत	४०
टीका ग्रन्थ	०५

इनके अतिरिक्त शेष इन्हीं ग्रन्थो की प्रतिया हैं। शास्त्रों मे साहित्य, दर्शन, धर्मशास्त्र, आयुर्वेद, व्याकरण, स्तोत्र आदि अनेकानेक विषयों का विवेचन किया हुआ मिलता है। ग्रन्थों की प्रतिया प्राचीन है। भण्डार मे सबसे प्राचीन प्रति संवत् १३६१ की महाकवि पुष्पदन्त द्वारा रचित महापुराण की है। इसके अतिरिक्त १४ वीं शताब्दी से लेकर १८ वीं शताब्दी तक की ही अधिक प्रतिया है १६ वी और २० वीं

शताब्दी की तो बहुत ही कम प्रतियां हैं। इससे मालूम होता है कि भण्डार का कार्य १८ वी शताब्दी तक तो सुचारु रूप से चलता रहा किन्तु शेष दो शताब्दियों में नवीन कार्य प्रायः बन्द सा होगया।

शास्त्रों की प्राचीन प्रतियों से विद्वानों को साहित्य और इतिहास के अनुसंधान मे काफी सहायता मिल सकेगी। विवादग्रस्त कवियों के समय आदि को समस्या को सुलझाने मे प्रस्तुत सूची बहुत सहायक होगी ऐसी आशा है।

'श्री महावीर शास्त्र भण्डार' श्री महावीरजी, उतना अधिक पुराना नही है। इस भण्डार मे प्राचीन प्रतिया प्रायः जयपुर, आमेर या अन्य शास्त्र भण्डारो मे गयी हुई मालूम होती है। यहा १६ वी तथा २० वीं शताब्दी की जो प्रतिया हैं वे यहीं पर लिखी हुई है। उक्त भण्डार मे अधिकतर पूजा साहित्य तथा स्तोत्र सग्रह है।

उक्त दोनो भण्डारों मे ही जैनेतर साहित्य भी पर्याप्त रूप मे है। हिन्दी भाषा की अपेक्षा सस्कृत भाषा का अधिक साहित्य है। उपनिषदो से लेकर न्याय, साहित्य, व्याकरण, आयुर्वेद और ज्योतिष साहित्य का भी अच्छा संग्रह है। कितनी ही प्रतिया तो प्राचीन है। इस सग्रह से जैन विद्वानों की उदारता का पता लगाया जा सकता है।

श्री महावीर अतिशय क्षेत्र कमेटी की बहुत से दिनों से अनुसधान विभाग खोलने की इच्छा थी यद्यपि क्षेत्र की ओर से समय २ पर थोडा बहुत ग्रन्थ प्रकाशन का काम होता रहा है लेकिन व्यवस्थित रूप से लगभग २। वर्ष से अनुसंधान का काम चल रहा है। इस अनुसधान के फल स्वरूप आमेर शास्त्र भण्डार जयपुर तथा श्री महावीर शास्त्र भण्डार, महावीरजी का विस्तृत सूचीपत्र पाठकों के सामने है। इस सूचीपत्र के अतिरिक्त 'आमेर भण्डार प्रशस्ति-सग्रह' प्रेस मे दिया जा चुका है जो शीघ्र ही पाठकों के सामने आने वाला है। प्राचीन साहित्य के खोज का कार्य चल रहा है। अज्ञात और महत्त्वपूर्ण रचनाये प्रकाशित होकर समय २ पर समाज के सामने आती रहेगी।

प्राचीन साहित्य की खोज करने का मेरा प्रथम अवसर है, इसलिये बहुत सी त्रुटियों तथा कमियों का रहना संभव है। लेकिन मुझे आशा है कि विद्वान पाठक इनको ओर उदारता पूर्वक ध्यान देकर मुझे सूचित करने की कृपा करेंगे।

श्री महावीर अतिशय क्षेत्र कमेटी तथा विशेषत. श्रीमान माननीय मन्त्री महोदय धन्यवाद के पात्र हैं जिन्होंने इस अनुसधान के कार्य को प्रारम्भ करके अपनी साहित्य-प्रियता का परिचय दिया है तथा अन्य तीर्थ क्षेत्र कमेटियों के सामने साहित्य सेवा का आदर्श उपस्थित किया है। श्रद्धेय गुरुवर्य पडित चैनसुखदासजी न्यायतीर्थ को तो धन्यवाद देना सूर्य को दीपक दिखाना है—जो कुछ मै हूं सब उन्ही की कृपा का फल है।

जयपुर,
दिनाङ्क १५ मई सन् १९४९

कस्तूरचन्द कासलीवाल

प्रकाशकीय वक्तव्य

राजपूताना की रियासतों मे जयपुर एक ऐसी रियासत है जिससे जैनों का सैकड़ों वर्षों से सम्बन्ध चला आ रहा है। आमेर इसी वर्तमान जयपुर राज्य की प्राचीन राजधानी है। आमेर या अम्बर शहर जयपुर से करीब ५ मील उत्तर में पहाड़ियो के बीच मे बसा हुआ है। जिस समय जयपुर नहीं बसा था उस समय आमेर ही प्रमुख शहर गिना जाता था और उनमे जैनों के कई बड़े बड़े शिखरबंद मंदिर थे जिनकी कारीगरी आज भी देखने योग्य है। आमेर के बाद नई राजधानी जयपुर विक्रम संवत् १७८४ में बनी। उस समय महाराजा सवाई जयसिंहजी कछवाहा राज्य करते थे। महाराजा जयसिंहजी के जमाने में राज्य के मुख्य मुख्य काम दि० जैनों के ही हाथ मे थे किन्तु इनके पश्चात इनके द्वितीय पुत्र सवाई माधोसिंहजी जब उदयपुर से आकर अपने बड़े भाई महाराज ईश्वरीसिंहजी की जगह राज्य सिंहासन पर बैठे तो उनके साथ उदयपुर के कुछ शैव राजगुरु जयपुर मे आये और जैनो से द्वेष भाव रख कर उनके कई विशाल मन्दिरों को हथिया लिया। जैन प्रतिमाओं को तोड़ दिया गया और उनकी जगह शिवलिंग स्थापित कर दिये गये। उस जमाने मे जैनों पर अगणित अत्याचार हुए उनका नमूना आज भी जीर्ण शीर्ण आमेर नगरी मे प्रत्यक्ष दृष्टिगोचर हो रहा है। आमेर के जिन जैन मन्दिरों को बरबाद कर दिया गया वे आज भी अपने पुराने वैभव तथा अत्याचारियो के अन्याय को दुनिया के सामने प्रकट कर रहे हैं। उन प्राचीन व विशाल मन्दिरों और मूर्त्तियों के साथ मे हमारा कितना ज्ञान भण्डार आततायियों द्वारा नष्ट हुआ होगा उसका कोई अन्दाजा नहीं लगाया जा सकता। उन प्राचीन जैन मन्दिरो मे से सिर्फ एक श्री नेमिनाथ भगवान का मंदिर जो सांवलाजी के नाम से प्रसिद्ध है किसी प्रकार बच गया था। इस मंदिर मे एक शास्त्र भण्डार भी था जो प्राचीन भट्टारकों ने किसी प्रकार बचा कर रख लिया था।

भट्टारक श्री देवेन्द्रकीर्त्तिजी तक यह भंडार ज्यों का त्यो सुरक्षित रहा; किन्तु इनके बाद करीब ३०—४० वर्ष तक देवेन्द्रकीर्त्ति के उत्तराधिकारी भट्टारक श्री महेन्द्रकीर्त्तिजी तथा अन्य शिष्यों मे मनोमालिन्य रहा और उस जमाने मे नहीं कहा जा सकता कि इस शास्त्र भंडार मे से कितने ग्रन्थ निकल गये और किस किस के हाथ मे जा पड़े तथा कितने ग्रंथ चूहों व दीमको का आहार बन गये। भट्टारक श्री महेन्द्रकीर्त्तिजी के स्वर्गवास के पश्चात् जयपुर पंचायत ने उक्त मंदिर व शास्त्र भंडार को वापिस अपने अधिकार मे लिया और तभी से इसको खोल कर देखने व बचे खुचे ज्ञान भंडार की रक्षा करने का सवाल समाज के सामने आया। उस समय जैन धर्म भूषण ब्रह्मचारी शीतलप्रसादजी ने भी इसके लिये समाज को बहुत प्रेरणा दी। गत कई वर्षों मे मुनि महाराजों के चतुर्मास जयपुर मे हुये और उनके आग्रह से कई बार उक्त भंडार को खोलने का अवसर भी आया। जो भी शास्त्र भंडार को देखने आमेर गये वे वहां एक दो दिन से अधिक नहीं ठहर सके इस लिये ग्रन्थों के वेष्टनों के दर्शन के अतिरिक्त और कोई विशेष लाभ नहीं हो सका।

जब जयपुर दि० जैन पंचायत की तरफ से श्री महावीर क्षेत्र की प्रबन्ध कारिणी समिति बनी तो उसने इस मन्दिर व शास्त्र भंडार को अपने अधिकार में लिया। उसने मंदिर का जीर्णोद्धार कराया और शास्त्र भंडार को भी खुलाकर देखा गया। शास्त्र भंडार में कैसे २ ग्रंथ रत्न हैं इसको देखने के लिये श्रीमान श्रद्धेय प० चैनसुखदासजी न्यायतीर्थ ने बहुत प्रेरणा दी और उनके शिष्यों ने जिनमें पं० श्री प्रकाशजी शास्त्री पं० भवरलालजी न्यायतीर्थ आदि मुख्य हैं, पाच–सात दिन आमेर ठहर कर ग्रन्थों की सूची भी बनाई, किन्तु उससे न तो पंडित चैनसुखदासजी को ही संतोष हुआ और न प्रबन्ध कारिणी समिति को ही। इसके पश्चात कई जैन विद्वानों से आग्रह किया गया कि वे महीने दो महीने आमेर मे रह कर पूरा सूचीपत्र तो बनावें किन्तु किसी ने भी इस पुनीत कार्य को करने की तत्परता नहीं दिखायी। आखिर यही निश्चित हुआ कि जब तक यह भंडार जयपुर न लाया जावे इसकी न तो सूची ही बन सकती है और न कुछ उपयोग ही हो सकता है। फलत: ग्रन्थ भंडार को जयपुर लाया गया और श्रीयुत भाई साहब सेठ बधीचंदजी गंगवाल की हवेली मे ही एक कमरा उनसे मांग कर ग्रन्थो को उनमे रखा गया। उक्त पंडितजी साहब ने स्वर्गीय भाई मानचन्द्रजी आयुर्वेदाचार्य को सूची बनाने के लिये नियत किया और उन्होने स्वयं तथा अपने अन्य साथियों को लेकर एक सूची पत्र बना दिया। इसके पश्चात क्षेत्र की प्रबन्ध कारिणी समिति ने पंडित चैनसुखदासजी न्यायतीर्थ की सम्मति के अनुसार भंडार का बडा सूची पत्र बनाने व प्रशस्ति संग्रह आदि अनुसंधान कार्य के लिये भाई कस्तूरचदजी शास्त्री एम. ए. को नियत किया और उन्होंने नियमित रूप से कार्य करके यह सूची पत्र तैयार किया जो आज आप महानुभावों के समक्ष उपस्थित है।

करीब २ वर्ष से उक्त भण्डार का अनुसंधान कार्य व्यवस्थित रूप से चल रहा है। इस थोड़े से समय मे ही भण्डार का विस्तृत सूचीपत्र और वृहद् प्रशस्ति–संग्रह तैयार हो चुके हैं। सूचीपत्र तो आपके सामने है तथा प्रशस्ति-संग्रह भी प्रेस में दिया जा चुका है। उक्त दोनों पुस्तके साहित्य के अनुसधान कार्य मे काफी महत्त्वपूर्ण तथा उपयोगी साबित होगी ऐसी आशा है।

इसी विभाग की ओर से समय २ पर "वीरवाणी" आदि प्रसिद्ध जैन पत्रों में अनेक खोजपूर्ण लेख प्रकाशित कराये चुके है। अभी तक ब्रह्म रायमल्ल, ब्रह्मजिनदास, भट्टारक ज्ञानभूषण, पं० धर्मदास, पंडित अखयराज, पंडित रूपचद, कविवर त्रिभुवनचन्द्र आदि लेखकों और कवियों के साहित्य पर खोज पूर्ण लेख प्रकाशित हो चुके हैं।

चतुर्दश गुणस्थान चर्चा नामक महत्त्वपूर्ण हिन्दी गद्य के ग्रन्थ का सम्पादन भी प्रारम्भ हो गया है। उक्त ग्रन्थ शीघ्र ही प्रकाशित होकर स्वाध्याय प्रेमियों के सामने आने वाला है।

जयपुर मे जब अखिल भारतीय हिस्टॉरिकल रिकार्डस कमीशन (All India Historical Records Commission) का २४ वा अधिवेशन हुआ था जब उसके तत्त्वावधान में ऐतिहासिक सामग्री की एक प्रदर्शिनी भी हुई थी। प्रदर्शिनी मे उक्त भण्डार के प्राचीन ग्रन्थों को रखा गया था। ग्रन्थों की प्रशस्तियों मे लिखित ऐतिहासिक सामग्री को पढकर बड़े २ विद्वानों ने सराहना की थी।

श्री वीर सेवा मन्दिर सरसावा की तरफ से पं० परमानन्दजी ने भी कई दिन तक जयपुर में ठहर कर इस ग्रंथ भण्डार का निरीक्षण किया है तथा खास खास ग्रंथों की प्रशस्ति आदि भी नोट करले गये हैं। इन ग्रन्थों का ज्यादा से ज्यादा उपयोग हो, इसके लिये बाहर की सुप्रसिद्ध ग्रंथ प्रकाशन संस्थाओं, जैसे शान्ति निकेतन बोलपुर, भारतीय ज्ञानपीठ काशी, वीर सेवा मंदिर सरसावा आदि को समय २ पर प्राचीन प्रतियां भेज कर उनके कार्य में पूर्ण सहयोग दिया जाता है।

प्रबन्ध कारिणी समिति का विचार है कि अब इस भंडार को अधिकाधिक उपयोगी बनाया जाय और जगह जगह से अलभ्य ग्रंथों को लाकर या उनकी प्रतिलिपियां मंगाकर बड़ा ग्रंथालय स्थापित किया जाय ताकि विद्वान लोग इससे लाभ उठा सकें। इस कार्य के लिये जयपुर के नये बनने वाले त्रिपोलिया (चौड़ा रास्ता) सदर बाजार में एक बड़ी बिल्डिंग खरीद भी ली गयी है। उसी बिल्डिंग में एक बड़ा हाल बनवा कर उसमें इस ग्रन्थालय की स्थापना करने का विचार किया गया है।

जैन समाज के विद्वान तथा साहित्यप्रेमियों से हमारी प्रार्थना है कि वे प्राचीन हस्तलिखित ग्रन्थ इस ग्रंथालय को भेंट करें तथा अन्य सभी प्रकार की सहायता द्वारा इसे समृद्ध बनाने में सहयोग दें। वर्तमान काल में जैनधर्म के प्रचार तथा सच्ची प्रभावना का इससे बढ़िया और कोई उपाय नहीं है। जैन समाज को जीवित रहना है तो उसको चाहिये कि सबसे पहले अपने साहित्य की रक्षा तथा प्रचार करने के लिये दृढ़ संकल्प करले और वृहत् राजस्थान की संभावित राजधानी जयपुर नगर में जो कि हमेशा से जैनियों का केन्द्र रहा है, इस ग्रंथालय को उन्नत बना कर जैनधर्म की सच्ची सेवा व प्रभावना में हमारा हाथ बटावें—सबसे हमारी यही प्रार्थना एवं अनुरोध है।

समाज का नम्र-सेवक

रामचन्द्र खिन्दूका

मन्त्री—

प्रबन्ध कारिणी कमेटी

श्री दि० जैन अतिशयक्षेत्र श्री महावीरजी

जयपुर।



शुद्धाशुद्धि पत्र

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध	जोडिये
२	६	अंतरायमला	अंतरायमल	
४	१४			टीकाकार-महेन्द्रसूरि
६	४	माणिक्क	माणिक्कराज	
१४	१८	गौतम स्वामी	पूज्यपाद स्वामी	
१५	१०	प्राकृत	अपभ्रंश	
२५	१२	सिन्दी	हिन्दी	
५३	६	गोबालोत्तर	गोपालोत्तर	
५३	१२	दशन	दर्शन	
७२	११	रचना	लिपि	
७२	११	लिपि	रचना	
७५	१४	गोहीका	गोदीका	
७८	६	नान्दितादिछद	नन्दिछंद	
६६	५			
६७	२	रचयिता	भाषाकार	
११८	२०	ब्रह्मजिनदास	पांडे जिनदास	
१५४	३	गद्य	पद्य	
१५६	२२			रचयिता हरिभद्र सूरि टीकाकार गुणरत्नसूरि
१६१	१६	अहर्लेव	अहर्देव	
१६१	५	दिन्दी	हिन्दी	
१६२	८	नसुनन्दि	वसुनन्दि	
१६७	१६	अन्मित	अन्तिम	

श्री दिगम्बर जैन शास्त्र भण्डार, आमेर

(जयपुर)

ग्रन्थ--सूची

अ

१ अंकुरारोपण विधान

रचयिता पं० आशाधर। भाषा-संस्कृत। पत्र संख्या ६. साइज १०॥x४॥" इञ्च। विषय-धार्मिक। पं० आशाधर के प्रतिष्ठापाठ मे से उक्त प्रकरण लिया गया है।

२ अजित शांति स्तोत्र

रचयिता-अज्ञात। भाषा प्राकृत। पृष्ठ संख्या ३. गाथा संख्या ४०

प्रति नं० २. पत्र संख्या २ साइज १०॥x४ इञ्च। लिपि संवत् १६२६ लिपिकर्त्ता ने बादशाह अकबर के शासन काल का उल्लेख किया है।

३ अजीर्ण मंजरी

रचयिता-अज्ञात। पृष्ठ संख्या ३ साइज १३x५॥ इञ्च। विषय आयुर्वेद।

प्रति नं० २ पत्र संख्या ३ साइज ११x४॥ इञ्च। लिपिकर्त्ता पं० तेजपाल।

४ अर्जुन गीता

रचयिता-अज्ञात। भाषा-संस्कृत। पत्र संख्या ७. साइज १०x४॥ इञ्च। श्री कृष्ण ने अर्जुन को महाभारत युद्ध के समय जो कर्मयोग का पाठ पढाया था उसी विषय का इसमे वर्णन किया गया है।

५ अठारह नाता

रचयिता-अज्ञात। भाषा-हिन्दी। पत्र संख्या ४. साइज १०x४. मनुष्य के भव परिवर्तन मे उसके सम्बन्धों का भी किस प्रकार परिवर्तन हो जाता है, आदि वर्णन बड़े सुन्दर ढग से इसमे किया गया है।

अढाई द्वीपविधान

रचयिता—श्री मुनि शिवदत्त। भाषा—संस्कृत। पत्र संख्या ७६. साइज १२॥×६ इञ्च। दीमक लग जाने से आरम्भ के १० पृष्ठ फट गये हैं। मंगलाचरण इस प्रकार है—

ऋषभादिवर्द्धमानांतान जिनान नत्वा स्वभक्तित.।
सार्द्ध द्वयद्वीपजिन पूजा विरचयाम्यह ॥ १ ॥

अंतरायमला

रचयिता—अज्ञात। भाषा—हिन्दी। पत्र संख्या २ साइज १०॥×४॥ इञ्च। प्रतिलिपि संवत १७२७ मंगलाचरण इस प्रकार है—

इदं सयंचियचलणेति दुणवरनाणद सण पईवो।
वंद अरुह वोत्थं समासउ अतरायमल ॥ १ ॥

अनगारधर्मामृत

रचयिता—महा प० आशाधर। भाषा-संस्कृत। पत्र संख्या ६० साइज १२×५. इञ्च। विषय—साधुओं के आचार धर्म का वर्णन। लिपि संवत १८२७. सिरोंज नगर निवासी श्री धरमचन्द ने उक्त ग्रन्थ की प्रतिलिपि करवाई।

प्रति न० २ पत्र संख्या ४५ साइज १२॥×५ इञ्च। ग्रन्थ अपूर्ण। ४५ से आगे के पृष्ठ नहीं है।

प्रति न० ३ पत्र संख्या ३४५. साइज ११॥×४॥ इञ्च। लिपि संवत १५४६ प्रति सटीक है। टीका का नाम भव्यकुमुद चन्द्रिका है।

अनर्घराघव

रचयिता—श्री मुरारी। भाषा—संस्कृत। पत्र संख्या ६४ साइज ११॥×४॥ इञ्च। लिपि संवत १८३६. विषय श्री रामचन्द्र का जीवन चरित्र का वर्णन।

प्रति न० २ पत्र संख्या ३० साइज ११॥×४॥ प्रति अपूर्ण है।

अनंतजिन पूजा

रचयिता—अज्ञात। भाषा—हिन्दी। पत्र संख्या ५. साइज ११×५॥ इञ्च। प्रति अपूर्ण है। अन्तिम पृष्ठ नहीं है। विषय—श्री अनन्तनाथ की पूजा।

प्रति नं० २ पत्र संख्या ८ साइज १०x४॥ इञ्च लिपि संवत १५६०

११
अनत व्रत कथा

रचयिता–श्री जीवणराम गोधा। हिन्दी पत्र संख्या ३ साइज ११x५. इञ्च। रचना संवत् १८७१. रचना करने का स्थान रणी (जयपुर)

१२
अनत व्रत कथा

रचयिता–ब्रह्म श्री श्रुतसागर। भाषा–संस्कृत। पत्र संख्या ३ साइज १२x५॥ इञ्च। लिपि संवत १८६५ लिपिकर्त्ता विजयराम।

प्रति नं० २ पत्र संख्या ३ साइज १२x५॥ इञ्च।

१३
अनंतत[illegible] कथा

रचयिता–अज्ञात। पत्र संख्या १. भाषा–हिन्दी (पद्य) साइज ११॥x५ इञ्च। पद्य संख्या २४.

१४
अन्नपान विधि

रचयिता–अज्ञात। भाषा–संस्कृत। पत्र संख्या ४८ साइज १०x५॥। इञ्च। ग्रन्थ अपूर्ण है। विषय खाने पीने के विधान का वर्णन।

प्रति नं० २ पत्र संख्या-४६ साइज १०x६ इञ्च। प्रति अपूर्ण है।

१५
अनिट् कारिकावृत्ति

रचयिता–अज्ञात। भाषा–संस्कृत। पत्र संख्या ३. साइज १०॥x४॥ इञ्च। विषय व्याकरण।

प्रति नं० २. पत्र संख्या ६ साइज १०॥x४॥

१६
१ अनुप्रेक्षा प्रकाश

रचयिता–आचार्य कुन्दकुन्द। भाषा–प्राकृत। पत्र संख्या ६ गाथा संख्या ८५. साइज ६॥x४ विषय-बारह अनुप्रेक्षाओं का वर्णन।

२ अनुप्रेक्षा

रचयिता–श्री जोगेन्द्रदेव लक्ष्मीचन्द्रदेव। भाषा–प्राकृत। पत्र संख्या ३ साइज ६×४. इञ्च

अनेकार्थध्वनि मंजरी

रचयिता–श्री नन्ददास। भाषा–हिन्दी। पत्र संख्या ६ साइज १२×४ इञ्च। सम्पूर्ण पद्य संख्या १५६ रचना संवत् १८२४ मंगसिर कृष्णा दशमी। विषय–शब्दकोष। मंगलाचरण यह है–

यो प्रभु ज्योतिमय जगतमय कारन करत अभेव।
विघन हरन सब शुभ करन नमो नमो भा देव ॥

अन्तिम पाठ—

मार्गशीर्ष दशमी रवौ असित पक्ष शुभ जानि।
अब्द अठारह सैं वरपि ऊपर चौविस मान ॥ १ ॥
पठन काज लिखि प्रेम कर नंदकिसोर द्विवेद।
ज्ञानी लेहु सुधारि कवि अक्षर ही को भेद ॥ २ ॥

अनेकार्थ नाम माला वृत्ति

रचयिता–आचार्य हेमचन्द्र। भाषा–संस्कृत। पत्र संख्या २५६ साइज १०॥×४॥ इञ्च। ग्रन्थ श्लोक संख्या १२६१०.

इत्याचार्य श्री हेमचन्द्र विरचितायामनेकार्थकैरवाकर कौमुदीत्यभिधानायां स्वोपज्ञानेकार्थ संग्रहटीकायामानेकार्थी शेषाव्ययः काडः समाप्तः।

श्री हेमसूरिशिष्येण श्रीमन्महेन्द्रसूरिणा।
भक्तिनिष्टेन टीकाया तन्नाम्नैव प्रतिष्ठिता ॥ १ ॥
सम्यक् ज्ञानानधेर्गुणो रनघाघः श्रीहेमचन्द्रप्रभोः।
ग्रथव्याकृतिकौशलं व्यसति क्वास्मादृशा तादृश ॥
व्याख्याम स्म तथापि तं पुनरिदं नाश्चर्यमतर्मन–
स्तस्या स्रजमपि स्थितस्य हिमवयं व्याख्याम तु ब्रूमहे ॥ २ ॥
यल्लक्ष्यं स्मृतिगोचरसमभवत दृष्टं च शास्त्रांतर।
तत सर्वं समदर्शि किंतु कतिचित् नादृष्ट लक्ष्याः क्वचित ॥
असूत्र्यं स्वयमेव तेषु सुमुखि. शाकेषु लक्ष्यं बुधे.।

यस्मात् सप्रति तुच्छकश्मलधियां ज्ञानं कुतः सर्वेत. ॥ ३ ॥

(इति श्री अनेकार्थनाममालावृत्ति सपूर्णा ।)

२४
अनेकार्थ मञ्जरी ।

रचयिता अज्ञात । भाषा हिन्दी (पद्य) पत्र संख्या २०. साइज ८॥×४॥ इञ्च । सम्पूर्ण पद्य संख्या १००

२०
अनेकार्थ संग्रह ।

रचयिता आचार्य हेमचन्द्र । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ३३ साइज १०×४॥ इञ्च । लिपि संवत १५५६ विषय–शब्दकोष ।

२१
अमरकोश ।

रचयिता श्री अमरसिंह । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ५३ साइज १०॥×५॥ इञ्च । लिपि सवत् १८०२.

प्रति नं० २ पत्र संख्या ३१ साइज ११×५ इञ्च । प्रति सटीक है; टीकाकार का कहीं पर भी नाम नही लिखा हुआ है । कोश अपूर्ण है । ३१ से आगे के पृष्ठ नहीं है ।

प्रति नं० ३. पत्र संख्या ४६ साइज १२॥×६ इञ्च । कोष अपूर्ण है । केवल २ ही अध्याय हैं ।

प्रति नं० ४. पत्र संख्या १२८ साइज ११×५ इञ्च । लिपि सवत १८८०. लिपि स्थान तक्षकपुर । लिपिकार श्री गुमानीराम ।

प्रति नं० ५ पत्र संख्या १४६ साइज १०॥×४॥ इञ्च । लिपि सवत १६२० लिपिस्थान वासक । लिपिकार श्री उदयराज ।

प्रति नं० ६ पत्र संख्या ३०८ साइज १०॥×५॥ इञ्च । टीकाकार प० क्षीर स्वामी । लिपि संवत १७४६

प्रति नं० ७, पत्र संख्या ४१. साइज १०×४॥ इञ्च ।

प्रति नं० ८ पत्र संख्या १०८. साइज १०×४॥ इञ्च । ४० से पहिले के तथा १०८ से आगेके पत्र नहीं हैं ।

प्रति नं० ६ भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ६६. साइज १०×४॥ इञ्च। लिपि संवत १७७२. लिपिस्थान पाटली पुत्र।

अमर सेन चरित्र।

रचयिता श्रीमाणिक्य। भाषा अपभ्रंश। पत्र संख्या ६६ साइज १०॥×४॥ इञ्च। लिपि संवत १५७७. प्रति अपूर्ण तथा जीर्ण शीर्ण हो चुकी है। ५७ पृष्ठ पर एक मोहर है जिसमे अरबी भाषा में शब्द लिखे हुये हैं।

अलंकार शेखर।

रचयिता न्यायाचार्य श्री केशवमिश्र। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ३२ साइज १०×५॥ इञ्च। विषय—अलंकार शास्त्र। लिपि संवत १७७८.

अव्ययार्थ।

रचयिता अज्ञात। भाषा—संस्कृत। पत्र संख्या ३ साइज १०॥×५॥ इञ्च। विषय—व्याकरण

अस्तिनास्तिविवेकनिगमनिर्णय।

रचयिता अज्ञात। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या २००. साइज १२×६ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर ६ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति मे २८। ३२ अक्षर। ग्रन्थ न्याय शास्त्र का है। २२ अध्याय है।

अश्व चिकित्सा।

रचयिता श्री नकुल। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या २० साइज १०×६ इञ्च। प्रति अपूर्ण है।

अष्ट कर्म प्रकृति वर्णन।

रचयिता श्री दलराम। भाषा हिन्दी (पद्य) पत्र संख्या १६. साइज १२॥×५॥ इञ्च। सम्पूर्ण पद्य संख्या २०५ प्रारम्भ के तीन पृष्ठ नहीं हैं। प्रति सुन्दर तथा स्पष्ट है।

अन्तिम भाग—

करमकांड आगम अगम बरनै कुं कवि एव।
कै जाने जिन केवली कै जाने गनदेव ॥ १॥

स्यादवाद जिनवर बचन सत्य करि गहै सयान।
सो भवि कर्म निवारिकै लहे मुक्ति पुरथान॥ २॥

टीका सूत्र सिद्धान सौं कर्मकांड गुन गाय।
जथा सकति कछु वरनयौ बाल बोध हित लाय॥ २॥

× × × ×

यह करम की परकति वखानत एकसो अठताल।
तम माहि बंध अबंध वरनन करत कर्म जंजाल॥
दलराम केवल वचन सरदहि सत्य करि परमान।
सो भेद कर्म विनासि भवि जन लहत शिवपुर थान॥ १॥

२८ अष्टम चक्रवर्ति कथा

भाषा संस्कृत। पत्र संख्या २. साइज १०×४॥ इञ्च। पद्य संख्या १६ उक्त कथा, 'कथा-कोश' मे से ली गयी है।

२९ अष्ट सहस्री।

रचयिता श्री विद्यानन्दि। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या २०६. साइज ११×५ इञ्च। लिपि संवत् १६११ लिपि स्थान गिरिसोपा-दुर्ग (कर्णाटक प्रान्त) विषय-जैन न्याय।

३० अष्टाध्यायी सूत्र।

रचयिता आचार्य श्री पाणिनी। लिपी कर्त्ता श्री सूरि जगन्नाथ। पत्र संख्या ४६ साइज ११।×५ इञ्च। लिपि संवत १७०० विषय-व्याकरण।

प्रति नं०२ पत्र संख्या ३६ साइज ११×५॥ इञ्च।

३१ अष्टावक्र।

रचयिता अज्ञात। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ६. साइज ११×५॥ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर १४ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति मे ३८/४४ अक्षर। विषय-साहित्य।

३२ अष्टाह्निका कथा।

रचयिता भट्टारक श्री सुरेन्द्र कीर्ति। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ५. साइज ११।×५ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर १३ पंक्तिया तथा प्रति पंक्ति पर ४०,५२ अक्षर। कथा के अन्त मे कवि ने अपना परिचय दिया है।

अष्टाह्निका कथा ।

रचयिता पं० खुशालचन्द । भाषा हिन्दी । पत्र संख्या ४. साइज १२×५ इञ्च । रचना संवत् १७७४ सम्पूर्ण पद्य संख्या ११७. प्रति सुन्दर है ।

अष्टाह्निका कथा ।

रचयिता आचार्य शुभचन्द्र । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ७ साइज १०॥×५. इञ्च । लिपि संवत १८४६. लिपिस्थान जयपुर ।

प्रति नं० २ पत्र संख्या ६ साइज ११॥×६ इञ्च लिपि संवत १८६१ ।

प्रति नं० ३. पत्र संख्या ४ साइज १२×६ इञ्च ।

अष्टाह्निका कथा ।

रचयिता अज्ञात । भाषा हिन्दी । साइज १०॥×४॥ इञ्च रचना संवत १८७१. "रेणी नगर के निवासी श्री जीवणराम के लिये ग्रन्थ की रचना की गयी" उक्त शब्द प्रशस्ति मे लिखे हुये है ।

अष्टाह्निका व्रतोद्यापन पूजा ।

रचयिता अज्ञात । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ६ साइज १२×५॥ इञ्च । लिपि संवत १८३६ लिपिस्थान सवाई माधोपुर (जयपुर) लिपिकार भट्टारक श्री सुरेन्द्रकीर्ति ।

अज्ञान बोधिनी ।

रचयिता श्री शंकराचार्य । भाषा संस्कृत । पृष्ठ संख्या १३ साइज १०×५॥ इञ्च । विषय न्याय ।

अक्षयनिधि पूजा ।

रचयिता अज्ञात । पत्र संख्या ५ भाषा संस्कृत । साइज ११×४॥ इञ्च लिपि संवत १७६८ लिपिकार पं० दोदराज ।

प्रति नं० २ पृष्ठ संख्या २१ साइज ११॥×४॥ इञ्च । पुस्तक मे अन्य पूजाएँ भी हैं ।

आ

आकाश पंचमीव्रत कथा ।

रचयिता अज्ञात । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ५. साइज ११×४॥ इञ्च । लिपि संवत १६७७ प्रति अपूर्ण है ।

४०
आचारांग सटीक ।

टीकाकार आचार्य श्री शीलाङ्का । भाषा प्राकृत संस्कृत । पृष्ठ संख्या १४३ साइज १२×४। इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर २२ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ६४-७० अक्षर । विषय-धार्मिक । लिपि संवत् १६०४ श्री कुंभमेरुमहा दुर्ग में श्री गुण लाभ गणि ने ग्रंथ की प्रतिलिपि बनायी ।

४१
आचारांग सूत्र ।

लिपि कर्त्ता-अज्ञात । भाषा प्राकृत । पत्र संख्या ३१ साइज ११×४ इञ्च । प्रति अपूर्ण है । प्रथम तथा अन्तिम पत्र नहीं है ।

४२
आचारसार ।

रचयिता सिद्धान्तचक्रवर्ति श्री वीरनन्दि । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ८३ साइज १०×४॥ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर ८ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में २६-३२ अक्षर । लिपि संवत् १८०४० लिपि स्थान जयपुर ।

प्रति नम्बर २ पत्र संख्या ६१ साइज १०॥×४॥ इञ्च । प्रति अपूर्ण है दीमक लगी हुई है ।

४३
आत्म संबोधन काव्य ।

रचयिता अज्ञात । भाषा प्राकृत । पत्र संख्या ४०. साइज १०×४॥ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर १० पंक्तियां और प्रति पंक्ति में २२-२६ अक्षर । प्रति लिपि संवत् १६०७ ।

प्रारम्भ—

> जयमंगलगारउ वीसमभंडारउ भुवणसरणकेवलनयणु ।
> लोगोत्तमु गोत्तमु संजयशोत्तमु आगहमितहो जिणवयणु ॥

प्रति नं० २. पत्र संख्या २६ साइज ८×४ इञ्च । लिपि संवत् १४४८. लिपिकर्त्ता श्री लक्ष्मण । प्रथम दो पत्र नहीं है

प्रति नं० ३ पत्र संख्या २७. साइज १०॥×४॥ इञ्च २२ से २६ तक के पृष्ठ नहीं हैं ।

प्रति नं० ४. पत्र संख्या ३२. साइज १०×४ इञ्च । प्रत्येक पत्र पर ६ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३०×३४ अक्षर ।लिपि संवत् १४३४ ।

आत्म सबोधन पचासिका टीका ।

टीकाकार अज्ञात । भाषा प्राकृत-संस्कृत । पत्र संख्या १८. साइज ६॥×३॥ इञ्च । प्रति अपूर्ण है । प्रारम्भ के तथा अन्तिम पृष्ठ नही है ।

आत्मानुशासन ।

मूलकर्त्ता आचार्य श्री गुणभद्र । भाषाकार- पं० दौलतरामजी । भाषा-संस्कृत-हिन्दी । पत्र संख्या १५८. ।साइज १०॥×६ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति मे ३०-३६ अक्षर । लिपि संवत १६०५ भाषा सुन्दर और सरल है ।

आत्मावलोकन ।

रचयिता श्री दीपचन्द कासली वाल । पत्र संख्या ६३ भाषा-हिन्दी गद्य साइज ८॥×५ इञ्च । प्रारम्भ मे प्राकृत भाषा की ११ गाथाओं का १७ पृष्ठ तक हिन्दी गद्य मे अर्थ लिखा गया है किन्तु आगे ग्रन्थ समाप्ति तक लेखक स्वयं बिना गाथाओ के ही विषय को पूर्ण करता है। भाषा बड़ी अच्छी है। उक्त रचना १८ वीं शताब्दि की है। गाथाए किस महा ग्रन्थ म से ली गयी है यह भी अभी मालूम नहीं हो सका है ।

प्रति नं०२ पत्र संख्या ६८ साइज ११×५ इञ्च । लिपि संवत १८८३ लिपिकार प० दयाराम ।

आतुर प्रत्याख्यान प्रकीर्ण ।

रचयिता श्री भुवन तुंग सूरि । भाषा संस्कृत । पृष्ठ संख्या ५ साइज ११॥×५॥ इञ्च । लिपि संवत १६०० प्रति अपूर्ण पहिला, तीसरा और आठवा पृष्ठ नही है ।

आदित्यवार कथा ।

रचयिता अज्ञात । भाषा हिन्दी । पृष्ठ संख्या १० साइज १०॥×४॥ इञ्च । पद्य संख्या १५२.

आदिपुराण ।

ग्रन्थकर्त्ता महाकवि पुष्पदन्त । पत्र संख्या २४७ साइज ८॥×४ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर १२ पंक्तियां और प्रति पंक्ति मे ४५-५५ अक्षर । कागज मोटा है । सीम लगने से बहुत से पत्रों के अक्षर साफ पढने मे

नहीं आते हैं। पृष्ठ १४ पर आधे कागज में सोलह स्वप्न और मरुदेवी का चित्र है। चित्र अभी तक स्पष्ट है। पृष्ठ १० और १३ में दूसरे के हाथ की लिखावट है। प्रतिलिपि संवत १४६१ भादवा बुदि ६ बुधवार। ३७ परिच्छेद। ग्रन्थ के अन्त में लिखाने वाले ने अपना वंश परिचय दिया है लेकिन वह अपूर्ण है।

प्रति नं० २. पत्र संख्या ३०७. साइज ११॥x४॥ इञ्च। लिपि संवत १६६३. आमेर नगर में श्री महाराजा मानसिंह के राज्य में ग्रन्थ की प्रतिलिपि हुई थी।

प्रति नं० ३ पत्र संख्या २८८। साइज १२x४॥ इञ्च। लिपि संवत १६६३। लिपिस्थान वोमदुर्ग।

प्रति नं० ४ पत्र संख्या २०४। साइज १२x६॥ इञ्च। प्रति अपूर्ण है। गाथाओं के ऊपर संस्कृत में भी शब्दार्थ दे रखा है।

प्रति नं० ५ पत्र संख्या २१८। साइज १०॥x४॥ इञ्च।

प्रति नं० ६ पत्र संख्या १४४। साइज १०॥x४ इञ्च। प्रति अपूर्ण है।

प्रति नं० ७. पत्र संख्या ६१। साइज १३॥x६ इञ्च। प्रति अपूर्ण है।

५०
आदिपुराण।

रचयिता—श्री **जिनसेनाचार्य** भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ६७०। साइज ११॥x४॥ इञ्च। लिपि संवत १६८१ लिपिस्थान मोजमाबाद (जयपुर) लिपिकर्ता श्री जोशी रार्घो।

प्रति नं० २ पत्र संख्या ३६६। साइज १२x४॥ इञ्च। लिपि संवत १८०३। लिपिकर्त्ता श्री हरिकृष्ण

प्रति नं० ३. पत्र संख्या ४०४। साइज ११॥x५॥ इञ्च। लिपि संवत १८०६। लिपि स्थान जयपुर। लिपिकर्त्ता छाजूरामजी। लिपिकर्त्ता ने जयपुर के महाराजा श्री माधवसिंह जी के शासन काल उल्लेख किया है। प्रति सुन्दर, स्पष्ट और नवीन है।

प्रति नं० ४. पत्र संख्या ३७१। साइज ११॥x४॥ इञ्च। लिपि बहुत प्राचीन मालूम पड़ती है। अन्तिम पत्र कुछ फटा हुआ है।

प्रति नं० ५ पत्र संख्या ६७२। साइज ११x५ इञ्च। लिपि संवत् १७४६। पंडित शिवजीराम के पुत्र श्री नेमीचन्द्र के पढ़ने के लिये ग्रन्थ को भेंट किया गया।

५१ **आदिपुराण।**

रचयिता भट्टारक श्री सकलकीर्ति। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या १८२। साइज ११॥x५॥ इञ्च।

प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति मे ३४–४० अक्षर । लिपि संवत् १६६८ । लिपिकार ने संग्रामपुर के महाराजा मानसिंह के नाम का तथा जयपुर के दीवान बालचन्दजी का उल्लेख किया है।

प्रति नं० २. पत्र संख्या १६६ । साइज १३×५ इञ्च ।

प्रति नं० ३ । पत्र संख्या १८२ । साइज ११×५॥ इञ्च । लिपि संवत् १६६८ । लिपि स्थान संग्रामपुर । लिपिकर्त्ता ने महाराजा मानसिंह के नाम का उल्लेख किया है ।

प्रति नं० ४ पत्र संख्या १६६ । साइज १३×५ इञ्च । लिपि संवत् १८३३ ।

प्रति नं० ५ पत्र संख्या १८८ । साइज ११×५ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पंक्तिया तथा प्रति पंक्ति मे ३६-४२ अक्षर । प्रति प्राचीन है ।

आदिनाथपुराण ।

रचयिता ब्रह्म श्री जिनदास । भाषा हिन्दी पद्य । पत्र संख्या २१५ साइज १०॥×६ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर १३ पंक्तिया और प्रति पंक्ति मे ३०-३५ अक्षर । लिपि संवत् १८७६ लिपिकर्त्ता ब्रह्मचारी प्रेमचन्द ।

मंगलाचरण—

> आदि जिनेश्वर आदि जिनेश्वर आरणसंसु सरस्वती स्वामीने बलस्तवु,
> बुधि सार हू मागउ निरमल, श्री सकलकीर्ति पाय मणमीने ।
> मुनि भुवनकीर्ति गुरुवाहु सौहजला, रासकरी सीहुरुवडो,
> तमपरसादिसार, श्री आदि जिणंद गुण वर्णवु चारित्र जोहू भवतार ॥१॥

प्रति नं० २ । पत्र संख्या १६। साइज ११×६ इञ्च । प्रति अपूर्ण है ।

आदीश्वर फाग ।

रचयिता भट्टारक श्री ज्ञान भूषण । भाषा संस्कृत हिन्दी । पत्र संख्या ३१ । प्रत्येक पृष्ठ पर ६-११ पंक्तिया और प्रति पंक्ति मे ३०-३८ अक्षर । साइज १०॥×५ इञ्च । श्लोक संख्या ५६१ । लिपि संवत् १६३५ । लिपि स्थान मालपुरा । ग्रन्थ मे भगवान आदिनाथ के निर्वाण कल्याण का वर्णन किया गया है ।

प्रारम्भ—

> यो वृंदारकवृंद वंदितपदो जातो युगादौ जया,
> हत्वा दुर्जयमोहनीयमखिलं शेषं च घातित्रयं ।

कृत्वा केवलबोधन जगदिदं संबोध्य मुक्ति गत-
स्तत्कल्याणिकपंचक सुकृतं व्याचरोयामि स्फुट ॥१॥
अहे प्रणमीय भगवति सरसति जगति विबोधनमाय।
गाइस्यू आदि जिणंद सुरदवि वंदित पाय॥ १ ॥

५४
आनंदस्तोत्र ।

रचयिता श्री महानन्द । भाषा अपभ्रंश । पत्र संख्या ४. गाथा संख्या ४३ । साइज १०×४। इञ्च। विषय—चरणानुयोग ।

५५ आलाप पद्धति ।

रचयिता श्री पं० देवसेन । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ११ । साइज ११×५ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर ६ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति मे ३४—४० अक्षर । लिपि संवत् १७६४ । लिपि स्थान-चमवा (जयपुर) विषय तत्व विवेचन ।

प्रति नं० २. पृष्ठ संख्या ७. साइज ११॥×४।

प्रति नं० ३ पृष्ठ संख्या २० १०॥×६ इञ्च। लिपि संवत १७७४ फागुण सुदी ११ ।

प्रति नं० ४ पृष्ठ संख्या १८. साइज १०॥×४॥ इञ्च ।

प्रति नं० ५ पृष्ठ संख्या १३ साइज १०॥×४ इञ्च। प्रति अपूर्ण है ।

प्रति नं० ६ पृष्ठ संख्या १३ साइज १०॥×४ इञ्च ।

प्रति नं० ७ पृष्ठ संख्या ६. साइज १२×५ इञ्च ।

प्रति नं० ८. पत्र संख्या ८ साइज ६×५॥ इञ्च । प्रति अपूर्ण है ।

प्रति नं० ६. पत्र संख्या १४. साइज १०॥×४॥ इञ्च। लिपि संवत १७६३। लिपिकार—लूणकरण ।

प्रति नं० १० पृष्ठ संख्या १०. साइज १०॥×४॥ इञ्च। अन्त मे नयसंकेतदीपिका भी इसका नाम दे रखा है ।

प्रति नं० ११. पत्र संख्या ८ । साइज १०×४ इञ्च । लिपि संवत १७७० लिपिस्थान पाटलिपुत्र ।

आरम्भसिद्धि वार्त्तिक।

रचयिता श्री उदयप्रभ। टीकाकार श्री वाचनाचार्य हेमहंस गणि। भाषा संस्कृत। पृष्ठ संख्या १२८ साइज १०॥×४॥ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर १५ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ४४-५० अक्षर। रचना संवत १५१४ विषय—ज्योतिष। ग्रंथ के अन्त में प्रशस्ति दी हुई है।

आराधनासार।

रचयिता पं० देवसेन। भाषा प्राकृत। पत्र संख्या ४१। साइज १०॥×४॥ इञ्च। गाथा संख्या ११५। संस्कृत में भी कहीं २ अर्थ दे रखा है। विषय—आध्यात्मिक।

प्रति नं० २ पृष्ठ संख्या ६ साइज १०॥×४॥ इञ्च। प्रति अपूर्ण है।

प्रति नं० ३ पत्र संख्या ११ साइज ६॥×६ इञ्च।

प्रति नं० ४ पृष्ठ संख्या १२ साइज १०×४ इञ्च। प्रति अपूर्ण है। १२ पृष्ठ से आगे के पृष्ठ नहीं हैं।

अराधनासार वृत्ति।

रचयिता श्री पं० आशाधर। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ७ साइज ११॥×४॥ इञ्च। लिपि संवत १५८१ विषय—धार्मिक।

आत्रेय संहिता।

रचयिता श्री आत्रि ऋषि। भाषा संस्कृत। पृष्ठ संख्या १३७ साइज १२×५ इञ्च। लिपि संवत १८४० विषय—आयुर्वेदिक।

इ

इष्टोपदेश।

रचयिता गौतमस्वामी। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ६ साइज १०॥×४॥ इञ्च। पद्य संख्या ५२ विषय आध्यात्मिक।

इष्टोपदेश।

रचयिता अज्ञात। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या १६ साइज ६×५ इञ्च।

उ

६२
उड्डीस महसतन्त्र।

रचयिता अज्ञात। पत्र सख्या ३३ साइज ८×४॥ इञ्च। भाषा संस्कृत। लिपि संवत् १८८२.

६३
उणादि सूत्रवृत्ति।

टीकाकार श्री उज्वलदत्त। भाषा संस्कृत। पत्र सख्या ८५. साइज ८॥×४॥ इञ्च। लिपि संवत् १८३०.

मंगलाचरण—

हेरम्बमीश्वरं वाचं नमस्कृत्य परं गुरुं।
श्रीमदुज्वलदत्तेन क्रियते वृत्तिरुत्तमा॥१॥

६४
उत्तरपुराण।

रचयिता महाकवि पुष्पदन्त। भाषा प्राकृत। पत्र संख्या ४७३ साइज १०॥×५॥ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर १० पंक्तियां और प्रति पंक्ति में ३८-४४ अक्षर। ग्रन्थ अपूर्ण। ४७३. से आगे पृष्ठ नहीं है।

६५
उत्तरपुराण (सटीक)।

टीकाकार प्रभाचन्द्राचार्य। भाषा अपभ्रंश-संस्कृत। पत्र संख्या ५७. साइज १०॥×५॥ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पंक्तियां और प्रति पंक्ति में ३७-४३ अक्षर। टीकाकाल १०८० लिपि संवत १५७७। लिपिस्थान नागपुर।

६६
उत्तरपुराण।

रचयिता गुणभद्राचार्य। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ३७३ साइज १०॥×६ इञ्च। प्रति नवीन तथा स्पष्ट है।

प्रति नं० २ पत्र संख्या २७६. साइज ११॥×५॥ इञ्च। लिपिसंवत १८०४ ज्येष्ठ सुदि ५ बृहस्पतीवार। लिपि स्थान जयपुर लिपि कर्त्ता यति श्री चिमनसागर। श्री घणराजजी जीवणरामजी ने लिपि करवायी। प्रति के दोनो तरफ कठिन शब्दों का सरल अर्थ दे रखा है। प्राचीन शोधित प्रति है।

उत्तरपुराण।

रचयिता भट्टारक सकलकीर्ति। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या २१६. साइज १०॥×५ इञ्च। लिपि संवत् १६०५. प्रति नवीन है।

उदय प्रभारचना।

रचयिता श्री उदयप्रभाचार्य। भाषा संस्कृत। पृष्ठ संख्या ४४ साइज ११॥×५॥ प्रत्येक पृष्ठ पर १४ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३५–४० अक्षर। विषय-जैन दर्शन। ग्रन्थ कार ने आचार्य हेमचन्द्र श्री सिद्धसेन दिवाकर महाराज कुमार पाल आदि का भी उल्लेख किया है। श्री सिद्धसेन दिवाकर विरचित द्वात्रिंशद्वात्रिंशका के अनुसार इस ग्रन्थ की रचना की गयी है। ग्रन्थ सटीक है। कारिकाओं की टीका है जो स्पष्ट और सरल है। ग्रन्थ अपूर्ण है ४४ से आगे के पृष्ठ नहीं है।

मंगलाचरण—

यस्य ज्ञानमनंतवस्तुविषयं पूज्यते दैवतैः।
नित्यं यस्य वचो न दुर्नयकृतैः कोलाहलैर्लुप्यते॥
रागद्वेषमुखाद्विषा च परिषत् क्लिश्यते क्षणाद्येन सा
स श्री वीरप्रभुर्विधूतकलुषा बुद्धिं विधत्ता मम॥ १॥

उपदेशरत्नमाला।

रचयिता आचार्य श्री सकल भूषण। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या १३६ पद्य संख्या ३३८३ रचना संवत् १६२७. लिपि संवत् १७४५ भट्टारक श्री जगत्कीर्ति के शासनकाल मे श्री गंगाराम छाबड़ा श्री वनमाली दास पहाड्या, श्री मनरामसेठी, श्री वेणा पाड्या, श्री माधोसाह पाटणी, श्री जंगा सोनी, श्री पुरा अजमेरा आदि सज्जनों ने उक्त ग्रन्थ की प्रतिलिपि कराई।

आरम्भ—

तीर्थंकरों की स्तुति करने के पश्चात् पूर्व प्रसिद्ध आचार्यों का इस प्रकार स्मरण किया है—

श्रीमद्वृषभसेनादिगौतमांतगणेशिनः।
वंदे विदितसर्वार्थान् विश्वर्द्धिपरिभूषिताम॥ १॥
श्रीकुन्दकुन्दनामानं यतीसंयतमत्सरं ।
उमास्वातिसमंतादिभद्रांतंपूज्यपादकं॥ २॥

अकलंकं कलाधारं नेमिचद्रं मुनीश्वरं ।
विद्यानंदं प्रभाचद्रं पद्मनंदं गुरुं परं ॥ ३ ॥
श्रीमत्सकलकीर्त्याख्यं भट्टारकशिरोमणिं ।
भुवनादिसुकीर्त्यं तत् गच्छाधीश गुणोद्भुरं ॥ ४ ॥

अन्तिमभाग—

श्रीमूलसंघतिलके वरनंदिसंघे, गच्छे सरस्वतिसुनाम्नि जगत्प्रसिद्धे ।
श्रीकुंककुंदगुरुपट्टपरंपराया श्रीपद्मनंदि मुनयः समभूज्जिताद्यः ॥ १ ॥
तत्पट्टधारी जनचित्तहारी पुराणमुख्योत्तमशास्त्रकारी ।
भट्टारक श्रीसकलादिकीर्त्ति. प्रसिद्धतामार्जना पुण्यमूर्त्तिः ॥ २ ॥
भुवनकीर्त्तिगुरुस्ततउर्जिते भुवनभासनशासनमंडनः ।
अजनि तीव्रतपश्चरणक्षमो विविधधमसमृद्धिसुदेशकः ॥ ३ ॥
श्रीज्ञानभूषपरिभूषितागं प्रसिद्धपाण्डित्यकलानिधानः ।
श्रीज्ञानभूषाख्यगुरुस्तदीय पट्टोदयाद्राविवभानुरासीन ॥ ४ ॥
भट्टारक श्रीविजयादिकीर्त्तिस्तदीयपट्टे परिलब्धकीर्त्तिः ।
[illegible]मनामोक्षसुखाभिलाषा बभूव जैनावनियान्यपादः ॥ ५ ॥
भट्टारकः श्री शुभचन्द्रसूरि तत्पट्टपंकेरुहतिग्मरश्मि. ।
त्रैविद्यवद्य. सकलप्रसिद्धो वादीभसिंहोजयतिधरित्र्या ॥ ६ ॥
पट्टे तस्य प्रीणितप्राणिवर्गः शांतोदांतः शीलशाली सुधीमान् ।
जीयात्सूरिश्रीसुमत्यादिकीर्त्ति गच्छाधीश. कर्मकांतिकलावान ॥ ७ ॥
तस्याभूच्च गुरुभ्राता नाम्नासकलभूषणः ।
सूरिर्जिनमतेलीनमनाः सतोषपोषकः ॥ ८ ॥
तेनोपदेशसद्रत्नमालसंज्ञोमनोहरः ।
कृता कृतिजनानंद निमित्तं ग्रंथणकः ॥ ६ ॥
श्री नेमिचंद्राचार्यादियतीनामाग्रहात्कृतः ।
सवर्द्धमानायेलादि प्रार्थनातोमयंपक ॥ १० ॥
सप्तविंशत्यधिके षोडशशतसंवत्सरे सुविक्रमतः ।
श्रावणमासे शुक्ले पक्षे षष्ठ्यां कृतोग्रंथः ॥ ११ ॥

ग्रन्थ का दूसरा नाम षट्कर्मोपदेशरत्नमाला भी है ।

इति श्री भट्टारक श्री शुभचन्द्रशिष्याचार्य श्रीसकलभूषणविरचितायामुपदेशरत्नमालायां षट्कर्म—प्रकाशिकायां तपोदानवर्णनो नामाष्टादशम परिच्छेद ॥

३० उवदेशमाला ।

रचयिता श्री धर्मदासगणि । भाषा अपभ्रंश। पत्र संख्या १८. साइज १०×४ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर १३ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ४४-५० अक्षर । प्रति प्राचीन है । कुछ कुछ पत्र गलने भी लग गये हैं ।

मंगलाचरण --

नमिऊण जिणवरिंदे इंदनरिंदच्चियतिल्लोय गुरू ।
उवए समालमिणमो वुच्छामि गुरुवएसेण ॥ १ ॥
जगचूडामणिभूउ उस भारानिलायसिरि तिलउ ।
एगोलोगाइच्चो गोचरक तिहुवणस्स ॥ २ ॥

अन्तिम पाठ—

धम्मदासगणिणा जिणवयणुवएसकज्जमालाए ।
मालव्वविविहकुसुमा कहिया उ सुसीसवग्गस्स ॥ ? ॥
संतिकरी वुढ्ढिकरी कल्लाणकरी सुमंगलकरीय ।
होउ कहगस्स परिसाए तहय निव्वाणफलदाई ॥ २ ॥
इत्थ समप्पइ इणमो माला उवएसपगरणपगय ।
गाहाण सव्वग्गं पंचसयाचेवचालीसा ॥ ३ ॥
जावय लवणसमुद्दो जावयनक्खत्तमंडिओमेरु ।
तावय रईयामाला जयम्मिथिरासुहा ॥ ४ ॥

प्रति नं० २ पत्र संख्या २० साइज १०॥×४॥ प्रति पूर्ण तथा शुद्ध है ।

३१ उपासकाध्ययन ।

रचयिता आचार्य वसुनन्दि । भाषा प्राकृत । पत्र संख्या २५ साइज ११×५ इञ्च लिपि संवत् १६०२ चैत्र शुक्ला चतुर्दशी । लिपि स्थान—तक्षक महादुर्ग ।

प्रति नं० २ पत्र संख्या २६ साइज १०॥×५ इञ्च । लिपि संवत् १६१२ लिपिस्थान तक्षकगढ महा-

दुर्ग। लिपि कर्त्ता ने अन्त मे एक लम्बी चौडी प्रशस्ति लिखी है। प्रशस्ति मे महाराजाधिराज श्री रामचन्द्र के राज्य का उल्लेख किया है।

प्रति नं० ३ पत्र सख्या ३७ साइज १०x४॥ इञ्च। लिपि संवत १६७३ लिपि स्थान गढचंपावती। अन्त मे प्रतिलिपि कराने वाले का अच्छा परिचय दे रखा है।

62
उपासकाचार।

रचयिता आचार्य श्री लक्ष्मीचंद्र। भाषा प्राकृत। पत्र सख्या २०, साइज १०॥x५ इञ्च। सम्पूर्ण गाथा संख्या २२४ लिपि संवत १८२२ लिपिस्थान जयपुर।

ऊ

63
ऊष्म विवेक कोष।

रचयिता अज्ञात। भाषा संस्कृत। पत्र सख्या १४ साइज १०॥x४ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर १२ पंक्तिया तथा प्रति पंक्ति मे ३२-३८ अक्षर। विषय—व्याकरण।

ए

64
एकावली व्रतकथा।

रचयिता अज्ञात। पत्र सख्या २५ साइज १०x५ इञ्च। भाषा संस्कृत। प्रति अपूर्ण है। लिपि कार ने जगह २ खाली स्थान छोड रखे है शायद लिपिकर्त्ता ने भी अशुद्ध लिपि मे प्रतिलिपि बनाई है।

65
एकीभावस्तोत्र।

रचयिता श्री वादिराजसूरि। भाषा संस्कृत। पत्र सख्या १० साइज ११॥x४॥ इञ्च। प्रति सटीक है। टीकाकार ने अपना उल्लेख नहीं किया है।

प्रति नं० २ साइज १०x५ इञ्च। पत्र सख्या १० प्रति सटीक है।

प्रति नं० ३ पत्र सख्या २३ साइज १२x५ इञ्च। प्रति सटीक है। टीकाकार श्री श्रुतसागर सूरि है।

प्रति नं० ४ पत्र सख्या ८ साइज १२x५ इञ्च। लिपि संवत् १७६६. प्रति सटीक है।

66
एकीभावस्तोत्र।

मूलकर्त्ता श्री वादिराज। भाषाकार श्री पंडित हीरानन्द। भाषा हिन्दी। पत्र संख्या ४ साइज १०॥x४॥ इञ्च।

प्रति नं० २ पत्र संख्या ४. साइज ११×४ इञ्च ।

ऋ

ऋतु वर्णन ।

रचयिता अज्ञात । भाषा । संस्कृत । पत्र संख्या ३. साइज ११×४॥ इञ्च । प्रति अपूर्ण है

ऋतुसंहार ।

रचयिता महाकविकालिदास । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या १३. साइज ११॥×४॥ इञ्च । लिपि संवत १८६६. लिपि स्थान पचेवर । लिपि भट्टारक श्री सुरेन्द्र कीर्त्ति के शिष्य नैनसुख के पढने के लिपि बनायी गयी ।

प्रति नं० २. पत्र संख्या १४. साइज ६×६॥ इञ्च । लिपि संवत १८३० ।

ऋषिमंडलस्तोत्र ।

रचयिता अज्ञात । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या १२. साइज ६×४ इञ्च । प्रति नवीन है ।

ऋषिमंडलपूजा ।

रचयिता गुणनन्दि । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या १८. साइज ११×४॥ लिपिकार प० कगडू । लिपि स्थान टोंक ।

प्रति नं० २. पत्र संख्या २२ साइज १०॥×४॥ इञ्च । लिपि संवत् १७६८. श्री कनककीर्त्ति के शिष्य श्री सदाराम ने उक्त पूजा की प्रतिलिपि बनायी ।

क

कथाकोष ।

अज्ञात । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ३५. साइज १०॥×४॥ इञ्च । लिपि संवत १७१६ लिपि स्थान सिलपुर । प्रति अपूर्ण है । प्रथम २३. पृष्ठ नहीं है ।

ग्रन्थ का अन्तिम भाग—

व्यासेन कथिता पूर्वेल्लेखको गणनायकं ।
तस्यैव चलिता दृष्टिः मनुष्याणां च का कथा ॥ १ ॥

८२
कथासंग्रह ।

संग्रहकर्त्ता अज्ञात । भाषा हिन्दी । पत्र संख्या ११. साइज ११॥×५ इञ्च । दीमक लगजाने से ग्रंथ फट गया है ।

८३
कथासंग्रह ।

संग्रह कर्त्ता अज्ञात । भाषा हिन्दी (पद्य) पत्र संख्या २६. साइज १०॥×५॥ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर १० पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में २५–३० अक्षर । संग्रह में बारह व्रत कथा, मौन एकादशी व्रत कथा, श्रुतस्कंध व्रत कथा, कोकिला पंचमी व्रत कथा, और रात्रि भोजन कथा है । ये कथायें निम्न कवियों के द्वारा लिखी हुई हैं।

नाम कथा	कवि नाम
बारह व्रत कथा	ब्रह्म चंद्र सागर
मौन एकादशी व्रत कथा	ब्रह्म ज्ञान सागर
श्रुतस्कंध व्रत कथा	"
कोकिला पंचमी व्रत कथा	"
रात्रि भोजन कथा	अज्ञात

८४
कथाविलास ।

रचयिता अज्ञात । भाषा हिन्दी गद्य । पत्र संख्या ८०. साइज १०॥×४॥ इञ्च । विषय गंगावतरण । प्रति अपूर्ण है । ८० से आगे के पृष्ठ नहीं है । प्रति नवीन है ।

८५
कमलचंद्रायणव्रतोद्यापन ।

रचयिता श्री देवेन्द्रकीर्ति । भाषा संस्कृत । पृष्ठ संख्या ३. साइज ११×४॥ इञ्च । लिपि संवत १७८२. लिपि स्थान सवाईमाधोपुर ।

प्रति नं० २. पत्र संख्या ४. साइज ११॥×४॥ इञ्च । लिपि संवत् १८३६ ।

८६ **कर्णामृतपुराण**

रचयिता भट्टारक श्री विजयकीर्त्ति । भाषा हिन्दी । पृष्ठ संख्या ८२. साइज ८×७ इञ्च । विषय— भगवान आदिनाथ से लेकर भगवान महावीर के पूर्व भवों का वर्णन दिया हुआ है । अध्याय अडतीस । रचना

संवत १८२६ अन्त मे लेखक ने अपना भी परिचय दिया है लेकिन ६० से आगे के पृष्ठ एक दूसरे के चिपकने से पढने में नहीं आसकते।

कर्मकांड सटीक।

ग्रंथ कर्त्ता श्री नेमिचन्द्राचार्य। भाषा प्राकृत। टीकाकार श्री सुमतिकीर्त्ति सूरि। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ६०. साइज ११॥x४॥ इञ्च। ग्रंथ प्रमाण १३७४ श्लोक। लिपि संवत १७७६।

प्रति नं० २. पत्र संख्या २४. साइज ११x५॥ इञ्च। लिपि संवत १६२२।

कर्मचूरव्रतोद्यापन।

रचयिता श्री लक्ष्मीसेन। भाषा हिन्दी। पत्र संख्या ८ साइज ११x५॥ इञ्च। लिपि संवत १८४८

कर्मदहन पूजा।

रचयिता अज्ञात। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या १३ साइज १२x४॥ इञ्च।

प्रति नं० २ पत्र संख्या १४ साइज ११॥x४ इञ्च

कर्मप्रकृति।

मूलकर्त्ता आचार्य नेमिचन्द्र। टीकाकार अज्ञात। भाषा प्राकृत संस्कृत। पत्र संख्या ४६ साइज ६॥x४॥ इञ्च। विषय—गोम्मटसार कर्मकाण्ड की मुख्य २ गाथाओं का संकलन और उन पर संस्कृत में टीका। टीका सरल और स्पष्ट है। लिपि संवत १५७७ मंडलाचार्य श्री धर्मचन्द्र के शासनकाल में खंडेलवालवंशोत्पन्न श्री पद्माइल ने नागपुर नगर में ग्रंथ की प्रतिलिपि कराई।

प्रति नं० २ पृष्ठ संख्या १४ साइज १०x४॥ इञ्च। लिपि संवत १८००

प्रति नं० ३ पृष्ठ संख्या ६. साइज १०॥x४॥ इञ्च। केवल मूल है। गाथा संख्या १३०

प्रति नं० ४ पृष्ठ संख्या १६ साइज १०॥x४॥ इञ्च।

प्रति नं० ५ पृष्ठ संख्या १४. साइज १०x४॥ इञ्च।

प्रति नं० ६ पृष्ठ संख्या २० साइज ११॥x४ इञ्च। लिपि संवत १७६२. श्री आनंदरामजी के लिए श्री हेमराज ने लिखी।

प्रति नं० ७ पृष्ठ संख्या ४५. साइज ११x४॥ इञ्च । प्रति सटीक है। टीकाकार श्री सुमतिकीर्ति । टीका संस्कृत मे है ।

प्रति नं० ८ पृष्ठ संख्या २१ साइज १०॥x४॥ इञ्च । लिपि संवत १६२१. लिपिस्थान चंपावती ।

प्रति नं० ९. पत्र संख्या १३. साइज १०॥x४॥ इञ्च ।

प्रति नं०. १०. पृष्ठ संख्या १२. साइज ११॥x५ इञ्च ।

प्रति नं० ११. पृष्ठ संख्या १३. साइज ११॥x५॥ इञ्च

प्रति नं० १२. पृष्ठ संख्या १८ साइज १२x५॥ इञ्च ।

प्रति नं० १३. पृष्ठ संख्या १६. साइज १२x६ इञ्च ।

५१

कर्मविपाक ।

रचयिता भट्टारक श्री सकलकीर्ति । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या २०. साइज १०x४॥ इञ्च ।

अन्तिम अंश—

इति भट्टारक सकलकीर्तिदेवविरचितकर्मविपाक ग्रंथ समाप्त । महिमासनपुरे श्रीआदिनाथचैत्यालये ब्रह्म साह सांग्येन स्वहस्तेन लिखितं ।

५२

कर्मस्वरूप ।

टीकाकार पं० श्री जगन्नाथ । भाषा प्राकृत-संस्कृत । पत्र संख्या ५४ साइज १२x६॥ इञ्च । लिपि संवत १७९८ श्री नेमिचन्द्राचार्य के गोम्मटसार कर्मकांड नामके ग्रंथ से प्रमुख २ गाथाओं का संस्कृत में अर्थ लिखा गया है । आदि के पृष्ठ नहीं है ।

५३

कल्पसूत्र ।

रचयिता श्री भद्रबाहु स्वामी । भाषा प्राकृत । पत्र संख्या १५७ साइज १०x४ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर १५ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ४८-५४ अक्षर । लिपि संवत् १७८६. प्राकृत भाषा से संस्कृत में टीका भी है ।

प्रति नं० २. पत्र संख्या ८८. साइज १०॥x४॥ इञ्च । लिपि संवत् १५४५. मन्त्री श्री सारंग ने श्री देवनंदन के उपदेश से ग्रन्थ की प्रतिलिपि बनवायी ।

कल्याणमंदिरस्तोत्र ।

रचयिता श्री कुमुदचन्द्राचार्य । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या १४. साइज १०।।×५ इञ्च । प्रति सटीक है । प्रथम पृष्ठ फटा हुआ है ।

प्रति नं० २ पत्र संख्या १५. साइज १०।।×४।। इञ्च । लिपि संवत् १५६५ प्रशस्ति है लेकिन अपूर्ण है । लिपि स्थान चंपावती ।

प्रति नं० ३. पत्र संख्या १५. साइज १०।।×४ इञ्च । लिपि संवत् १६३६. लिपिस्थान-मालपुरा (जयपुर) । प्रति सटीक है । टीकाकार केशवगणि हैं ।

प्रति नं० ४ पत्र संख्या ४. साइज ११।।×५ इञ्च । लिपि संवत् १५१८. लिपिकार-अमरदेवगणि ।

प्रति नं० ५ पत्र संख्या १५. साइज १०।।×४ इञ्च । प्रति अपूर्ण है । प्रथम पृष्ठ नहीं है ।

प्रति नं० ६. पत्र संख्या १३. साइज १०×४।। इञ्च । प्रति सटीक है ।

प्रति नं० ७. पत्र संख्या ७. साइज ११×४ इञ्च । प्रति सटीक है ।

प्रति नं० ८ पत्र संख्या २०. साइज १२×६ इञ्च । प्रति सटीक है । टीका विस्तृत है । प्रति अपूर्ण है । २० से आगे के पृष्ठ नहीं है ।

प्रति नं० ९. पत्र संख्या ७. साइज १२×५।। इञ्च । लिपि संवत १७८७.

प्रति नं० १०. पत्र संख्या ८. साइज १०×४ इञ्च ।

प्रति नं० ११. पत्र संख्या ४. साइज १०×४ इञ्च । स्त्रोत्र की लिपि की मानबाई ने करवायी लिपिकाल अज्ञात ।

प्रति नं १२. पत्र संख्या४. साइज १०×४।। इञ्च । लिपि संवत् १८०६ । लिपि स्थान उदयपुर । लिपि कर्ता श्री जिनदास मुनि ।

प्रति नं १३. पत्र संख्या ३०. साइज १२×४।।. लिपि संवत् १८३८.

करकण्डु चरित्र ।

रचयिता मुनि कनकामर । भाषा अपभ्रंश ।पत्र संख्या ६८ साइज १०×४।।. इञ्च प्रत्येक पृष्ठ पर १०

पंक्तिया और प्रति पक्ति मे ३८-४२ अक्षर। प्रतिलिपि संवत १५६३ माघ सुदि १३।

प्रति नं० २. पत्र संख्या ६२. साइज १०।।x५ इञ्च। प्रतिलिपि सवत १५८१ चैत्र सुदि ६। लिपि कर्त्ता की प्रशस्ति दी हुई है।

प्रति नं० ३ पत्र संख्या ६१ साइज १२x५ इञ्च। लिपि संवत १६१६ भट्टारक अभयचन्द्र के समय म क्षुल्लिका चन्द्रमती ने प्रतिलिपि बनाई।

प्रति नं० ४ पत्र संख्या ८३ पत्र सख्या ६x४ इञ्च। आदि के २ तथा अन्त के पृष्ठ नहीं हैं।

९६ करकंडु चरित्र।

रचयिता आचार्य शुभचन्द्र और मुनि श्री सकल भूषण। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या १०६ साइज ११x५ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर १० पक्तिया तथा प्रति पंक्ति मे २८-३६ अक्षर। ग्रन्थ के अन्त मे २३ पद्यों की एक विस्तृत प्रशस्ति दी हुई है। प्रथम चार पृष्ठ नहीं है।

९७ कविप्रिया।

रचयिता कवि केशवदास। भाषा हिन्दी। पत्र सख्या ४६ साइज १०x४ इञ्च। प्रथम २ पृष्ठ नहीं हैं।

९८ कातन्त्र व्याकरण।

रचयिता श्री सर्ववर्मा। भाषा सस्कृत। पत्र सख्या ४५ साइज ११।।x५ इञ्च। केवल सूत्र मात्र हैं।

प्रति नं० २. पत्र सख्या २० साइज १०x४ इञ्च। प्रति अपूर्ण है।

प्रति नं० ३. पत्र संख्या १२। साइज १०x४।। इञ्च। प्रति अपूर्ण है।

९९ काम प्रदीप।

रचयिता श्री गुणाकर। भाषा सस्कृत। पत्र सख्या २३ साइज १०x४ इञ्च। प्रति अपूर्ण है। अन्त के पृष्ठ नहीं है।

१०० कारकविलास।

रचयिता अज्ञात। पत्र संख्या ४. भाषा संस्कृत। साइज १०।।x५।। इञ्च।

प्रति नं० २. पत्र सख्या ६. साइज १०।।x५ इञ्च।

कालज्ञान।

रचयिता अज्ञात। भाषा संस्कृत। पत्र सख्या १०. साइज १०॥x५ इञ्च। विषय-आयुर्वेद। प्रति अपूर्ण है। प्रारम्भ के पृष्ठ नहीं हैं।

कालज्ञान।

रचयिता अज्ञात। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ५४ साइज ११x५ इञ्च। विषय ज्योतिष।

काव्यादर्श।

रचयिता महाकवि श्री दंडी। भाषा संस्कृत। पत्र सख्या ३८ साइज ६x३ इञ्च। केवल तीन परिच्छेद है।

प्रति नं० २, पत्र संख्या १२ साइज १०॥x४ इञ्च। प्रति अपूर्ण है।

काव्यप्रकाश।

रचयिता श्री मम्मट। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या २४३ साइज १०x४॥ इञ्च। विषय-अलंकार शास्त्र। लिपि संवत ६६८.

प्रति नं० २ प्रति सटीक है। टीकाकार श्री महेश्वर न्यायालंकार। पत्र संख्या २२५. साइज ११x५ इञ्च। लिपि संवत १६४४ प्रति नवीन।

प्रति नं ३ कारिका मात्र। पत्र संख्या ५ कारिका संख्या १८६।

काव्यालंकार।

रचयिता श्री रुद्रट। टीकाकार पंडित श्री नमि। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या १५२ साइज १०x४॥ इञ्च।

किरणावली सटीक।

रचयिता उदयनाचार्य। टीकाकार अज्ञात। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या १७६ साइज १०x४॥ इञ्च। विषय-न्याय। लिपि संवत १६२४ इस ग्रंथ की भण्डार में ४ प्रति और है।

किरातार्जुनीय।

रचयिता महाकवि भारवि। टीकाकार प्रकाशवर्ष। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या २१६ साइज १०x४॥ इञ्च।

प्रति नं० २. मूलमात्र है। पत्र संख्या ४३ साइज १०×४ इञ्च। लिपि संवत १७५०. लिपि कर्त्ता श्री केशर सागर।

प्रति नं० ३. पत्र संख्या १६६ साइज ११॥×५॥ इञ्च। लिपि संवत् १८७० प्रति सटीक है। टीकाकार श्री एकनाथ भट्ट।

प्रति नं० ४ पत्र संख्या १४५ साइज १०×४ इञ्च। लिपि संवत् १७५३ लिपि कर्त्ता महात्मा सावलदास।

प्रति नं० ५ पत्र संख्या १५८. साइज १०॥×४ इञ्च। लिपि संवत् १७१६. लिपि स्थान मोजमाबाद (जयपुर)।

प्रति नं० ६ पत्र संख्या १३७ साइज १०×५ इञ्च। प्रति सटीक है। प्रति प्राचीन है।

प्रति नं० ७. पत्र संख्या १७१ साइज ११×४ इञ्च। प्रति सटीक है। टीकाकार मल्लिनाथ सूरि।

१०८
क्रियाकोष।

भाषा हिन्दी (पद्य)। पत्र संख्या ७० साइज ८॥×५॥ इञ्च। प्रति अपूर्ण है।

मंगलाचरण —

समोसरण लछिमी सहित वरधमान जिनराय।
नमो विबुध वंदित चरण, भवि जन को सुखदाय॥ १॥

प्रति नं० २ पत्र संख्या ५१ साइज ११॥×५ इञ्च। ग्रन्थ अपूर्ण है। ५१ से आगे के पृष्ठ नहीं हैं।

१०९
क्रियाकल्पलता।

रचयिता श्री साधु सुन्दर गणि। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ३२३ साइज १०॥×५॥ इञ्च। लिपि संवत १७०४।

११०
कुमार संभव।

रचयिता महाकवि श्री कालिदास। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ५२ साइज १०॥×४ इञ्च। सप्तम सर्ग पर्यन्त है। लिपि संवत १६६५ लिपि स्थान चंपावती। इस महाकाव्य की ८ प्रतियां और है।

१११
केवलभुक्तिनिराकरण।

रचयिता पं० जगन्नाथ। भाषा संस्कृत। पृष्ठ संख्या ६ साइज १०×५॥ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर १०

पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति मे ३३–३८ अक्षर। लिपि संवत् १७३० ।विषय–केवलज्ञानियों के अहार का खंडन।

कोकसार।

रचयिता अज्ञात। भाषा हिन्दी। पत्र संख्या ६. साइज ८x४॥ इञ्च।

कोष्टक टीका।

टीकाकार पं० श्री वेदा। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ७. साइज १०x४ इञ्च। विषय–ज्योतिष।

ख

खंडप्रशस्तिकाव्य।

रचयिता अज्ञात। पृष्ठ संख्या ४. साइज ६x५॥ इञ्च। पद्य संख्या २१ विषय–रघुवंश स्तुति।

प्रति नं० २ पृष्ठ संख्या ४. साइज १०x४ इञ्च। लिपि संवत १६२४।

ग

गणक कौमुदी।

रचयिता ज्योतिषाचार्य श्री मणिलाल। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ११. साइज १०x४ इञ्च। विषय ज्योतिष। लिपि संवत १६६२।

गणितशास्त्र।

रचयिता अज्ञात। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ७. साइज ११x४॥ इञ्च। विषय-ज्योतिष।

गणितकौमुदी।

रचयिता अज्ञात। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ४२. साइज १२x६॥ इञ्च। विषय–गणित। प्रति अपूर्ण है।

गणित नाममाला।

रचयिता अज्ञात। भाषा संस्कृत। पृष्ठ संख्या ७ साइज १०x४ इञ्च। विषय–ज्योतिष।

११९
गणितलीला ।

रचयिता श्री पं० भास्कर । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या २३ साइज १०॥×४॥ इञ्च ।

१२०
गणधरवलय पूजा ।

रचयिता भट्टारक श्री सकलकीर्त्ति । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ६. साइज १०॥×५ इञ्च ।

१२१
ग्रन्थसार ।

रचयिता भट्टारक सकलकीर्ति । भाषा संस्कृत । साइज ११×४ इञ्च । विषय मुनियों का आचार शास्त्र । ग्रन्थ के अन्त में चौबीस तीर्थंकरों की स्तुति भी दी हुई है ।

१२२
गर्भषडारचक्र ।

रचयिता श्री देवनन्दी । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ६ साइज १०॥×५ इञ्च प्रति सटीक है ।

१२३
ग्रहलाघव ।

रचयिता श्री दैवज्ञ गणेश । पत्र संख्या ११. साइज १०॥×५ इञ्च । प्रति अपूर्ण । ११ से आगे के पृष्ठ नहीं है ।

१२४
ग्रहलाघवसारणी ।

रचयिता अज्ञात । भाषा संस्कृत । पुस्तक मे नक्षत्रों के अलग २ फल दिखलाये गये है ।

१२५
ग्रहलाघव ।

रचयिता श्री गणेश गण कवि । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या २५. साइज १०॥×४॥ इञ्च । विषय— ज्योतिष । लिपि संवत १६०६ प्रति सुन्दर है ।

१२६
ग्रहागमकौतूहल ।

रचयिता श्री देवचंद । भाषा संस्कृत । पृष्ठ संख्या ८२. साइज १०॥×४॥ इञ्च । लिपि संवत् १६७१. विषय—ज्योतिष ।

१२७
गिरधरानन्द ।

रचयिता श्री गिरधर । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ३५. साइज १०×४॥ इञ्च । प्रति अपूर्ण है ।

प्रारम्भ के ८ तथा आगे के पृष्ठ नहीं है। विषय-ज्योतिष।

गुटका नं० १

लिपिकार अज्ञात। पत्र संख्या १००, साइज ६॥×६ इञ्च।

विषय-सूची—

(१) जिन सहस्रनाम (जिनसेनाचार्य) (संस्कृत)
(२) अनंत व्रत पूजा विधान (संस्कृत)
(३) चतुर्विंशति तीर्थंकरपूजा (संस्कृत)
(४) मोक्ष शास्त्र
(५) पूजन संग्रह

गुटका नं० २

लिपिकार अज्ञात पत्र संख्या १७५, साइज १०॥×६॥ इञ्च। लिपि संवत १६०५।

मुख्य विषय-सूची —

(१) त्रिशच्चतुर्विंशति का पूजा (आचार्य शुभचन्द्र)
(२) नन्दिसंघ गुर्वावली (संस्कृत)
(३) जिनयज्ञकल्प. (पं० आशाधर)
(४) अंकुरार्पण विधि (संस्कृत)
(५) रूपमंजरी नाममाला (रूपचन्द कृत)

गुटका नं० ३

लिपिकार अज्ञात। पत्र संख्या १४० साइज ६। ×५ इञ्च। इस गुटके में कोई उल्लेखनीय सामग्री नहीं है।

गुटका नं० ४

लिपिकार श्री जगानन्द और लिखमीदास। पत्र संख्या १७५, साइज ७×५ इञ्च। लिपि संवत् १७१०. और १७२६. लिपिस्थान नेवटा (जयपुर)

विषय-सूची—

(१) जिनसहस्रनाम स्तवन (संस्कृत)

(२) आदित्यवार की कथा (हिन्दी)
(३) नेमिजिनेश्वर रास ,,
(४) लब्धि विधान विधि ,,
(५) निर्दोष सप्तमी की कथा ,,
(६) रत्नत्रयविधान कथा ,,
(७) पुष्पाञ्जलि व्रत कथा ,, (पं० हरिश्चन्द्र)
(८) धर्मरासो ,,
(९) जिनपूजा फल प्राप्ति कथा ,,

१३२
गुटका नं० ५

लिपिकार अज्ञात। पत्र संख्या २००, साइज ७x७ इञ्च।

विषय-सूची—

(१) शकुन पाशा केवली (संस्कृत)
(२) चिंतामणि पार्श्वनाथ स्तवन (संस्कृत)
(३) भक्तामर स्तोत्र
(४) हिंदोला (अपभ्रंश)
(५) प्रश्नोत्तर रत्नमालिका (संस्कृत)
(६) द्वादशानुप्रेक्षा (प्राकृत) लक्ष्मीचन्द
(७) श्रावक प्रतिक्रमण (प्राकृत)
(८) पट्टावली (संस्कृत)
(९) आराधना प्रकरण (प्राकृत)
(१०) सबोध पचाशिका (प्राकृत)
(११) यति भावनाष्टक (संस्कृत)
(१२) तत्त्वसार (प्राकृत)
(१३) समाधिशतक (संस्कृत)
(१४) सज्जन चित्तवल्लभ (संस्कृत)
(१५) कषाय जय भावना (संस्कृत)

(१६) श्रुतस्कंध
(१७) इष्टोपदेश (संस्कृत)
(१८) अनस्तमितिव्रताख्यान (अपभ्रंश)
(१९) प्रतिक्रमण (संस्कृत)

३ **गुटका नं० ६**

लिपिकार अज्ञात। लिपि संवत् १६३४. पत्र संख्या ३५०. साइज ७x७ इञ्च।

मुख्य विषय-सूची—

(१) ज्ञानांकुश (संस्कृत)
(२) सुप्पयदोहा (प्राकृत)
(३) अनुप्रेक्षा (अपभ्रंश) (पं० जगसी)
(४) णवकार पाथजी (प्राकृत)
(५) उपासकाचार (संस्कृत)
(६) ज्ञानसार (प्राकृत)
(७) रत्नकरण्ड श्रावकाचार
(८) आराधनासार (प्राकृत)
(९) आराधनासार टीका (प्राकृत-संस्कृत)
(१०) दर्शनज्ञान चरित्र पाहुड (प्राकृत)
(११) भाव पाहुड (प्राकृत)
(१२) मोक्ष पाहुड ,,
(१३) स्वयम्भू स्तोत्र (संस्कृत)
(१४) त्रैलोक्य स्थिति (संस्कृत)

४ **गुटका नं० ७**

लिपिकार श्री छीतर। पत्र संख्या १२५. साइज ८x५ इञ्च। लिपि संवत् १५०५. लिपि स्थान अजबगढ मत्स्य प्रदेश।

विषय-सूची—

(१) जिनस्तोत्र (संस्कृत) पं० जगन्नाथ वादि कृत

(२) नेमिनरेन्द्र स्तोत्र (संस्कृत)
(३) त्रिरत्नकोष (संस्कृत)
(४) शकुन विचार (हिन्दी)
(५) पुण्याह मन्त्र (संस्कृत)

१३५
गुटका नं० ८

लिपिकार अज्ञात । पत्र संख्या १३४. साइज १०×६ इञ्च । गुटका जीर्ण शीर्ण हो चुका है।

विषय-सूची—

(१) नाटक समय सार (हिन्दी)
(२) स्तुति संग्रह (हिन्दी)

१३६
गुटका नं० ९

लिपिकार अज्ञात । संख्या ५०. साइज ७॥×७॥ इञ्च ।

विषय-सूची—

(१) सोलह कारण पूजा (अपभ्रंश)
(२) दश लक्षण पूजा (संस्कृत)
(३) चतुर्विंशति स्वयम्भू स्तोत्र (संस्कृत)
(४) निर्वाण काण्ड गाथा
(५) लब्धि विधान पूजा
(६) तत्त्वार्थ सूत्र, रत्नत्रय पूजा आदि

१३७
गुटका नं० १०

लिपिकार अज्ञात । पत्र संख्या १५०. साइज १०॥×७॥ इञ्च ।

विषय-सूची—

(१) हितोपदेश भाषा पत्र ८६
(२) सुन्दर शृंगार

(३) समयसार नाटक

(४) प्रतिक्रमण

(५) भक्तामर स्तोत्र

(६) उपसर्ग स्तोत्र

गुटका नं० ११

लिपिकार जौता पाटणी । पत्र संख्या ३७६ साइज ५॥×५॥ इञ्च । लिपि संवत १६६०, लिपिस्थान आगरा । प्रारम्भ के १६ पृष्ठ नहीं हैं ।

विषय-सूची—

(१) भविष्यदत्त कथा (हिन्दी) ब्रह्म रायमल ।

(२) आदित्यवार कथा (हिन्दी)

(३) जिनवर पद्धडी „

(४) नेमीश्वर रास „

(५) पंचेन्द्रिय वेलि (हिन्दी) रचना संवत् १५८५ ।

(६) श्रीपाल रासो „ ब्रह्मरायमल्ल । रचना संवत् १६३० ।

(७) माधवानल चौपई । रचना संवत् १६१६ ।

(८) पुरन्दर कथा ।

गुटका नं० १२

लिपिकार अज्ञात । पत्र संख्या १२१ साइज ६॥×५ इञ्च । लिपि संवत १५७१ ।

विषय-सूची—

(१) णमोकार पाथडी (हिन्दी)

(२) सुदर्शन पाथडी (अपभ्रंश)

(३) विद्युच्चोर की कथा (अपभ्रंश)

(४) बाहुबलि पाथडी „

(५) शिवकुमार की जयमाल „

(६) द्वादशानुप्रेक्षा „

(७) नदियों का द ग़न

१४०

गुटका नं० १३

लिपिकार अज्ञात । पत्र सख्या ६७. साइज ६॥×५ इञ्च । लिपि सवत १७८८ ।

विषय-सूची—

(१) विषापहार स्तोत्र भाषा अचलकीर्त्ति कृत
(२) दशलक्षण व्रथ कथा (हिन्दी) ब्र० जि दास
(३) सोलह कारण व्रत कथा ,, ,,
(४) वांहरा षष्टि व्रत कथा ,, ,,
(५) मौन सप्तमी कथा ,, ,,
(६) निर्दोष सप्तमी कथा ,, ,,
(७) पच परमेष्ठि गुण वर्णन ,, ,,

१४१

गुटका नं० १४

लिपिकार उपाध्याय सुमति कीर्त्ति । पत्र संख्या १२० साइज ७×५ इञ्च । लिपि संवत १७०६ ।

विषय-सूची—

(१) अंकुरारोपण विधि (सस्कृत)
(२) जिनसहस्रनाम स्तवन (सस्कृत)
(३) सकली करणविधि (सस्कृत)
(४) जिनयज्ञ विधान (सस्कृत)
(५) यज्ञ दीक्षा विधान (सस्कृत)
(६) त्रिंशद्द्व्यार्चन विधि (सस्कृत)
(७) पल्यविधानरास (हिन्दी)

१४२

गुटका नं० १५

लिपिकार अज्ञात । पत्र संख्या १२५. साइज ६॥×६ इञ्च ।

विषय-सूची—

(१) मेरुपंक्ति कथा (हिन्दी)
(२) सीमंधर स्वामी की स्तुति (हिन्दी)
(३) कलिकुंड पार्श्वनाथ वेल (हिन्दी)

गुटका नं० १६

लिपिकार अज्ञात पत्र सख्या २३१. साइज ६।।×५।। इञ्च ।

विषय-सूची—

(१) सामायिक पाठ (संस्कृत)
(२) लघु पट्टावली ,,
(३) चौतीस अतिशय भक्ति ,,
(४) सिद्धालोचन भक्ति ,,
(५) श्रुत भक्ति ,,
(६) दर्शन भक्ति ,,
(७) चारित्र भक्ति ,,
(८) नंदीश्वर भक्ति ,,
(९) योग भक्ति ,,
(१०) चोबीस तीर्थंकर भक्ति ,,
(१२) निर्वाण भक्ति ,,
(१३) वृहत् प्रतिक्रमण ,,
(१४) वृहद्स्वयम्भु ,,
(१५) ब्राह्मचार प्रतिक्रमण ,,
(१६) वृहद् पट्टावली ,,
(१७) तत्त्वार्थ सूत्र स्तुति ,,

गुटका नं० १७

लिपिकार अज्ञात । पत्र संख्या १३६. साइज ६।।×६।। इञ्च । गुटके में उल्लेखनीय सामग्री नहीं है ।

१४५

गुटका नंबर १८

लिपिकार अज्ञात। पत्र संख्या १५० साइज ७×५ इञ्च।

विषय-सूची—

(१) अठारह नाता की कथा (हिन्दी)
(२) श्रीपालरास (हिन्दी) (ब्रह्म रायमल्ल)
(३) नेमीश्वर रास " "
(४) सुदर्शन चरित्र " "
(५) परमात्म प्रकाश (प्राकृत)

१४६

गुटका नं० १६

पत्र संख्या २५०. प्रारम्भ के १६० पत्र संवत १६५६ मे भट्टारक श्री धर्म्मचन्द्र के द्वारा आमेर मे लिखे है तथा आगे के ६० पत्र संवत १७५१ मे अन्य महोदय ने लिखे है।

मुख्य विषय सूची—

(१) विषापहार स्तोत्र (संस्कृत)
(२) एकीभाव स्तोत्र "
(३) भूपालस्तवन "
(४) मुक्तावली गीत (हिन्दी)
(५) यमकाष्टक (संस्कृत)
(६) अंतरीक्ष पार्श्वनाथ स्तुति (हिन्दी)
(७) आदिनाथ स्तुति "
(८) चौरासीलाख योनि के जीवों की स्तुति (हिन्दी)
(९) त्रेपन क्रिया विनती (हिन्दी)
(१०) अकृत्रिम चैत्यालयों की स्तुति "
(११) नंदीश्वर भक्ति (अपभ्रंश)
(१२) प्रतिक्रमण (संस्कृत)
(१३) आराधना सार (प्राकृत)

(१४) आदित्यवार कथा (हिन्दी)
(१५) सप्तव्यसन (हिन्दी)
(१६) ऋपिमंडल स्तोत्र (संस्कृत)

गुटका नं० २०

लिपिकार अज्ञात। पत्र संख्या ५० साइज ७×५॥ इञ्च। गुटके में विशेष उल्लेखनीय सामग्री नहीं है।

गुटका नं० २१

पत्र संख्या ४०. साइज १०॥×४ इञ्च। लिपिकार अज्ञात। गुटके म कोई महत्त्वपूर्ण सामग्री नहीं है।

गुटका नं० २२

लिपिकार अज्ञात। पत्र सख्या १७० साइज ६॥×६ इञ्च।

गुटका नं० २३

लिपिकार अज्ञात। पत्र संख्या ५० साइज ६॥×६॥ इञ्च। गुटके मे विशेप उल्लेखनीय सामग्री नहीं है।

गुटका नं० २४

लिपिकार अज्ञात। पत्र सख्या ४०. साइज ६॥×६॥ इञ्च। लिपि संवत १८२८ लिपिस्थान चाटसू (जयपुर) गुटके मे विशेष उल्लेखनीय सामग्री नहीं है।

गुटका नं० २५

लिपिकार अज्ञात। पत्र संख्या ३० साइज ६॥×६॥ इञ्च। लिपि संवत १८०० लिपिस्थान चकवाड़ा (जयपुर राज्य) गुटके मे केवल भजनो का सग्रह है।

गुटका नं० २६

लिपिकार सदाराम। पत्र संख्या १००, साइज ७॥×६॥ इञ्च। लिपि संवत १७७३, गुटके मे स्तोत्र भजन आदि का सग्रह है।

१५४
गुटका नं० २७

लिपिकार भट्ट तुलाराम । भाषा संस्कृत हिन्दी । पत्र संख्या ४५. साइज १०x५॥ इञ्च । लिपि संवत १८६६. लिपिस्थान पाटण ।

१५५
गुटका नं० २८

लिपिकार अज्ञात । पत्र संख्या ७० साइज १०x६ इञ्च । गुटके में पद्मनन्दि कृत पात्रभेद (हिन्दी) के अतिरिक्त कोई उल्लेखनीय सामग्री नही है ।

१५६
गुटका नं० २९

लिपिकार श्री हंसराज । पत्र संख्या १?६ साइज ८x७ इञ्च । लिपि संवत १५' ८ ।

विषय-सूची—

(१) निशल्याष्टमी कथा (हिन्दी)

(२) हिन्दी पद्यावली । इसमे ८३ दोहो का संग्रह है । कवि का नाम कही पर भी नहीं दिया है। भाषा और शैली के लिहाज से दोहे बहुत ही महत्त्वपूर्ण है ।

(३) पहेली संग्रह । इसमे ७१ पहेलिया दी हुई है । आगे उनका उत्तर भी दिया हुआ है ।

(४)नवरत्न कवित्त

(५) संस्कृत पद्य संग्रह । इसमे नीति तथा धार्मिक ६६ पद्यो का संग्रह है।

(६) दशलक्षण व्रतोद्यापन

(७) कर्णामृत पुराण की भाषा

(८) हरिवंश पुराण की भाषा

१५७
गुटका नं० ३०

लिपिकार अज्ञात । पत्र संख्या १५ साइज ८x७ इञ्च ।

१५८
गुटका नं० ३१

लिपिकार लालचन्द्र । पत्र संख्या १७५. साइज ८x६ इञ्च । लिपि संवत १८१०

गुटका नं० ३२

लिपिकार अज्ञात। पत्र सख्या १८२. प्रारम्भ के ३२ पृष्ठ तथा बीच के कितने ही पृष्ठ नहीं हैं। लिपि संवत १५४८. गुटके मे अर्हद्‌व महाशान्तिक विधि लिखी हुई है।

गुटका नं० ३३

लिपिकार अज्ञात। भाषा हिन्दी-सस्कृत। पत्र संख्या ६६। साइज ५×८ इञ्च। गुटके मे नेमिनाथरासो-तथा पूजन संग्रह है।

गुटका नं० ३४

लिपिकार यति मोतीराम। लिपि संवत् १८२६ पृष्ठ सख्या ५६ साइज ४॥×४॥ इञ्च। गुटके के प्रारम्भ मे मार्गणा, गुणस्थान, परिषह, कर्म, कषाय आदि के केवल भेद दिये हुये है। बाद मे शनीशर की कथा दी हुई है।

गुटका नं० ३५

लिपिकार अज्ञात। पत्र संख्या ३०. साइज ४×४ इञ्च। गुटके मे भक्तामर स्तोत्र और पूजन के अतिरिक्त कोई विशेष सामग्री नहीं है।

गुटका नं० ३६

लिपिकार अज्ञात। पत्र सख्या १२० साइज ४॥×४॥ इञ्च। गुटके मे कोई उल्लेखनीय सामग्री नहीं है। केवल पूजन सग्रह ही है।

गुटका नं० ३७

लिपिकार जयरामदास। पत्र संख्या १२५. साइज ५॥×४ इञ्च। लिपि संवत १७४२. और १७६७. लिपिस्थान जयपुर।

गुटका नं० ३८

लिपिकार अज्ञात। भाषा प्राकृत संस्कृत और अपभ्रंश। पृष्ठ संख्या १०७. साइज ६×५ इञ्च। लिपि सवत् १६१२।

विषय-सूची—

(१) खंड प्रशस्ति (संस्कृत)
(२) प्रश्नोत्तररत्नमाला (संस्कृत)
(३) विषापहारस्तवन ,,
(४) भूपालस्तवन (संस्कृत)
(५) ज्ञानांकुश (संस्कृत)
(६) भक्तामरस्तोत्र ,,
(७) एकीभावस्तोत्र ,,
(८) पार्श्वनाथ पद्मावती स्तोत्र ,,
(९) राजा दशरथ जयमाल (प्राकृत)
(१०) बीस तीर्थंकर जयमाल (अपभ्रंश)
(११) वर्द्धमान स्वामी जयमाल (प्राकृत)
(१२) स्वप्नावली (संस्कृत)
(१३) सिद्धचक्र जयमाला ,,
(१४) सज्जनचित्त वल्लभ ,,
(१५) निजमति संबोधन (प्राकृत)
(१६) दशलक्षण जयमाला ,,
(१७) चौरासी जाति माला ,
(१८) जिनेन्द्र भवन स्तवन ,,
(१९) चिंतामणि पार्श्वनाथ स्तवन ,,
(२०) सरस्वति जयमाला ,,
(२१) गीत (हिन्दी)
(२२) सप्तभंगी (संस्कृत)

१५६ गुटका नं० ३९

लिपिकार अज्ञात । भाषा संस्कृत हिन्दी । पत्र संख्या १४६. साइज ६×५॥ इञ्च ।

विषय-सूची—

(१) परमानन्द स्तोत्र (संस्कृत)

(२) देव दर्शन (संस्कृत)
(३) बारह भावना (हिन्दी)
(४) जोग रासो ,,
(५) वज्रनाभि भावना ,,
(६) रात्रि भोजन कथा (हिन्दी)
(७) स्तुति ,,
(८) कल्याण मन्दिर भाषा ,,
(९) चौरासी लाख योनि के जीवों की प्रार्थना (हिन्दी)
(१०) आराधना प्रतिबोध (हिन्दी)
(११) दोहावली रूपचन्दकृत (हिन्दी)
(१२) निर्वाणकाण्ड भाषा ,,
(१३) विद्यमान बीस तीर्थंकरों की स्तुति (हिन्दी)
(१४) राजुल पच्चीसी ,,
(१५) कर्म छत्तीसी ,,
(१६) अध्यात्म बत्तीसी ,,
(१७) वैद्यक लक्षण ,,
(१८) दोहावली ,,
(१९) झूलना (हिन्दी) ,,
(२०) जिनेन्द्रस्तुति ,,
(२१) पंचमगुणस्थान का वर्णन ,,
(२२) चारों ध्यानों का वर्णन ,,
(२३) परिषह वर्णन ,,
(२४) वैराग्य चौपाई ,,

९७ **गुटका नं० ४०**

लिपिकार नान्हौराम । पत्र संख्या १२५. साइज ७।×५।। इञ्च । लिपि संवत १७९१ और १८११.

विषय-सूची—

(१) गृह शान्ति स्तोत्र (संस्कृत)

(२) सामायिक पाठ सार्थ। मूल भाग–प्राकृत। अर्थ हिन्दी मे है। हिन्दी अर्थ कर्त्ता श्री नान्हीराम।

(३) भक्तामर स्त्रोत्र भाषा।

१६८

गुटका नं० ४१

लिपिकार साह शंकरदास। पत्र संख्या ८०, साइज ६×६ इञ्च। लिपि संवत १८०३. लिपि स्थान चाटसू।

मुख्य विषय–सूची—

(१) पाच ज्ञान भेद (हिन्दी)

(२) ग्यारह अंग विवरण ,,

(३) पच परमेष्ठी गुण वर्णन ,,

(४) सम्यक्त्व के भेद ,,

(५) चौदह गुणस्थान भाषा। भाषाकार श्री अखयराज।

१६९

गुटका नं० ४२

लिपिकार अज्ञात। पत्र संख्या ४०. साइज ८×५।। इञ्च।

१७०

गुटका नं० ४३

लिपिकार श्री खुशालचन्द। पत्र संख्या २३३ साइज ५।।×३।। इञ्च। लिपि संवत् १८०५. लिपिस्थान बेगमनगर(आगरा)

विषय–सूची

(१) पद्मावती स्तोत्र (संस्कृत)

(२) ऋषि मंडल स्तोत्र ,,

(३) पार्श्वनाथ चिंतामणि स्तोत्र ,,

(४) बर्द्ध मानस्तोत्र ,,

(५) चतुर्विंशति स्तवन ,,

(६) जिनरक्षा स्तोत्र ,,

(७) समयसार नाटक (हिन्दी)

गुटका नं० ४४

लिपिकार अज्ञात। साइज ५×४ इञ्च। पत्र संख्या ७४

विषय-सूची—

(१) पद संग्रह (हिन्दी) रचयिता श्री सुरेन्द्रकीर्ति। इस संग्रह में करीब १०० से अधिक पद हैं।

(२) पूजन तथा अन्य पद संग्रह

गुटका नं० ४५

लिपिकार अज्ञात। पत्र संख्या १५० साइज ५×४ इञ्च। गुटके में केवल सुन्दरदासजी के पदों का ही संग्रह है।

गुटका नं० ४६

लिपिकार अज्ञात। पत्र संख्या १२५ साइज ६×४ इञ्च। गुटके के आधे से अधिक पृष्ठ फटे हुये हैं। गुटके में कोई उल्लेखनीय सामग्री नहीं है।

गुटका नं० ४७

लिपिकार अज्ञात। पृष्ठ संख्या १५६ साइज ६×६ इञ्च। गुटके में कोई विशेष उल्लेखनीय सामग्री नहीं है।

गुटका नं० ४८

लिपिकार अज्ञात। भाषा अपभ्रंश, प्राकृत और संस्कृत। पृष्ठ संख्या २१०। साइज ७||×६ इञ्च।

विषय-सूची—

(१) गुणस्थान गीत। भाषा अपभ्रंश। गाथा संख्या ९७

(२) समाधि मरण (अपभ्रंश)

(३) नित्य प्रति क्रमण ,,

(४) सुभाषितावली (संस्कृत) रचयिता भ० श्री सकलकीर्ति।

(५) सोलहकारण जयमाल (अपभ्रंश)

(६) दश लक्षण जयमाल (अपभ्रंश)
(७) पार्श्वनाथ स्तवन (संस्कृत)
(८) पोमहराम (अपभ्रंश)
(९) परमात्म प्रकाश
(१०) चितामणि पूजा (संस्कृत)
(११) पट् लेश्या वर्णन ,,
(१२) सामायिक पाठ ,,
(१३) श्रावक प्रतिक्रमण (अपभ्रंश)
(१४) सिद्ध पूजा
(१५) वर्द्धमान स्तवन (संस्कृत)
(१६) निर्वाण भक्ति (प्राकृत)
(१७) समाधि मरण (संस्कृत)
(१८) स्तुति स्वामी समन्तभद्र कृत (संस्कृत)
(१९) गर्भषडारचक देवनन्दि कृत ,,
(२०) भट्टारक पट्टावली ,,
(२१) मोक्ष शास्त्र ,,
(२२) आराधनासार (प्राकृत)
(२३) विषापहार स्तोत्र धनंजयकृत ,,
(२४) स्तोत्र श्री मुनि आदिराज मुनीन्द्र कृत (संस्कृत)
(२५) कल्याण मन्दिर स्तोत्र
(२६) स्तोत्र पाठ भट्टारक जिनचन्द्र कृत (संस्कृत)
(२७) भक्तामर स्तोत्र
(२८) भूपाल चतुर्विंशति (संस्कृत)
(२९) इष्टोपदेश
(३०) तत्त्वसार भावना (प्राकृत)
(३१) सूक्ति दोहा ,,
(३२) संबोह पंचासिका (अपभ्रंश)
(३३) जिनवर दर्शन स्तवन पद्मनन्दी कृत (संस्कृत)

(३४) यति भावना (संस्कृत)
(३५) सरस्वती स्तुति (संस्कृत)
(३६) श्रुतस्कंध, ब्रह्महेमविरचित (प्राकृत)
(३७) विज्जुचोरानुप्रेक्षा (प्राकृत)
(३८) आनन्द कथा (प्राकृत)
(३९) द्वादशानुप्रेक्षा
(४०) पंचप्ररूपणा (प्राकृत)
(४१) कलिकुंड जयमाल (संस्कृत)
(४२) चतुर्विंशति जयमाल
(४३) दशलक्षण जयमाल श्री सिहनन्दि कृत (प्राकृ।)
(४४) नेमीश्वर जयमाल
(४५) कलिकुंड जयमाल (प्राकृत)
(४६) विवेकजकडी ”
(४७) मदालसालास्तवन (संस्कृत)
(४८) मृत्युमहोत्सव ”
(४९) निर्वाण कण्डक (प्राकृत)
(५०) सज्जन चित्तवल्लभ, मल्लिषेणकृत (संस्कृत)
(५१) भावना बत्तीसी (संस्कृत)
(५२) वृहत् कल्याणक
(५३) द्रव्यसंग्रह
(५४) परमानन्द स्तोत्र

गुटका नं० ४९

लिपिकार अज्ञात। भाषा अपभ्रंश, हिन्दी और संस्कृत। पत्र संख्या ७७. साइज ६॥×६॥ इञ्च। लिपि संवत् १६८७ कार्त्तिक सुदी अष्टमी।

गुटके के विषय—

(१) मदनयुद्ध। भाषा अपभ्रंश। गाथा संख्या १५६. रचना काल संवत् १५८९।
(२) पार्श्वनाथस्तोत्र। भाषा संस्कृत। रचयिता श्री पद्मप्रभ देव। पद्य संख्या ८।

(३) प्रभातिक । भाषा संस्कृत । पद्य संख्या २५ विषय २४ तीर्थंकरों की स्तुति ।

(४) जिनेन्द्रदर्शन स्तुति । भाषा संस्कृत । पद्य संख्या १० ।

(५) परमानन्दस्तोत्र । भाषा संस्कृत । पद्य संख्या २५ ।

(६) पंचनमस्कार । भाषा संस्कृत । पद्य संख्या १२ ।

(७) निर्वाण काण्ड । भाषा अपभ्रंश । गाथा संख्या २७ ।

(८) चार कषाय वर्णन । भाषा अपभ्रंश ।

(९) नंदीश्वरविधान कथा । भाषा संस्कृत ।

(१०) सोलहकारण विधानकथा । भाषा संस्कृत । पद्य संख्या ७३ ।

(११) रोहिणी विधान कथा । भाषा संस्कृत गद्य ।

(१२) रत्नत्रय कथा । भा० संस्कृत गद्य ।

(१३) दशलक्षण व्रत कथा—"

गुटका नं० ५०

लिपिकार अज्ञात । भाषा हिन्दी । साइज १०x६ इञ्च । पत्र संख्या १४२. लिपि संवत् १७६२. लिपि स्थान आमेर । श्री टेउ साह के पुत्र श्री धमदास के पढने के लिये प्रति लिपि बनायीगई ।

गुटके मे ये विषय है—

सिद्धचक्रगीत, आदिनाथस्तुति, द्वादशानुप्रेक्षा, रत्नत्रयगीत, आदिनाथस्तवन, गिरनारिधवल, चूनडी-धवल, मिथ्यादुकड, चयमीठीगीत, प्रतिबोधगीत, राजुलविरहगीत, बलभद्रगीत, पाणीगालणरास, जिनाष्टक, नेमिजिनस्तुति, जिनदर्शनस्तुति, धर्मफाग, वैराग्यदोहावली, चैतन्यफाग, जीवडागीत, लब्धि विधान कथा, पुष्पाञ्जली विधान कथा, आकाशपञ्चमीव्रत कथा, चाद्रणषष्ठिव्रत कथा, मोक्षसप्तमी कथा, निर्दोष सप्तमी कथा, ज्येष्ठजिनवर की पूजा कथा, पुरदर विधान कथा, अक्षय दशमी व्रत कथा, मेंढक पूजा कथा, सोलहकारण कथा, तथा आराधना प्रतिबोध कथा, उक्त कथाओं तथा स्तवनो मे से कुछ तो ब्रह्म श्री जिनदास के बनाये हुये है तथा अन्य के बारे मे कुछ नहीं लिखा है । कितने ही स्तवनों की भाषा तो अपभ्रंश भाषा से बहुत कुछ मिलती है । नीचे हिन्दी भाषा के कुछ नमूने दिये जाते है ।

> ऊंचनीच गोत्र कर्म जी पीउं प्रगटीयो अठारू लघु तारे रे ।
> अव्याबाध गुण आयो ऊजले, गयो गयो वेदनीसारे रे ॥
> (सिद्धचक्रगीत)

माणुस भव जीव दोहिलो दोहिलो उत्तम धरमरे।
अनुप्रेक्षा बारखडी चिंतवो छाडिने निजमनि मरमरे ॥ १ ॥
(द्वादशानुप्रेक्षा)

अवनीदेशमाहि सविशाल घोष ग्राम छैरूवडाए।
ते नीन्ही जीवगुणहीण कुंणबीय छारितें अवतरीयाए ॥ १ ॥
(लब्धिविधान कथा)

सकल कीत्ति सकलकीत्ति गुरूः पाय प्रणमे विकियो राम स निरमलो।
आकाश पचमि अणो उजलो भवियण सुणो तम्हे भावनिरभर ॥ १ ॥

ए रासजे पढे गुणो नेह ने पुण्य अपार।
ब्रह्म जिणदास भणो गिरमलो, मन वांछित सुखसार ॥ ७ ॥
(आकाश पंचमी व्रत कथा।)

गुटका नं० ५१

लिपिकार अज्ञात। भाषा हिन्दी संस्कृत। पत्र संख्या ३६ साइज ६×७। इञ्च।

गुटका नं० ५२

लिपिकार अज्ञात। पत्र संख्या २४५ साइज ८×६ इञ्च। गुटका जीर्णशीर्ण हो चुका है। एक दूसरे के पृष्ठ चिपक गये है।

विषय-सूची—

(१) समयसार गाथा
(२) परमात्मराज श्लोक
(३) नाटक (प्राकृत)
(४) सुप्रभाती
(५) योगफल
(६) भरत बाहुबलीछंद। रचयिता श्री कुमुदचन्द्र। रचना संवत १६००. भाषा हिन्दी।
(७) ज्ञानांकुश (संस्कृत)
(८) हणुमंत कथा (हिन्दी)

(९) जम्बूस्वामी चरित्र (हिन्दी)
(१०) भविष्यदत्त चौपई
(१२) पंच परमेष्ठी गुण
(१३) पंच लब्धि
(१४) पंच प्रकार संसार
(१५) त्रेपन क्रिया विनती
(१६) ऋषभ विवाहलो
(१७) मनोरथ माला
(१८) शान्तिनाथ मृ खडी
(१९) आत्मा के नाम
(२०) जिनेन्द्र स्तुति

५८०
गुटका नं० ५३

लिपिकार अज्ञात। पत्र संख्या ६० साइज १०×७ इञ्च। गुटके मे प्रचलित पूजनों के अतिरिक्त कोई विशेष सामग्री नहीं है।

५८१
गुटका नं० ५४

लिपिकार अज्ञात। पत्र संख्या ३६० साइज ६×६॥ इञ्च। लिपि संवत् १७११. लिपिस्थान लाभपुर। गुटका बहुत ही महत्त्वपूर्ण है। प्राकृत और हिन्दी की सामग्री और भी महत्त्व की है।

विषय-सूची—

(१) आश्रव त्रिभंगी रचना।
(२) विशेषसत्ता त्रिभंगी।
(३) चौबीस ठाणा।
(४) द्रव्य संग्रह सटीक। टीका हिन्दी भाषा में है, लेकिन टीका बहुत प्राचीन मालूम देती है।
(५) अष्टोत्तरसहस्र नामस्तवन।
(६) आगम प्रसिद्ध गाथा (संग्रह)
(७) षट् लेश्या।

(८) सम्यक्त्व प्रकृति।

(९) पंचगुरुकुपात्र।

(१०) तत्त्वसार।

(१०) जम्बूस्वामि चरित्र (अपभ्रंश) रचयिता महाकवि श्री वीर।

(११) सबोध पंचासिका (प्राकृत)

(१२) अनित्य पचाशत भाषा। भाषाकार त्रिभुवनचंद।

(१३) परमार्थ दोहा। रूपचंद कृत।

(१४) श्रीपाल स्तुति।

(१५) स्वाध्याय।

(१६) वर्द्धमान भारती (प्राकृत)

(१७) कर्माष्टक

(१८) सुप्पय दोहावली

(१९) अनुप्रेक्षा। पं० ईश्वर चन्द्र कृत।

(२०) सप्ततत्त्वगीत।

(२१) त्रैपन क्रिया। ब्रह्म गुलाल कृत।

(२२) सोलह कारण रासो।

(२३) मुक्तावली को रासो।

(२४) भवर गीत।

(२५) मेघ कुमार रासो।

(२६) वेलि गीत।

(२७) परमार्थ गीत।

(२८) भजन संग्रह रूपचद कृत।

(२९) षट्पद भजन संग्रह।

(३०) भरतेश्वर जयमाल।

(३१) परमात्म प्रकाश।

(३२) दोहा पाहुड श्री योगीन्द्र विरचित।

(३३) श्रावकाचार दोहा।

(३४) द्वादशी गाथा।

(३५) स्वामी कुमारानुप्रेक्षा ।
(३६) नेमिनाथ रासो ।
(३७) अनध्रु अनुप्रेक्षा ।
(३८) आत्म संबोधनकाव्य (प्राकृत)
(३९) आराधना सार ,,
(४०) योग सार ,,
(४१) कर्म प्रकृति (प्राकृत) ? नेमिचन्द्राचार्य
(४२) आत्मा वर्णन ।
(४३) नेमीश्वर जीवन (प्राकृत)
(४४) कषाय पाथडी ।
(४५) निश्चय व्यवहार रत्नत्रय ।
(४६) भाव संग्रह (प्राकृत) श्री देवसेन कृत ।
(४६) षड् पाहुड ।
(४७) षड द्रव्य वर्णन

९८२
गुटका नं ५५

लिपिकार पं० स्योजीराम जी । पत्र संख्या ३०. साइज ८॥×६ इञ्च । लिपि **संवत् १८२६.** लिपि-स्थान देवपुरी । लिपि कर्त्ता पांडे देवकरणजी ।

९८३
गुटका नं० ५६

लिपिकार अज्ञात । पत्र संख्या ७४ साइज ५×४॥ इञ्च । गुटके में कोई विशेष उल्लेखनीय सामग्री नहीं है ।

९८४
गुटका नं० ५७

लिपिकार अज्ञात । पत्र संख्या २०. साइज ५॥×४॥ गुटके के प्रारम्भ में कितने ही प्रसिद्ध मध्य-कालीन राजाओं और नवाबों का संवत् सहित संक्षिप्त वृत्तान्त देरखा है । इसके अतिरिक्त कोई उल्लेखनीय सामग्री नहीं है ।

५७ गुटका नं० ५८

पत्र संख्या ६२. साइज ११×४ इञ्च

विषय-सूची—

(१) नेमीश्वर जयमाल (प्राकृत)
(२) वुद्धरसायण ,,
(३) कालावली ,,
(४) भरतबाहुबलि ,,
(५) वर्द्धमान जयमाल ,,
(६) मुनियों की स्तुति ,,
(७) पंचपरमेष्ठि ,,
(८) सप्तव्यसनगीत ,,
(९) कल्याणक गीत ,,
(१०) समाधि गीत ,,
(११) दशधर्म ,,
(१२) अनुप्रेक्षा ,,
(१३) समयसार ,,
(१४) द्रव्यसंग्रह ,,
(१५) आराधना ,,
(१६) अकलंकाष्टक ,,
(१७) पोसहरास ,,
(१८) मेघकुमार ,,
(१९) दीतवारकथा ,,
(२०) मंगलाष्टक ,,
(२१) विद्युच्चोर कथा ,,
(२२) अन्य स्तोत्र मंगलाष्टक वगैरह।

५८ गुणस्थान चर्चा।

रचयिता अज्ञात। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ५ साइज ११।।×५।। इञ्च प्रति अपूर्ण है।

५२७
गौतमपृच्छा ।

रचयिता श्री वाचनाचार्य रत्नकीर्त्तिगणि । भाषा प्राकृत हिन्दी । पृष्ठ संख्या ५ साइज १०×४ इञ्च । लिपि संवत् १५८०. श्रीमालजाति खारड गोत्र वाले चौधरी पृथ्वीमल्ल की धर्मपत्नी के पढने के लिये प्रति लिपि की गई ।

प्रति नं० २ पत्र संख्या ४ साइज १०॥×४॥ इञ्च ।

प्रति नं० ३ पत्र संख्या ४ साइज १०॥×४॥ इञ्च । गाथा संख्या ६४

प्रति नं० ४ पत्र संख्या ४ साइज १०॥×४॥ इञ्च । गाथा संख्या ६५.

५२७
गोपालोत्तर तापनी टीका ।

रचयिता श्रीमद्विश्वेश्वर । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ३१. साइज १२×६॥ इञ्च । विषय–श्री कृष्णजी की स्तुति आदि ।

५२८
गोम्मटसार जीवकांड ।

रचयिता श्री नेमिचन्द्राचार्य । भाषा प्राकृत । पत्र संख्या २०. साइज १०×५॥ इञ्च । प्रति अपूर्ण है । दर्शन मार्गणा तक गाथायें है ।

५४०
चतुर्दश पूजा संग्रह ।

संग्रह कर्त्ता अज्ञात । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या २० साइज ११×५॥ इञ्च । पूजाओं का संग्रह मात्र है ।

५४५
चतुर्दशो चौपई ।

रचयिता श्री टीकम । भाषा हिन्दी । पत्र संख्या २०. साइज १२×५॥ इञ्च । पद्य संख्या ३५८ रचना संवत १७१२. लिपि संवत् १७६३ प्रशस्ति दी हुई है ।

५४ चतुर्विंशति गीत ।

रचयिता अज्ञात । भाषा हिन्दी । पत्र संख्या ५. साइज ६×४ इञ्च । चौबीस तीर्थकरों का स्तवन की गई है ।

चतुर्विंशतितीर्थंकर स्तुति ।

रचयिता श्री ब्रह्मलाल जिष्णु । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ४. साइज ११x४॥ इञ्च । संख्या २४.

प्रति नं० २. पत्र संख्या २. साइज ११x४॥ इञ्च ।

चतुर्विंशतजिनस्तुति ।

रचयिता धर्मघोषसूरि । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या २. साइज ११x४॥ इञ्च पद्य संख्या २८. लिपिकार श्री विद्याधर । प्रति सटीक है । यमक बंध स्तुति है ।

चतुर्विंशति तीर्थंकर पूजा ।

रचयिता आचार्य शुभचन्द्र । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ३५ साइज १०॥x६॥ इञ्च । प्रारम्भ के ७ पृष्ठ नहीं हैं ।

चतुर्विंशति तीर्थंकर पूजा ।

रचयिता अज्ञात । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ६६ साइज १०॥x५ इञ्च । लिपि संवत १८८७.

प्रति नं० २ पृष्ठ संख्या ४०. साइज ११x४॥ इञ्च । प्रति अपूर्ण है । प्रारम्भ के ३० पृष्ठ नहीं हैं ।

चतुर्विध सिद्धपूजा ।

रचयिता भट्टारक श्री भानुकीर्त्ति । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या २०३ साइज १०॥x४॥ इञ्च । लिपि संवत् १७४४. लिपिकार श्री हेमकीर्त्ति । ग्रन्थ साधारण अवस्था मे है ।

चंद्रकुमार वार्त्ता ।

रचयिता श्री प्रतापसिंह । भाषा हिन्दी । पत्र संख्या ६. साइज १०x४॥ इञ्च । विषय अमरावती के राजकुमार चन्द्रकुमार का कथानक है । हिन्दी बहुत ही साधारण है । लिपि संवत १८०६ है ।

प्रति नं० २. पत्र संख्या ६. साइज १०॥x४॥ इञ्च । लिपि संवत १८१६.

चंदनमलयागिरी की कथा ।

रचयिता अज्ञात । भाषा हिन्दी । पत्र संख्या ६. साइज १२x४॥ इञ्च । सम्पूर्ण पद्य संख्या १८०. लिपि संवत १७६२.

२००
चंदन षष्ठी पूजा ।

रचयिता श्री देवेन्द्रकीर्त्ति । भाषा संस्कृत । पृष्ठ संख्या ६. साइज ११॥×४॥ इञ्च ।

२०१
चन्द्रप्रभचरित्र ।

रचयिता भट्टारक श्री शुभचन्द्र । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ७२. प्रत्येक पृष्ठ पर १० पंक्तियां और प्रति पंक्ति मे ३५–३६ अक्षर । विषय आठवें तीर्थंकर श्री चन्द्रप्रभु का जीवन चरित्र ।

२०२
चन्द्रप्रभचरित्र ।

ग्रन्थकर्त्ता–महाकवि यशः कीर्त्ति । भाषा अपभ्रंश । पत्र संख्या १२० साइज ५×३॥ इञ्च । लिपि संवत् १५८३. अषाढ सुदी ३ बुधवार । ११ परिच्छेद । गाथा संख्या २३०६ प्रशस्ति अपूर्ण है क्योंकि ११८ और ११६. के पृष्ठ नहीं है । कागज और अक्षर दोनों अच्छे हैं ।

प्रति नं० २ पत्र संख्या १०८ साइज ८×४ इञ्च लिपि संवत १६११ चैत्र बुद ५ बृहस्पतिवार ग्रन्थ जीर्ण अवस्था मे है । प्रशस्ति पूर्ण नहीं है ।

प्रति नं० ३ पत्र संख्या ११६. साइज ७×३॥ इञ्च । लिपि संवत १६०३

प्रति नं० ४ पत्र संख्या १०१. साइज ११×५ इञ्च । प्रति अपूर्ण है । प्रारम्भ के पृष्ठ ४ से १८ तक, ५३ से ७० तक, तथा अन्त के पृष्ठ नही है ।

प्रति नं० ५. पत्र संख्या ७८. साइज ११×४॥ इञ्च । प्रति अपूर्ण है अन्त के पृष्ठ नहीं हैं ।

२०३
चंद्रलोकालंकार ।

रचयिता अज्ञात । भाषा । संस्कृत । पत्र संख्या ६ साइज ११॥×४॥ इञ्च । लिपि संवत १८३६. लिपिस्थान सवाई माधोपुर ।

२०४
चमत्कार चिंतामणि ।

रचयिता भट्टारक श्री जयकीर्ति । भाषा संस्कृत । पृष्ठ संख्या ६. साइज १०॥×४॥ इञ्च । विषय ज्योतिष । लिपि संवत् १७४१. श्रावण सुदी ५.

प्रति नं० २. पत्र संख्या ११. साइज ६॥×४ इञ्च ।

चरचाशतक।

रचयिता श्री द्यानतराय। भाषा हिन्दी। पत्र संख्या २५. साइज ११x५॥ इञ्च।

चर्चासमाधान।

भाषाकार पंडित भूधरदास जी। भाषा हिन्दी (पद्य)। पत्र संख्या १४१. साइज १०x४॥ इञ्च। रचना संवत १८०६. लिपि संवत १८३१

चारित्र शुद्धि विधान।

रचयिता अज्ञात। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ५५. साइज १२x५ इञ्च। ग्रन्थ अपूर्ण सा प्रतीत होता है क्योंकि अन्त में ग्रन्थ समाप्ति वगैरह कुछ भी नहीं दे रखी है।

चरित्रसार।

रचयिता श्री चामुण्डराय। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ६८ साइज १०॥x४॥ इञ्च। लिपि संवत १४१८ प्रति सटीक है।

प्रति नं० २. पत्र संख्या ७४ साइज ११x५॥ इञ्च। लिपि संवत १५७७.

प्रति नं० ३ पत्र संख्या ८१. साइज ११x५ इञ्च। लिपि संवत १५४२.

चिंतामणि पार्श्वनाथ पूजा।

रचयिता भट्टारक श्री शुभचन्द्र। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या १५. साइज १०॥x४॥ इञ्च। लिपि संवत १६८२.

प्रति नं० २ पत्र संख्या ११. साइज १०॥x५ इञ्च।

चिद्विलास।

रचयिता श्री दीपचंद काशलीवाल। भाषा हिन्दी (गद्य) पत्र संख्या ६५. साइज ८x६॥ रचना संवत १७७६. लिपि संवत १७७६. लिपि स्थान आमेर। विषय–सिद्धान्त चर्चा।

चूर्ण संग्रह।

संग्रह कर्ता अज्ञात। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ११. साइज १०॥x४॥ विषय आयुर्वेद।

२५२
चेतनकर्म चरित्र ।

रचयिता भैया भगवतीदास । भाषा हिन्दी । पत्र संख्या १७. साइज १०॥×५॥ इञ्च । पद्य संख्या २६८. रचना संवत १७३२ लिपि संवत १८४३ लिपिस्थान गोरगढ ।

२५३
चैत्यस्तवन ।

रचयिता अज्ञात । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या १. साइज ६×५॥ इञ्च । पद्य संख्या ६. भारत के प्रसिद्ध २ जैन मन्दिरों के नाम गिनाये गये है ।

२५४
चौबीस ठाणा ।

रचयिता नेमिचन्द्राचार्य । भाषा प्राकृत । पत्र संख्या २४. साइज ११×५॥ इञ्च ।

प्रति नं० २ पत्र संख्या २६ साइज ६॥×५ इञ्च ।

प्रति नं० ३ पत्र संख्या २६ साइज ११॥×५॥ इञ्च ।

प्रति नं० ४ पत्र संख्या ८० साइज १०॥×४॥ ।

२५५
चौबीस तीर्थंकर जयमाल ।

रचयिता अज्ञात । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ५१ साइज १०॥×४॥ इञ्च ।

२५६
चौबीस तीर्थंकर स्तुति संग्रह ।

रचयिता श्री माणिक्य । भाषा हिन्दी । पत्र संख्या १३ साइज ११×६॥ इञ्च । लिपि संवत १८४८.

२५७
चौदह मार्गणा ।

रचयिता अज्ञात । भाषा प्राकृत । पृष्ठ संख्या १६. साइज १०×४॥ इञ्च । चौदह मार्गणाओं पर छोटा किन्तु सुन्दर ग्रन्थ है ।

२५८
छन्दानुशासन ।

रचयिता श्री हेमचन्द्राचार्य । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ५६. साइज १३×५ इञ्च । प्रति सटीक है ।

२५९
छन्दोमञ्जरी ।

रचयिता श्री गगादास । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या १७. साइज १२॥×५ इञ्च । लिपि संवत १८३८। लिपि स्थान पाटलिपुत्र । लिपिकर्त्ता–भ० सुरेन्द्रकीर्ति ।

जन्मपत्री पद्धति ।

रचयिता अज्ञात । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ६. साइज १३×६॥ इञ्च । प्रति अपूर्ण है । अन्तिम पृष्ठ नहीं है ।

प्रति नं २. पत्र संख्या १६ साइज १०॥×४॥ इञ्च । प्रारम्भ में सभी धर्मों के देवताओं को नमस्कार किया गया है ।

जम्बूद्वीप प्रज्ञप्ति सग्रह ।

रचयिता भट्टारक श्री सुरेन्द्रकीर्ति । भाषा सस्कृत । पत्र संख्या ८२. साइज १२॥×६ इञ्च ।

जम्बूद्वीप प्रज्ञप्ति ।

रचयिता अज्ञात । भाषा प्राकृत । पत्र संख्या ६४. साइज १२×५ इञ्च । लिपि संवत १५१८.

जंबू द्वीपरचना ।

रचयिता अज्ञात । भाषा हिन्दी । पत्र सख्या ५. साइज ११॥×५ इञ्च ।

जम्बूस्वामिचरित्र ।

रचयिता महाकवि श्री देवदत्तसुत श्री वीर । भाषा अपभ्रंश । पत्र सख्या ७६ रचना संवत १०७६. लिपि सवत १५१६ । ६२ का पत्र नहीं है ।

जम्बूस्वामिचरित्र ।

रचयिता ब्रह्म श्री नेमिदास । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ७०. प्रत्येक पृष्ठ पर १२ पंक्तिया और प्रति पंक्ति मे ४०–४६ अक्षर । साइज १३×६ इञ्च । प्रति लिपि संवत् १७६३ भादवा बुदि ८ ।

प्रति नं० २. पत्र संख्या १०५ । साइज १०×४॥ इञ्च । प्रति लिपि संवत् १६६३ । लिपि स्थान आमेर ।

प्रति नं० ३. पत्र संख्या ७१. साइज १३×५ इञ्च । लिपि संवत् १८३१ । लिपि स्थान जयपुर ।

प्रति न ४. पत्र संख्या ५६. साइज ११॥×६ इञ्च ।

२२६
जम्बूस्वामिचरित्र ।

रचयिता श्री पांडे जिनदास । भाषा हिन्दी । पत्र संख्या ३५ साइज ८॥×५॥ इञ्च । सम्पूर्ण पद्य संख्या ५०३. रचना सवत् १६४२. लिपि संवत् १७५१ ।

प्रति नं० २ पत्र संख्या ३४ साइज १२×५॥ इञ्च । लिपि संवत् १७६३ लिपिस्थान जिहानाबाद जयसिंह पुरा । लिपिकार पं० दयाराम ।

प्रति नं० ३. पत्र सख्या २१ साइज १२×६ इञ्च ।

२२७
जिनगुण संपत्ति कथा ।

लिपि कर्त्ता श्री सेवा राम साह । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ४. साइज १०×४ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर ६ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति मे ३४-३८ अक्षर । लिपि संवत् १८४५. लिपि स्थान जयपुर ।

प्रति नं० २ पत्र सख्या २६. साइज ११×५ इञ्च ।

प्रति नं० ३. पत्र सख्या ३. साइज १०॥×४॥ इञ्च । केवल नंदीश्वर कथा ही है ।

२२८
जिनदत्तचरित्र ।

रचयिता पंडित लाखू । भाषा अपभ्रंश । पत्र संख्या १५७. साइज १०×४॥ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर १३ पंक्तिया और प्रति पंक्ति मे ३२-३६ अक्षर। रचना संवत् १२७५. लिपि संवत् १६११. लिपिस्थान आम्रगढ महादुर्ग । आचार्य धर्मचन्द्र के शासन काल म भट्टारक श्री प्रभाचन्द्र के शिष्य श्री ब्रह्मवेग ने ग्रन्थ की प्रति लिपि बनायी । ग्रन्थ समाप्ति के अन्त मे स्वयं कवि ने अपना परिचय दिया है । कितने ही स्थानों पर लिपि-कर्त्ता ने अपभ्रंश मे संस्कृत भी दे रक्खी है ।

प्रति नं० २. पत्र सख्या १५०. साइज १२×५ इञ्च । प्रति अपूर्ण । १५० से आगे के पृष्ठ नहीं है । प्रति कुछ २ जीर्णावस्था मे है ।

२२९
जिनदत्तचरित्र ।

रचयिता श्री गुणभद्राचार्य । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ५०. साइज १०॥×४॥ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पंक्तिया और प्रति पंक्ति मे ३०-३६ अक्षर । लिपि संवत् १६१६. प्रशस्ति है ।

प्रति नं० २. पत्र संख्या ४३. साइज १०×४ इञ्च । प्रति अपूर्ण है ।

प्रति नं० ३. पत्र संख्या ५३. साइज १०॥×४॥ इञ्च। प्रति अपूर्ण है।

प्रति नं० ४. पत्र सख्या ६५. साइज १०॥×५ इञ्च।

प्रति नं० ५ पत्र सख्या ५५. साइज १२×५ इञ्च। लिपि सवत १६६० प्रति जीर्ण शीर्ण है।

जिनदर्शनस्तवन।

रचयिता श्री पद्मनन्दी। भाषा संस्कृत। प्रति पत्र संख्या ११ साइज ११×५ इञ्च। प्रति नवीन और स्पष्ट है।

प्रति नं० २. पत्र संख्या ११. साइज ६॥×६ इञ्च। प्रति नवीन है।

जिननाथस्तुति।

रचयिता आचार्य समन्तभद्र। पृष्ठ संख्या २०. भाषा संस्कृत। साइज ११॥×४॥ इञ्च। लिपि सवत १७३४. लिपि कर्त्ता नंदराम। प्रति अपूर्ण है। प्रथम पृष्ठ नही है।

जिनपिंजस्तोत्र।

रचयिता अज्ञात। भाषा संस्कृत। पत्र सख्या ३. साइज ६×५॥ इञ्च। विषय-स्तुति। प्रति अशुद्ध है।

जिनयज्ञकल्प।

रचयिता प० आशाधर। भाषा संस्कृत। पत्र सख्या १२६. साइज १२×४॥ इञ्च। प्रति अपूर्ण है। प्रारम्भ तथा अनन्त के बहुत से पृष्ठ नही हैं।

प्रति नं० २ पत्र सख्या १५५ साइज १३×५॥ इञ्च। लिपि सवत १७७२.

प्रति नं० ३ पत्र संख्या १०३ साइज १२॥×६ इञ्च। लिपि सवत १७५८, लिपि स्थान आमेर।

प्रति नं० ४ पत्र सख्या १२३ साइज ११×५ इञ्च। लिपि सवत १५६०. श्री शान्तिदास ने ग्रंथ की प्रतिलिपि करवाई।

प्रति नं० ५ पत्र संख्या १०४ साइज ११×५॥ इञ्च। प्रति अपूर्ण हैं। १०४ से आगे के पृष्ठ नहीं है।

प्रति नं० ६. पत्र सख्या १६५. साइज ११×४॥ इञ्च। लिपि संवत् १८५८।

प्रति नं० ७. पत्र सख्या ३६. साइज १०॥×५॥ इञ्च।

प्रति नं० ८. पत्र संख्या १११. साइज १३॥×४॥ इञ्च।

२३३
जिनसहस्रनाम टीका।

टीकाकार श्री अमर कीर्ति। भाषा संस्कृत। पत्र सख्या ८७. साइज ६॥×४॥ इञ्च।

२३५
जिनसहस्रनाम स्तोत्र।

रचयिता पं० आशाधर। भाषा संस्कृत। पृष्ठ संख्या २३. साइज ११॥×५॥ इञ्च।

प्रति नं० २ पत्र सख्या ६. साइज ८॥×५ इञ्च।

प्रति नं० ३ पत्र सख्या १६१. साइज ११×५। इञ्च। प्रति सटीक है। टीकाकार आचार्य श्रुत-सागर। भाषा संस्कृत। लिपि संवत् १७८५. लिपि स्थान मिलाय (जयपुर)

प्रति नं० ४ पत्र संख्या ३६ साइज ६×४ इञ्च।

प्रति नं० ५ पृष्ठ सख्या १३० साइज १२×५॥ इञ्च। लिपि संवत् १८०३ लिपिस्थान जयपुर। प्रति सटीक है।

२३६
जिनसहस्रनामस्तोत्र।

रचयिता श्री जिनसेनाचार्य। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ५७. साइज ११×६ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर १४ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति मे ३८—४६ अक्षर। प्रति सटीक है। टीकाकार श्री अमरकीर्त्ति।

प्रति नं० २ पत्र सख्या ५. साइज ११×६ इञ्च।

प्रति नं० ३. पत्र सख्या ६ साइज १०×४॥ इञ्च।

प्रति नं० ४. पत्र संख्या ४. साइज १०॥×४॥ इञ्च।

प्रति नं० ५. पत्र संख्या ६. साइज १०॥×४॥ इञ्च।

जयकुमार पुराण।

रचयिता ब्रह्म श्री कामराज। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ७६. साइज ११॥×५ इञ्च। लिपि संवत् १७१६. इसमे जयकुमार का जीवन चरित्र है।

प्रति नं० २. पत्र संख्या ८५. साइज ११॥×५ लिपि संवत् १६६१ ।

जल्पमञ्जरी ।

रचयिता अज्ञात । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या २६. साइज १०×४॥ इञ्च । लिपिकर्त्ता पं० प्रेमकुशल । विषय दर्शन शास्त्र ।

ज्येष्ठजिनवर पूजा ।

रचयिता ब्रह्म कृष्णदास । भाषा हिन्दी । पत्र संख्या २. साइज १०॥×६॥ इञ्च ।

ज्योतिषचक्रविचार ।

रचयिता अज्ञात । भाषा हिन्दी । पत्र संख्या २१ साइज ११×५ इञ्च । लिपि संवत् १६०५ ।

ज्योतिष फलादेश ।

रचयिता अज्ञात । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या १६. साइज ११×५॥ इञ्च । प्रति अपूर्ण है ।

ज्योतिषरत्नमाला ।

रचयिता श्री पति महादेव । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या १२५. साइज १०×५ इञ्च । प्रथम पृष्ठ और अन्तिम पृष्ठ नहीं है ।

ज्योतिष रत्नमाला ।

रचयिता श्री श्रीपति । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ३६ साइज १०॥×५॥ इञ्च । ग्रन्थ की स्थिति साधारण है ।

प्रति नं० २. पत्र संख्या ४६. साइज १०॥×५॥ इञ्च । प्रति अपूर्ण है । ४६ से आगे के पृष्ठ नहीं है ।

ज्योतिष रत्नमाला ।

रचयिता अज्ञात । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ६३. साइज ११×५॥ इञ्च । लिपि संवत् १६५५. विषय—ज्योतिष ।

प्रति नं० २. पृष्ठ संख्या २७. साइज १०×४ इञ्च । लिपि संवत् १७७५ ।

२४५ ज्योतिष पट्पनाशिका।

रचयिता श्री भट्टोत्पल। भाषा संस्कृत हिन्दी। पत्र संख्या १४ साइज १०॥×५ इञ्च। लिपि संवत १७०४ लिपिकर्त्ता प० तेजपाल।

ज्योतिष सार।

रचयिता श्री नारचन्द्र। पत्र संख्या १५ साइज ६×४ इञ्च। ज्योतिष शास्त्र पर छोटी सी पुस्तक सूत्र रूप मे है।

प्रति नं० २ पत्र संख्या २० साइज ११×५ इञ्च।

ज्वरतैमिरभास्कर।

रचयिता कायस्थ चामुण्डराय। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ५५. साइज १०× इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर १० पंक्तियां और प्रति पंक्ति मे ३६-४२ अक्षर। लिपि संवत १७३१। लिपि स्थान सांगानेर। प्रति अपूर्ण। प्रथम २२ पृष्ठ नहीं है। विषय आयुर्वेद।

ज्वाला मालिनी स्तोत्र।

रचयिता अज्ञात। भाषा संस्कृत। साइज १०॥×४॥ इञ्च। पत्र संख्या १।

जातकपद्मकोष।

रचयिता अज्ञात। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ६. साइज ११×४॥ इञ्च।

जातकाभरण।

रचयिता अज्ञात। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या १०. साइज १२॥×६॥ इञ्च। प्रति अपूर्ण है। अन्तिम पृष्ठ नहीं है।

प्रति नं० २ पत्र संख्या २७ साइज १२×५॥ इञ्च। प्रति अपूर्ण है।

जीवन्धर चरित्र।

रचयिता आचार्य शुभचन्द्र। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ६५ साइज १०॥×४॥ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पंक्तियां, प्रति पंक्ति मे ३२-३८ अक्षर। प्रतिलिपि संवत १६६३. प्रशस्ति है।

प्रति नं० २। पत्र संख्या ११५। साइज १०॥×४॥ इञ्च। प्रथम पत्र नहीं है।

प्रति नं० ३। पत्र संख्या ६६। साइज ११×४॥ इञ्च। प्रति अपूर्ण है। अन्त के पृष्ठ नहीं है।

जीवविचार प्रकरण।

रचयिता अज्ञात। भाषा प्राकृत। पत्र संख्या ६ साइज ६×४॥ इञ्च। गाथाओं का हिन्दी मे अर्थ भी दे रखा है।

ज्येष्ठ जिनवर की कथा।

संग्रहकर्त्ता अज्ञात। भाषा हिन्दी। पत्र १० साइज १०×४ इञ्च। प्रति अपूर्ण है। उक्त कथा के अतिरिक्त अन्य भी कथाये है। ये कथायें व्रत कथा कोष मे ली गयी है।

जैनतर्कपरिभाषा।

रचयिता पं० यशोविजयगणि। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या १५. साइज १०×४॥ इञ्च। लिपि संवत् १७८४. लिपिस्थान सितपुर। लिपि कर्त्ता–मुनि विवेकराज।

जैन पूजा पाठ संग्रह।

संग्रह कर्त्ता अज्ञात। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या १८८ साइज ११×४॥ इञ्च। ६२ पूजाओं का संग्रह है।

जैनवैद्यक।

रचयिता अज्ञात। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या १६. साइज १३×५॥ इञ्च। प्रति अपूर्ण है। १८ से आगे के पत्र नहीं हैं।

जैनशतक।

रचयिता पं० भूधरदासजी। भाषा हिन्दी। पत्र संख्या १४ साइज ८×५ इञ्च। रचना संवत् १७८७.

जैनेन्द्रव्याकरण।

रचयिता श्री पूज्यपादस्वामी। टीकाकार श्री अभयनन्दि भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ४७७. साइज १०॥×६ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति मे ३६–४० अक्षर। लिपि संवत १८६६. प्रति लिपि बहुत सुन्दर और स्पष्ट है।

प्रति नं० २ टीकाकार श्री सोमदेव। पत्र संख्या २५१ साइज ११x५॥ इञ्च। पत्र एक दूसरे के चिपक रहे है।

२५८
तत्त्वचिंतामणी।

रचयिता श्री जयदेवमिश्र। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या १६७ साइज १०x४॥ इञ्च। विषय—न्याय।

प्रति नं० २ पत्र संख्या ६६ साइज ११॥x५॥ इञ्च। ग्रन्थ समाप्ति पर "श्री महोपाध्याय श्री गणेश कृते तत्त्वचिंतामणौ ...यखण्डः" इस प्रकार श्री गणेश का नाम देरखा है। दोनो ग्रन्थो मे कोई अन्तर नहीं है।

२६०
तत्त्वधर्मामृत।

रचयिता श्री चन्द्रकीर्त्ति। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या २७. साइज १०॥x५॥ इञ्च। सम्पूर्ण। ... संख्या ४७७ विषय—तत्त्वविवेचन। लिपि संवत् १५३५।

आरम्भः—

शुद्धात्मरूपमापन्नं प्रणिपत्य गुरो गुरु।
तत्त्वधर्मामृत नाम वक्ष्ये ... श्रृणु॥ १॥

अन्तिम पाठ —

न तथा रिपु न शस्त्र न विषोग्नि दारुणो न च व्याधि।
... नयति पुरुष यथा हि कटुकाक्षरा वाणी॥ १॥

२६१
तत्त्वसार।

रचयिता श्री देवसेन। भाषा प्राकृत। पत्र संख्या ४ साइज १२x५॥ इञ्च। गाथा संख्या ७५।

प्रति नं० २ पत्र संख्या १०. साइज १०x५॥ इञ्च। रचना संवत् १६५२।

२६२
तत्त्वज्ञान तरंगिणी।

रचयिता भट्टारक श्री ज्ञान भूषण। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या १८ साइज १२॥x५॥ इञ्च। रचना संवत् १५६० लिपि स्थान जयपुर।

प्रति नं० २ पत्र संख्या ३८ साइज ६॥x६ इञ्च। लिपि संवत् १८०८।

प्रति नं० ३. पत्र संख्या २०. साइज ११।।×६ इञ्च। लिपि संवत् १८२३. लिपिस्थान जयपुर।

३ तत्त्वानुसंधान।

रचयिता श्री महादेव सरस्वति। भाषा संस्कृत। पृष्ठ संख्या २२. साइज १२×४ इञ्च। लिपि संवत् १७६६. फागण बुदि ३, विषय-दर्शन। ग्रन्थ के बनाने वाले के सम्बन्ध में लिखा है कि वे परमहंस परि-व्राजकाचार्य श्रीमत् स्वयं प्रकाशानंद के प्रमुख शिष्य हैं।

४ तत्त्वानुशासन।

रचयिता श्री नागसेन मुनि। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या १४ साइज ११।।×४।। इञ्च। विषय-तत्त्वों का वर्णन। १३ वां पृष्ठ नहीं है। श्री ब्रह्मचारी गौतम के पढने के लिये ग्रंथ की प्रति लिपि की गई।

प्रति नं० २ पृष्ठ संख्या १३ साइज १०।।×४।। इञ्च। प्रथम पृष्ठ नहीं है।

तत्त्वार्थरत्नप्रभाकर।

रचयिता श्री प्रभाचन्द्रदेव। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या १०० साइज ११।।×४।। इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३०-३६ अक्षर। रचना संवत् १४८० ग्रन्थ के अन्त में विस्तृत प्रशस्ति दी हुई है। यह तत्त्वार्थ सूत्र पर एक टीका है।

तत्त्वार्थराजवार्तिक।

रचयिता श्री भट्टाकलंक देव। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ४०२ साइज ११×४।। इञ्च। लिपि संवत् १८८२. लिपिकार ने जयपुर के महाराजा सवाई जयसिंह का उल्लेख किया है।

तत्त्वार्थसार।

रचयिता श्री अमृतचन्द्र सूरी। भाषा संस्कृत पत्र संख्या २८ साइज १०।।×४।। इञ्च। सम्पूर्ण श्लोक संख्या ७२४ लिपि संवत् १६१४ लिपि संवत् के ऊपर किसी ने बाद में पीला रंग डाल दिया है।

तत्त्वार्थसार दीपक।

रचयिता भट्टारक श्री सकलकीर्ति। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ७२ साइज १०।।×४ इञ्च। लिपिस्थान सवाईजयपुरा (जयपुर)।

मंगलाचरण.—

ज्ञानानंदैकरूपाय विश्वानंतगुणान्वये ।
शिवाय मुक्तिबीजाय नमोस्तु परमात्मने ।। १ ।।

अन्तिम पद्यः—

अममगुणनिधान स्वर्गमोक्षैकमार्गं ।
भवभयचकिताना मच्छरण्य गरिष्ठ ।।
नृसुरपतिभिरच्य मार्गितं भव्यपूर्णं ।
जयतु जगति जैनं शासन धर्ममूलं ।। १ ।।

२६८

तत्त्वार्थ सूत्र ।

...यता श्री उमास्वामि । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ७ साइज १०×४।। इञ्च । लिपि स न् १७५ १ लिपिकर्त्ता श्री चन्द ।

२७०

तत्त्वार्थ सूत्रटीका ।

टीकाकार आचार्य श्रुतसागर । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ४४४ साइज ११।।×४।। इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर ६ पंक्तियां और प्रति पंक्ति में ३०-३६ अक्षर ।

प्रति लिपि नं० २ पत्र संख्या २८३ साइज १०।।×४।। इञ्च । लिपि संवत १७४७. लिपि स्थान—

जहानाबाद । भट्टारक श्री कल्याणसागर के शिष्य श्री जयवंत तथा श्री लक्ष्मण ने ग्रन्थ की प्रतिलिपि बनायी ।

२७१

तत्त्वार्थ सूत्र सटीक ।

भाषाकार—अज्ञात । भाषा हिन्दी गद्य पत्र संख्या १५६ साइज ११।।×४।। इञ्च । लिपि संवत १८८२. भाषा शैली अच्छी है । दूसरे अध्याय से शुरू हुई है ।

प्रति नं० २ पत्र संख्या ५१. साइज १२×५ इञ्च । प्रति अपूर्ण ५१ से आगे के पृष्ठ नहीं है ।

प्रति नं० ३ पत्र संख्या १०१ साइज ११।।×५ इञ्च । प्रति सुन्दर है ।

तत्त्वार्थसूत्र भाषा ।

टीकाकार मुनि श्री प्रभाचन्द्र । भाषाकार अज्ञात । पत्र संख्या १५२ साइज ८॥×४॥ इञ्च । लिपि संवत १८०३ लिपिस्थान टौंक । श्री खुशालराम ने पांडे कुम्भकरण के लिये प्रतिलिपि बनायी । कही २ सूत्रों की टीका संस्कृत में और हिन्दी में दी हुई है और कही केवल हिन्दी में ही लिखी हुई है ।

तत्त्वार्थसूत्रमार्थ ।

अर्थ कर्त्ता अज्ञात । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ३७ साइज १०॥×४ इञ्च । सूत्रों का अर्थ सरल संस्कृत में दे रखा है । प्रति अपूर्ण है । अन्तिम दो पृष्ठ नही है ।

तर्क चन्द्रिका ।

रचयिता श्री विश्वेश्वर । भाषा संस्कृत । पृष्ठ संख्या २२ साइज ८॥×४॥ इञ्च । लिपि संवत १८२६ ।

तर्कपरिभाषा ।

रचयिता श्री केशवमिश्र । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ३७ साइज ११×४ इञ्च । लिपि संवत १७६३ चैत्र शुक्ला पूर्णिमा । लिपि कर्त्ता श्री रूपकरण । लिपिस्थानचन्द्रपुर नगर ।

तर्क संग्रह ।

रचयिता श्री अन्न भट्ट । भाषा संस्कृत । पृष्ठ संख्या १३ साइज १०॥×४॥ इञ्च ।

प्रति नं० २ पृष्ठ संख्या १० साइज १०×६ इञ्च । प्रति सटीक है । टीकाकार श्री महत्तभट्टोपाध्याय । लिपि संवत १७८२. लिपिकर्त्ता-श्री बलभद्र तिवाडी । इन दोनों के अतिरिक्त ७ प्रतियां और है ।

तर्कामृत ।

रचयिता श्री मज्जगदीश भट्टाचार्य । भाषा संस्कृत । पृष्ठ संख्या २१. साइज ९×४॥ इञ्च । विषय-न्याय । लिपि संवत १८३० ।

ताजिक भूषण ।

रचयिता श्री दैवज्ञ ढूंढिराज । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या २६. साइज १२×४॥ इञ्च । विषय-ज्योतिष । प्रति अपूर्ण है अन्तिम पृष्ठ नही है ।

प्रति नं० २. पत्र संख्या १६. साइज १०।x४॥ इञ्च।

२४९
ताजिक शास्त्र।

रचयिता अज्ञात। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ३ साइज १०x४ इञ्च। लिपि संवत १६५५. लिपि स्थान चामड नगर।

२५०
तिथिस्वर।

रचयिता अज्ञात। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या १ साइज ११x४ इञ्च। विषय–ज्योतिष।

२५१
तीन चौबीसी पूजा।

रचयिता श्री विद्याभूषण। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या १४. लिपि संवत १७४६।

२५२
तीन चौबीसी पूजा।

रचयिता अज्ञात। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ६ साइज १२x४॥ इञ्च। केवल तीन चौबीसियों की। ... ही पूजा है।

२५३
तीर्थंकर परिचय।

लिपिकार पं० बिहारी। भाषा हिन्दी। पत्र संख्या १६। साइज ११x४। इञ्च। विषय— २४ तीर्थकरों के माता पिता, गर्भ, जन्म, तप, केवल, मोक्ष, आयु, आसन आदि का वर्णन। लिपि काल संवत् १७२७। तीन प्रतियां और हैं।

२५४
तीस चौबीसी।

लिपिकर्त्ता अज्ञात। पत्र संख्या ७ साइज १०॥x४॥ इञ्च। तीस चौबीसियों के नाम अलग २ दे रखे है।

'द'

२५५
द्रव्यगुणशतश्लोक।

रचयिता श्री मल्ल। भाषा संस्कृत। पृष्ठ संख्या ११ साइज १२x४॥ इञ्च। विषय–आयुर्वेद।

२५६
द्रव्य संग्रह।

रचयिता श्री नेमिचन्द्राचार्य। टीकाकार अज्ञात। पत्र संख्या ११६. साइज ७॥x६ इञ्च। प्रथम

तीन तथा ११६. से आगे के पृष्ठ नहीं है।

प्रति नं० २. पत्र संख्या ५. साइज ११×५॥ इञ्च। लिपि संवत् १८४४. भट्टारक श्री सुरेन्द्रकीर्ति ने ग्रन्थ की लिपि बनायी। केवल तीसरा अध्याय है।

प्रति नं० ३. पत्र संख्या १८. साइज ६॥×५ इञ्च। लिपि संवत १७३४. भाषा गद्य में है।

७ द्रव्यसंग्रह सार्थ।

मूलकर्त्ता आचार्य श्री नेमिचन्द्र। हिन्दी टीकाकार श्री पर्वत धर्मार्थी। भाषा गुजराती। पत्र संख्या ४३. साइज १२×५॥ इञ्च। लिपि संवत् १७६७।

८ द्रव्यसंग्रह सटीक।

मूलकर्त्ता श्री नेमिचंद्राचार्य भाषा प्राकृत। भाषाकर्त्ता श्री रामचन्द्र। भाषा हिन्दी (गद्य)। पत्र संख्या ९१. साइज १०×४॥ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर संख्या १६. पंक्तिया तथा प्रति पंक्ति में ४८-५४ अक्षर।

प्रति नं० २. पृष्ठ संख्या ८. साइज १०॥×४ इञ्च। केवल मूलमात्र है।

प्रति नं० ३. पृष्ठ संख्या ८. साइज ६॥×४॥ इञ्च। प्रति लिपि संवत् १७६८ लिपिस्थान-जयपुर।

प्रति नं० ४. पृष्ठ संख्या ६. साइज १०×५॥ इञ्च। लिपि संवत १६५६ पौष बुदि ११

प्रति नं० ५. पृष्ठ संख्या १५. साइज १०×४॥ इञ्च। लिपि सवत १७७३ लिपिस्थान पाटण।

प्रति नं० ६. पृष्ठ सख्या ६. साइज ११×५ इञ्च। लिपि सवत १६०४. लिपि स्थान माधोपुर।

प्रति नं० ७. पृष्ठ संख्या ११. साइज ११×५ इञ्च।

प्रति नं० ८. पृष्ठ संख्या ६. साइज १०॥×४॥ इञ्च।

प्रति नं० ६. पृष्ठ संख्या ३. साइज ११॥×५॥ इञ्च।

प्रति नं० १०. पृष्ठ संख्या २५. साइज ११×५ इञ्च। प्रति सटीक है। टीकाकार श्री प्रभाचंद्र कवि। टीका की भाषा सस्कृत है। लिपि संवत् १८०२.

प्रति नं० ११. पृष्ठ संख्या ३४ साइज ११॥×५ इञ्च। प्रति सटीक है; टीकाकार श्री कवि प्रभाचन्द्र भाषा संस्कृत।

प्रति नं० १२ पृष्ठ सख्या ४. साइज ११॥×५॥ इञ्च। लिपि संवत १८२१. लिपि स्थान जयपुर।

प्रति नं० १३. पृष्ठ संख्या १० साइज १०॥×५ इञ्च। वेष्टन नं० ६६१.

२४९ दर्शनसार।

रचयिता देवसेन। भाषा प्राकृत। पत्र संख्या ५ साइज १२×४॥ इञ्च। गाथा संख्या ५२ लिपि संवत १५५३.

प्रति नं० २ पत्र सख्या ५ साइज ११॥×५ इञ्च। लिपि संवत १७५५ लिपिस्थान सांगानेर।

२५० दशलक्षण जयमाला।

रचियता पंडित भाव शर्मा। भाषा प्राकृत–संस्कृत। पत्र संख्या १०. साइज १०॥×४॥ इञ्च। लिपि-स्थान–नेवटा (जयपुर) लिपिकार पंडित रूपचन्द्र। आठ प्रतियां और हैं।

२५१ दशलक्षण जयमाला।

रचयिता प० रइधू। भाषा अपभ्रंश। पत्र संख्या ६ साइज १०॥×५॥ इञ्च। लिपि संवत १८२२. लिपि कर्त्ता श्री केशवदास।

प्रति नं० २. पत्र संख्या ७ साइज १०॥×४॥ इञ्च। प्रति पूर्ण है।

प्रति नं० ३. पत्र सख्या १०. साइज ११×५ इञ्च। लिपि सवत १८८५ लिपि स्थान जयपुर। लिपिकर्त्ता महात्मा शुभराम।

२५२ दशलक्षण जयमाल।

रचयिता अज्ञात। भाषा हिन्दी। पत्र संख्या १०. साइज १०॥×५॥ इञ्च। लिपि संवत १८०१. लिपिस्थान मालपुरा (जयपुर) लिपिकार श्री दयाराम।

२५३ दशलक्षण कथा।

रचयिता भट्टारक श्री ब्रह्म ज्ञान सागर। भाषा हिन्दी। साइज १०×४॥ इञ्च। लिपि संवत १८३८. लिपिस्थान पाटण। लिपिकर्त्ता श्री सुरेन्द्रकीर्त्ति।

दशलक्षणव्रतोद्यापनपूजा ।

रचयिता भ० श्री महिभूषण । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या १६, साइज ११॥×५॥ इञ्च । प्रति नवीन शुद्ध और सुन्दर है ।

दृष्टान्तशतक ।

रचयिता अज्ञात । भाषा संस्कृत । पृष्ठ संख्या ७७ साइज १०×४॥ इञ्च । विषय-अलंकार ।

दानकथा ।

संग्रहकर्त्ता अज्ञात । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या १२ साइज १०×४ इञ्च । पुस्तक में कितनी ही प्रकार की दान कथाओं का वर्णन संक्षिप्त में दिया हुआ है ।

दान महिमा ।

रचयिता हंसराज वच्छराज । भाषा हिन्दी । पत्र संख्या ३० साइज ११×४ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर १५ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ४२।४८ अक्षर । रचना संवत् १६८०, लिपि संवत् १८०५

द्वादशमासी ।

रचयिता--मुनि माणिक्यचन्द्र । भाषा हिन्दी । पत्र संख्या ४ साइज १०×४॥ इञ्च । विषय-भगवान नेमिनाथ का बारह मास का वर्णन ।

द्वादशव्रतमंडलोद्यापनपूजा ।

रचयिता भट्टारक श्री देवेन्द्रकीर्त्ति भाषा संस्कृत । पत्र संख्या १२ साइज १२×५॥ इञ्च ।

दिलारामविलास ।

रचयिता श्री दौलतराम । भाषा हिन्दी । पत्र संख्या १५८, साइज ६।×५॥ इञ्च । रचना संवत् १७६८ विलास के अन्त में अच्छी प्रशस्ति दी हुई है जिसमें राजवंश, नगर और कविवंश का वर्णन दिया हुआ है ।

द्विसंधानकाव्य ।

रचयिता श्री नेमिचन्द्र । टीकाकार देवनन्दि । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या २८० साइज ११×५ इञ्च ।

लिपि संवत् १६७६ काव्य अपूर्ण है ११३ से पूर्व के पृष्ठ नहीं है।

३०२

दुर्गपदप्रबोध।

रचयिता श्री हेमचन्द्राचार्य। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ३० साइज १०॥x४ इञ्च। लिपि संवत १८१२. आचार्य हेमचन्द्र की लिंगानुशासन में से कुछ विषय ले लिया गया है।

३०३

दुर्घट श्लोकव्याख्या।

व्याख्याकार अज्ञात। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या १८. साइज १०॥x५ इञ्च। सम्पूर्ण श्लोक संख्या ८. प्रति अपूर्ण है। प्रारम्भ के ८ पृष्ठ नहीं है।

३०४

दुष्टवादिगजांकुश।

रचयिता श्री सुधाकरधार। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ५. साइज ११x५॥ इञ्च। प्रथम पृष्ठ नहीं है।

३०५

दूतांगद नाटक।

रचयिता श्री सुभट। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ४ साइज ११॥x४ इञ्च। लिपि संवत १५३४.

३०६

देवसिद्ध पूजा।

रचयिता अज्ञात। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ३१. साइज १०॥x५ इञ्च। प्रति सटीक है। टीका संस्कृत में है। टीकाकार का नाम कहीं पर भी नहीं लिखा हुआ है।

३०७

दौर्गसिंह वृत्ति।

वृत्तिकार अज्ञात। भाषा संस्कृत। पृष्ठ संख्या १२५ साइज ११x५॥ इञ्च। विषय-व्याकरण। सम्पूर्ण ग्रन्थ अष्ट पादों में विभक्त है। लिपि संवत् १६६२ प्रारम्भ के १४ पत्र नहीं है। बीच के बहुत से पृष्ठ फटे हुये हैं।

३०८

दोहापाहुड।

रचयिता आचार्य कुन्दकुन्द। भाषा प्राकृत। पत्र संख्या १६ साइज ११॥x५ इञ्च। लिपि संवत १६०२. लिपिकार ने बादशाह शाहआलम का उल्लेख किया है।

धा

धनकुमारचरित्र

ग्रन्थकर्त्ता पं० रइधू। भाषा अपभ्रंश पत्र संख्या ३१. साइज ७×३।। इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर ६ पंक्तियां और प्रत्येक पंक्ति मे २८-३४ अक्षर। लिपि संवत् १६३६. ग्रन्थ अच्छी हालत मे है। अन्त मे प्रशस्ति है।

१० धनपालरास।

रचयिता ब्रह्म श्री जिनदास। भाषा हिन्दी। पत्र संख्या ४. साइज ११×५ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर १२ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति मे ३२-३८ अक्षर लिपि संवत १८२८।

मंगलाचरण--

वीर जिनवर २ नमु तेमार तीथकर वो वीसमो।
वाञ्छित फल बहुदान दातार सारद सामिणि वीनवुं ।। १ ।।

अन्तिम—

दानतणो फलरूबडो जस विस्तरो अपार।
धनपाल साह का निरमलो, मरगे लीयो अवतार ।।
इम जाणि निश्चय करी दान सुपात्रे देउ।
श्रावक भवियण सिर मलो मनुष्य जन्म सफल करलेउ ।।
श्री सकल कीर्ति गुरु प्रणमीने श्री भुवन कीर्ति भवतार।
दान तणा फल वरणया ब्रह्म जिणदास कहे सार ।।

११ धन्यकुमारचरित्र।

रचयिता ब्रह्मनेमिदत्त। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या २७ साइज ११×४।। प्रत्येक पृष्ठ पर ६ पंक्तियां और प्रत्येक पंक्ति मे २६-३२ अक्षर।

प्रति न० २ पत्र संख्या ८ साइज १०।।×४।। प्रति अपूर्ण। आठ से अधिक पृष्ठ नही है।

प्रति न० ३ पत्र संख्या ३३ साइज १०×४।। इञ्च। प्रतिलिपि संवत् १७२८।

प्रति न० ४. पत्र संख्या १६ साइज ११।।×५ इञ्च। लिपि संवत् १७७४।

३५२
धन्यकुमार चरित्र।

रचयिता आचार्य श्री गुणभद्र। भाषा संस्कृत पत्र संख्या ३८ साइज ११×४॥ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पंक्तियां और प्रत्येक पंक्ति में ३५–४२ अक्षर।

३५३
धन्यकुमार चरित्र

रचयिता भट्टारक श्री सकलकीर्ति। भाषा संस्कृत। पत्र-संख्या ३४. साइज १२×५॥ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर १२ पंक्तियां और प्रति पंक्ति में ३७–४१ अक्षर। लिपि संवत १८१३।

प्रति नं० २. पत्र संख्या ३४ साइज ७॥×४॥ लिपि संवत १५३३. पद्य संख्या ८५०।

३५४
धर्मचक्रपूजा।

रचयिता अज्ञात। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या १६. साइज १०×५ इञ्च। लिपि संवत १७०६ लिपि-स्थान मालपुरा। लिपिकर्ता आ. श्री कमलकीर्तिजी।

३५५
धर्म चचक्रविधान।

रचयिता श्री यशःनन्दि। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या २१ साइज ११॥×५॥ इञ्च।

३५६
धर्म दोहावली।

संग्रह कर्ता पं० जोधराज गोदीका। भाषा हिन्दी। पत्र संख्या ११ साइज १२×५॥ इञ्च। दोहावली संख्या १४४. लिपि संवत १८२०।

३५७
धर्मोपदेश श्रावकाचार।

रचयिता श्री पं० धर्मदास। भाषा हिन्दी। पत्र संख्या ४६ साइज ८॥×५॥ इञ्च प्रत्येक पृष्ठ पर १३ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में २८–३४ अक्षर। रचना संवत १५७८ प्रथम पृष्ठ नहीं है।

३५८
धर्मोपदेश।

रचयिता अज्ञात। भाषा हिन्दी। पृष्ठ पर १० पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में १८–२४ अक्षर। प्रति अपूर्ण है। प्रथम पृष्ठ तथा अन्तिम पृष्ठ नहीं है।

धर्म्मोपदेश पीयूष ।

रचयिता श्री नेमिदत्त । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या २२ साइज १०×४।। इञ्च । लिपि संवत् १६३५. विषय-श्रावकों के आचार व्यवहार का वर्णन । दो प्रतियां और है ।

धर्म संग्रहश्रावकाचार ।

रचयिता पंडित मेधावी । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ६४. साइज ११×५ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर ६ पंक्तियां और प्रति पंक्ति मे ३८-४४ अक्षर । रचना संवत् १५४० ग्रन्थ के अन्त मे ४१ पद्यो मे कवि का परिचय दिया हुआ है ।

प्रति नं० २ पत्र संख्या ८५. साइज १०।।×४।। इञ्च । लिपि संवत १५४२ ।

प्रति नं० ३. पत्र संख्या ७०. साइज ११×५ इञ्च ।

प्रति नं० ४ पत्र संख्या १०१ साइज ११×४।। इञ्च। लिपि संवत १६१२. लिपिस्थान चाटसु। लिपिकार श्री शालगराम ।

धर्म परीक्षा ।

रचयिता आचार्य श्री अमितिगति । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या १२५ साइज १०×४।। इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर ८ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३४-४० अक्षर । रचना संवत १०७० लिपि संवत १६६६ ।

प्रति नं० २ पत्र संख्या ७८ साइज १२×६ इञ्च ।

प्रति नं० ३. पत्र संख्या १४५, साइज १०×४।। ।

प्रति नं० ४ पत्र संख्या ६० साइज ११।।×५ इञ्च । लिपि संवत १७३३. बादशाह मुलकगीर के शासन काल मे माहदरा नामक स्थान पर श्री निमलदास ने ग्रथ की प्रतिलिपि करायी ।

प्रति नं० ५ पत्र संख्या ८१ साइज १०।।×४।। इञ्च । लिपि संवत १५६६. लिपिस्थान दृष्टिकापथ दुर्ग। साध्वी सुलेखा ने शास्त्र की प्रतिलिपि करायी ।

प्रति नं० ६. पत्र संख्या ३५. साइज १०।।×५ इञ्च । प्रति अपूर्ण है ।

प्रति नं० ७ पत्र संख्या ७६ साइज १०।।×४ इञ्च । आधे से अधिक ग्रन्थ को दीमक ने खा लिया है ।

प्रति नं० ८. पत्र संख्या १४४ साइज १०×४॥

३५२ धर्म परीक्षा ।

रचयिता श्री मनोहरदास । भाषा हिन्दी पद्य । पत्र संख्या १२४. साइज ११×५॥ इञ्च । सम्पूर्ण पद्य संख्या ३०००. लिपि संवत् १८०२ प्रशस्ति दी हुई है ।

प्रति नं० २ पत्र संख्या ५१. साइज १२॥×५॥ इञ्च ।

प्रति नं० ३ पत्र संख्या ८०. साइज १२॥×६ इञ्च ।

३५३ धर्म परीक्षा ।

रचयिता पं० हरिषेण । पत्र संख्या ६४. भाषा अपभ्रंश । साइज ११॥×५॥ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर १२ पंक्तियां और प्रति पंक्ति में ४४-५० अक्षर । रचना संवत् ११३२

प्रति नं० २ पत्र संख्या ८८ साइज १०॥×५॥ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर ११-१३ पंक्तियां और प्रति पंक्ति में ३४-४० अक्षर । लिपिकाल अज्ञात । ग्रन्थ अच्छी हालत में है । लिपि सुन्दर नहीं है । प्रशस्ति नहीं है ।

३५४ धर्म परीक्षा ।

रचयिता अज्ञात । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या १५. साइज ८×४ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर १६ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३२-३६ अक्षर । लिपि संवत् १७५० । लिपिस्थान खवा (जयपुर) । लिपिकार मुनि श्री कान्तिसागर ।

मंगलाचरण—

धर्म्मेन सकलमंगलावली धर्म्मतः सकलसौख्यसंपदः ।
धर्म्मेत सुकलनिर्मल यशो धर्म्म एव तद्‌होविधीयतां ॥ १ ॥

३५५ ध्यानसार

रचयिता अज्ञात । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ४. साइज ११×५ इञ्च । विषय—चारों ध्यानों का वर्णन ।

ध्यानस्वरूप ।

रचयिता अज्ञात । भाषा संस्कृत । पृष्ठ संख्या ७, साइज १०x५ इञ्च । विषय–ध्यानों के स्वरूप का वर्णन । ग्रन्थ चिपक जाने से अक्षर मिट गये हैं ।

ध्वजारोहणविधान ।

रचयिता पं० आशाधर । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ४, साइज १२x५॥ इञ्च ।

धातुपाठावली ।

रचयिता पं० वोपदेव । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या २४ साइज १०॥x५॥ इञ्च ।

प्रति नं० २ पत्र संख्या ६८ साइज १०॥x४॥ इञ्च । प्रति सटीक है ।

न

नन्दिताढ्यछन्द ।

सटीक । रचयिता श्री देवनन्दि । टीकाकार श्री रत्नचन्द्र । पत्र संख्या १० भाषा संस्कृत । साइज ८x४॥ इञ्च ।

अन्तिम पाठ—

स इत्यपुण्यछंदस्य देवनंदिमुनिगिरा ।
टीकेयं रत्नचन्द्रेण नंदित छंदस्य निर्मितः ॥१॥

प्रति नं० २ पत्र संख्या ५ साइज ११॥x४॥ इञ्च । लिपि संवत १५३० । लिपि कर्त्ता श्री रत्नचन्द्र लिपिकर्त्ता ने बादशाह कुतुबखां के राज्य का उल्लेख किया है लिपि स्थान–हिसार ।

नन्दिसंघविरुदावली ।

रचयिता अज्ञात । पत्र संख्या ५ भाषा संस्कृत । साइज ११x५॥ लिपिकार भट्टारक श्री अभयचन्द्र ।

नन्दिश्वर अष्टाह्निका कथा ।

रचयिता–आचार्य शुभचन्द्र । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या १० साइज ८॥x५ इञ्च । विषय–अठाई व्रत की कथा । लिपि संवत १८०२ ।

प्रति नं २. पत्र संख्या १०. साइज ६×४॥ इञ्च । लिपि संवत १८०२ ।

प्रति नं० ३ पत्र संख्या १०. साइज ११×४॥ इञ्च ।

प्रति नं० ४ पत्र संख्या ८ साइज १२×४ इञ्च । लिपि संवत १८४४

३३२
नंदीश्वरचतुर्दिगाश्रतपूजा ।

रचयिता अज्ञात । भाषा अपभ्रंश । पत्र संख्या ६ साइज १२×५॥ इञ्च । लिपि संवत १८३६. लिपि स्थान सवाई माधोपुर । लिपिकार भट्टारक श्री सुरेन्द्र कीर्ति ।

३३३
नंदीश्वर द्वीप पूजा ।

रचयिता श्री कनककीर्ति । भाषा अपभ्रंश । पत्र संख्या ७ साइज १२×५॥ इञ्च ।

३३४
नन्दि यर्चा [illegible] ।

[illegible]यिता अज्ञात । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ३ साइज ८×६ इञ्च । विषय स्तुति पाठ ।

[illegible]
नंदीश्वर[illegible]कथा ।

रचयिता श्री हरिषेण । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या १६ साइज १०॥×४॥ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर ६ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३२-३८ अक्षर । लिपि संवत १६४५ लिपिस्थान मालपुरा ब्रह्मचारी लोहट ने कथा की प्रतिलिपि बनायी । कथा के अन्त में प्रशस्ति दी हुई है ।

प्रति नं० २ पत्र संख्या २३ साइज १०॥×४॥ इञ्च । लिपि संवत १६६२ मंगसिर बुदी ५ आचार्य खेमचन्द्र ने कथा की प्रतिलिपि बनायी । प्रति स्पष्ट और स्वच्छ नहीं है ।

प्रति नं० ३ पत्र संख्या ६ साइज ११×४ । इञ्च । श्री आचार्य शुभचन्द्र के शिष्य श्री सकल भूषण के पढ़ने के लिये प्रति लिपि बनायी ।

[illegible]
नंदीश्वरपूजाविधान ।

रचयिता अज्ञात । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ७ . साइज ११॥×४॥ इञ्च ।

[illegible]
नेमिनाथ पुराण ।

रचयिता भट्टारक श्री सकल कीर्त्ति । भाषा संस्कृत पत्र संख्या ७५. साइज ११×५ इञ्च । प्रत्येक

पृष्ठ पर १२ पंक्तियां और प्रति पंक्ति में ४०-४४ अक्षर। लिपि संवत १५५१। विषय-भगवान नेमिनाथ का जीवन चरित्र।

नयचक्र भाषा।

भाषाकार श्री हेमराज। भाषा हिन्दी। पत्र संख्या ५४ साइज ६×४ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर ६ पंक्तियां और प्रति पंक्ति में २८-३४ अक्षर। रचना संवत १७२६।

नयचक्र।

रचयिता श्री देवसेन। भाषा प्राकृत। पत्र संख्या ४३ साइज १०×४॥ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर ६ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३५-४० अक्षर। लिपि संवत् १५७०।

प्रति नं० २. पत्र संख्या १४ साइज १०॥×५ इञ्च।

प्रति नं० ३ पृष्ठ संख्या ३४ साइज ११॥×५॥ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर ६ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३६-४० अक्षर लिपि संवत् १७६४ आसोज बुदी १०. भट्टारक श्री हर्षकीर्त्ति के उपदेश से ग्रन्थ की प्रतिलिपि हुई।

नृपचंदरासो।

रचयिता श्री विबुध रुचि। भाषा हिन्दी। पत्र संख्या ८० साइज १०×४ इञ्च प्रत्येक पृष्ठ पर ९५ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३८-४४ अक्षर। रचना संवत् १७१३ लिपि संवत् १७६४।

नलोदय काव्य।

रचयिता श्री रविदेव। टीकाकार श्री राम ऋषि शाधीन्य। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ३६ साइज १०×४ इञ्च। लिपि संवत् १७३०. लिपिस्थान चपवर्ती। ग्रन्थ अपूर्ण १५ से ३५ तक के पृष्ठ नहीं है।

प्रति नं० २ पत्र संख्या ३६ साइज १०॥×५॥। प्रति पूर्ण है किन्तु सटीक नहीं है।

नवग्रहफल।

रचयिता अज्ञात। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ५ साइज ११×६ इञ्च प्रति अपूर्ण है

नवग्रहपूजा।

रचयिता अज्ञात। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या १३, साइज ११×४॥ इञ्च।

३४४
नवतत्त्वटीका।

टीकाकार–अज्ञात। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या १०. साइज १२×४॥ इञ्च। लिपि संवत् १८२३ विषय–नव पदार्थों का वर्णन।

३४५
नव्यशतकावचूरि।

रचयिता श्री देवेन्द्र सूरि। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या २६. साइज १०×४ इञ्च। लिपि संवत् १७६३ ग्रन्थ न्याय का है।

३४६
नागकुमार चरित्र।

रचयिता महाकवि पुष्पदंत। भाषा अपभ्रंश। पत्र संख्या ७१. साइज १०॥×४॥ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर १० पंक्तियां और प्रति पंक्ति में ३८–४४ अक्षर।

प्रति नं० २ पत्र संख्या ७०. साइज १०॥×४॥ इञ्च। लिपि संवत् १६१२. लिपि स्थान तक्षक महादुर्ग। आचार्य ललितदेव के समय में खंडेलवालान्वय सा० टेहू सा० नोता ने ग्रन्थ की प्रतिलिपि कराई।

३४७
नागकुमार चरित्र।

रचयिता श्री मल्लिषेणसूरि। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ३२ साइज ७×३॥ इञ्च। लिपि संवत १७२६ फाल्गुण बुदि ८. ग्रन्थ साधारण हालत में है। लिपि विशेष सुन्दर नहीं है।

प्रति नं० २. पत्र संख्या २० साइज ७×३॥ इञ्च। भाषा संस्कृत। लिपि काल संवत् १६६८ ग्रन्थ अच्छी हालत में नहीं है। अक्षर सुन्दर है।

३४८
नागकुमारचरित्र।

रचयिता पंडित माणिकराज। भाषा अपभ्रंश। पत्र संख्या १२४. साइज १०×४॥ प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पंक्तियां और प्रति पंक्ति में ३८।४२ अक्षर। प्रतिलिपि संवत १५६२. ग्रन्थ के अन्त में स्वयं कवि ने अपना विवरण लिखा है। प्रारम्भ के दो पृष्ठ नहीं है।

३४९
नाग श्री कथा।

रचयिता ब्रह्मनेमिदत्त। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या २२. साइज ६॥×४॥ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर १२ पंक्तियां और प्रति पंक्ति में २६–३० अक्षर। लिपि संवत १८२८। विषय–रात्रि भोजन त्याग की कथा।

न्यायदीपिका ।

रचयिता श्री धर्म भूषणाचार्य । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ४०. साइज १०×४॥ इञ्च । विषय–न्याय । लिपि संवत १८१६ ।

प्रति नं० २. पृष्ठ संख्या २५. साइज ११×४ इञ्च ।

न्यायसार ।

रचयिता भासर्वज्ञ । टीकाकार श्री भट्टारक श्री रत्नपुरी । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ६३ साइज १०॥×३ इञ्च । लिपि संवत १५१६ लिपिस्थान कुम्भलमेरुमहादुर्ग । विषय–जैन न्याय ।

प्रति नं० २. पत्र संख्या १७ साइज १०×४॥ इञ्च । लिपि संवत १६५८. लिपिस्थान सूर्यपुर महानगर । केवल मूल मात्र है, टीका नहीं है ।

प्रति नं० ३ पत्र संख्या ५१ साइज १०॥×४॥ प्रति सटीक है । टीकाकार श्री जयसिंहसूरि ।

न्यायसिद्धान्तमंजरी ।

ग्रन्थकार श्री जानकीनाथशर्मा । टीकाकार श्री शिरोमणि भट्टाचार्य । पृष्ठ संख्या ५० साइज १३×६ इञ्च । लिपि संवत १८४८ ।

प्रति नं० २. पत्र संख्या ७. साइज १३×६ इञ्च । केवल मूल मात्र है । अनुमान खण्ड तक ही है ।

प्रति नं० ३. पत्र संख्या २४. साइज १३॥×६॥ इञ्च । लिपि संवत १८३० प्रति सटीक नहीं है ।

प्रति नं० ४. पत्र संख्या ११. साइज १४×७ इञ्च । प्रति अपूर्ण है ।

न्यायावतारवृत्ति ।

रचयिता श्री सिद्धसेन । वृत्तिकार अज्ञात । भाषा संस्कृत । पृष्ठ संख्या २८ साइज १०×४॥ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर १० पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति पर ६०–६६ अक्षर । लिपि संवत १५२२. लिपि स्थान–महीशानक । श्री अभय भूषण के शिष्य अणु ने उक्त ग्रन्थ की प्रतिलिपि बनाई ।

प्रति नं० २. पत्र संख्या २७. साइज ११×४॥ इञ्च ।

३५४ नारचन्द्रज्योतिषसूत्र ।

रचयिता श्री नारचन्द्र । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या २३ साइज १०x४॥ इञ्च । ग्रन्थ अपूर्ण है ।

प्रति नं० २. पत्र संख्या १२. साइज १०x४ इञ्च . लिपि संवत १८४७ ।

प्रति नं० ३ पत्र संख्या ३७. साइज १०॥x४ इञ्च । लिपि संवत १७५८. लिपिस्थान फतेहपुर ।

प्रति नं० ४ पत्र संख्या ३३ साइज १०x४॥ इञ्च । प्रति अपूर्ण है । ३३ से आगे के पृष्ठ नहीं है ।

प्रति नं० ५. पत्र संख्या २६ साइज १०॥x४॥ इञ्च ।

३५५ निर्दोष सप्तमी कथा ।

रचयिता श्री ब्रह्मरायमल । भाषा हिन्दी । पत्र संख्या ४ साइज ११॥x५॥ इञ्च । सम्पूर्ण पद्य-संख्या ६ ।

३५६ नियमसार टीका ।

मूलकर्त्ता श्री कुन्दकुन्दाचार्य । टीकाकार श्री पद्मप्रभमलधारिदेव । भाषा-प्राकृत संस्कृत । पत्र संख्या ८५ साइज ११॥x५॥ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पंक्तियां और प्रति पंक्ति मे ४५-५० अक्षर । लिपि संवत १८३७ ।

प्रति नं० २ पत्र संख्या १२६ साइज १०॥x४ इञ्च । लिपि संवत् १७६६. लिपिस्थान चाटसू । श्री राजाराम के पढने के लिये उक्त ग्रन्थ की प्रतिलिपि की गई थी ।

३५७ निश्चयमाध्योपनिषत् ।

रचयिता अज्ञात । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या १८६ । साइज ११॥x५॥ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर १० पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३२-३८ अक्षर ।

३५८ नीतिवाक्यामृत सटीक ।

रचयिता श्री आचार्य सोमदेव । टीकाकार अज्ञात । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ३८. साइज ११x५ इञ्च । प्रति अपूर्ण है । ३८ से आगे के पृष्ठ नहीं हैं ।

नीतिशास्त्र ।

रचयिता श्री चाणक्य । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ७. साइज ११×४।। इञ्च । अध्याय आठ है । श्लोक संख्या १५७ ।

नीतिशतक ।

रचयिता श्री भर्तृहरि । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ७. साइज १०×४ इञ्च । प्रति अपूर्ण है ।

नेमिजिनवर प्रबंध ।

रचयिता अज्ञात । भाषा अपभ्रंश । पत्र संख्या १३ साइज ७×५ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर १३. पंक्तिया तथा प्रति पंक्ति मे २३-२८ अक्षर । प्रथम २ पृष्ठ नहीं है ।

नेमिदूत काव्य ।

रचयिता श्री विक्रम । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ८ । साइज ११।।×५।। इञ्च । श्लोक संख्या १२६. विषय—भगवान नेमिनाथ के दूत का राजमती के पिता के यहा जाना । इसमे कवि ने महाकवि कालिदास के मेघदूत काव्य के पद्यों के एक एक भाग को श्लोक के अन्त मे अपने अर्थ में प्रयोग किया है ।

नेमिनाथ चरित्र ।

रचयिता आचार्य हेमचन्द्र । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ६५. साइज ११×४।। इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर १५ पंक्तियां और प्रति पंक्ति मे ४०-४४ अक्षर । लिपि संवत १५१६. विषय—भगवान नेमिनाथ का जीवन चरित्र ।

नेमिजिन चरित्र ।

रचयिता ब्रह्म श्री नेमिदत्त । भाषा संस्कृत । साइज १०×५।। इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर १७ पंतियां और प्रत्येक पंक्ति ३७।४२ अक्षर । लिपि संवत् १८४५. लिपिस्थान जयपुर । विषय-भगवान नेमिनाथ का जीवन चरित्र ।

प्रति नं २. पत्र संख्या २२० । साइज ११×४ इञ्च । लिपि संवत् कुछ नहीं ।

प्रति नं० २. पत्र संख्या १३८ । साइज ११×५।। इञ्च । लिपि संवत् १७३१ ।

प्रति नं० ३. । पत्र संख्या १५० । साइज १०x४। इञ्च । लिपि संवत १६४३ ।

प्रति नं० ४ । पत्र संख्या २१६ । साइज ११।x४। इञ्च ।

३६५
नेमीश्वर चंद्रायण ।

रचयिता श्री नरेन्द्रकीर्त्ति । भाषा हिन्दी । पत्र संख्या ८ साइज १०x४। इञ्च । पद्य संख्या १०५. लिपि संवत १६६० ।

३६६
नेमीश्वर रास ।

रचयिता श्री नेमिचन्द्र । भाषा हिन्दी । साइज १२x५। इञ्च । सम्पूर्ण पद्य संख्या १३०५. रचना संवत १७६६ । प्रशस्ति सुन्दर है ।

३६७
नेमीश्वररासा ।

रचयिता ब्रह्मरायमल । भाषा हिन्दी । पत्र संख्या १६ साइज ११x५ इञ्च । रचना संवत १६१५ ।

३६८
नैषध चरित्र ।

रचयिता महाकवि श्री हर्ष । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या २८२. साइज १०।।x४। इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर १५ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ६०-६४ अक्षर । प्रति सटीक है । टीकाकार श्री नरहरि । लिपि संवत १८४४ ।

प्रति नं० २. पत्र संख्या १००. साइज १०।।x४। इञ्च । प्रति सटीक है । टीकाकार श्री नारायण । प्रति अपूर्ण है केवल पांच सर्ग ही हैं और वे भी क्रम रहित हैं ।

प्रति नं० ३. पत्र संख्या ५०. साइज ११।।x६ इञ्च । प्रति अपूर्ण है ।

प्रति नं० ४. पत्र संख्या १७. साइज १३x५।। इञ्च । प्रति सटीक है । टीकाकार नरहरि । प्रति अपूर्ण । तीन प्रति और हैं ।

प्रति नं० ५. पत्र संख्या १६. साइज १०।।x५ इञ्च । प्रति अपूर्ण है ।

प्रति नं० ६. पत्र संख्या १४३. १२।।x६।। इञ्च ।

प्रति नं० ७. पत्र संख्या १६. साइज १०।।x४। इञ्च । प्रति अपूर्ण है ।

णमोकार स्तोत्र ।

रचयिता अज्ञात । भाषा प्राकृत । पत्र संख्या २. साइज १०।।×४।। इञ्च । गाथा संख्या २५ लिपि संवत् १६७५. लिपिकर्ता पांडे मोहन । लिपि स्थान जोवणे ।

प

पदमञ्जरी ।

रचयिता श्रीहरिदत्तमिश्र । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या १०६. ११।।×४।। इञ्च । लिपि संवत् १७४०.

पट्टावली ।

लिपिकर्त्ता—अज्ञात । पत्र संख्या ७. भट्टारक पट्टावलि संवत १८१५ तक । भट्टारकों की संख्या ६६.

पद्मनंदी पचीसी ।

रचयिता श्री जगतराय । भाषा हिन्दी (पद्य) । पत्र संख्या १३३. साइज १०×५।। इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति मे २८।३५ अक्षर । रचना संवत् १७२२. लिपि संवत् १८१८ दीमक लग जाने मे करीब १०० पृष्ठ नष्ट हो चुके हैं । अन्त मे कवि की के द्वारा लिखी हुई प्रशस्ति है ।

मंगलाचरण—

अमल कमल दल विपुल नयन भल,
सकल अचल बल उपशम धरि है ।
अखिल अवनितल अटल प्रबल जस,
सुरपति नरपति स्तुति बहुकरि है ।।
धृति मति खतिधर सब जन सुखकर,
कनक वरण तन सिद्धि बधू वरि है ।
वृषभ लछिनधर प्रगट तनय भर,
अघ तिमर विकर भव जलतरि है ।।१।।

पद्मनन्दि श्रावकाचार ।

रचयिता आचार्य पद्मनन्दि । पत्र संख्या ४. साइज ११×४।। इञ्च । लिपि संवत् १७१२.

३०४
पद्मपुराण (पउमचरिए)।

रचयिता महाकवि स्वयम्भू त्रिभुवनस्वयम्भू। भाषा अपभ्रंश। पत्र संख्या ३५७. साइज ११×४॥ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर ३८–४२ अक्षर। लिपि संवत् १५४१. विषय–जैनरामायण।

३०५
पद्मपुराण।

भाषा अपभ्रंश। रचयिता पं० रइधू। पत्र संख्या ६०. साइज १०॥×५ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर १५ पंक्तियां और प्रत्येक पंक्ति में ४०–४४ अक्षर। लिपि संवत् १५५१ फाल्गुण सुदी ६

३०६
पद्मपुराण।

रचयिता भट्टारक श्री सोमसेन। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या २६७. साइज १०×४ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर १३ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३०-३६ अक्षर। लिपि संवत् १७५१. अन्त में लिपिकार ने प्रशस्ति दे रक्खी है। लिपि स्पष्ट और सुन्दर नहीं है।

मंगलाचरण—

वंदेऽहं सुव्रतं देवं पंचकल्याणनायकं।
देवदेवादिभिः सेव्यं भव्यवृन्द सुखप्रदं ॥१॥
शेषान् सिद्धान् जिनान् सूरीन्, पाठकान् साधु संयुतान्।
नत्वा वक्ष्ये हि पद्मरूप पुराणं गुणसागरं ॥२॥

प्रति नं० २ पत्र संख्या २६७. साइज १०×४ इञ्च। लिपि संवत् १७५१.

प्रति नं० ३ पत्र संख्या १५३. साइज ११×५ इञ्च। प्रति अपूर्ण है। प्रारम्भ के तथा अन्त के पृष्ठ नहीं हैं।

३०७
पद्मपुराण।

रचयिता श्री रविषेणाचार्य। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ५५४. साइज १३×५ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर १२ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ४०–४६ अक्षर। प्रति बहुत प्राचीन है।

प्रति नं० २ पत्र संख्या ४३०. साइज ११×५॥ इञ्च। लिपि संवत् १८३४. प्रति अपूर्ण है। प्रारम्भ के २६६ तथा मध्य के १०० पृष्ठ नहीं है।

प्रति नं० ३. पत्र संख्या ४४०. साइज १३×५ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर १२ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति पर ४२-४८ अक्षर। प्रति अपूर्ण है। प्रथम ११ पृष्ठ ११३ से २४०, २५५ से २८३, २६६ से ३६६ तथा अन्तिम पृष्ठ नहीं है।

प्रति नं० ४ पत्र संख्या ६४१ साइज १२×५।। इञ्च। लिपि संवत् १८५५. लिपि स्थान रोडपुरा।

प्रति नं ५. पत्र संख्या ५१६. साइज ११×५ इञ्च। लिपि संवत १७५७ इन्द्रगढ नगर मे महाराजा सरदारसिंह के शासन काल मे श्री शिव बिमल ने लिखा। प्रति अपूर्ण है। प्रारम्भ के १६७ पृष्ठ नहीं हैं।

पद्मपुराण।

ग्रन्थकार भट्टारक श्री धर्म्मकीर्त्ति। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या २५१. साइज ११×४।। इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर १३ पंक्तियां और प्रति पंक्ति से ३८।४२ अक्षर। लिपि संवत् १६७०.

पद्मपुराण।

रचयिता श्री चन्द्रकीर्त्ति। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ४१२. साइज ११।।×४।। इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर १६ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति मे ३८-४४ अक्षर। ग्रन्थ बहुत सरल भाषा मे लिखा हुआ है। अलंकारों की अधिक भरमार नहीं है।

पद्मपुराण।

रचयिता ब्रह्म जिनदास। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ५३० ११×५।। इञ्च। प्रति प्राचीन है।

पद्मावती स्तोत्र।

रचयिता अज्ञात। पत्र संख्या ८, साइज ७×४।। इञ्च। भाषा संस्कृत। प्रति प्राचीन है।

प्रति नं० २. पत्र संख्या २. साइज ६×४ इञ्च।

पंच कल्याणक पूजा।

रचयिता अज्ञात। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या २१. साइज ११×४।। इञ्च।

प्रति नं० २. पत्र संख्या १३ साइज ११।।×५ इञ्च। लिपिकार पं० दयाराम।

प्रति नं० ३. पत्र संख्या १३. साइज ११।।×५ इञ्च।

३८३
पंच कल्याणक पूजा।

रचयिता आचार्य शुभचन्द्र। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ७४ साइज १०।।x५ इञ्च। प्रति नवीन है।
प्रति नं० २. पृष्ठ संख्या ७४. साइज १०।।x५ इञ्च।

३८४
पंचकल्याणविधान।

रचयिता अज्ञात। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ३० साइज ६x४ इञ्च। लिपि संवत १८६०. लिपिस्थान ग पचल लिपिकर्त्ता श्री सुरेन्द्रभूषण।

३८५
पञ्चतन्त्र।

भाषाकार श्री पं० रतनचन्द्रजी। भाषा हिन्दी संस्कृत। पत्र संख्या १०० साइज १० . इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर १४ पंक्तियां और प्रति पंक्ति में ४४-४८ अक्षर। उक्त पुस्तक में प्रारम्भ में मंगलाचरण के बाद अनेक राज्यों का नामोल्लेख है जिससे तत्कालीन राज्य का पता लग सकता है। संस्कृत में भी श्लोक हैं और उनका हिन्दी में अनुवाद किया गया है। इसलिये शायद पञ्चतन्त्र के मुख्य २ श्लोकों तथा पद्यों का उद्धरण मात्र दिया गया है। टीका संवत १६४८.

प्रति नं० २ पत्र संख्या १२६ साइज ६x४।. इञ्च। प्रति प्राचीन है।

३८६
पञ्चतन्त्र।

रचयिता पं० विष्णु शर्मा। भाषा संस्कृत-गद्य पद्य पृष्ठ संख्या १२६ साइज ८।।x४।। इञ्च।

३८७
पञ्चदण्डकथा।

रचयिता अज्ञात। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या १०६ साइज ११x४।। इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर १३ पंक्तियां और प्रति पंक्ति में ३८-४६ अक्षर। विषय-नीति। उक्त कथा की रचना पंचतन्त्र अथवा हितोपदेश के समान की गयी है। किन्तु यहां कवि प्रत्येक बात पद्य में ही कहता है। ग्रन्थ बहुत ही महत्त्व पूर्ण है तथा अभी तक अप्रकाशित भी है। ग्रन्थ अपूर्ण है, १०६ से आगे के पृष्ठ नहीं है।

मंगलाचरण—

प्रणम्य जगदानंददायकान जिननायकान।
गणेशान्गौतमाद्याश्च गुरून संसारतारकान ।।१।।
सज्जनान शोभनाचारान शास्त्रबोधनकारकान।
पंचदण्डातपत्रस्य कथा वक्ष्ये समासतः ।।२।।

पंच परमेष्ठि पूजा ।

रचयिता अज्ञात । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या १७ साइज १०×४॥ इञ्च । लिपि संवत १८३३ लिपिस्थान रामपुरा ।

पंचपरमेष्ठी पूजा ।

रचयिता अज्ञात । भाषा हिन्दी । पत्र संख्या ४६, साइज ७॥×४॥ इञ्च । विषय–पूजा साहित्य । रचना संवत १६७७ मगसिर बुदी पष्ठमी ।

प्रारम्भ—

मंगलमय मंगलकरन पंच परमपदसार
अशरन को ये ही सरन उत्तम लोक मझार ॥१॥

अन्तिमपाठ—

तेते दोय दोहानि में अरिल्ल आठ विश्राम ।
आदि अंक में कवि तनौ नाम जाति अरु गाम ॥
मार्गशीर्ष वदि षष्ठमी ऋतु दिन पूरन थाय ।
संवत सत्रहसत अष्टदश साठि दोय अधिकाय ॥

प्रति नं० २ पत्र संख्या २० साइज ७॥×४॥ इञ्च ।

पंचभूतविवेक ।

रचयिता श्री रामकृष्ण । भाषा संस्कृत । पृष्ठ संख्या १३२ साइज ९३×४॥ इञ्च । विषय–तात्विक । प्रति प्राचीन मालूम देती है ।

पंचमास चतुर्दशी व्रतोद्यापन ।

रचयिता भट्टारक श्री सुरेन्द्र कीर्त्ति । भाषा हिन्दी । पत्र संख्या ४ साइज १२×४॥ इञ्च । लिपि संवत १८७८ लिपिकार सवाईराम गोधा ।

प्रति नं० २ पत्र संख्या ३ साइज १०॥×४॥ इञ्च ।

पंचमीव्रतपूजा ।

रचयिता आ० श्रुतसागर भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ६ साइज ११॥×४॥ इञ्च । लिपि संवत १८३६ लिपि स्थान सवाई माधोपुर ।

प्रति नं० २ पत्र संख्या ७ साइज ११॥x५॥ इञ्च। लिपि संवत १७१८

प्रति नं० ३. पत्र संख्या ७ साइज १०॥x५ इञ्च।

३५३
पंचमेरुपूजा।

रचयिता भट्टारक श्री रत्नचन्द्र। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ५. साइज १२x५॥ इञ्च। लिपि संवत १८३६. लिपिकार भट्टारक श्री सुरेन्द्रकीर्त्ति। लिपि स्थान मालपुरा (जयपुर)

३५४
पञ्चविंशतिक्रियाचर्चा।

रचयिता अज्ञात। पत्र संख्या ७ भाषा अपभ्रंश साइज ८॥x३॥ इञ्च।

३५५
पंचसंग्रह।

रचयिता श्री नेमिचन्द्राचार्य। भाषा प्राकृत-संस्कृत। साइज १०॥x५ इञ्च। ग्रन्थ का दूसरा नाम लघु गोम्मटसार है। गोम्मटसार में से ही गाथायें लेकर उनपर संस्कृत में टीका लिखी गयी है। ग्रन्थ अपूर्ण सा है। पत्र संख्या २२२.

प्रति नं० २ पत्र संख्या १०८. साइज १२॥x५॥ इञ्च। लिपि संवत १७[illegible] लिपिकर्त्ता भट्टारक श्री महेन्द्रकीर्त्ति। लिपि स्थान सवाई जयपुर। गोम्मटसार में से मुख्य २ गाथाओं का संग्रह किया गया है।

३[illegible]
पंचसंग्रह।

रचयिता श्री अमितगति। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ६७ साइज १०x५ इञ्च। रचना संवत १०७० लिपि संवत १५७८ विषय द्रव्य क्षेत्र कालादि का वर्णन।

[illegible]
पंचसंग्रह।

भाषा प्राकृत। पत्र संख्या ४०८ साइज १२x५॥ इञ्च। विषय-सिद्धान्तचर्चा। लिपि संवत १७१६ लिपिस्थान जयपुर। भट्टारक श्री महेन्द्रकीर्त्ति ने ग्रन्थ की प्रतिलिपि बनाई।

प्रति नं० २ पत्र संख्या ११८ साइज ११x५॥ इञ्च। प्रति प्राचीन है। अक्षर मिट गये हैं। प्रति जीर्ण शीर्ण है।

३५८
पंच समास।

रचयिता अज्ञात। भाषा संस्कृत। पृष्ठ संख्या २ साइज १०॥x५॥ इञ्च। विषय-द्रव्य क्षेत्र काल आदि का वर्णन।

मंगलाचरण—

पंचसंसारमुक्तेभ्यः सिद्धेभ्यः खलु सर्वदा।
नमस्कृत्वा प्रवक्ष्येऽहं पंचससारविस्तरं ॥ १ ॥

पंचस्तवनावचूरि ।

लिपिकर्त्ता अज्ञात। पत्र संख्या ४६ साइज ११x५ इञ्च। पंचस्तोत्रों का संग्रह है। सभी स्तोत्रों की टीका भी है। प्रति के पत्र गल गये हैं।

प्रति नं० २ पत्र सख्या ४६. साइज ११।।x५।। इञ्च।

पंचास्तिकाय ।

मूलकर्त्ता आचार्य श्री कुन्दकुन्द। भाषा टीकाकर्त्ता श्री हेमराज। भाषा प्राकृत हिन्दी। पत्र संख्या १४७. साइज ११।।x५।। इञ्च। भाषा रचना संवत् और लिपि संवत् १७३६

पचास्तिकाय सटीक ।

मूलकर्त्ता आचार्य श्री कुन्दकुन्द। टीकाकार प्रभाचन्द्र। भाषा प्राकृत–संस्कृत। पत्र संख्या ६५, साइज १०x५ इञ्च।

प्रति नं० २. पत्र संख्या ४६. साइज ११।।x५ इञ्च। लिपि संवत् १८२८. लिपिस्थान जयपुर।

प्रति नं० ३. पत्र सख्या ३६ साइज १०।।x४ इञ्च।

प्रति नं० ४. पत्र सख्या १४८ साइज १०x४ इञ्च। टीकाकार आचार्य अमृतचन्द्र। लिपि संवत १६३७ अन्त में लिपि कराने वाले का अच्छा परिचय दिया है।

प्रति नं० ५. पत्र सख्या १६६ साइज १०।।x५ इञ्च। लिपि संवत १६२७ लिपिस्थान आगर कोट। टीकाकार आ० अमृतचन्द्र।

प्रति नं० ६ पत्र सख्या २६ साइज १०।।x५ इञ्च।

परमेष्टिप्रकाशसार ।

रचयिता श्री श्रुतकीर्त्ति। भाषा अपभ्रंश। पत्र संख्या १८८ साइज ६।।x४ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर ८ पंक्तियां और प्रति पंक्ति मे ३०–३६ अक्षर। विषय–धार्मिक। प्रारम्भ के २, पृष्ठ तथा अन्त का १८७ वां पृष्ठ नहीं है।

परिभाषा वृत्ति ।

रचयिता अज्ञात। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या १० साइज १०।।x५ इञ्च।

मगलाचरण—

प्रणम्य सदसद्वादध्वातविध्वंसभास्कर ।
वाङ्मय परिभाषार्थं वक्ष्ये बालाय बुद्धये ।।

४०४ परीषह वर्णन ।

रचयिता अज्ञात । पत्र संख्या ७. भाषा संस्कृत । साइज ८।।×५।। इञ्च । पद्य संख्या २२. विषय—२२ परीषहो का वर्णन ।

४०५ परीक्षामुख ।

रचयिता श्री माणिक्यनन्दि । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ५१ साइज १०।।×४।। इञ्च । मूल सूत्र टीका सहित है । टीका नाम लघु वृत्ति है । प्रति अपूर्ण है । प्रारंभ मध्य तथा अन्त के पृष्ठ नही है

४०६ पल्यव्रतोद्यापनपूजा ।

रचयिता श्री रत्ननंदी । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ४. साइज १२×५।। इञ्च । लिपि संवत १८३६. लिपिकार भट्टारक श्री सुरेन्द्रकीर्त्ति । लिपिस्थान सवाई माधोपुर (जयपुर) ।

४०७ पल्यविधानमुद्यापन ।

रचयिता भट्टारक श्री शुभचन्द्र । भाषा संस्कृत । पृष्ठ संख्या ८. साइज १२×५।। इञ्च ।
प्रति नं० २. साइज ११।।×५ इञ्च । पृष्ठ संख्या ११ इसमें अन्य पूजाएं भी है ।

४०८ पल्यव्रत का विवरण ।

पत्र संख्या ४. साइज ११।।×६।। इञ्च ।
प्रति नं० २. पत्र संख्या १० साइज ६×५।। इञ्च ।

४०९ पर्वसूचि ।

संग्रहकार अज्ञात । पत्र संख्या १३. भाषा हिन्दी संस्कृत । साइज १०।।×५ इञ्च । प्रति अपूर्ण है ।

४१० प्राक्रिया कौमुदी ।

रचयिता श्री महाराज वीश्वर । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या २५५ साइज १०×४ इञ्च । रचना संवत् अथवा लिपि संवत् कुछ नहीं दिया हुआ है ।

१ प्रक्रियासार ।

रचयिता सर्व विद्याविशारद श्री काशीनाथ । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ११८ साइज १०×४॥ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर १७ पंक्तियां और प्रति पंक्ति में ४८-५४ अक्षर । लिपि काल—मंगसिर सुदी १३ संवत १६८६ विषय—व्याकरण ।

२ प्रताप काव्य सटीक ।

रचयिता अज्ञात । टीकाकार अज्ञात । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ४८ साइज १२॥×६ इञ्च । जयपुर के महाराजा प्रतापसिंह के यश तथा वीरता के गुणगान गाये गये हैं । अनेक अलंकार की प्रधानता है । प्रति अपूर्ण है । प्रारम्भ के २४ पृष्ठ नहीं हैं ।

१३ प्रति क्रमण ।

रचयिता गौतमस्वामी । भाषा प्राकृत संस्कृत । पत्र संख्या १६. साइज ११॥×५ इञ्च । विषय—सामायिक पाठ ।

प्रति नं० २. पृष्ठ संख्या १७. साइज ११×४ इञ्च । लिपि संवत १७२४ श्रावण सुदि १० लिपिस्थान अंबावती (आमेर) ।

प्रति नं० ३ पृष्ठ संख्या ५४. साइज ११×४॥ इञ्च । लिपि संवत १७७० फागुण सुदी ११ लिपि स्थान जयपुर । लिपिकार ने महाराजा जयसिंह के राज्य का उल्लेख किया है ।

प्रति नं० ४ पत्र संख्या १७. साइज ११॥×५ इञ्च । प्रति अपूर्ण है ।

१४ प्रद्युम्नचरित्र ।

रचयिता आचार्य सोमकीर्त्ति । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या २५५ साइज १०॥×५ इञ्च । श्लोक प्रमाण ५०००. (पांच हजार) । रचना संवत १०२२ लिपि संवत १५६०

प्रति नं० २ पत्र संख्या २७१ साइज १०×४ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पंक्तियां और प्रति पंक्ति में २५-३० अक्षर । लिपि संवत १८२८, ग्रन्थ में श्रीकृष्ण, प्रद्युम्न, अनिरुद्ध आदि महापुरुषों का वर्णन किया है ।

प्रति नं० ३. पत्र संख्या ११७ साइज १०॥×४॥ इञ्च । पत्र संख्या ११७ लिपिसंवत १५७७. लाखहरी नगर में पंडित गूजर ने प्रतिलिपि करवाई ।

प्रति नं० ४ पत्र संख्या ११५. साइज १०॥×५॥ इञ्च । लिपि संवत १५७७ लाखपुरी में बघेरवाल-जाति में उत्पन्न श्री धीहल ने प्रतिलिपि करवाई ।

प्रति नं० ५. पत्र संख्या १६३ साइज १०॥×४॥ इञ्च ।

प्रति नं० ६ पत्र संख्या १७४. साइज ११x४ इञ्च। लिपि सवत १४८७ भट्टारक श्री गुणभद्र के समय में अग्रवालवंशोत्पन्न चौधरी चूहडु ने बाई तोल्ही के उपदेश से जिनदास के द्वारा प्रतिलिपि कराई।

प्रति नं० ७ पत्र संख्या १४२. साइज ११x४॥ इञ्च। लिपि सवत।

४९५
प्रद्युम्नचरित्र।

रचयिता—महाकवि श्री सिंह। भाषा अपभ्रंश। पत्र संख्या १०२ साइज १०x६ इञ्च। लिपिसंवत १५५३ ग्रन्थ समाप्त होने पर कवि ने अपना परिचय दिया है।

प्रति नं० २ पत्र संख्या १७१ साइज ११x४॥ इञ्च। लिपि काल-संवत १५६५ भाद्रपद सुदी १३. कितने ही पृष्ठ एक दूसरे से चिप गये हैं।

प्रति नं० ३ पत्र संख्या १०७ साइज १०॥x५ इञ्च। लिपि संवत १५५१ श्रावण वदि २

प्रति नं० ४ पत्र संख्या १३५ साइज ११x४॥ इञ्च। लिपि संवत १५६८ असाढ सुदी ५

प्रति नं० ५ पत्र संख्या ६४. साइज ११x४॥ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पंक्तियां और प्रति पंक्ति में ४४-४८ अक्षर। लिपिकाल संवत १५१८ जेठ सुदी ६ लिपि स्थान श्री नेगावाटपत्तन।

प्रति नं० ६ पत्र संख्या १०४ साइज १०x४ इ०। संवत १६७८ वर्षे ज्येष्ठ वदि त्रयोदशी शुक्रवारे श्री रतलाम नगरे श्री अमृतचन्द्र तत् शिष्य गोपालेनालेखि।

प्रति नं० ७ पत्र संख्या १३० साइज १०x४॥ इञ्च। लिपि संवत १७२४. लिपिस्थान सुलतानपुर (मालवदेश)।

४९६
प्रद्युम्न प्रबन्ध।

रचयिता श्री देवेन्द्रकीर्त्ति। भाषा हिन्दी। पत्र संख्या ३७ साइज १०॥x५ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३०-३४ अक्षर। रचना संवत १७२२

४९७
प्रद्युम्न रासो।

रचयिता श्री ब्रह्म रायमल्ल। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या १८ साइज १२x५. सम्पूर्ण पद्य संख्या १६५ रचना संवत १६२८. लिपि संवत १८२०

४९८
प्रभावती कल्प।

रचयिता अज्ञात। भाषा संस्कृत। पृष्ठ संख्या ५. साइज ११॥x४॥ इञ्च। विषय-आयुर्वेद।

प्रबोधचन्द्रोदय ।

रचयिता श्री कृष्णमिश्र । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ७०. साइज ११×५॥ इञ्च । लिपि संवत् १८२६ भट्टारक श्री सुरेन्द्रकीर्त्ति ने लिखा है ।

प्रमाणपरीक्षा ।

रचयिता श्रीमद् [illegible] । भाषा संस्कृत । पृष्ठ संख्या ४०. साइज ११×५ इञ्च । लिपि संवत १६५४

प्रमाणनयतत्त्वालंकार ।

रचयिता श्री देवाचार्य । भाषा संस्कृत । पृष्ठ संख्या ७ साइज ६×४॥ इञ्च । विषय–न्याय । प्रति सटीक है ।

प्रमाण मीमांसा ।

रचयिता आचार्य हेमचन्द्र । भाषा संस्कृत । पृष्ठ संख्या ३६. साइज ११॥×४ इञ्च । विषय–न्याय । प्रति अपूर्ण है । ३६ से आगे के पृष्ठ नहीं हैं ।

प्रवचनसार ।

रचयिता आचार्य श्री कुन्दकुन्द । भाषा प्राकृत–संस्कृत–हिन्दी । पत्र संख्या ४४ साइज ११×४॥ इञ्च । लिपि संवत १७७७ लिपिस्थान रामपुर । पंडित बिहारीदास ने पढने के लिये दीनानाथ से प्रतिलिपि करवाई । मूल ग्रन्थ का उलथा संस्कृत में है तथा गाथाओं का परिचय हिन्दी में दिया हुआ है ।

प्रति नं० २ पत्र संख्या ३६ साइज ११×५ इञ्च । लिपि संवत १८०६. पं० मनोहरलाल ने पढने के लिये प्रतिलिपि बनायी ।

प्रति नं० ३ सटीक । टीकाकार श्री प्रभाचन्द्राचार्य । पत्र संख्या ७७ साइज १०॥×४॥ इञ्च । लिपि संवत १५७७. लिपिस्थान नागपुर । भट्टारक श्री धर्मचन्द्र को भेंट करने के लिये लिपि तैयार की गई । टीका संस्कृत में है । टीका का नाम प्रवचनसार प्राभृत टीका है ।

प्रति नं० ४. पत्र संख्या ७७ साइज ११×४॥ इञ्च । ७७ से आगे के पृष्ठ नहीं है ।

प्रवचनसार भाषा ।

मूलकर्त्ता आचार्य श्री कुन्दकुन्द । भाषाकार पं० जोधराज गोदीका । भाषा प्राकृत–हिन्दी । पत्र संख्या ७२ साइज १०॥×४॥ इञ्च । भाषा रचना संवत १७२६. लिपि संवत १८४६.

४२५ प्रवचनसार भाषा ।

रचयिता अज्ञात । भाषा हिन्दी गद्य । पत्र संख्या ६१. साइज १२x५ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर ७ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति मे ३०–३८ अक्षर । प्रति अपूर्ण है । ६१ से आगे के पृष्ठ नहीं है । ग्रन्थ के कुछ भाग मे दीपक लग जाने से ग्रन्थ का कुछ भाग नष्ट होगया है ।

मंगलाचरण—

स्वय सिद्ध करतार करै निज करम सरम निधि ।
आपै करण सुरूप होई साधन साधै विधि ॥
संप्रदाननाधरै आपकौ आप समपै ।
अपादान आपतैं आपको करि थिर थपैं ॥
अधिकरण होई आधार निज वरतै पूर्ण ब्रह्म पर ।
षट् विधि कारक मयं विधि रहित विविध एक विधि अज अमर ॥१॥

४२६ प्रवचनसारामृतटीका ।

टीकाकार अज्ञात । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या १८२. साइज १०x४॥ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति मे ३२–३६ अक्षर । लिपि संवत १५४३. उक्त टीका मंडलाचार्य श्री रत्नकीर्त्ति के शिष्य श्री विमलकीर्त्ति को भेट स्वरूप प्रदान की गयी । लिपिकार पं० गोगा ।

४२७ प्रस्ताविक लोक चर्चा ।

रचयिता अज्ञात । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ७६. साइज ११x४॥ इञ्च । प्रति अपूर्ण है । अन्तिम पृष्ठ नही है । प्रारम्भ मे ५४ पद्य नहीं है । ग्रन्थ ५५ वे पद्य से शुद्ध किया गया है । ग्रन्थ बहुत प्राचीन मालूम होता है ।

४२८ प्रशस्त भाष्य ।

रचयिता श्री प्रशस्त देवाचार्य । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ७. साइज १०x४॥ इञ्च । केवल द्रव्य पदार्थ का वर्णन है ।

४२९ प्रश्नोत्तरश्रावकाचार ।

रचयिता–भट्टारक श्री सकलकीर्त्ति । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या १४६. साइज ११॥x५॥ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर १२ पंक्तियां और प्रत्येक पंक्ति में २१–२५. अक्षर । लिपि संवत् १८४४ लिपिस्थान इन्द्रावती नगरी । प्रशस्ति है ।

प्रति नं० २. पृष्ठ संख्या १०६. साइज १२x५॥ इञ्च ।

प्रति नं० ३. पत्र संख्या १४८. साइज १०॥×४॥. प्रत्येक पृष्ठ पर १० पंक्तियां और प्रति पंक्ति मे ३६–४० अक्षर। लिपि संवत् १८४६. ग्रन्थ मे श्रावकों के पालने योग्य आचार और नियम सम्बन्धी प्रश्नों का उत्तर दिया गया है। उत्तर को कथाओं के द्वारा भी समझाया गया है।

प्रति नं० ४. पत्र संख्या ८३. साइज १०॥×४॥ इञ्च। प्रति अपूर्ण है। प्रथम पत्र और ८३ से आगे के पृष्ठ नहीं है।

प्रति नं० ५. पत्र संख्या २४ साइज १०॥×४ इञ्च। केवल ४ परिच्छेद ही हैं।

प्रति नं० ६. पत्र संख्या १४४ साइज ११॥×४॥.

प्रति नं० ७. पत्र संख्या ११. साइज १२×५ इञ्च।

प्रति नं० ८. पत्र संख्या ६३. साइज १२×४ इञ्च। लिपि संवत १८१८

प्रश्नोत्तरोपासकाचार।

रचयिता भट्टारक श्री सकलकीर्त्ति व भट्टारक पद्मनन्दि। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ६३. साइज १०॥×४॥ इञ्च। विषय–पचाणुव्रत, की पाच कथाये, सम्यक्त्व की ८ कथाये। सम्यक्त्व की ८ कथाये भट्टारक पद्मनन्द द्वारा रचित है। प्रथम पृष्ठ नहीं है। प्रति स्पष्ट और सुन्दर है किन्तु अन्त के पन्ने दीमक ने खा रखे है।

प्रज्ञापनोपांगपद संग्रह।

संग्रहकर्त्ता श्री अभय देवसूरि। भाषा प्राकृत। पत्र संख्या ५. गाथा संख्या १३३

पाकसंग्रह।

संग्रहकर्त्ता श्री पं० दयाराम। भाषा हिन्दी। पत्र संख्या १२. साइज १०॥×५॥ इञ्च। विषय–आयुर्वेद।

पाण्डवपुराण।

रचयिता भट्टारक श्री यश–कीर्त्ति। भाषा अपभ्रंश। पत्र संख्या ४७५. साइज १०×४॥ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर ६ पंक्तियां और प्रति पंक्ति में ३४–३८ अक्षर। लिपि संवत १६०२.

प्रति नं० २. पत्र संख्या ३४७ साइज ११॥×५ इञ्च। लिपि संवत् १८३१. लिपि स्थान कोटा। प्रति नवीन है लेकिन १२३ पृष्ठ तक दीमक ने खा लिया है। लिपि कराने के समय का पद्य नहीं दिया हुआ है।

पाण्डवपुराण।

रचयिता भट्टारक श्री शुभचन्द्र। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या २८०. साइज १०॥×४॥ इञ्च। प्रत्येक

पृष्ठ पर ६ पंक्तियां और प्रति पंक्ति मे ४२-४६ अक्षर। रचनाकाल संवत् १६०८

प्रति नं० २ पृष्ठ सख्या ६१. साइज ११×४॥ इञ्च। प्रति अपूर्ण है तथा जीर्ण शीर्ण अवस्था मे है। कितने ही पृष्ठ फट गये है तथा कितने ही एक दूसरे से चिपक गये हैं।

प्रति नं० ३. पत्र सख्या ३२६ साइज १२×५॥ इञ्च। लिपि सवत् १७२१.

प्रति नं० ४. पत्र सख्या ३४७. साइज ११×५ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर १२ पंक्तियां और प्रति पंक्ति मे ३६-४४ अक्षर। लिपिसंवत् १६३६ लिपिस्थान निवाई (जयपुर) ३४७ वा पृष्ठ फटा हुआ है। लिपि सुन्दर एवं स्पष्ट है।

प्रति नं० ५. पत्र सख्या ४७१. साइज ११×५ इञ्च। लिपि संवत् १६१६. लिपि स्थान आमेर। मण्डलाचार्य श्री ललितकीर्त्ति के शासनकाल मे खंडेलवालान्वय श्री तेजा ने दशलक्षणव्रतोद्यापन के समय मे ग्रन्थ की प्रतिलिपि कराई। प्रति लिपि स्पष्ट और सुन्दर है।

४३५ पार्श्वनाथ चरित्र।

रचयिता महाकवि पद्मकीर्त्ति। भाषा अपभ्रंश। पत्र संख्या १०८. साइज १०×४ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पंक्तियां और प्रत्येक पंक्ति में ३५-४५ अक्षर। लिपि संवत् १४६४.

४३६ पार्श्वनाथ चरित्र।

रचयिता पंडित श्रीधर। भाषा अपभ्रंश। पत्र सख्या ६६ साइज ६॥×४ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर १२ पंक्तियां और प्रत्येक पंक्ति मे ३८-४५ अक्षर। लिपि संवत १४७७

४३७ प्राकृतकथा कौमुदी।

रचयिता मुनि श्री श्रीचंद। भाषा प्राकृत। पत्र संख्या ३१. साइज १०×४॥ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति मे ३८-४२ अक्षर। प्रति अपूर्ण है। प्रथम पृष्ठ तथा ३१ मे आगे के पृष्ठ नहीं है। ग्रन्थ के एक भाग को दीमक ने खा लिया है।

४३८ प्राकृत छंद कोष।

भाषा प्राकृत पत्र संख्या ६. साइज १०॥×५॥ इञ्च। गाथा सख्या ७७.

४३९ प्राकृत व्याकरण।

रचयिता श्री वरदराज। भाषा प्राकृत। पत्र सख्या २२. साइज १२॥×४॥ इञ्च। लिपि संवत् १७१७.

° प्रायश्चित शास्त्र ।

रचयिता श्री नन्दिगुरु । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या १२७ साइज ११x५ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति मे ३०-३६ अक्षर । पद्यों की टीका भी दी हुई है ।

प्रीतिंकर चरित्र ।

रचयिता ब्रह्मनेमिदत्त । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या १७ साइज ६॥x५॥. प्रत्येक पृष्ठ पर १४ पंक्तिया और प्रति पंक्ति मे ३३-३८ अक्षर । विषय–प्रीतिंकर महामुनि का चरित्र ।

२ पार्श्वनाथ पुराण ।

रचयिता महाकवि पद्मकीर्ति । भाषा अपभ्रंश । साइज १०॥x५ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पंक्तिया और प्रति पंक्ति मे ३२–३८ अक्षर । लिपि संवत् १६१०. लिपिस्थान शेरपुर ।

३ पार्श्वनाथ पुराण ।

रचयिता भट्टारक श्री सकलकीर्ति । पत्र संख्या १११ भाषा संस्कृत । साइज १२x५ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर १३ पंक्तिया और प्रति पंक्ति मे ३४–४० अक्षर । लिपि संवत १८३६. लिपिस्थान सवाई माधोपुर ।

प्रति नं० २. पत्र संख्या ८८ साइज १२॥x५॥ इञ्च । लिपि संवत १८२३. लिपिस्थान जयपुर । लिपिकर्त्ता श्री जयरामदास ।

४ पार्श्वनाथ पुराण ।

रचियता पं० भूधरदास । भाषा हिन्दी । पत्र संख्या ६१. साइज १०॥x४ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर १० पंक्तिया और प्रति पंक्ति मे ४०–४६ अक्षर । रचना संवत् १७४२.

१५ पार्श्वनाथ महावीर पूजा ।

रचयिता श्री रामचन्द्र । भाषा हिन्दी । पृष्ठ संख्या ६. साइज ११x५॥ इञ्च । लिपि संवत् १८६८. लिपिकर्त्ता–नंदराम कासलीवाल ।

६ पार्श्वनाथ स्तोत्र ।

रचयिता मुनि श्री पद्मनन्दि । भाषा संस्कृत । प्रति सटीक है । टीकाकार–अज्ञात । पत्र संख्या ३. पद्य संख्या ६ लिपि संवत १६७१.

४१० पार्श्वनाथ स्तोत्र ।

सटीक रचयिता–अज्ञात । टीकाकार अज्ञात । यमकबंध । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या १. साइज

१०×४॥ इञ्च। पत्र सख्या ७.

४४८

पार्श्वनाथ स्तवन।

रचयिता अज्ञात भाषा संस्कृत। पत्र सख्या १ साइज १०॥×४॥ इञ्च। यमक बध पार्श्वनाथ स्तवन है। प्रति सटीक है।

४४९

पार्श्वनाथस्तोत्र।

रचयिता श्री पद्मप्रभुदेव, भाषा संस्कृत। पत्र सख्या १. साइज ११×४ इञ्च।

प्रति नं० २ पत्र सख्या १ साइज ११॥×४॥ इञ्च

प्रति न० ३ पत्र सख्या २ साइज १०×४॥ इञ्च। लिपिकर्त्ता हरेन्द्रनाथ।

४५०

पार्श्वनाथ स्तोत्र।

रचयिता अज्ञात। भाषा संस्कृत। पत्र सख्या ७ साइज ११×४॥ इञ्च। प्रति [illegible] और स्पष्ट है। पद्य सख्या [illegible] इसके पहिले भक्तमर स्तोत्र भी है।

४५१

पार्श्वनाथ समस्या स्तोत्र।

रचयिता अज्ञात। भाषा संस्कृत। पत्र सख्या ४ साइज ११×४॥ इञ्च।

४५२

पाशा केवली।

रचयिता अज्ञात। भाषा संस्कृत। पत्र सख्या १३. साइज १०×४॥ इञ्च। विषय-केवली भगवान की स्तुति। लिपिकाल संवत १८३६ लिपिकर्त्ता पंडित रूपचन्द्र। लिपिस्थान—कोटा।

प्रति न० २ पत्र सख्या १० साइज १०×४॥ इञ्च।

प्रति न० ३ पत्र संख्या ४० साइज ८॥×४ इञ्च। लिपि संवत १८१० लिपिस्थान-जयपुर।

प्र० नं० ४ पृष्ठ संख्या ४ साइज ११×४ इञ्च।

प्रति न० ५. पत्र सख्या १३ साइज १०×४ इञ्च। लिपि संवत् १८३६ लिपिकर्त्ता पं० रूपचन्द्र।

प्रति न० ६ पत्र सख्या १०×४ इञ्च।

प्रति न० ७ लिपिकार पंडित विजयराम। पत्र संख्या ६. साइज १०॥×४॥ इञ्च। लिपि संवत १८७३

प्रति न० ८. भाषा हिन्दी। पत्र सख्या ४. लिपि संवत १७७६ लिपिस्थान आमेर। लिपिकार दयाराम सोनी।

५ पिंगलछंदशास्त्र ।

रचयिता अज्ञात । भाषा अपभ्रंश । पत्र संख्या ७. साइज १२×६ इञ्च । प्रति अपूर्ण है । अन्तिम पृष्ठ नहीं है ।

६ पुण्यश्रव कथाकोश ।

रचयिता श्री रामचन्द्र । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या १४६ साइज ६॥×४ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पंक्तिया तथा प्रति पंक्ति मे ३६–४२ अक्षर । ५२ कथाओं का सग्रह है ।

पुण्याश्रवकथाकोप ।

रचयिता पं० जयचन्द्रजी । भाषा हिन्दी (गद्य) । पत्र सख्या ३० साइज १२×६ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पंक्तिया तथा प्रत्येक पंक्ति में ३६–४४ अक्षर । प्रति अपूर्ण है । ३० पृष्ठ से आगे के पृष्ठ नहीं है ।

- पुराणसार संग्रह ।

रचयिता भट्टारक श्री सकलकीर्त्ति । भाषा सस्कृत । पत्र सख्या १२६. साइज १२॥×५॥ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर १३ पंक्तिया और प्रति पंक्ति मे ४५–५२ अक्षर । लिपि सवत १८२२ दो प्रशस्तिया है । ग्रन्थ गद्य में है । इससे इसका महत्त्व और भी अधिक बढ जाता है ।

प्रति नं० २ पत्र सख्या १०१ साइज ११॥×५ इञ्च । प्रतिलिपि सवत् १५५१ प्रति जीर्णशीर्ण हो चुकी है । प्रारम्भ के दो पृष्ठ नही है ।

प्रति न० ३ पत्र सख्या १२१. साइज ११॥×५॥ इञ्च । लिपि संवत १५५१ लिपिस्थान डूंगरपुर ।

पुरुषार्थ सिद्धयुपाय ।

रचयिता श्री अमृतचन्द्रसूरि । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ६. साइज ११×५॥ इञ्च । प्रति मूल मात्र है ।

पुष्पाञ्जलिव्रतोद्यापनपूजा ।

रचयिता श्री गंगादास । भाषा संस्कृत । पत्र सख्या ७ साइज ६॥×४ इञ्च ।

४ पुष्पाञ्जलिव्रतोद्यापन ।

रचयिता पंडित श्री गगादास । भाषा संस्कृत । पत्र सख्या १४. साइज ८×४ इञ्च । लिपि संवत् १८६६. प्रथम दो पृष्ठ नहीं है ।

४६०
पूजासार ।

रचयिता अज्ञात। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ६२ साइज १०॥x५ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति मे ३६-४२ अक्षर।

प्रति नं० २ पृष्ठ संख्या ७५. साइज ११॥x५ इञ्च। लिपि संवत् १५६५. अनेक पूजाओं का संग्रह है।

४६१
पूजापाठसंग्रह ।

संग्रहकर्त्ता अज्ञात। भाषा हिन्दी संस्कृत। पत्र २१६. साइज १२x६ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर १२ पंक्तिया तथा प्रति पंक्ति मे ३७-४२ अक्षर। लिपिसंवत १६०६. लिपिस्थान कोटा (स्टेट) ग्रन्थ जिनवाणी संग्रह की तरह है। पूजाये, स्तोत्र, पाठ आदि दैनिक जीवन में काम आने वाले तथा अन्य सामग्री दी हुई है।

फ

४६२
फलादेश ।

रचयिता अज्ञात। पत्र संख्या ६ भाषा संस्कृत। साइज १०x४। इञ्च। विषय-ज्योतिष। प्रति अपूर्ण। आगे के पृष्ठ नहीं है।

ब

४६३
ब्रह्मविलास ।

रचयिता श्री भगवतीदास। भाषा हिन्दी। पत्र संख्या ८ साइज ११॥x५॥। इञ्च। रचना संवत १७३३ प्रति अपूर्ण। ८ से आगे के पृष्ठ नहीं।

४६४
बलभद्रपुराण ।

ग्रन्थकार पंडित रइधू। साइज ७x४ इञ्च। पत्र संख्या १७२ प्रत्येक पृष्ठ पर १२ पंक्तियां और प्रति पंक्ति मे २५-२६ अक्षर। है। प्रारम्भ के ४० पत्र कुछ २ फटे हुये है लेकिन ग्रन्थ भाग सुरक्षित है। प्रतिलिपि काल स० १६५६ भाषा अपभ्रंश। विषय-श्री रामचन्द्र लक्ष्मण आदि महापुरुषों का जीवन चरित्र। सम्पूर्ण ग्रंथ म ११ परिच्छेद है। ग्रन्थ के अन्त मे प्रशस्ति दी हुई है। जिससे मालूम होता है कि आचार्य गुणचन्द्र के शिष्य वाई सुहागो के समय में रूहितग के रहने वाले खिउपाल के पुत्र अगरमल्ल ने इस को लिखवाया था।

बालबोध।

कर्त्ता अज्ञात। भाषा हिन्दी। पत्र संख्या ११। साइज ६॥×४ इञ्च। विषय ज्योतिष।

प्रति नं० २ पत्र संख्या ३८. साइज १०×४॥ इञ्च। प्रति अपूर्ण। प्रथम पत्र और ३८ से आगे के पृष्ठ नहीं है।

बालबोधक।

रचयिता श्रीमत् मुंजादित्यविम। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ५७ साइज ८॥×४ इञ्च। विषय-ज्योतिष। लिपि संवत १७८०. प्रति अपूर्ण-४३ से ५५ तक के पृष्ठ नही हैं। ग्रन्थ के अन्त मे उस समय (१७८०) का अनाज का भाव भी दिया हुआ है। वह इस प्रकार है—गेहूँ १) चणा ।॥५ जौ ।॥३ मसूर ।॥) बाजरा ॥४ उडद ॥।२ मौठ ॥।३ ज्वार ।.६ घी ८॥ तेल ८४ गुड़ ।१ शक्कर ३८ टके ६। पके १)

बालबोधज्योतिषशास्त्र।

रचयिता मुजादित्य। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या २०. साइज ६॥×६ इञ्च। लिपि संवत १८०८.

प्रति नं० २ पत्र संख्या २० साइज ६×५॥ इञ्च। लिपि संवत १८०८ लिपिकर्त्ता श्री नाथूराम शर्मा।

बाशिठिया बालरा स्तवन।

रचयिता श्री कान्तिसागर। भाषा हिन्दी। पत्र संख्या १४ साइज ८×४ इञ्च। रचना संवत १७८३ सम्पूर्ण पद्य संख्या ७६

बाहुबलि चरित्र।

ग्रन्थकर्त्ता श्री धनपाल। भाषा अपभ्रंश। पत्र संख्या २५०. प्रत्येक पृष्ठ पर ६ पंक्तियां और प्रति पंक्ति मे ३३ से ३७ अक्षर। ग्रन्थ साधारण अवस्था में है। कितने ही स्थलों पर लाल पेन्सिल फेर दी गयी है। प्रतिलिपि संवत् १४८६ वसाख सुदी ७ बुधवार। ग्रन्थ के अन्त मे स्वय कवि ने अपना परिचय दिया है। ग्रन्थ की प्रतिलिपि भट्टारक श्री प्रभाचन्द्र के समय में हुई थी। परिच्छेद १८.

प्रति नं० २. पत्र संख्या २३७. प्रारम्भ के १३७ पत्र नहीं है। प्रत्येक पृष्ठ पर १० पंक्तिया और प्रति पंक्ति मे ३८-४५ अक्षर। १३८ से १७० तक के पत्र जीर्ण है। कही कहीं फट भी गये है। कागज अच्छा नहीं है। अक्षर अधिक सुन्दर नहीं है लेकिन अभी तक साफ है। सम्पूर्ण ग्रन्थ में १८ परिच्छेद हैं। दो चार जगह संस्कृत के श्लोक भी है। ग्रन्थ के अन्त में स्वयं कवि ने भी एक विस्तृत प्रशस्ति लिख दी है जिसमे कवि का वंश और समय जाना जा सकता है। प्रतिलिपि संवत् १५८४ आसोज बुदी ६ बुधवार है। आचार्य प्रभाचन्द्र के समय में बघेरवाल वशोत्पन्न श्री माधो ने ग्रन्थ की प्रति लिपि करवाई थी।

४६०
बिहारी सतसई।

रचयिता महाकवि बिहारी। भाषा हिन्दी। पत्र संख्या ४३. साइज ६x४।। इञ्च। लिपिस्थान कटक।

भ

४६१
भगवद्गीता।

भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ५७ साइज १०x४।। इञ्च। लिपि संवत १७२६.

प्रति नं० २ पत्र संख्या ४४. साइज ६।।x४ इञ्च। प्रति अपूर्ण।

प्रति नं० ३ पत्र संख्या १४७ साइज १०।।x४।। इञ्च। प्रति अपूर्ण है।

४६२
भगवती आराधना।

रचयिता आ० शिवकोटि। भाषा प्राकृत-संस्कृत। पत्र संख्या ३६७ साइज ११x५ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर १४ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३६-४२ अक्षर। लिपिकाल-चैत्र सुदि ११ संवत् ' ४.

प्रति नं० २. पत्र संख्या ११० साइज ११।।x५ इञ्च।

४६३
भगवती आराधना सटीक।

रचयिता श्री शिवाचार्य। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ४६८ साइज १२x।।। इञ्च। लिपि संवत १५६० ग्रन्थ सटीक है। टीकाकार श्री अपराजित सूरि। टीका नाम विजयोदया।

४६४
भक्तामर स्तोत्र भाषा।

रचयिता श्रीनथमल बिलाला और लालचन्द। भाषा हिन्दी (पद्य)। पत्र संख्या ७१ साइज १०x५ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर ६ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में २६-३३ अक्षर। रचना संवत १८१८ लिपि संवत १८५३

४६५
भक्तामर स्तोत्र।

रचयिता श्री मानतुंगाचार्य। भाषा संस्कृत। पृष्ठ संख्या ४

प्रति नं० २ पत्र संख्या २४. साइज १०x५ इञ्च। प्रति सटीक है। टीकाकार ने अपना नाम नहीं दिया है।

प्रति नं० ३ पत्र संख्या १५ साइज १०x४।। इञ्च। प्रति सटीक है। किन्तु पूर्व टीका से यह टीका भिन्न है। टीकाकार अज्ञात है। प्रति अपूर्ण है। प्रथम २ पृष्ठ नहीं हैं।

प्रति नं० ४. पत्र संख्या ४ साइज १०×४॥ इञ्च। प्रति सटीक है लेकिन अपूर्ण है।

प्रति नं० ५. पत्र संख्या १६ साइज ११×४॥ इञ्च। प्रति सटीक है। अर्थ हिन्दी में है। भाषा बहुत अशुद्ध और टूटी फूटी है इसलिये प्रति की भाषा प्राचीन मालूम देती है।

प्रति नं० ६ पत्र संख्या २८ साइज १०॥×४ इञ्च। प्रति सटीक है। टीका संस्कृत में है और विशद हैं। लिपि संवत १६५४ लिपि स्थान सारू डानगर।

प्रति नं० ७ पत्र संख्या १८. साइज १०॥×४॥ इञ्च। प्रति सटीक है। टीका संस्कृत में है। लिपि संवत १६३६ लिपिकार श्री पूरणमल कायस्थ। श्री केशवदास के पढने के लिये उक्त स्तोत्र की प्रतिलिपि की गयी थी।

प्रति नं० ८. पत्र संख्या ४३ साइज १०॥×५ इञ्च। मूल पद्यों के अतिरिक्त प्रत्येक पद्य पर कथा भी संस्कृत में दी हुई है। टीकाकार तथा कथा लेखक ब्रह्म श्री रायमल्ल है। लिपि संवत १८०४

प्रति नं० ९. पत्र संख्या १९ साइज ११॥×५ इञ्च। प्रति सटीक है। टीकाकार वर्णी रायमल्ल। टीका काल-संवत १६६७. लिपिसंवत १७४७. अन्त में टीकाकार ने अपना संक्षिप्त परिचय भी दे रखा है। लिपिस्थान संग्रामपुर है।

प्रति नं० १० पत्र संख्या ३५ साइज १०×५ इञ्च। प्रति सटीक है। टीकाकार वर्णीरायमल्ल। लिपि कालसंवत १६९८

प्रति नं० ११ पत्र संख्या ४ साइज ११×४॥ इञ्च। प्रति सटीक है टीकाकार श्री अमरमलसूरि। लिपि बहुत बारीक है।

प्रति नं० १२. पत्र संख्या ५. साइज ११×४॥ इञ्च। प्रत्येक पद्य का उसी के ऊपर हिन्दी में अनुवाद दे रखा है लेकिन वह स्पष्ट नहीं है।

प्रति नं० १३ पत्र संख्या ६. साइज १२×४ इञ्च। लिपि संवत १७७२

भवनदीपक।

रचयिता पद्मप्रभसूरि। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ६ साइज ९×५ इञ्च।

प्रति नं० २ पत्र संख्या १३ साइज १०×४॥ इञ्च लिपि संवत १८७२

भर्तृहरिशतक।

रचयिता श्री भर्तृहरिशत। टीकाकार अज्ञात। भाषा संस्कृत गद्य-पद्य। पत्र संख्या ३२. साइज

१०॥×४॥ इञ्च। विषय–नीति शृंगार और वैराग्य शतक। ग्रन्थ अपूर्ण ३३ पृष्ठ से आगे नहीं है।

८७८
भविष्यदंत कथा।

रचयिता ब्रह्मरायमल। भाषा हिन्दी। पत्र संख्या ६६ साइज ८॥×५ इञ्च। रचना संवत् १६३३. लिपि संवत् १७२६

४७९
भविष्यदत्तचरित्र।

रचयिता पंडित श्रीधर। भाषा प्राकृत। पत्र संख्या ६८ साइज १०॥×४॥ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर १० पंक्तियां और प्रति पंक्ति में ३८–४४ अक्षर।

प्रति नं० २ पत्र संख्या ६४ साइज ११॥×६ इञ्च। लिपि संवत नहीं है।

४८०
भविष्यदत्त चरित्र।

रचयिता पं० श्रीधर। भाषा संस्कृत। पृष्ठ संख्या ६० साइज १०॥×४॥ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर १० पंक्तियां और प्रति पंक्ति में ३८-४४ अक्षर। लिपि संवत १५५५ मध्य के ३२ से ३६ तक के पृष्ठ नहीं है।

प्रति नं० २ पत्र संख्या ६१ साइज ६×४॥ इञ्च। प्रति अपूर्ण है। ६१ से आगे के पृष्ठ नहीं है।

प्रति नं० ३ पत्र संख्या ६८. साइज ११॥×४ इञ्च।

४८१
भविष्यदत्त चरित्र।

रचयिता धनपाल। भाषा अपभ्रंश। पत्र संख्या १०७ साइज १०॥×४॥ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर १२ पंक्तियां और प्रति पंक्ति में ३८-४४ अक्षर। लिपि संवत १५६४

प्रति नं० २ पत्र संख्या १४ साइज ११×४॥ इञ्च। प्रति अपूर्ण और जीर्ण शीर्ण है।

प्रति नं० ३ पत्र संख्या ६७ साइज ११×६ इञ्च। शास्त्र नहीं है। प्रति प्राचीन मालूम देती है।

प्रति नं० ४ पत्र संख्या ६७ साइज १०॥×४॥ इञ्च। प्रति अपूर्ण।

प्रति नं० ५ पत्र संख्या १०८ साइज १०×४॥ इञ्च। लिपि संवत १५८८ मंगसिर सुदी ५

प्रति नं० पत्र संख्या १६७ साइज ११×५ इञ्च। प्रतिलिपि संवत १५६५ लिपिस्थान मोजमाबाद।

प्रति नं० ७ पत्र संख्या १५१ साइज ११×४॥ इञ्च। अपूर्ण। प्रति बहुत प्राचीन दिखाई देती है।

प्रति नं० ८ पत्र संख्या ११५ साइज १२×५ इञ्च। लिपि संवत १५५० आसोज बुदी १२ शनिवार। लिपि मुनि श्री रत्नकीर्त्ति के पढने के लिये बलराज ने लिखवाई थी।

प्रति नं० ६ पत्र संख्या १४६. साइज १०×४ इञ्च। लिपि संवत १५८६. मंगसिर बुदी ८ राव श्री जगमल के राज्य में आचार्य श्री धर्मचन्द्र के समय में अजमेर शहर में इसकी प्रतिलिपि हुई थी।

प्रति नं० १० पत्र संख्या १५७ साइज ६॥×४॥ इञ्च। अपूर्ण।

प्रति नं० ११ पत्र संख्या १४० साइज १०×५ इञ्च। लिपिकाल-संवत् १५८७

२ भाद्रपदपूजासंग्रह।

संग्रहकर्त्ता अज्ञात। पत्र संख्या ६१. साइज १०×४॥ इञ्च। अनेक पूजाओं का संग्रह है। प्रति अपूर्ण है।

३ भामिनिविलास।

रचयिता श्री प० जगन्नाथ। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या २० साइज ११×४॥ इञ्च। विषय-शृंगार रस।

४ भावचक्र।

रचयिता अज्ञात। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या १. साइज १०।×४॥ इञ्च। ज्योतिष का हिसाब है।

प्रति नं० २ पत्र संख्या १ साइज १०×४ इञ्च। विषय-ज्योतिष।

५ भावनासारसंग्रह।

रचयिता श्री चामुण्डराय महाराज। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ८१ साइज ६॥×३॥ इञ्च। लिपि संवत १५४१ लिपि स्थान हिसार। प्रथम पृष्ठ नहीं है।

६ भावसंग्रह।

रचयिता मुनि श्री नेमिचन्द्र। भाषा प्राकृत। पत्र संख्या १६ साइज ११×४ इञ्च। लिपि संवत १७३३ लिपिकर्त्ता ब्र० जिनदास।

७ भावसंग्रह।

रचयिता श्री श्रुतमुनि। भाषा अपभ्रंश पत्र संख्या ६ साइज १०×४ इञ्च।

८ भावसंग्रह।

रचयिता पंडित वामदेव। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ३६ साइज १०×४ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर १३ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में २६-३२ अक्षर। विषय-गुणस्थान चर्चा।

प्रति नं० २ पत्र संख्या ३४ साइज १०॥×४॥ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति मे ३४-३८ अक्षर। लिपि संवत १५४१ प्रथम पृष्ठ नही है। ग्रन्थ साधारण अवस्था मे है। गुणस्थान तथा षोडशकारण भावनाओं का वर्णन दिया हुआ।

४८६
भावषट्त्रिंशिका।

रचयिता श्री सारंग। भाषा संस्कृत हिन्दी। पत्र संख्या ७ साइज १२×६ इञ्च।

४९०
भावशतक।

श्री नागराज। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ८ साइज ११॥×४॥ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर १३ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति मे ३६-४४ अक्षर।

४९१
भावत्रिभंगी।

रचयिता नेमिचन्द्राचार्य। पत्र संख्या १६४. साइज ११॥×६ इञ्च। विषय- भावों का १४ मार्गणाओं की अपेक्षा से सविस्तार वर्णन।

प्रति नं० २ पृष्ठ संख्या २४. साइज ११॥।×५॥। इञ्च। प्रति अपूर्ण है।

४९२
भावत्रिभंगी सटीक।

रचयिता श्री नेमिचन्द्राचार्य। भाषा प्राकृत। टीकाकार श्री सोमदेव। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ३४ साइज १०॥×४ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर १० पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति मे ४८-५४ अक्षर।

प्रति नं० २. पत्र संख्या २१. साइज ११×४॥ इञ्च। लिपि संवत १५०६. केवल मात्र है।

प्रति नं० ३ पत्र संख्या ४३ साइज १०॥×४॥ इञ्च। प्रति अपूर्ण है। प्रथम १५ पृष्ठ नही है।

प्रति नं० ४ पत्र संख्या १६ साइज १०॥×४॥ इञ्च।

प्रति नं० ५ पत्र संख्या ४२ साइज १२×५॥ इञ्च। लिपि संवत १८३१.

४९३
भूपालचतुर्विंशति स्तोत्र।

रचयिता पं० आशाधर। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या १७. साइज १०×४ इञ्च। प्रति सटीक है। टीकाकार अज्ञात है।

प्रति नं० २ पृष्ठ संख्या ५. साइज ११×५॥ इञ्च।

प्रति नं० ३. पत्र संख्या ५. साइज १२×५ इञ्च।

प्रति नं० ४. पत्र संख्या १४. साइज ११॥×४॥ इञ्च। प्रति सटीक है। इसमे विषापहार स्तोत्र भी है।

प्रति नं० ५. पत्र संख्या ४. साइज ११।।×४ इञ्च।

प्रति नं० ६. पत्र संख्या ४. साइज ११×४ इञ्च।

भोजप्रबंध।

रचयिता रत्नमंदिरगणि। भाषा संस्कृत। पृष्ठ पर १४ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ४२-४८ अक्षर। रचना संवत् १५१७ लिपि संवत् १८०.

म

मदन जयमाल।

रचयिता श्री सुमति सागर। भाषा हिन्दी। पत्र संख्या २. साइज १०।।×४।। इञ्च।

मदनपराजय।

हरिदेव विरचित। भाषा अपभ्रंश। पत्र संख्या २३ साइज ६।।×४।। इञ्च। प्रतिलिपि संवत् १५७६ प्रति अपूर्ण है।

मदनपराजय।

रचयिता श्री जिनदेव। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ३० साइज ११×५।। इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ४२-४८ अक्षर। परिच्छेद पांच है। कथा गद्य पद्य दोनों में ही है।

प्रति नं० २. पत्र संख्या ५३ साइज १०।।×५ इञ्च। प्रति लिपि संवत् १५ ०

मध्यसिद्धान्तकौमुदी।

रचयिता श्री वरदराज। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ६५. साइज १२×६ इञ्च। लिपि संवत् १८४६ लिपिस्थान टोंक।

मल्लिनाथ चरित्र।

रचयिता भट्टारक श्री सकलकीर्ति। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ४३ साइज १२×५।। इञ्च। लिपिकाल-संवत् १६३६ विषय-भगवान मल्लिनाथ का जीवन चरित्र।

मल्लिनाथचरित्र।

रचयिता श्री जयमित्रहल। भाषा अपभ्रंश। पत्र संख्या १२१. साइज १०×४ इञ्च। प्रति अपूर्ण।

५०१
महादेवी सूत्र ।

रचयिता अज्ञात । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ११ साइज १०x४॥ इञ्च । विषय—गणित ज्योतिष ।

५०२
महापुराणसंग्रह भाषा ।

भाषा कर्त्ता अज्ञात । भाषा हिन्दी । पत्र संख्या १६३ साइज ११॥x५॥ इञ्च । प्रति अपूर्ण है प्रारम्भ १३८तथा अन्त के १६३ से आगे के पृष्ठ नहीं है । गुणभद्राचार्य कृत महापुराण की भाषा है ।

५०३
महानाटक ।

रचयिता श्री हनुमान । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ८५ साइज १०॥x४ इञ्च । लिपि संवत १७२८.

प्रति नं० २ पत्र संख्या ११० साइज ११x६ इञ्च । लिपि संवत १७१५

५०४
महापुराण ।

रचयिता महाकवि पुष्पदन्त । भाषा अपभ्रंश । साइज १०॥x५ इञ्च । पत्र संख्या ४१३ । इसमे आगे के पृष्ठ नहीं है । प्रति नवीन है । आदिपुराण मात्र है ।

प्रति नं० २ पत्र संख्या २७८ साइज १०॥x५ इञ्च । प्रति अपूर्ण । केवल १०७ से २७८ तक के पृष्ठ है ।

प्रति नं० ३ पत्र संख्या २८१ साइज १०॥x५॥ इञ्च । १२६ से आगे के पृष्ठ है । लिपिसंवत १५६४

प्रति नं० ४ पत्र संख्या २२८ साइज १०x४॥ इञ्च ।

प्रति नं० ५ पत्र संख्या ३०८ साइज १२x४ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर १० पंक्तियां और प्रति पंक्ति में ४४–४२ अक्षर । सचित्र १०२ प्रतिलिपि संवत १६१४ है । उत्तरपुराण की प्रति है ।

प्रति नं० ६ पत्र संख्या ३५० साइज १२x६ इञ्च । प्रति लिपि अपूर्ण । ३५० पृष्ठ से आगे नहीं है ।

५०५
महापुराण ।

रचयिता श्री गुणभद्राचार्य । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या २६२ साइज १२x५॥ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ४१–४६ अक्षर । लिपि संवत १५२४ लिपिकार श्री जसवीर ने महाराजा रामसिंह के शासन काल में उपलब्ध किया है । विषय-६३ शलाका पुरुषों का महापुराण का वर्णन । ग्रन्थ के अन्त में विस्तृत प्रशस्ति दी हुई है ।

प्रति नं० २ पत्र संख्या ५६४ साइज ११x५ इञ्च । प्रति जीर्णशीर्ण है ।

प्रति नं० ३. पत्र संख्या २६१ साइज १२x५॥ इञ्च । प्रति नवीन है । अन्तिम कुछ पृष्ठ नहीं हैं । लिपि संवत १८८६

प्रति नं० ४. पत्र संख्या ३७६. ग्रन्थ जीर्णशीर्ण है। ३६ से २१७ तक पत्र नहीं है।

महापुराणटिप्पण।

व्याख्याकर्त्ता–अज्ञात। भाषा–अपभ्रंश-संस्कृत। पत्र संख्या १०६ साइज १२×४॥ इञ्च। प्रति प्राचीन शुद्ध और स्पष्ट है। प्रति अपूर्ण है। अपभ्रंश से संस्कृत में टीका की हुई है।

महावीर द्वात्रिंशिका।

रचयिता श्री भट्टारक सुदर्शकीर्त्ति। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या २. साइज १२×५॥ इञ्च। भगवान महावीर की स्तुति की गयी है। प्रति अशुद्ध है।

महीपाल चरित्र।

ग्रन्थकर्त्ता श्री चारित्र सुन्दरगणि। पत्र संख्या ३३ साइज ७×३॥ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर १० पंक्तियां और प्रति पंक्ति में ४७ से ५५ अक्षर। भाषा संस्कृत। लिपि संवत १८२५. पांच सर्ग। ग्रन्थ के अन्त में स्वयं कवि ने भट्टारक परम्परा का वर्णन किया है। कवि ने अपने को भट्टारक श्री रत्नसिंहसूरि का शिष्य लिखा है। ग्रन्थ के कागज और अक्षर दोनों अच्छे हैं।

माणिक्य कल्प।

रचयिता श्वेताम्बराचार्य श्री मानतुंग। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ६. साइज १०×४ इञ्च। लिपि संवत १६५०. पद्य संख्या ५६

माधवानल कथा।

रचयिता अज्ञात। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या १० साइज १३×५ इञ्च। लिपि संवत १८३८. लिपिकार भट्टारक श्री सुरेन्द्रकीर्त्ति।

माधवनिदान

रचयिता श्री माधव। भाषा संस्कृत। पृष्ठ संख्या ६६ साइज ८॥×५॥ इञ्च।

प्रति नं० २. पृष्ठ संख्या ८२ साइज १०×६ इञ्च। लिपि संवत् १६५७ लिपि स्थान मालपुरा। प्रति अपूर्ण है।

मानमञ्जरी नाममाला।

रचयिता श्री नन्ददास। भाषा हिन्दी। पत्र संख्या ११ साइज १२×५ इञ्च। पद्य संख्या ३०४. लिपि संवत् १८३६. भट्टारक श्री सुरेन्द्र कीर्त्ति ने प्रतिलिपि बनवाई।

५५३
मुग्धावबोधन ।

रचयिता श्री कुलमंडन सूरि । भाषा संस्कृत । पृष्ठ संख्या १० साइज १०×४ इञ्च । विषय—व्याकरण ।

५५४
मुद्राराक्षस ।

रचयिता श्री विशाखदत्त । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ४० विषय—नाटक ।

५५५
मुनिसुव्रत पुराण ।

रचयिता ब्रह्मचारी कृष्णदास । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ११४. साइज १२×४॥ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पंक्तियां और प्रति पंक्ति में ४२-४६ अक्षर । रचना संवत् १६८१ लिपि संवत् १८४०. ग्रन्थ में मुनिसुव्रत नाथ का जीवन चरित्र वर्णित है ।

५५६
मुनिसुव्रत पुराण ।

रचयिता भट्टारक श्री सुरेन्द्रकीर्त्ति । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ६८ साइज ॥×६ इञ्च । ग्रन्थ अपूर्ण है । पुराण में मुनिसुव्रत नाथ के संक्षिप्त जीवन चरित्र के पश्चात् न्याय शास्त्र का विस्तृत वर्णन किया हुआ है । लेकिन प्रति में चार्वाक मत के खण्डन तक के ही पृष्ठ है ।

५५७
मुहूर्त्त चिंतामणि ।

रचयिता श्री दैवज्ञराम । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ४४ साइज १०॥×४॥ इञ्च । लिपिसंवत् १८४१. लिपिकर्त्ता बाबाजी ज्ञानविमलजी ।

प्रति नं० २ पत्र संख्या ६६ साइज ११॥×४ इञ्च । प्रति अपूर्ण है ।

प्रति नं० ३ पत्र संख्या १३ साइज १२×४॥ इञ्च ।

प्रति नं० ४ पत्र संख्या ८ साइज १२×४॥ इञ्च । प्रति अपूर्ण है ।

प्रति नं० ५ पत्र संख्या ७ साइज १०॥×४ इञ्च । प्रति अपूर्ण ।

५५८
मुहूर्तमुक्तावली ।

रचयिता श्री परमहंस परिव्राजकाचार्य । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या १६ साइज १०×४ इञ्च । विषय—ज्योतिष ।

५५९
मूलाचार ।

रचयिता भट्टारक श्री सकलकीर्त्ति । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या १६६. साइज ११×४ इञ्च । पद्य संख्या ३३४६. लिपि संवत् १८६६ लिपिस्थान जयपुर ।

प्रति नं० २. पत्र संख्या ६१. साइज १२×६ इञ्च। प्रति जीर्ण शीर्ण है। दीमक ने बहुत पृष्ठों को खा लिया है।

प्रति नं० ३ पत्र संख्या १७७. साइज १०|×४|| इञ्च।

मेघदूत।

रचयिता-महाकवि कालिदास। टीकाकार श्री लक्ष्मी निवास। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या २२. साइज १०×४ इञ्च। इस प्रति के अतिरिक्त १२ प्रतियां और हैं।

मेघमालाव्रतोद्यापन पूजा।

रचयिता अज्ञात। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ७ साइज ११||×५|| इञ्च। लिपिसंवत १८३६. लिपिकार भट्टारक श्री सुरेन्द्रकीर्त्ति। लिपिस्थान माधोपुर (जयपुर)।

मेघमालाव्रताख्यानक।

रचयिता अज्ञात। पत्र संख्या ६ साइज १०×५|| इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर १० पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३२-३६ अक्षर।

मेघेश्वर चरित्र।

ग्रन्थकर्त्ता श्री पंडित रयधू। साइज ७×३ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर १० पंक्तियां और प्रति पंक्ति में ३४-३४ अक्षर। पत्र संख्या १७३. प्रारम्भ के २४ पृष्ठ नहीं हैं। ग्रन्थ जीर्ण है पर अधिक नहीं। प्रतिलिपि संवत् १५६६ भाषा अपभ्रंश। १३ परिच्छेद है। ग्रन्थ के अन्त भाग में एक अधूरी प्रशस्ति दी हुई है जिसमें केवल भट्टारक गुणभद्र का नाम तथा ग्रन्थ लिखवाने वाले के वंश का नाम ही मालूम हो सकता है।

प्रति नं० २. साइज ७×३|| इञ्च। पत्र संख्या १५६. लिपिकाल संवत् १६०६ पत्र जीर्ण प्रायः है। बहुत से पत्रों के कितने ही अक्षर स्याही फिरने के कारण पढने में नहीं आते। प्रारम्भ के ५ पत्रों का कुछ भाग दीमक ने खा लिया है। प्रशस्ति अधूरी है।

मेदनी कोष।

रचयिता श्री मेदनी। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ११२ साइज ६×५|| इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर ६ पंक्तियां तथा प्रत्येक पंक्ति में ३५-४० अक्षर।

मृगांक चरित्र।

रचयिता पं० भगवतीदास। भाषा अपभ्रंश। पत्र संख्या ७४. साइज ११×६ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर

१० पंक्तियां और प्रति पंक्ति में ३०-३५ अक्षर। लिपिसंवत १७०० ।परिच्छेद ४. कागज मोटे है प्रशस्ति भी है।

५२६ मृगावती चरित्र।

रचयिता सकलचन्द्र। भाषा हिन्दी। पत्र संख्या ३० साइज १०×४ इञ्च। रचना संवत १६२८. लिपि संवत १६८७ लिपिस्थान मालपुरा।

य

५२७ यति क्रियाकलाप।

रचयिता श्री प्रभाचन्द्रदेव। भाषा संस्कृत। पृष्ठ संख्या १२० साइज १२×६ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर १५ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ४८-५४ अक्षर। लिपि संवत १५७७. संघपति जगसी के पुत्र न ..णमल ने ग्रंथ की प्रति लिपि करवाई।

मंगलाचरण—

जिनेन्द्रमुन्मीलितकर्म्मबंध प्रणम्य सन्मार्गकृतस्वरूप।
अनन्तबोधादिभव गुणौध क्रियाकलाप प्रकट प्रवक्ष्ये॥

अन्तिम पाठ—

श्रीमद् गौतम नमामि गणधरैर्लोकत्रयोद्योतकैं।
सव्यक्तसकलोद्यमो यतिपतेयतिप्रभाचन्द्रत.॥१॥

५२८
मंत्रराज ग्रंथ।

रचयिता श्री महेन्द्रसूरि। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ४९. साइज १०॥×५॥ इञ्च। लिपि संवत १६६३ ग्रंथ सटीक है।

५२९
यंत्रराजागम।

रचयिता श्री मलयेन्दुसूरि। भाषा संस्कृत। पृष्ठ संख्या ३६ साइज १०॥×४ इञ्च। पांच सर्ग। लिपि संवत १६४६ प्रथम तीन पृष्ठ नहीं है।

५३०
यशस्तिलक चम्पू।

रचयिता श्री सोमदेवसूरि। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या २५६ साइज १२॥×६ इञ्च। रचना शक संवत १०८८. लिपि संवत १८६६

यशोधर चरित्र।

रचयिता पं० लिखमीदास। भाषा हिन्दी पद्य। पत्र संख्या ८७ साइज ११॥×४॥ इञ्च। सम्पूर्ण पद्य संख्या ६०६. रचना संवत १७८२ लिपि संवत १७८४ लिपिस्थान आमेर (जयपुर)।

यशोधर रास।

रचयिता ब्रह्म श्री जिनदास। भाषा हिन्दी। पत्र संख्या २५. साइज ११×५ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर १२ पंक्तिया तथा प्रत्येक पंक्ति पर ३८-४४ अक्षर। लिपि संवत १८७६.

यशोधर चरित्र।

रचयिता श्री खुशालचन्द्र। भाषा हिन्दी। पत्र संख्या ४६ साइज ११×५॥ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर १२ पंक्तिया तथा प्रति पंक्ति में ४०-४६ अक्षर। रचना संवत १७८१ लिपि संवत १८०१

यशोधर चरित्र।

रचयिता आचार्य श्री ज्ञानकीर्त्ति। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ६६ साइज ११॥×५ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर ९ पंक्तिया और प्रति पंक्ति में ३१-३५ अक्षर। लिपि संवत १६६१.

प्रति नं० २ पत्र संख्या ३५ साइज ९॥×४॥ इञ्च। लिपि संवत १६६१.

यशोधर चरित्र।

रचयिता कायस्थ श्री पद्मनाभ। भाषा संस्कृत। पृष्ठ संख्या ८९ साइज १०×४॥ इञ्च। लिपि संवत १७६६.

प्रति नं० २ पत्र संख्या ३५. साइज ९॥×४॥ इञ्च। प्रति अपूर्ण।

प्रति नं० ३ पत्र संख्या ३९ साइज ९॥×४॥ इञ्च। ग्रन्थ समाप्ति के बाद प्रशस्ति दी हुई है।

प्रति नं० ४ पत्र संख्या ६९ साइज ९॥×४॥ इञ्च। प्रतिलिपि संवत १५३८. ग्रंथ की प्रतिलिपि भट्टारक श्री जिनचंद्र के शिष्य मारग ने पढने के लिये की थी।

यशोधर चरित्र।

रचयिता साह लोहट। भाषा हिन्दी पद्य। पत्र संख्या १३३. साइज ८×४॥ इञ्च। प्रारम्भ के ३१ पृष्ठ नहीं हैं। लिपि संवत् १८०३

ग्रन्थकर्त्ता श्री पद्मनाथ तदनुसारेण साह लोहट दुसृयांमा गौत्र साह धमासुत बघेरवाल वासि

गढ़ बूंदीराज रा० श्री भावसिंहजी विजैराजि।

५३८

यशोधरचरित्र।

रचयिता श्री पूर्णदेव। भाषा संस्कृत। पृष्ठ संख्या ६ साइज १०×५॥ इञ्च। लिपि संवत १८४४

५३८

यशोधर चरित्र।

रचयिता श्री विजयकान्त। भाषा संस्कृत (गद्य)। पत्र संख्या २६ साइज ११॥×५ इञ्च। ग्रथ गद्य में है। कथा सक्षेप में दी हुई है। अतः पाठक शीघ्र ही समझ सकता है।

५३९

यशोधर चरित्र।

रचयिता सूरि श्री श्रुतसागर। पत्र संख्या ७३ साइज ११×४ इञ्च। भाषा संस्कृत।

५४०

यशोधर चरित्र।

रचयिता भट्टारक श्री सकलकीर्त्ति। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ३६ साइज ११×५ इञ्च। श्लोक संख्या ९३० लिपि संवत १६४६ लिपिस्थान मालपुर। उक्त ग्रन्थ में यशोधर महाराज का जीवन दिया हुआ है।

प्रति नं० २ पत्र संख्या ४७ साइज ११×५ इञ्च। उक्त ग्रन्थ की प्रतिलिपि आचार्य ज्ञानकीर्त्ति के शिष्य पं० खेतसी के पढ़ने के लिये की गयी थी।

प्रति नं० ३ पत्र संख्या ७४ साइज १०॥×४॥ इञ्च। लिपि संवत १६३० ब्रह्मरायमल्ल इसके लिपिकर्त्ता हैं।

५४१

यशोधरचरित्र।

रचयिता महाकवि पुष्पदन्त। भाषा प्राकृत। पत्र संख्या ६९ साइज ६॥×५ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर ६ पंक्तियां और प्रति पंक्ति में २८-३४ अक्षर। लिपि संवत १५८०. लिपिस्थान सिकन्दराबाद। प्रशस्ति नहीं है। कठिन शब्दों की संस्कृत में टीका दे रखी है।

प्रति नं० २ पत्र संख्या ८६ साइज ६॥×५ इञ्च। लिपि काल संवत १५७४ मगसिर सुदी ५ अन्त में प्रशस्ति दी हुई है लेकिन प्रारम्भ की तीन पंक्तियां बाद में मिटादी गई हैं।

प्रति नं० ३. पत्र संख्या ७३. साइज ११×५॥ इञ्च। लिपिकाल संवत १६१०. प्रशस्ति दी हुई है। ग्रन्थ की प्रतिलिपि भट्टारक प्रभाचन्द्र के शिष्य धर्म्मचन्द्र के समय में हुई है।

प्रति नं० ४ पत्र संख्या ६५ साइज ११×५॥ इञ्च। लिपि संवत १६१३. उक्त प्रति श्री धर्म्मचन्द्र के

यशोधर चरित्र ।

रचयिता पं० लिखमीदास । भाषा हिन्दी पद्य । पत्र संख्या ८७. साइज ११॥×४॥ इञ्च । सम्पूर्ण पद्य संख्या ६०६ रचना संवत १७८२ लिपि संवत १७८४ लिपिस्थान आमेर (जयपुर ।

यशोधर रास ।

रचयिता ब्रह्म श्री जिनदास । भाषा हिन्दी । पत्र संख्या २५ साइज ११×५ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर १२ पंक्तियां तथा प्रत्येक पंक्ति पर ३८–४४ अक्षर । लिपि संवत १८२६.

यशोधर चरित्र ।

रचयिता श्री खुशालचन्द्र । भाषा हिन्दी । पत्र संख्या ४६ साइज ११×५॥ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर १२ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ४०–४६ अक्षर । रचना संवत १७८१ लिपि संवत १८०१

यशोधर चरित्र ।

रचयिता आचार्य श्री ज्ञानकीर्त्ति । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ६६. साइज ११॥×५ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर ६ पंक्तियां और प्रति पंक्ति में ३१–३५ अक्षर । लिपि संवत १६६१.

प्रति नं० २ पत्र संख्या ३५ साइज ६॥×४॥ इञ्च । लिपि संवत १६६१.

यशोधर चरित्र ।

रचयिता कायस्थ श्री पद्मनाभ । भाषा संस्कृत । पृष्ठ संख्या ८६ साइज १०×४॥ इञ्च । लिपि संवत १७६६

प्रति नं० २. पत्र संख्या २०. साइज ६॥×३॥ इञ्च । प्रति अपूर्ण ।

प्रति नं० ३ पत्र संख्या ३६ साइज ६॥×४॥ इञ्च । ग्रन्थ समाप्ति के बाद प्रशस्ति दी हुई है ।

प्रति नं० ४ पत्र संख्या ६६ साइज ६॥×४॥ इञ्च । प्रतिलिपि संवत् १५३८. ग्रंथ की प्रतिलिपि भट्टारक श्री जिनचंद्र के शिष्य सारंग ने पढने के लिये की थी ।

यशोधर चरित्र ।

रचयिता साह लोहट । भाषा हिन्दी पद्य । पत्र संख्या १३३ साइज ८×४॥ इञ्च । प्रारम्भ के ३१ पृष्ठ नहीं हैं । लिपि संवत १८०३.

ग्रन्थकर्त्ता श्री पद्मनाथ तदनुसारेण साह लोहट दुमयांसों गोत्र साह धर्मासुत बघेरवाल वासि

गट बूंदीगज राः श्री भावसिंहजी विजैराजि।

५३८
यशोधरचरित्र।

रचयिता श्री पूर्णदेव। भाषा संस्कृत। पृष्ठ संख्या ६ साइज १२x५॥ इञ्च। लिपि संवत १८४४

५३८
यशोधर चरित्र।

रचयिता श्री विजयकीर्ति। भाषा संस्कृत (गद्य)। पत्र संख्या २६ साइज ११॥x५ इञ्च। ग्रंथ गद्य मे है। कथा संक्षेप में दी हुई है। अतः पाठक शीघ्र ही समझ सकता है।

५३९
यशोधर चरित्र।

रचयिता सूरि श्री श्रुतसागर। पत्र संख्या ७३ साइज ११x४ इञ्च। भाषा संस्कृत।

५४०
यशोधर चरित्र।

रचयिता भट्टारक श्री सकलकीर्ति। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ३६, साइज ११x५ इञ्च। श्लोक संख्या ६६० लिपि संवत १६५६ लिपिस्थान मालपुर। उक्त ग्रन्थ में यशोधर महाराज का जीवन दिया हुआ है।

प्रति नं० २ पत्र संख्या ५७ साइज ११x५ इञ्च। उक्त ग्रन्थ की प्रतिलिपि आचार्य ज्ञानकीर्ति के शिष्य पं० खेतसी के पढने के लिये की गयी थी।

प्रति नं० ३ पत्र संख्या ७४ साइज १२॥x५॥ इञ्च। लिपि संवत १६३० ब्रह्मरायमल्ल इसके लिपिकर्त्ता है।

५४१
यशोधरचरित्र।

रचयिता महाकवि पुष्पदन्त। भाषा प्राकृत। पत्र संख्या ६१ साइज ६॥x४ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर ६ पंक्तियां और प्रति पंक्ति में २८-३४ अक्षर। लिपि संवत १५८०, लिपिस्थान सिकन्दराबाद। प्रशस्ति नहीं है। कठिन शब्दों की संस्कृत में टीका दे रखी है।

प्रति नं० २ पत्र संख्या ८६ साइज ६॥x४ इञ्च। लिपि काल संवत १४७४ मगसिर सुदी ४ अन्त में प्रशस्ति दी हुई है लेकिन प्रारम्भ की तीन पंक्तियां बाद में मिटादी गई हैं।

प्रति नं० ३ पत्र संख्या ७३ साइज ११x५॥ इञ्च। लिपिकाल संवत १६१०, प्रशस्ति दी हुई है। ग्रन्थ की प्रतिलिपि भट्टारक प्रभाचन्द्र के शिष्य धर्म्मचन्द्र के समय में हुई है।

प्रति नं० ४ पत्र संख्या ६५, साइज ११x५॥ इञ्च। लिपि संवत १६१३, उक्त प्रति श्री धर्म्मचन्द्र के

शिष्य श्री ललितकीर्त्ति के समय मे साह पूना तथा उनकी स्त्री बालो ने लिखीवाई थी। पत्र कुछ गलने लग गये हैं।

प्रति नं ५ पत्र संख्या ६४ साइज १०×५ इञ्च। लिपि संवत् १५८० प्रति लिपी भट्टारक प्रभाचन्द्र के समय में दोदू नामक खण्डेलवाल जैन ने करवाई थी।

प्रति नं० ६ पत्र संख्या ८२ साइज ११×५ इञ्च। लिपिसंवत १६५७ प्रशस्ति नही है। ग्रन्थ का हाशिया दीमक ने खा लिया है।

प्रति नं० ७ पत्र संख्या ६१ साइज ११×६ इञ्च। लिपि संवत् नहीं है। प्रशस्ति नही है।

प्रति नं० ८ पत्र संख्या ५६ साइज ११॥×५॥ इञ्च। लिपि संवत् १७१५ प्रति लिपि आमेर के भट्टारक नरेन्द्र कीर्त्ति के शिष्य भट्टारक श्री महेन्द्रकीर्त्ति ने करवाई।

प्रति नं० ६ पत्र संख्या ४२ साइज १२×५ इञ्च। ग्रन्थ बहुत कुछ जीर्णशीर्ण हो गया है।

योगचिंतामणि।

संग्रहकर्त्ता श्री हर्षकीर्त्ति। भाषा संस्कृत। पृष्ठ संख्या ६० साइज १०×४ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर १५ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३८-४४ अक्षर। विषय-आयुर्वेद।

प्रति नं० २ पत्र संख्या ३३ साइज १३×६॥ इञ्च। विषय-आयुर्वेद। ग्रंथ में पांच अधिकार है और वे अलग २ लेखकों के लिखे हुये हे।

योगप्रदीप।

रचयिता अज्ञात। भाषा संस्कृत। पृष्ठ संख्या ७ साइज १०॥×५॥ इञ्च। सम्पूर्ण पद्य संख्या १४१ विषय-योगशास्त्र।

योगीरासा।

रचयिता श्री ब्रह्म जिनदास। भाषा हिन्दी। पत्र संख्या २ साइज १०×४ इञ्च। भगवान आदिनाथ की स्तुति की गयी है।

योगसार।

रचयिता श्री मुनि योगचन्द्र (योगीन्द्रदेव)। भाषा अपभ्रंश। पत्र संख्या ६ साइज ११×४॥ इञ्च। गाथा संख्या १०८ लिपि संवत १७१६ लिपिस्थान जयसिंहपुरा। लिपि कर्त्ता पंडित लक्ष्मीदास।

प्रति नं० २ पत्र संख्या ७ साइज १०॥×४॥ इञ्च।

प्रति नं० ३. पत्र संख्या २० साइज ११॥x५॥ इञ्च। इस प्रति में आराधनासार, तत्त्वसार तथा धर्म पंचविंशतिका की गाथायें भी है। प्रारम्भ के तीन पृष्ठ नहीं है।

५४६
योगसार तत्त्वप्रदीपिका।

रचयिता आचार्य श्री अमितिगति। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ३६ साइज ६x४ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर ६ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में २४-२८ अक्षर। प्रथम पृष्ठ नहीं है।

प्रति नं० २ पत्र संख्या ३० साइज ११॥x५ इञ्च। लिपि संवत १५८६ अन्तिम पृष्ठ नहीं है।

५४७
योग शतक।

रचयिता अज्ञात। भाषा संस्कृत। पृष्ठ संख्या ८ साइज १३x५॥ इञ्च। प्रति अपूर्ण। प्रथम और अन्तिम पृष्ठ नहीं है।

५४८
योग शास्त्र।

मूलकर्त्ता-आचार्य श्री हेमचन्द्र। वृत्तिकार श्री अमरप्रभसूरि। केवल योग शास्त्र का चतुर्थ प्रकाश है। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ४५ साइज १०॥x४॥ इञ्च। लिपिसंवत १६३०

र

५४९
रुग्विनिश्चय।

रचयिता श्री वैद्यराज माधव। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ८४ साइज १०॥x४ इञ्च। विषय-वैद्यक। लिपि संवत १५०५ आजकल यह माधव निदान के नाम से प्रसिद्ध है।

प्रति नं० २ पत्र संख्या ८३ साइज १०॥x४ इञ्च।

प्रति नं० ३ पत्र संख्या ८ साइज १३x६॥ इञ्च। प्रति मूल मात्र है।

प्रति नं० ४ पत्र संख्या ६१ साइज ११x४ इञ्च लिपि संवत १५४६ प्रथम पांच पृष्ठ नहीं है।

५५०
रघुवंश।

रचयिता महाकवि कालिदास। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ११२ साइज १३x५॥ इञ्च। प्रति अपूर्ण है।

प्रति नं० २. पत्र संख्या १६० साइज ११x५ इञ्च। टीकाकार श्री चारित्र धर्मगणि। टीकाकार जैन है।

५५१
रत्नकरण्ड श्रावकाचार सटीक।

मूलकर्त्ता आचार्य समन्तभद्र। टीकाकार-प्रभाचन्द्राचार्य। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ६३ साइज

११×४॥ इञ्च। ग्रन्थ का अन्तिम पृष्ठ नहीं है।

प्रति नं० २ पत्र संख्या ५७ साइज १२×५ इञ्च। लिपि संवत १५४८

रत्नकरण्डशास्त्र।

रचयिता पंडिताचार्य श्रीचन्द्र। भाषा अपभ्रंश। पत्र संख्या १५६, साइज ६॥×४॥ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पंक्तियां और पंक्ति मे ४४–४६ अक्षर। लिपि काल संवत १५८२ विषय-गृहस्थ धर्म का वर्णन। ग्रन्थ समाप्ति के पश्चात ग्रन्थकर्त्ता ने अपना परिचय भी लिखा है।

प्रति नं० २ पत्र संख्या १२३ साइज ११×५॥ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर १३ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति मे ४२–४८ अक्षर। लिपि संवत् १५८६

प्रति नं० ३ पृष्ठ संख्या १५० प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पंक्तियां और प्रत्येक पंक्ति मे ३८–४४ अक्षर। साइज १०॥×५॥ इञ्च। लिपि संवत १५६४

प्रति नं० ४ पत्र संख्या १४५ लिपि संवत १६१४ साइज ६॥×५॥

प्रति नं० ५ पत्र संख्या १८ साइज ६॥×५॥ इञ्च।

रत्नपाल श्रेष्ठि रासो।

रचयिता श्री यति ब्रह्मचारि। भाषा हिन्दी। पत्र संख्या ६३ साइज १०×४ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर ६ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति मे ३३–३८ अक्षर। रचना संवत १७३२ लिपि संवत १८७३

रत्नसंचय।

रचयिता अज्ञात। भाषा प्राकृत। पत्र संख्या १५ साइज ६॥×४ इञ्च। विषय-सिद्धान्त।

रत्नत्रय कथा।

रचयिता श्री ब्रह्म ज्ञानसागर। भाषा हिन्दी। पत्र संख्या ७० साइज ६॥×४ इञ्च।

रत्नत्रयपूजाजयमाल।

रचयिता श्री रिषभदास। भाषा अपभ्रंश। पत्र संख्या २२ साइज ११×५॥ इञ्च।

रत्नत्रयजयमाल।

रचयिता अज्ञात। भाषा प्राकृत। पत्र संख्या ३, साइज ११×५ इञ्च।

प्रति नं० २ पत्र संख्या ६ साइज ११×४॥ इञ्च।

प्रति नं० ३ पत्र संख्या ६ साइज १२×६ इञ्च। लिपि संवत १८८५ लिपिस्थान–जयपुर। लिपि-कर्त्ता श्री भट्टारक देवेन्द्रकीर्त्तिजी।

५५८
रत्नत्रयपूजा।

रचयिता अज्ञात। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ४. साइज १०×४॥ इञ्च।

५५९
रमलशास्त्रप्रश्नतंत्र।

रचयिता श्रीराम। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या १४ साइज ११×५ इञ्च। लिपि संवत १८२६ लिपिस्थान लालसोट।

५६०
रविव्रतोद्यापनपूजा।

रचयिता श्री केशवसेन कवि। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ४ साइज ?×५ इञ्च। लिपि संवत १८३६ लिपिस्थान सवाई माधोपुर।

५६१
रसमञ्जरी।

रचयिता अज्ञात। पत्र संख्या १७ साइज १०×२॥ इञ्च। प्रति अपूर्ण है।

५६२
रससिन्धु।

रचयिता श्री पौंडरीक रामेश्वर। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ६१. साइज १०॥×४॥ इञ्च। लिपि संवत १८२७ विषय-अलंकार।

५६३
रागमाला।

रचयिता अज्ञात। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ४ साइज १०॥×४॥ इञ्च। लिपि संवत १६६५ लिपि कार पं० जगन्नाथ।

प्रति नं० २ पत्र संख्या ७. साइज १०॥×४॥ इञ्च। लिपि संवत १६६५

५६४
राजप्रश्नीयोपांगवृत्ति।

मूल लेखक अज्ञात। वृत्तिकार श्री विशाविजयगणि। भाषा प्राकृत–संस्कृत। पृष्ठ संख्या ६३. साइज १०×४ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर १७ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ४२–४६ अक्षर। लिपि संवत १६६४

५६५
राजवार्त्तिक।

रचयिता श्रीमद् भट्टाकलंकदेव। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ५५४. साइज ११×४॥ इञ्च। लिपि

संवत् १५८२. लिपिस्थान चंपावती।

राजसभारंजन।

संग्रहकर्त्ता श्री गंगाधर। भाषा हिन्दी (पद्य)। पत्र संख्या ४ साइज १२॥×६ इञ्च। १२६ पद्यों का संग्रह है।

रामचन्द्रचरित।

रचयिता श्री ब्रह्मजिनदास। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या १०५ साइज १०॥×४॥ इञ्च। प्रति अपूर्ण है। अन्तिम पृष्ठ नहीं है।

रात्रि भोजन कथा।

रचयिता श्री किशनसिंह। भाषा हिन्दी। पत्र संख्या २६ साइज १०×४॥ इञ्च। सम्पूर्ण पद्य संख्या ४१५.

रोहिणीव्रतकथा।

रचयिता देवनन्दि मुनि। भाषा अपभ्रंश। पत्र संख्या १२ साइज १०×४ इञ्च। श्लोक संख्या २६४

रोहिणीव्रतकथा।

आचार्य भानुकीर्त्ति। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ५ साइज १०×४॥ इञ्च। सम्पूर्ण पद्य संख्या ७६

ल

लग्नमाधर्वाविधि।

रचयिता लालबोध। पत्र संख्या ७. भाषा संस्कृत। साइज ६×४ इञ्च। विषय-विवाहविधि। लिपि संवत् १७४०

लघुजातक।

रचयिता श्री भट्टोत्पल। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या २५ साइज १०×४ इञ्च। विषय-ज्योतिष।

प्रति नं० २. पत्र संख्या ११. साइज १०×५ इञ्च।

लघुवृत्त्यवचूरिका।

रचयिता अज्ञात। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ६१. साइज १०×४॥ इञ्च। लिपिकाल-शकसंवत् १३६६ विषय-व्याकरण।

५०४ लक्ष्मी स्तोत्र ।

रचयिता श्री पद्मप्रभसूरि । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या १ साइज १०x४ इञ्च । इस स्तोत्र का दूसरा नाम पार्श्वनाथ स्तोत्र भी है ।

प्रति नं० २. पत्र संख्या ३ साइज १०x४॥ इञ्च । लिपि संवत १६७१.

प्रति नं० ३ पत्र संख्या ३. साइज १०॥x४॥ इञ्च । लिपि संवत १८६१. लिपिकर्त्ता श्री माणिक्यचंद्र ।

५०५ लीलावतीसटीक ।

रचयिता अज्ञात । पत्र संख्या ८२. भाषा सं कृत । साइज १०॥x४॥ इञ्च । विषय-ज्योतिष । प्रति अपूर्ण और जीर्णशीर्ण ।

५०६ लीलावतीसूत्र ।

रचयिता श्री भास्कराचार्य । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ७३ साइज १०॥x४॥ इञ्च ।

५०७ लीलावती भाषा ।

भाषाकार श्री लालचन्द्र । पत्र संख्या १४ साइज ११॥x६ इञ्च । लिपि संवत १७७४

व

५०८ बनारसी विलास ।

रचयिता-महाकवि बनारसीदास । भाषा हिन्दी । पत्र संख्या १२६ साइज ६x५ इञ्च । प्रति जीर्ण हो चुकी है ।

प्रति नं० २ पत्र संख्या ६१ साइज ११॥x५ इञ्च । लिपि संवत १८२१. लिपि स्थान वृंदावन ।

५०९ वर्द्धमानकथा ।

रचयिता पंडित नरसेन । भाषा अपभ्रंश । पत्र संख्या १७. साइज १०॥x५ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर १० पंक्तियां और प्रति पंक्ति में ३२-३८ अक्षर ।

५१० वर्द्धमान पुराण ।

रचयिता भट्टारक श्री सकलकीर्त्ति । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ११४ साइज १०॥x५॥ इञ्च । लिपि संवत १८२८.

प्रति नं० २. पत्र संख्या ८१ साइज १०॥x६ इञ्च । लिपि संवत १८४०. लिपिस्थान जयपुर ।

वर्द्धमान काव्य ।

रचयिता श्री जयमित्र हल । भाषा अपभ्रंश । पत्र संख्या ५० साइज ६।।×५ इञ्च । लिपि संवत १६७० प्रशस्ति है । प्रथम पृष्ठ नहीं है ।

प्रति नं० २ पत्र संख्या ५६. साइज ६।।×४ लिपि संवत १५५५.

प्रति नं० ३ पत्र संख्या ६२. साइज ११×४।।. प्रति लिपि संवत १६३१ माह बुदी ११ प्रशस्ति है । श्लोक संख्या १३५०.

प्रति नं० ४. पत्र संख्या ५४. साइज १०×४।। इञ्च । लिपि संवत १५६३ प्रशस्ति है ।

व्रत कथा कोष ।

रचयिता श्री खुशालचन्द्र । भाषा हिन्दी । पत्र संख्या ११४ प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३६–४० अक्षर । रचना संवत १७८७ लिपि संवत १८२०.

व्रत विवरण ।

संग्रहकर्त्ता अज्ञात । भाषा हिन्दी । साइज १०×५।। इञ्च । अनेक व्रत का समय आदि का पूर्ण विवरण दे रखा है ।

वर्द्धमान द्वात्रिंशिका ।

रचयिता श्री सिद्धसेन दिवाकर । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ४ साइज १०।।×५।। इञ्च । विषय स्तुति ।

वरांग चरित्र ।

रचयिता श्री वर्द्धमान भट्टारकदेव । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ७० साइज ११×४।। इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर ६ पंक्तियां और प्रति पंक्ति में ३४–३८ अक्षर । लिपि संवत १५६३

प्रति नं० २ पत्र संख्या ६७ साइज ११×४।। इञ्च । लिपि काल संवत १६०४ भादवा बुदी ६ लिपि स्थान दूदू नगर । उक्त प्रति को आचार्य धर्मचन्द्र ने पढ़ने के लिये लिखाई थी ।

प्रति नं० ३ पत्र संख्या ७३ साइज १०।।×६ इञ्च । लिपि काल–संवत १८७३ आसोज सुदी ५. लिपिस्थान ग्वालियर । प्रति नवीन है । अक्षर स्पष्ट और सुन्दर है ।

प्रति नं० ४ पत्र संख्या ६० साइज ११×५ इञ्च । लिपिसंवत १६६० जेठ सुदी १४. लिपिस्थान राजमहल ।

प्रति नं० ५ पत्र संख्या २४. साइज १०।।×५।।। इञ्च । लिपि संवत् १८४५.

५८६

वसुधरा स्तोत्र ।

रचयिता अज्ञात । पत्र संख्या ७. साइज ११×५।। इञ्च । भाषा संस्कृत । ग्रन्थ श्लोक प्रमाण २१५. लक्ष्मीदेवी की स्तुति की गयी है । प्रति शुद्ध, सुन्दर और स्पष्ट है ।

प्रति नं० २. पत्र संख्या ५ साइज ११।।×५ इञ्च ।

५८७

वाग्भट्टसंहिता ।

रचयिता श्री वाग्भट्ट । भाषा संस्कृत । पृष्ठ संख्या १३६ साइज १३×५।। इञ्च । लिपि संवत १८४८. विषय–आयुर्वेद ।

५८८

वाग्भट्टालंकार ।

रचयिता श्रीमद् वाग्भट्ट । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या १५ साइज ?×५ इञ्च । सात प्रतियां और हैं ।

प्रति नं० २. पत्र संख्या १४. साइज ११।।×४।। इञ्च ।

प्रति नं० ३ पत्र संख्या ११. साइज १०।।×४ इञ्च । लिपि स्थान विक्रम न... ।

प्रति नं० ४ पत्र संख्या २४ साइज १०।।×४।. इञ्च । लिपि संवत १७७३.

प्रति नं० ५ पत्र संख्या १४. साइज १०।।×४।। इञ्च ।

प्रति नं० ६ पत्र संख्या ४८. साइज १०×४।। इञ्च । प्रति सटीक है । लिपि संवत १६४६.

प्रति नं० ७. पत्र संख्या ३७. साइज १०।।×४।। इञ्च । लिपि संवत १६६५. लिपि स्थान द्रादशापुर । लिपिकर्त्ता श्री जगन्नाथ ।

प्रति नं० ८ पत्र संख्या ३० साइज १०×४।। इञ्च । लिपि संवत १६३६. लिपिस्थान रणस्तंभगढ़ । लिपिकर्त्ता श्री वेणीदास । लिपिकर्त्ता ने सम्राट अकबर के शासन काल का उल्लेख किया है ।

५८९

वाराही संहिता ।

रचयिता अज्ञात । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या १३६. साइज १०×४ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति मे ३४–४० अक्षर । प्रति अपूर्ण । १३६ से आगे के पृष्ठ नहीं हैं ।

५९०

वास्तुकुमार पूजा ।

रचयिता अज्ञात । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ४. साइज ११×५ इञ्च । लिपि संवत १८३६. भट्टारक श्री सुरेन्द्रकीर्त्ति ने अपने हाथों से प्रतिलिपि बनायी ।

वाश्रय काव्य ।

रचयिता अज्ञात । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या २ साइज १०x४॥ इञ्च । लिपिकार गणि धम विमल । विषय साहित्य ।

विदग्धमुखमंडन ।

रचयिता श्री धर्मदास । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या २८ साइज १०॥x४॥ इञ्च । विषय—काव्यालकार । श्री हर्ष मुनि के पढ़ने के लिये ग्रंथ की प्रतिलिपि की गयी ।

प्रति नं० २ पत्र संख्या ३१ साइज ११x४॥ इञ्च ।

प्रति नं० ३ पत्र संख्या २७ साइज ११x५ इञ्च ।

प्रति नं० ४ पत्र संख्या १३ साइज १०॥x४॥ इञ्च । लिपि संवत १६७० पं० राजरम सरग के पढ़ने के लिये काव्य की प्रतिलिपि की गया ।

प्रति नं० ५ पत्र संख्या १६ साइज ११॥x४॥ इञ्च ।

प्रति नं० ६ पत्र संख्या ८ साइज १०॥x४॥ इञ्च । लिपि संवत १७२४. पं० जिनसूरि गणि ने ग्रन्थ की प्रतिलिपि बनायी ।

विद्यातरंगोपनिषद् ।

रचयिता अज्ञात । भाषा संस्कृत । पृष्ठ संख्या १३०. साइज १२x६॥ इञ्च ।

विनती संग्रह ।

रचयिता श्री नवल । भाषा हिन्दी । पत्र संख्या २०. साइज १२x५॥ इञ्च । विषय—२४ तीर्थकर, सम्मेदशिखर, आदि की स्तुति की गयी है । जयपुर के प्रसिद्ध दीवाण बालचन्द्रजी के कहने से ग्रन्थ रचना की गयी थी ।

विनती संग्रह ।

रचियता श्री ब्रह्मदेव । भाषा हिन्दी । पृष्ठ संख्या ३६ साइज १०॥x४॥ इञ्च । विषय—प्रथम २४ तीर्थंकरों की अलग २ स्तुति है तथा आगे भिन्न २ विषयों पर स्तुतियां हैं । भाषा की अपेक्षा अधिक उत्कृष्ट नहीं है किन्तु भाव अच्छे हैं ।

विनती संग्रह ।

रचयिता श्री देवसागर । भाषा हिन्दी । पत्र संख्या ६८. साइज ६x६॥ इञ्च । भाषा और भावों की अपेक्षा संग्रह कोई विशेष उपयोगी नहीं है ।

प्रति नं० २. पत्र संख्या ८१ साइज ११×५।। इञ्च।

विलोमकाव्य।

रचयिता अज्ञात। श्री दैवज्ञ सूर्य पंडित। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या १०. साइज ६×४ इञ्च। लिपि संवत १८०८

विवाह दीपिका सटीक।

रचयिता श्री गणेश। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ६ साइज १०।।×५।। इञ्च। लिपि संवत १६६२

विष्णु भक्ति।

रचयिता श्री विश्वभर्त्री। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ५. साइज १०।।×५।। लिपि संवत १८८२

विषापहार स्तोत्र।

रचयिता श्री धनंजयसूरि। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ५४ साइज १०×३।। इञ्च। ४२ से पूर्व के पत्रों में प्राकृत भाषा में तत्त्वसार लिखा हुआ है। प्रथम पत्र से लेकर ३६ वें पृष्ठ तक कुछ नहीं है। तीन प्रति और हैं।

विषापहार स्तोत्र भाषा।

मूलकर्त्ता श्री धनंजय। भाषाकार श्री दिलाराम भाषा हिन्दी। पत्र संख्या १२ साइज १२।।×५।। इञ्च। पद्य संख्या ४०

विषापहार स्तोत्र।

मूलकर्त्ता श्री धनंजय। भाषाकार श्री अखय राज। पत्र संख्या १४ साइज १२।।×४ इञ्च। लिपि संवत १७३१

वीतरागस्तवन।

रचयिता श्री हेमचन्द्राचार्य। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ६. साइज ११×४।। इञ्च। श्री कुमारपाल भूपाल के लिये उक्त स्तवन की रचना हुई थी।

वैद्यजीवन।

पं० लोल्लिम्बिराज। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ७ साइज १०।।×४ इञ्च।

प्रति नं० २ पृष्ठ संख्या ३६. साइज ११।।×५।। इञ्च। लिपि संवत १८२५.

प्रति नं० ३ पृष्ठ सख्या १७. साइज ११×५ इञ्च।

प्रति नं० ४ पत्र संख्या १८. साइज १०×४॥ इञ्च। प्रति अपूर्ण है। प्रथम ४ पृष्ठ तथा अन्त के पत्र घटते हैं।

वैद्य मनोत्सव।

रचयिता श्री नयन सुखदास। भाषा हिन्दी। पत्र संख्या ३६. साइज १२×५ इञ्च। लिपि संवत् १७७४.

प्रति नं० २. पत्र संख्या २४. साइज १२×६॥ इञ्च।

वैद्यवल्लभ।

रचयिता श्री हस्तरुचिसूरि। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या २५ साइज १०×४॥ इञ्च। लिपि संवत् १७६३. लिपिस्थान भैंसलाना।

वैद्येन्द्र विलास।

रचयिता अज्ञात। भाषा संस्कृत-हिन्दी। पत्र संख्या ८. साइज १२×५ इञ्च।

वैद्य विनोद।

रचयिता अनंतभट्टात्मज श्री शंकर। भाषा संस्कृत। पृष्ठ संख्या १०७. साइज ११×६ इञ्च।

वैयाकरण भूषण।

रचयिता अज्ञात। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ७२. साइज ६॥×४ इञ्च। लिपि संवत् १७४४.

वैराग्य स्तवन।

रचयिता श्री रत्नाकर। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ३. साइज १०×४॥ इञ्च। लिपिकर्त्ता पं० हरिवंश। पद्य संख्या २५.

वैराग्यशतक।

रचयिता श्री भर्तृहरि। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या १७. साइज ११×५ इञ्च।

प्रति नं० २. पत्र संख्या ६. साइज ११॥×६ इञ्च।

वैष्णव शास्त्र।

रचयिता श्री नारायणदास। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ३५. साइज १०॥×४ इञ्च। विषय–

सामुद्रिक। लिपि संवत १६५८

वृत्तरत्नाकर।

रचयिता भट्ट केदारनाथ। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ११ साइज ११x५ इञ्च। लिपि संवत १५८५.

प्रति नं० २. पत्र संख्या ५ अपूर्ण।

प्रति नं० ३ सटीक टीकाकार उपाध्याय समयसुन्दर। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या १८. साइज ११॥x५॥ इञ्च। लिपिसंवत १८२६ भट्टारक सुरेन्द्रकीर्त्ति ने टोंक में लिपी करवाई।

प्रति नं० ४ पत्र संख्या ६ साइज ११॥x५, इञ्च। लिपिसंवत १८४७ भट्टारक सुरेन्द्रकीर्त्ति ने चंपावती नगरी में लिपी करवाई।

प्रति नं० ५ पत्र संख्या १७. सटीक टीकाकार श्री हरिभास्कर। साइज १३x५। इञ्च। लिपि संवत १८४७

प्रति नं० ६ पत्र संख्या १८. साइज १३x५॥ इञ्च। टीकाकार पं० जनार्दन।

वृत्तसार।

रचयिता श्री उपाध्याय रमापति। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या १२. साइज १२x५ इञ्च। लिपि संवत १८५० आमेर में भट्टारक श्री सुरेन्द्रकीर्त्ति ने ग्रन्थ की प्रतिलिपि बनायी।

वृहद् आदिपुराण।

रचयिता आचार्यजिनसेन। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या २०६. साइज ११x५॥ इञ्च। प्रति अपूर्ण है। अन्तिम पृष्ठ नहीं है।

प्रति नं० २. पत्र संख्या १००६. साइज १०॥x५॥ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर ८ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में २६–३३ अक्षर। लिपि बहुत सुन्दर है।

वृहद् चाणक्य।

रचयिता श्री चाणक्य। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ६ साइज १३x५ इञ्च। विषय–नीति शास्त्र। लिपि संवत् १८३८. लिपि स्थान पाडलीपुर।

वृहज्जन्माभिषेक।

रचयिता अज्ञात। भाषा संस्कृत–हिन्दी। पत्र संख्या ६. साइज १२x५ इञ्च। लिपिकर्त्ता पं० दयाराम।

बृहत् पद्मपुराण । रविषेणाचार्यकृत ।

प्रति नं० २ पत्र संख्या ४४४ साइज १२×५ इञ्च। प्रति प्राचीन है। फटे हुये पत्रों की मरम्मत भी करवाई हुई थी।

प्रति नं० २ पत्र संख्या ४३० साइज १२×४ इञ्च। लिपि संवत १८३४ लिपिकार पंडित रायचन्दजी ने जयपुर के महाराजा श्री पृथ्वीसिंहजी के शासन का उल्लेख किया है। प्रति अपूर्ण है प्रारम्भ के २०० पृष्ठ नहीं है।

प्रति नं० ३, पत्र संख्या ६३८, साइज १२×४॥ इञ्च। प्रति अपूर्ण है। प्रारम्भ के तथा अन्त के पृष्ठ नहीं है।

प्रति नं० ४ पत्र संख्या ४६७ साइज १२॥×६ इञ्च। प्रति शुद्ध, सुन्दर और प्राचीन है।

बृहत्प्रत्याख्यानविधि।

रचयिता अज्ञात। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ४ साइज ११॥×४॥ इञ्च। लिपिकार भट्टारक श्री सुरेन्द्रकीर्ति। लिपि संवत १८३६ लिपि स्थान माधोपुर (जयपुर)।

प्रति नं० २ पत्र संख्या ४ साइज ११॥×४॥ इञ्च। लिपि संवत १८६६ लिपिस्थान टोंक। लिपिकार पं० विजयराम।

बृहद् स्वयम्भूस्तोत्र।

रचयिता आचार्य श्री समन्तभद्र, भाषा संस्कृत।

प्रति नं० २ पत्र संख्या ८ साइज १०॥×४॥ इञ्च। प्रति अपूर्ण है। अन्तिम पृष्ठ नहीं है।

बृहद् सिद्धचक्रपूजा।

रचयिता श्री भट्टारक शुभचन्द्र। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या १८ साइज १०॥×४॥ इञ्च। लिपि संवत १६१८

बृहद् शान्ति पूजा।

भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ६ साइज ६×४॥ इञ्च। लिपि संवत १८८६ पंडित हरचन्द ने चौथ में उक्त पूजा की प्रति लिपि बनाई।

बृहद्शान्तिकविधान।

रचयिता पं० आशाधर। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ४८, साइज १०×४॥ इञ्च। विषय-पूजा।

प्रति नं० २. पत्र संख्या ४३ साइज १०॥×४ इञ्च । लिपिसंवत १८३१

बृहत् शांति पाठ ।

पत्र संख्या २ भाषा संस्कृत । साइज १०॥×४॥ इञ्च ।

बृहद् शांतिमहाभिषेक विधि ।

रचयिता श्री पं० आशाधर । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ४६. साइज ११×४॥ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर १२ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३४×४० अक्षर । प्रति अपूर्ण है । प्रारम्भ के ७ पृष्ठ तथा अन्तिम पृष्ठ नहीं है ।

प्रति नं० २ पत्र संख्या ६ साइज १० |×४॥ इञ्च । प्रति अपूर्ण है ।

बृहद् होम विधि ।

रचयिता अज्ञात । पत्र संख्या १२ भाषा संस्कृत । साइज ११॥×४ इञ्च ।

म

सकलविधिविधानकाव्य ।

रचयिता श्री नयनन्दि । भाषा अपभ्रंश । पत्र संख्या २०४ साइज १०॥×४॥ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर १२ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३८-४४ अक्षर । लिपि संवत १४८०

प्रति नं० २ पत्र संख्या ६ साइज ११॥×४॥ इञ्च । प्रति अपूर्ण है ।

प्रति नं० ३ पत्र संख्या १० साइज १०॥×४॥ इञ्च ।

सकलीकरणविधान ।

रचयिता अज्ञात । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ० साइज ९॥×४ इञ्च ।

सज्जनचित्त वल्लभ ।

रचयिता श्री मल्लिषेण । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ४ साइज १०॥×४॥ इञ्च ।

प्रति नं० २. पत्र संख्या ३. साइज ११॥×४॥ इञ्च । लिपि संवत १८४३ लिपिस्थान लावाग्राम ।

सत्काव्य स्तुति ।

रचयिता श्री बालकृष्ण भट्ट । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या १०. साइज १२×४॥ इञ्च । लिपि संवत् १८३०.

सप्तपदार्थी टीका।

रचयिता श्री शिवादित्याचार्य। टीकाकार श्री जिनवर्द्धनसूरि। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ३२ साइज १०।।×४।। इञ्च। विषय–न्याय। लिपि संवत १८३८

प्रति नं० २. पत्र संख्या २२. साइज १०×४।। इञ्च। लिपि संवत १६५८. लिपिस्थान श्रीसूर्यपुर।

प्रति नं० ३. पत्र संख्या १६. साइज १०।।×४ इञ्च। प्रति अपूर्ण है। १६ से आगे के पृष्ठ नहीं है।

प्रति नं० ४. पत्र संख्या २७. साइज १०×४।। इञ्च। टीकाकार श्री माधवाचार्य हैं। टीका का नाम मितभाषिणी है। लिपि संवत १६५५

प्रति नं० ५. पत्र संख्या ६ साइज ११×४।। इञ्च। केवल मूल मात्र है।

सप्तपदी।

रचयिता अज्ञात। साइज ७×५ इञ्च। पत्र संख्या १६. भाषा संस्कृत। विषय–विवाह के समय बोले जाने वाले पद्य प्रति अपूर्ण है।

सप्त ऋषि पूजा।

रचयिता श्री भूषण सूरि। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ४. साइज ११।।×४।। इञ्च।

प्रति नं० २. पत्र संख्या ७. साइज ११।।×४।। इञ्च। लिपि संवत् १६६१ ब्रह्म श्रीपति ने प्रतिलिपि बनाई।

सम्यक्त्व कौमुदी।

रचयिता श्री जोधराजगोदीका। भाषा हिन्दी। पत्र संख्या ५७ साइज ६×६।। इञ्च। लिपि संवत १८०६. रचना संवत १७२४. गुटका नं० २६ वेष्टन नं० ३७५ ग्रन्थ का ऊपर का भाग दीमक के खाने से फट गया है। ग्रन्थ के अन्त मे लेखक ने अपना परिचय भी दिया है।

सम्यक्त्वकौमुदी।

भाषा संस्कृत। पत्र संख्या १४६. साइज १०।।×५ इञ्च। ग्रन्थश्लोक प्रमाण ३५००. लिपि संवत१६७१.

प्रति नं० २ पत्र संख्या १०३. साइज ११×४।। लिपि संवत १८३१.

प्रति नं० ३. पत्र संख्या ६१. प्रति अपूर्ण।

प्रति नं० ४ पत्र संख्या ६४ साइज १२×४ इञ्च।

प्रति नं० ५. पत्र संख्या ६०. साइज ११।।×४।। इञ्च।

सम्यक्त्व कौमुदी कथा ।

रचयिता अज्ञात । भाषा संस्कृत गद्य । पत्र संख्या ८०. साइज १२×५ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर १० पंक्तियां और प्रति पंक्ति मे ३०–३६ अक्षर । लिपि सवत १५८२. लिपिस्थान चंपावती नगरी ।

प्रति नं० २. पत्र संख्या ५१. साइज ६×४॥ इञ्च ।

प्रति नं० ३. पत्र संख्या ११५. साइज ११×५ इञ्च । लिपि संवत् १६६२.

प्रति नं० ४ पत्र संख्या ७०. साइज ११×४॥ इञ्च । लिपि संवत १६०७.

प्रति नं० ५. पत्र संख्या ५५. साइज ११×५ इञ्च

प्रति नं० ६ पत्र सख्या ६२. साइज १०॥×५॥ इञ्च । लिपि सवत १५७६

प्रति नं० ७. पत्र सख्या ११३ साइज ११॥×५ इञ्च । लिपि सवत १५६६ प्रति जीर्ण शीर्ण ।

प्रति नं० ८. पत्र सख्या ४२ साइज ११×६ इञ्च । लिपि संवत १८३८

सम्यक्त्वकौमुदी ।

रचयिता श्री खेता । भाषा सस्कृत । पत्र संख्या ६६. साइज १०×५ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर १४ पंक्तिया तथा प्रति पंक्ति मे ३६–४० अक्षर । लिपि संवत् १७६३

प्रति नं० २ पत्र संख्या १०२. साइज ११×४॥ इञ्च । प्रति अपूर्ण तथा जीर्ण शीर्ण अवस्था मे है ।

प्रति नं० ३. पत्र सख्या ६१. साइज १२×५॥ इञ्च । लिपि सवत १७६३. लिपिस्थान जहानाबाद जयसिंहपुर । लिपिकार प० दयाराम ।

सम्यक्त्व कौमुदी ।

रचयिता श्री गुणाकरसूरि । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ३५ साइज १०॥×४॥ इञ्च । लिपि संवत् १६६१ श्री कम तिलक के शिष्य श्री ज्ञानतिलक ने ग्रथ की प्रतिलिपि करवाई ।

प्रति नं० २ पत्र संख्या ३८ साइज १०×४॥ इञ्च । लिपिसवत् १७६७. भट्टारक श्री महेन्द्रकीर्त्ति के शासन काल मे पं० गोरधनदास के लिए ग्रन्थ की प्रतिलिपि की गयी ।

प्रति नं० ३ पत्र संख्या २५. साइज ११×५ इञ्च । प्रति अपूर्ण है । २५ से आगे के पृष्ठ नहीं हैं ।

सम्यक्त्व भेद प्रकरण ।

रचयिता अज्ञात । भाषा प्राकृत । पत्र सख्या ६. साइज ११॥×५ इञ्च । गाथा संख्या ६८.

सम्यक्त्वरास ।

रचयिता ब्रह्म श्री जिनदास । भाषा २६. साइज १०×४॥ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर १० पंक्तियां तथा

प्रति पंक्ति में ५५-६० अक्षर। प्रथम पृष्ठ नहीं है।

सप्ततिस्थान प्रकरण।

रचयिता श्री तिलक सूरि। भाषा संस्कृत। पृष्ठ संख्या १२१. साइज १२×५ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर १७ पंक्तियां ५८-६४ अक्षर। ग्रंथ समाप्त होने के पश्चात् अच्छी प्रशस्ति भी दे रखी है। प्रथम दो पृष्ठ नहीं है।

प्रति नं० २. पृष्ठ संख्या ११६. साइज १०॥×४ इञ्च। प्रति अपूर्ण है। प्रथम तीन तथा अन्त के पृष्ठ नहीं हैं।

संध्या प्रबोध स्तोत्र।

रचयिता अज्ञात। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या १६. साइज ६×४ इञ्च।

सन्मति जिनचरित्र।

रचयिता पंडित रइधू। भाषा अपभ्रंश। पत्र संख्या १२६. साइज ११×५॥ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पंक्तियां और प्रति पंक्ति में ३२-३६ अक्षर। लिपि संवत १६२४. श्री माथुरान्वय पुष्करगण के भट्टारक श्री यशःकीर्त्ति के समय मे बाई जीवो ने ग्रन्थ की प्रतिलिपि कराई। लिपिकर्त्ता पंडित पारसदास। अन्त मे स्वयं कवि द्वारा प्रशस्ति दी हुई है।

संस्कृत मंजरी।

रचयिता अज्ञात। भाषा संस्कृत गद्य। पत्र संख्या ६. साइज १०×४। इञ्च। विषय–साहित्यिक। लिपि संवत् १७६७. भट्टारक नरेन्द्रकीर्त्ति के शिष्य अखेराज ने प्रति लिपि की।

प्रति नं० २. पत्र संख्या ६. साइज ६॥×४॥ लिपि संवत १७१४ लिपिस्थान सवाईपुर।

प्रति नं० ३ साइज ११॥×५। पत्र संख्या ५.

सभातरंग।

रचयिता अज्ञात। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ४१. साइज ११॥×४ इञ्च। विषय–छन्दशास्त्र। लिपिकाल-संवत १८४३ भट्टारक श्री सुरेन्द्रकीर्त्ति ने स्वय के अध्ययनार्थ ग्रन्थ की लिपी की है।

संवत्सर।

रचयिता अज्ञात। भाषा हिन्दी। पत्र संख्या २२. साइज ११×५ इञ्च। लिपि संवत १८३१. पुस्तक मे संवत् १८०१ से १६०० तक ज्योतिष शास्त्र के अनुसार संक्षिप्त में संसार की हलचल का वृत्तान्त लिखा है।

संबोधपंचाशिकगाथा।

अज्ञात। पत्र संख्या ४- साइज १०।।×४ इञ्च। भाषा अपभ्रंश। लिपि संवत १५१४. लिपिकर्त्ता-आनंदराम।

समयसार नाटक।

रचयिता महाकवि बनारसीदास। गद्य टीकाकार श्री रूपचंद। भाषा हिन्दी। पत्र संख्या १३७. साइज १२×५।। इञ्च। लिपि और टीका संवत १७२३ महाकवि बनारसीदास के समयसार पर श्री रूपचन्द ने गद्य भाषा मे अर्थ लिखा है।

प्रति नं० २ पत्र संख्या १२०. साइज ११×४ इञ्च।

समयसार।

रचयिता-श्री अमृतचन्द्राचार्य। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या १५. साइज ८×५ इञ्च। लिपि संवत १८६०

समयसार।

मूलकर्त्ता आचार्य कुन्दकुन्द, संस्कृत मे अनुवाद कर्ता आचार्य अमृतचन्द्र। हिन्दी टीकाकार अज्ञात। पत्र संख्या २३४ भाषा-संस्कृत-हिन्दी। साइज ११।।×५ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर ६ पंक्तियां और प्रति पंक्ति मे ४२-४६ अक्षर। हिन्दी टीका बहुत सुन्दर है। लिपि संवत नहीं दे रखा है किन्तु प्रति प्राचीन मालूम देती है।

समयसारकलश।

मूलकर्त्ता श्री अमृतचन्द्राचार्य। भाषाकार श्री बनारसीदास। भाषा-संस्कृत-हिन्दी। पत्र संख्या ११८ साइज १०×६ इञ्च।

प्रति नं० २. पत्र संख्या १०८ साइज ११।।×५ इञ्च। लिपि संवत १७८८ श्री देवेन्द्रकीर्ति के शिष्य ने पढने के लिये इस ग्रन्थ की प्रति लिपि बनायी।

प्रति नं० ३ पत्र संख्या ६६ साइज ११।।×५।। इञ्च। लिपि संवत १७८८ लिपिस्थान आमेर। आरम्भ के १६ पृष्ठ नहीं है।

प्रति नं० ४ पत्र संख्या १०१. साइज ११।।×५।। इञ्च। ग्रन्थ में दो तरह के पृष्ठ हैं एक प्राचीन तथा दूसरे नवीन। अन्त का एक पृष्ठ नहीं है।

प्रति नं० ५. पत्र संख्या १६१. साइज १०×।४।। इञ्च प्रति अपूर्ण है।

प्रति नं० ६. पत्र संख्या १६४. साइज ११×५ इञ्च। प्रति अपूर्ण। प्रथम तथा अन्तिम १६४ से आगे के पृष्ठ नहीं हैं।

समयसार टीका।

टीकाकार–अज्ञात। भाषा हिन्दी गद्य। पत्र संख्या ५३. साइज १०×४।। इञ्च। लिपि संवत् १६५३. लिपिस्थान गढ रणथम्भोर। भट्टारक श्री चन्द्रकीर्त्ति के शासन काल मे ग्रन्थ की प्रतिलिपि हुई। आचार्य अमृतचन्द्र रचित पद्यों का केवल संकेत मात्र दे रखा है।

समयसार टीका।

टीकाकार अमृतचन्द्राचार्य। टीका नाम–आत्म ख्याति। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ६६ साइज १०।×४ इञ्च। प्रति अपूर्ण। प्रथम ३५ तथा अन्त के ६६ से आगे के पृष्ठ नहीं हैं।

प्रति नं० २. टीका नाम तात्पर्यवृत्ति। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या २०५ साइज १०।।×४ इञ्च।

प्रति नं० ३. पत्र संख्या ११४ साइज १३×५।। इञ्च। लिपिसंवत १८०१. लिपिस्थान जयपुर। टीका नाम–तात्पर्यवृत्ति।

प्रति नं० ४. पत्र संख्या ३८. साइज ११×४।। इञ्च। केवल गाथा तथा उनका संस्कृत मे अनुवाद मात्र है।

प्रति नं० ५. पत्र संख्या १५. साइज १०।।×५।। इञ्च। लिपिसंवत १६५८.

प्रति नं० ६ पत्र संख्या १५. साइज ६।।×४।। इञ्च। केवल गाथाओ का संस्कृत मे अनुवाद मात्र है।

प्रति नं० ७ पत्र संख्या ३६ साइज ११।।×५ इञ्च। आचार्य अमृतचन्द्र विरचित संस्कृत के पद्य मात्र है।

प्रति नं० ८. पत्र संख्या ५३ साइज १२।।×६ इञ्च। गाथाओ के अतिरिक्त संस्कृत मे अनुवाद तथा हिन्दी मे टीका है। लिपिसंवत १७६०.

प्रति नं० ६. पत्र संख्या १०४ साइज १२×४।। इञ्च। टीका नाम–आत्मख्याति।

प्रति नं० १० पत्र संख्या १३६. साइज १०।।×४।। इञ्च। टीका नाम आत्मख्याति।

समवश्रुतपूजावृहत्पाठ।

रचयिता अज्ञात। भाषा संस्कृत। पृष्ठ संख्या ३६ साइज १०।।×४।। इञ्च। अनेक पूजाओं का संग्रह है।

समवशरण स्तोत्र ।

पंडित श्री मोहाग्य विरचित । भाषा प्राकृत । पत्र संख्या ४ श्लोक संख्या ५२. प्रथम पृष्ठ नहीं है ।

समस्यास्तवक ।

रचयिता अज्ञात । पत्र संख्या १५ भाषा संस्कृत । साइज ११॥×५ इञ्च । लिपि संवत १५५१. लिपिकर्त्ता प० मोहाग्य । लिपि स्थान नागपुर ।

समाधितंत्र भाषा ।

रचयिता अज्ञात । भाषा हिन्दी पद्य । पत्र संख्या १४४ साइज १०॥×४॥ इञ्च । भाषा अशुद्ध है और अक्षर अस्पष्ट है, ऐसा मालूम होता है मानों किसी अनपढ व्यक्ति ने ग्रन्थ की प्रतिलिपि की हो । प्रति अपूर्ण है अन्त के पृष्ठ घटते हैं ।

समाधितन्त्र भाषा ।

भाषाकार श्री पर्वत । पृष्ठ संख्या २८१ साइज ११×४ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर ८ पंक्तियां और प्रति पंक्ति में २८–३४ अक्षर ।

प्रति नं० २. पत्र संख्या १४६ साइज १०॥×५ इञ्च । प्रति अपूर्ण १४६ से आगे पृष्ठ नहीं है ।

प्रति नं० ३ पत्र संख्या १५६ साइज १०×६ इञ्च । लिपि संवत १८०५

प्रति नं० ४ पत्र संख्या २३६ साइज ६×५ इञ्च । लिपि संवत १७०५, लिपिस्थान चपावता । लिपि कराने वाला–आमिल साह श्री बल्लूजा । ग्रन्थ उपयोगी एवं महत्त्वपूर्ण है ।

समाधिशतक ।

रचयिता श्री पूज्यपाद स्वामी । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ३२ साइज १०॥×४॥ इञ्च । प्रति सटीक है । टीकाकार श्री पंडित प्रभाचन्द्र । टीका संस्कृत में है । ग्रन्थ ठीक अवस्था में है ।

प्रति नं० २. पत्र संख्या ६ साइज १०×४ इञ्च । प्रति अपूर्ण है अन्तिम पृष्ठ नहीं है ।

प्रति नं० ३. पत्र संख्या १० साइज ११×४॥ इञ्च । लिपि संवत १७४४.

प्रति नं० ४. पत्र संख्या १०. साइज ११×५ इञ्च । प्रति अपूर्ण है अन्तिम पृष्ठ नहीं है ।

समुदायस्तोत्र वृत्ति ।

टीकाकार भट्टारक श्री सुरेन्द्रकीर्त्ति । भाषा संस्कृत । पृष्ठ संख्या ८४. साइज १२×५ इञ्च । अनेक स्तोत्रों की व्याख्या दी हुई है ।

सर्वार्थसिद्धि ।

रचयिता श्री पूज्यपाद । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ११७ साइज १२×५॥ इञ्च । लिपिसंवत् १८३३. लिपि स्थान जयपुर । भट्टारक श्री क्षेमेन्द्रकीर्त्ति के शिष्य भट्टारक श्री सुरेन्द्रकीर्त्ति ने पढने के लिये प्रतिलिपि तैयार की ।

प्रति नं० २, पत्र संख्या ६४ साइज १२॥×५॥ इञ्च । प्रतिलिपि संवत् १५७८ । भट्टारक श्री जिनचन्द्र के समय में ग्रन्थ की प्रतिलिपि हुई । ग्रन्थ समाप्त होने के पश्चात् संवत् १८३३ भी दिया हुआ है । श्री निहालचन्द्रजी बज ने दशलक्षणव्रत के उद्यापन के लिये ग्रन्थ को मन्दिर में विराजमान किया ।

सहस्रगुणित पूजा ।

रचयिता अज्ञात । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या २२ साइज १२×५॥ इञ्च । लिपि संवत् १७१० प्रति अपूर्ण है । प्रारम्भ के ५ पृष्ठ नहीं हैं ।

सागार धर्मामृत ।

रचयिता श्री पं० आशाधर । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ६२ साइज १०॥×४॥ इञ्च । रचना संवत् १२९६ लिपि संवत् १८७५ कुमुदचन्द्रिका नाम की टीका भी है । अन्त में कवि ने एक विस्तृत प्रशस्ति दे रखी है ।

प्रति नं० २ पत्र संख्या ६१ साइज १०॥×५ इञ्च ।

प्रति नं० ३ पत्र संख्या ४६ साइज १०×४॥ इञ्च । लिपि संवत् १६१४ लिपिस्थान तक्षकगढ महादुर्ग ।

प्रति नं० ४, पत्र संख्या ४५ साइज ११॥×४॥ इञ्च । प्रति अपूर्ण । ४५ से आगे के पृष्ठ नहीं हैं । कागज चिपक गये हैं ।

प्रति नं० ५ पत्र संख्या ३२ साइज १०॥×५॥ इञ्च । लिपि संवत् १५२८

सांख्य सप्तति ।

रचयिता श्री कपिल । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ५ साइज ८॥×३॥ इञ्च । विषय-सांख्य दर्शन के सिद्धान्तों का वर्णन । लिपि संवत् १५२७ श्रावण सुदी ३

प्रति नं० २ पत्र संख्या ५ साइज ६×३॥ इञ्च । लिपि संवत् १५२७ श्रावण सुदी ८

सामायिक पाठ सटीक ।

भाषा संस्कृत । पृष्ठ संख्या ४८ साइज ११×५ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर १०

पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३४-३८ अक्षर । टीका बहुत सुन्दर है ।

प्रति नं० २ पत्र संख्या ४८. साइज ११।।x६ इञ्च । लिपि संवत १८५६ माह सुदी ७

सामुद्रिक शास्त्र ।

रचयिता पं० नामदेव । भाषा संस्कृत । पृष्ठ संख्या २७ साइज १०।।x५।। इञ्च । लिपि संवत १७७५ श्री अभयराम के पढने के लिये श्री ऋषिराज ने ग्रन्थ की प्रतिलिपि बनायी थी । प्रति अपूर्ण है प्रारम्भ के ७ पृष्ठ नहीं है । ग्रन्थ के अक्षर मिट गये हैं ।

सामुद्रिकशास्त्र ।

रचयिता अज्ञात । भाषा संस्कृत । साइज १०x४ इञ्च । पत्र संख्या १२ प्रत्येक पृष्ठ पर १३ पंक्तियां और प्रति पंक्ति में ३६-४२ अक्षर । लिपि संवत कुछ नहीं । लिपिकार श्री पमर्माजी ।

सामुद्रिक शास्त्र ।

रचयिता अज्ञात । भाषा संस्कृत हिन्दी । पत्र संख्या १०. साइज १३x६ इञ्च ।

मंगलाचरण —

आदिदेव प्रणम्यादौ सर्वज्ञ सर्वदर्शिनं ।
सामुद्रिक प्रवक्ष्यामि सौभाग्य पुरुषस्त्रियो ।।१।।

सार्द्ध द्वयद्वीपपूजा ।

रचयिता अज्ञात । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ६३ साइज १२x५।। इञ्च । ग्रन्थ में कहीं पर भी कर्ता का नाम नहीं दिया हुआ है ।

सारणी ।

रचयिता अज्ञात । पत्र संख्या १०७ साइज १०।।x५ इञ्च । ग्रन्थ ज्योतिष का है ।

प्रति नं० २ पत्र संख्या ३१ साइज १०।।x५ इञ्च ।

सार संग्रह ।

रचयिता श्री सुरेन्द्र भूषण । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ७१. साइज १०x५।। इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ में ११ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३४-४० अक्षर । विषय-कलियुग वर्णन । प्रति अपूर्ण है ।

सार संग्रह ।

रचयिता सुरेन्द्र भूषण । पत्र संख्या २५ साइज १०x५।। इञ्च । अन्तिम पृष्ठ घटते हैं ।

सार समुच्चय ।

रचयिता अज्ञात । भाषा सस्कृत । पत्र सख्या २३ साइज १०x३॥ इञ्च । सम्पूर्ण पद्य संख्या ३३०. विषय–धर्मोपदेश । लिपि संवत १५३८ कार्तिक बुदी ५.

सारस्वत व्याकरण ।

भाषा सस्कृत । पत्र सख्या १२१- साइज ८॥x४॥ इञ्च ।

प्रति नं० २. पत्र १७१ साइज १०॥x४॥ इञ्च ।

प्रति नं० ३ पत्र सख्या १३० साइज ११x४॥ इञ्च ।

प्रति नं० ४ पत्र सख्या १६६ साइज १०x४ इञ्च । प्रति सटीक है । टीकाकार भट्टारक श्रीचन्द्रकीर्त्ति ।

प्रति नं० ५. पत्र सख्या १०४ साइज १०॥x४॥ इञ्च । प्रति सटीक है । टीकाकार अज्ञात । टीका नाम सार प्रदीपिका ।

प्रति नं० ६ पत्र सख्या ३३ साइज ६॥x४ इञ्च । प्रति सटीक है । टीकाकार अज्ञात ।

प्रति नं० ७ पत्र सख्या ११६ साइज १०x४ इञ्च । प्रति सटीक है । टीकाकार श्रीमालकुल प्रताप श्री पुंजराज ।

सारस्वतचन्द्रिका ।

टीकाकार भट्टारक श्री चन्द्रकीर्त्ति । भाषा सस्कृत । पत्र सख्या २५१ साइज ११x५ इञ्च । भाषा संस्कृत । पत्र सख्या २५१. साइज ११x५ इञ्च ।

प्रति नं० २. पत्र सख्या १०१ साइज १०x४। इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पंक्तियां तथा प्रत्येक पक्ति मे ६०–६६ अक्षर ।

प्रति नं० ३ पत्र संख्या १०६ साइज १०x५॥ इञ्च । लिपि संवत १८६५ आख्यात प्रक्रिया है ।

प्रति नं० ४. पत्र सख्या ११२. साइज ११x५ इञ्च ।

प्रति नं० ५. पत्र टीकाकार श्री ज्ञानेन्द्र सरस्वती टीका नाम तत्त्वबोधिनी । भाग पूर्वार्द्ध । पत्र सख्या ७८. साइज साइज ११x५॥ इञ्च ।

प्रति नं० ६. टीका उत्तरार्द्धि । पत्र संख्या ७८ से आगे । साइज ११x५॥ इञ्च ।

प्रति नं० ७. पत्र सख्या ६१. साइज ११x५

प्रति नं० ८. पत्र संख्या १०३. साइज ११x५॥ इञ्च । लिपि संवत् १८८६.

सारस्वत टीका ।

टीकाकार श्री माधवाचार्य । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या २५४. साइज १०।।×४।। इञ्च ।

प्रति नं० २. पत्र संख्या ११२. साइज १०।।×४।। इञ्च ।

सारस्वत दीपिका ।

टीकाकार श्री सत्यप्रबोध भट्टारक । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ३६. साइज १२×४।। इञ्च । लिपि संवत् १५४५

सारस्वतधातुपाठ ।

रचयिता श्री हर्षकीर्त्तिसूरि । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या २६. साइज ११×५।। इञ्च । लिपि संवत १८२०. लिपिस्थान जयपुर ।

सारस्वत प्रक्रिया ।

प्रक्रियाकार श्री अनुभूतिस्वरूपाचार्य । भाषा संस्कृत । साइज १२×६ इञ्च । पत्र संख्या २६ लिपि संवत १८६३.

प्रति नं० २. पत्र संख्या ३६ साइज १२×६ इञ्च । तद्धित प्रक्रिया तक ।

प्रति नं० ३ पत्र संख्या १४०. साइज १२×५ इञ्च । लिपि संवत १७७६

प्रति नं० ४ पत्र संख्या ६६ साइज १२।।×४।। इञ्च । लिपि संवत १८३८. लिपिस्थान पट्टणाख्यनगर ।

प्रति नं० ५. पत्र संख्या ६९. साइज १२।।×५ इञ्च । लिपि संवत १८४०. तिङन्त वृत्ति पर्यन्त ।

प्रति नं० ६ पत्र संख्या ३३ साइज ११।।×५ इञ्च । प्रथम वृत्ति पर्यन्त ।

प्रति नं० ७ पत्र संख्या १०७ साइज ११।।४।। इञ्च । प्रति पूर्ण ।

प्रति नं० ८. पत्र संख्या ५१. साइज ११।।×५।। इञ्च । लिपि संवत १८७३. लिपिकार ने महाराजाधिराज दौलतराव सिंधिया के शासन का उल्लेख किया है । लिपिस्थान ग्वालियर ।

प्रति नं० ९. पत्र संख्या ७२. साइज १०।।×४।। इञ्च ।

प्रति नं० १०. पत्र संख्या १२. साइज १०।।×४।। इञ्च । केवल पञ्च संधि मात्र है ।

सारस्वत व्याकरण सटीक ।

टीकाकार पं० मिश्रवासव । टीका नाम–बालबोधिनी । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या १२६ साइज १०×४।। इञ्च । लिपि संवत् १६३२.

प्रति नं० २. पत्र संख्या २०. साइज १०×४।। इञ्च ।

सारस्वतसूत्र ।

भाषा संस्कृत । पत्र संख्या १२. साइज ११×५ इञ्च । प्रति सुन्दर रीति से लिखी हुई है ।

प्रति नं० २. पत्र संख्या १५. साइज ६।।×४ इञ्च ।

प्रति नं० ३. पत्र संख्या ६. साइज १०।।×५ इञ्च ।

प्रति नं० ४. पत्र संख्या ७. साइज १२×५।। इञ्च ।

प्रति नं० ५. पत्र संख्या ८ साइज ६×४ इञ्च । केवल धातु पाठ ही है ।

प्रति नं० ६ पत्र संख्या ३३. साइज १०×४।। इञ्च ।

प्रति नं० ७. पत्र संख्या ३४. साइज १०×४।। इञ्च गणपाठ ।

प्रति नं० ८ पत्र संख्या ३४ साइज १०।।×४।। इञ्च । केवल परिभाषा सूत्र ही है ।

सारावली ।

रचयिता श्री सूतकल्याण वर्मा । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या १४ साइज १०×४ इञ्च । विषय–ज्योतिष प्रति अपूर्ण है ।

प्रति नं० २ पृष्ठ संख्या ५६. साइज १०।।४ इञ्च । अध्याय ४४ श्लोक संख्या ३५००. लिपि संवत् १६३६

सिद्धान्त कौमुदी ।

सूत्रकार श्री पाणिनी । टीकाकार श्री भट्टोजी–दीक्षित । पत्र संख्या २४१. साइज १२।।×५ इञ्च । ग्रन्थ श्लोक संख्या १००११.

प्रति नं० २. पत्र संख्या १५० साइज ६×४ इञ्च । कौमुदी का उत्तरार्द्ध भाग है ।

प्रति नं० ३ पत्र संख्या १३४ साइज ११×४।। इञ्च । प्रति अपूर्ण है ।

सिद्धान्त चन्द्रिका सटीक उत्तरार्द्ध ।

टीकाकार श्री लोकेशकर । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ५६ साइज ११×५ प्रति नवीन, शुद्ध और सुन्दर है ।

प्रति नं० २ पत्र संख्या ६० साइज १०।।×५ इञ्च । केवल पूर्वार्द्ध मात्रा है ।

प्रति नं० ३ पत्र संख्या ८२ साइज १०।।×५ इञ्च । लिपि संवत १८६८ उत्तरार्द्ध मात्र है ।

सिद्धचक्र पूजा ।

रचयिता पं आशाधर । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ४ साइज ११×५।। इञ्च ।

प्रति नं० २ पत्र संख्या १४ साइज १०॥x४॥ इञ्च।

प्रति नं० ३ पत्र संख्या ८ साइज १०x४॥ इञ्च।

सिद्ध भक्ति।

रचयिता अज्ञात। भाषा संस्कृत। पृष्ठ संख्या १२, साइज १०x५ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर ५ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३०-३६ अक्षर। पृष्ठ पर एक तरफ टीका भी दे रखी है।

सिद्धचक्र स्तवन।

रचयिता अज्ञात। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ७, साइज ११॥x५ इञ्च।

सिद्धान्तधर्मोपदेश रत्नमाला।

रचयिता अज्ञात। भाषा प्राकृत-संस्कृत। पत्र संख्या १५ साइज १२x५॥ इञ्च। गाथा संख्या १६१ प्राकृत में संस्कृत में अर्थ वहीं पर दे रखा है। आचार्य नेमिचन्द्र की कुछ गाथाओं के आधार पर उक्त रत्नमाला की रचना की गई है ऐसा स्वयं ग्रंथ कर्त्ता ने लिखा है।

सिद्धान्त मुक्तावली।

रचयिता श्री विश्वनाथ पंचानन। टीकाकार अज्ञात। पृष्ठ संख्या २६ साइज १२x६ इञ्च। प्रति अपूर्ण है।

सिद्धांतसार।

रचयिता श्रीजिनचन्द्र देव। भाषा प्राकृत। पृष्ठ संख्या ८ साइज १०॥x४॥ इञ्च। गाथा संख्या ८६, प्रति नं० २ पत्र संख्या ८ साइज १२x५॥ इञ्च।

प्रति नं० ३ पत्र संख्या ७ साइज १०x५ इञ्च। लिपि संवत १५७५ श्रीजिनचन्द्रदेव के शिष्य ब्र० नरसिंह के उपदेश से श्रीगूजर ने प्रतिलिपि करवाई।

सिद्धांतसारदीपक।

भाषाकर्त्ता-श्रीनथमल बिलाला। भाषा-हिन्दी। पत्र संख्या १६६ साइज १२x६ इञ्च। रचना संवत १८२४ लिपिसंवत १८६०

सिद्धान्तसार दीपक।

रचयिता भट्टारक श्री सकलकीर्ति। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या २४३ साइज ११॥x५॥ इञ्च। प्रत्येक

पृष्ठ पर ६ पंक्तियां तथा प्रत्येक ३६–४२ अक्षर। ग्रन्थ श्लोक प्रमाण-४५१६. लिपि संवत १७८६

प्रति नं० २. पत्र संख्या २२६. साइज ११॥×५॥ इञ्च। लिपिसंवत् १७८६. लिपिस्थान कारंजा। लिपिकर्त्ता पंडित सुमतिसागर।

प्रति नं० ३. पत्र संख्या ६७. साइज १२॥×४ इञ्च। प्रति अपूर्ण। ६७ से आगे पृष्ठ नहीं है।

प्रति नं० ४. पत्र संख्या १७५. साइज १२×५॥ इञ्च। लिपिस्थान बसवा। लिपिकार श्री पं० परस रामजी। प्रति अपूर्ण। प्रारम्भ के ७१ पृष्ठ नहीं हैं। दीमक लग जाने से ग्रंथ का कुछ भाग फट गया है।

सिद्धान्तसार संग्रह।

रचयिता आचार्य श्री नरेन्द्रसेन। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ६३ साइज ११×५ इञ्च। लिपि संवत १८०३. ग्रन्थ को दीमक ने नष्ट कर दिया है।

प्रति नं० २. पृष्ठ संख्या ८८. साइज ११×५ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर १० पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति मे ४०–४६ अक्षर। ग्रन्थ के अन्त मे ग्रन्थकर्त्ता ने प्रशस्ति दी है लिपि संवत १८६४.

सीताहरण।

रचयिता श्री जयसागर। भाषा हिन्दी पद्य। साइज १०×४॥ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति मे २४–३० अक्षर। पत्र संख्या ११३ रचना संवत १७३२. लिपि संवत् १६१५. लिपिस्थान देवदनगर।

सीता चरित्र।

रचयिता अज्ञात। भाषा हिन्दी। पत्र संख्या ४२. साइज १२×५ इञ्च। प्रति अपूर्ण। ४२ वे पृष्ठ से आगे नहीं है।

प्रति नं० २. पत्र संख्या ११७. साइज ११॥×५॥ इञ्च। प्रति अपूर्ण और त्रटित है।

सीताचरित्र।

रचयिता श्री रायचंद। भाषा हिन्दी। पत्र संख्या १४४ साइज ११×५ इञ्च। पद्य संख्या २५४१. रचना संवत् १८०८. लिपिकार पं० दयाराम।

सुकुमाल चरित्र।

रचयिता भट्टारक श्री सकलकीर्त्ति। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ४५ साइज १२॥×४॥ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर ६ पंक्तियां और प्रति पंक्ति में ४४–४८ अक्षर। लिपि संवत १७८५. ग्रन्थ मे सुकुमाल के जीवन चरित्र के अतिरिक्त वृषभाक कनकध्वज सुरेन्द्रदत्त आदि का भी वर्णन है।

प्रति नं० २. पत्र संख्या ५३. साइज १०॥×४॥ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर १० पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३८-४४ अक्षर। प्रारम्भ के ४ पृष्ठ नहीं हैं।

प्रति नं० ३. पत्र संख्या ५१ साइज १२×५॥ इञ्च। प्रशस्ति नहीं है। लिपि बहुत सुन्दर और स्पष्ट है।

प्रति नं ४. पत्र संख्या ५१. साइज १२॥×५॥ इञ्च। लिपि संवत् १७८६.

प्रति नं० ५. पत्र संख्या ५३. साइज १०॥×४॥ इञ्च।

सुकुमालचरित्र।

रचयिता पं० श्रीधर। भाषा अपभ्रंश। पत्र संख्या ४४ साइज १०॥×५॥. प्रत्येक पृष्ठ पर ११-१५ पंक्तियां और प्रति पंक्ति में ३७-४२ अक्षर। लिपि संवत् १५४६.

सुकुमालचरित्र।

रचयिता श्री मुनिपूर्णभद्र भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ४५. साइज १०॥×५ इञ्च। प्रति अपूर्ण है।

सुखण चरित्र।

रचयिता पं० जगन्नाथ। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ४६. साइज १०×४॥ इञ्च। लिपि संवत १८४२. ग्रंथ में श्रीपाल के जीवन चरित्र को दिखलाया है।

सुदर्शनचरित्र।

रचयिता मुमुक्षु विद्यानन्दि। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ७७. साइज ११×५॥ इञ्च। प्रत्येकपृष्ठ पर ६-१० पंक्तियां और प्रति पंक्ति में २८-३६ अक्षर।

सुदर्शनचरित्र।

रचयिता श्री नयनन्दि। भाषा अपभ्रंश। पत्र संख्या ६५. साइज १०×४ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर १३ पंक्तियां और प्रति पंक्ति मे ३२-३६ अक्षर। लिपि संवत् १५०४ दश परिच्छेद हैं।

प्रति नं० २. पत्र संख्या ६५. साइज १०×५ इञ्च। लिपि संवत १५६७ प्रशस्ति है। ग्रन्थ अच्छी अवस्था मे है। लिपि सुन्दर और शुद्ध है।

प्रति नं ३. पत्र संख्या ६६ साइज १०॥×५ इञ्च। लिपिसंवत् १६३१. प्रशस्ति बहुत संक्षिप्त में है। ग्रन्थ की प्रतिलिपि मालपुरा गाव में हुई थी। कागज कितनी ही जगह से फट गया है। अक्षर बहुत छोटे हैं।

प्रति नं० ४. पत्र संख्या १०६. साइज १०॥×५ इञ्च। लिपि संवत् १६३२ प्रशस्ति है। ग्रन्थ की प्रतिलिपि निवाई (जयपुर) में हुई थी। ग्रन्थ के बहुत से कागज कोने में से फट गये हैं लेकिन उससे ग्रन्थ

को कोई नुकसान नहीं हुआ। लिपि स्पष्ट और सुन्दर है।

प्रति नं० ५ पत्र संख्या ११८. साइज १०॥×४॥. लिपिसंवत् नहीं है। दशसर्ग है। पुस्तक के प्रायः सभी कागज कोने में से फट गये हैं। लिपि सुन्दर और स्पष्ट है।

प्रति नं० ६. पत्र सख्या ११५. साइज १०॥×४॥ इञ्च। लिपि संवत् १६७५ माघ सुदी १२. भट्टारक श्री देवेन्द्रकीर्त्ति की भेट के लिये ग्रन्थ की प्रतिलिपि हुई थी।

प्रति नं० ७. पत्र सख्या ८६. साइज ६॥×५ इञ्च। ८६ वां पृष्ठ आधा फटा हुआ है।

प्रति नं० ८ पत्र सख्या १००. साइज १०×३॥ इञ्च। लिपि संवत् १५१७ माघ बुदी प्रतिपदा।

सुदर्शनचरित्र।

रचयिता भट्टारक श्री सकलकीर्त्ति। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ३१. साइज १२॥×५ इञ्च। लिपि संवत् १८३८.

प्रति नं० २. पत्र संख्या २७. साइज ११॥×५ इञ्च। लिपि संवत १६२१ भट्टारक सुमतिकीर्त्ति के समय में मुनि श्री वीरेन्द्र ने प्रतिलिपि बनाई।

प्रति नं० ३. पत्र सख्या १८. साइज ११॥×४॥ इञ्च। प्रति अपूर्ण है तथा जीर्ण हो चुकी है।

प्रति नं० ४. पत्र सख्या २७ साइज १२×५ इञ्च। लिपि संवत् १६२१. लिपिकर्त्ता श्री मुनि वीरेन्द्र।

सुदर्शन रासो।

रचयिता ब्रह्मरायमल्ल। भाषा हिन्दी। पत्र संख्या ३० साइज ११×५ इञ्च।

प्रति नं० २. पत्र सख्या ११. साइज ११×५ इञ्च।

सुलोचना चरित्र।

ग्रन्थकर्त्ता गणिदेवसेन भाषा। अपभ्रंश। साइज ६॥×३ इञ्च। पत्र सख्या ३७८. प्रत्येक पृष्ठ पर ७-६ पंक्तियां और प्रति पंक्ति मे २८-३५ अक्षर। लिपिकाल सवत् १५८७. कागज और लिखावट दोनों ही अच्छे हैं। २८ परिच्छेद है।

प्रति नं० २. पत्र संख्या २४८. साइज ६॥×३॥ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पंक्तियां और प्रति पक्ति में ३७-४० अक्षर। लिपि संवत् १५६० वैशाख सुदी १३ सोमवार। लिखावट सुन्दर और स्पष्ट है। अन्तिम पत्र कुछ फटा हुआ है।

प्रति नं० ३. पत्र सख्या २७१. साइज ११॥×६ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पंक्तियां और प्रति पंक्ति में ३३-३८ अक्षर। प्रतिलिपि संवत् १६०४.

प्रति नं० ४ पत्र सख्या २३७, साइज १०||×५|| इञ्च। लिपि संवत १५७७, प्रशस्ति है। प्रारम्भ के २ पृष्ठ तथा २३३ से २३६ तक के पृष्ठ नहीं है।

सुभाषितार्णव।

रचयिता अज्ञात। भाषा संस्कृत। पत्र सख्या ३६, साइज ११×४|| इञ्च। काव्य संग्रह अच्छा है।

सुभाषितावली।

रचयिता भट्टारक श्री सकल-कीर्त्ति। भाषा संस्कृत।

प्रति नं० २, पत्र संख्या २१, साइज १३||×५|| इञ्च। लिपिकाल-संवत १८४६.

सुभाषितशास्त्रशतक।

रचयिता श्री सोमप्रभसूरि। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ११, साइज [illegible] इञ्च। लिपि संवत १८८६ लिपिकर्त्ता प० मेहरसोनी। लिपि स्थान मालपुरा (जयपुर)

सुश्रुतसंहिता।

भाषा संस्कृत। पत्र संख्या २१ साइज १०||×५|| इञ्च। लिपि संवत १७०२, केवल कल्पस्थान ही है।

सुदयवत्सचरित्र।

रचयिता श्री सोमप्रभ। भाषा हिन्दी। पत्र सख्या ३२, साइज १०×४ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पंक्तियां तथा प्रति पक्ति पर ३४-४० अक्षर। लिपि सवत १७३१ प्रति अपूर्ण है। प्रथ पत्र नहीं है।

सूक्ति मुक्तावली।

रचयिता आचार्य सोमप्रभ। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या १८, साइज १०||×५|| इञ्च। प्रति अपूर्ण है। शुरू के ५ पृष्ठ नहीं है।

सूक्तावली संग्रह।

संग्रहकर्त्ता अज्ञात। पत्र सख्या १५ साइज ६×४|| इञ्च। लिपिसंवत् १८०८

सूक्ति मुक्तावली भाषा।

रचयिता कौरपाल बनारसी। भाषा हिन्दी। पत्र सख्या १२ साइज १०×४|| इञ्च। रचना संवत् १६६२.

सोलह कारण जयमाल ।

रचयिता अज्ञात । भाषा संस्कृत । पत्र संस्कृत १३. साइज १२।।x५।। इञ्च ।

प्रति नं० २. पत्र संख्या १२. साइज १२।।x५।। इञ्च । लिपि संवत १८१३ ग्रन्थ के एक हिस्से को दीमक ने खा रखा है ।

प्रति नं० ३ पत्र संख्या २०. साइज १०।।x४ इञ्च । लिपि संवत् १७६४. लिपिकार पं० मनोहर ।

प्रति नं० ४. पत्र संख्या १३. साइज १२x५।। इञ्च ।

प्रति नं० ५. पत्र संख्या ११. साइज १२x५ इञ्च । लिपिस्थान सवाई जयपुर ।

प्रति नं० ६. पत्र संख्या १२. साइज १२x६ इञ्च ।

सौन्दर्यलहरी ।

रचयिता श्री शंकराचार्य । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ६. साइज १२x५ इञ्च । लिपि संवत १८३८.

स्तवनसंग्रह ।

संग्रहकर्त्ता अज्ञात । भाषा हिन्दी पद्य । पत्र संख्या ५८. साइज ६।।x४। इञ्च । प्रारम्भ के ६ पृष्ठ तथा अन्त में ५८ से आगे के पृष्ठ नहीं है । इसमें भिन्न २ कवियों के स्तवनों का संग्रह किया गया है । एक साथ चौबीस तीर्थंकरों की स्तुति के अतिरिक्त अलग २ तीर्थंकरों की स्तुतिया की गयी है तीर्थंकरों के अलावा सीमंधर स्वामी आदि के भी कितने ही स्तवनों का संग्रह है । स्तवन अधिकतर श्वेताम्बर सम्प्रदाय के आचार्यों के हैं ।

स्तोत्रटीका ।

रचयिता श्री विद्यानन्द । टीकाकार श्री आशाधर । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ६. साइज ६।।x४।। इञ्च । ग्रन्थ समाप्ति के बाद इस प्रकार दे रखा है "कृतिरियं वादीन्द्र विशालकीर्त्ति भट्टारक प्रियसून पंडित विद्यानन्दस्य"।

प्रति नं० २. पत्र संख्या ६. साइज १०।।x४।। इञ्च । लिपि संवत् १६२०.

स्तोत्रयी सटीक ।

संकलनकर्त्ता अज्ञात । टीकाकार अज्ञात । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ३० साइज १२x५ इञ्च । भूपालस्तोत्र, भक्तामर स्तोत्र और कल्याणमन्दिर स्तोत्र इन तीनों का संग्रह है । लिपि संवत् १८३८.

स्तोत्र संग्रह ।

संग्रहकर्त्ता अज्ञात । पत्र संख्या २४. साइज १२x६ इञ्च । भक्तामरस्तोत्र विषापहारस्तोत, एकीभाव-

स्तोत्र, कल्याणमन्दिरस्तोत्र, लघुस्वयंभुस्तोत्र तथा तत्त्वार्थसूत्र आदि संग्रह है।

स्वामिकार्त्तिकेयानुप्रेक्षा।

मूलकर्त्ता स्वामीकीर्त्तिकेय। टीकाकार भट्टारक श्री शुभचन्द्र। भाषा प्राकृत-संस्कृत। पत्र संख्या २६० साइज १२x५ इञ्च। लिपि संवत १७२१. टीकाकार काल संवत १६००. प्रारम्भ के ७३ पृष्ठ नहीं है।

प्रति नं० २ पत्र संख्या २७ साइज ६x४ इञ्च। प्रति अपूर्ण है। प्रथम और अन्तिम पृष्ठ नहीं हैं।

प्रति नं० ३ पत्र संख्या २७. साइज १०॥x५ इञ्च। प्रति अपूर्ण है। अन्तिम पृष्ठ नहीं है।

प्रति नं० ४ पत्र संख्या ३१ साइज १०x५ इञ्च गाथा संख्या ४६० मूल मात्र है।

प्रति नं० ५, पत्र संख्या २८ साइज ६॥x५॥ इञ्च।

स्थानांग सूत्र।

भाषा प्राकृत। पृष्ठ संख्या ६३. साइज ११x५॥ इञ्च। प्रति अपूर्ण है। प्रारम्भ के और अन्त के पृष्ठ नहीं है।

स्वप्नचिंतामणि।

रचयिता श्री जगदेव। भाषा संस्कृत। पृष्ठ संख्या १७ साइज ६॥x५॥ इञ्च। दो अधिकार है।

प्रति नं० ४ पृष्ठ संख्या १३ साइज १०॥x५॥ इञ्च। प्रति अपूर्ण है। १० से १३ तक १४ से आगे के पृष्ठ नहीं है।

स्वयम्भू स्तोत्र।

रचयिता आचार्य समंतभद्र। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या २२ साइज ११॥x५॥ इञ्च। लिपि संवत १५१७. लिपि स्थान कृष्णगढ लिपिकर्त्ता आचार्य श्री गुणचन्द्र।

स्वरूप संबोधन पंचविंशति।

रचयिता अज्ञात। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ८ पद्य संख्या २६. साइज १०x५॥ इञ्च। विषय-आत्मचिन्तवन। प्रति सटीक है। टीका संस्कृत में है। टीकाकार का उल्लेख नहीं मिलता है।

प्रति नं० २ पृष्ठ संख्या ६ साइज ११x५॥ इञ्च। लिपि संवत १७०६ भाद्रपद सुदी १ श्री शीलसागर ने अपने पढने के लिये प्रतिलिपि बनाई थी।

प्रति नं० ३ पत्र संख्या २. साइज ११॥x५॥ इञ्च। केवल टिप्पणि मात्र है।

श

शकुनप्रदीप ।

रचयिता श्री लावण्य शर्मा । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ३१. साइज १०।।×४ इञ्च । विषय-ज्योतिष ।

शकुन विचार ।

रचयिता अज्ञात । भाषा संस्कृत पत्र संख्या ६. साइज १०×४।। इञ्च ।

शकुनमालिका ।

रचयिता अज्ञात । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ३. साइज ६।।×४ इञ्च । लिपिसंवत् १६७८. श्लोक संख्या ५२

शकुनस्वाध्याय ।

रचयिता अज्ञात । भाषा संस्कृत । पृष्ठ संख्या ३. साइज १२×४।। इञ्च । लिपि संवत् १८३६. लिपि कर्ता—भट्टारक सुरेन्द्रकीर्त्ति ।

शकुन्तला नाटक ।

रचयिता महाकवि श्री कालिदास । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या १२१. साइज ११×५ इञ्च । लिपि संवत् १८४६.

प्रति नं० २. पत्र संख्या ४१ साइज ११।।×४।। इञ्च । लिपि संवत् १८४१.

शकुनावली ।

रचयिता श्री गर्गाचार्य । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ६. साइज १२×५ इञ्च । विषय—ज्योतिष । लिपि संवत् १८६८.

शतानंद ज्योतिष शास्त्र ।

रचयिता शतानन्द । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ८. साइज ११×४ इञ्च । प्रति अपूर्ण है ।

शब्दशोभा ।

रचयिता । श्री नीलकण्ठ शुक्ल । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या २७. साइज १२।।×५।। इञ्च । लिपि संवत् १८४२.

शब्दानुशासन।

रचयिता आचार्य हेमचन्द्र। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ४५ साइज १३×५॥ इञ्च। प्रत्येक पृठ पर १४ पंक्तियां और प्रति पंक्ति मे ५२–५६ अक्षर। विषय व्याकरण।

शत्रुंजय महातीर्थ महात्म्य।

रचियता श्री धनेश्वर सूरि। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या १७१. साइज ११॥×४ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर १६ पंक्तिया तथा प्रति पंक्ति मे ४८–५४ अक्षर। प्रथम पत्र नही है।

शांतिचक्रपूजा।

रचयिता भट्टारक श्री सुरेन्द्रकीर्त्ति। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या १४. साइज ११॥×५ इञ्च। लिपि १८३६. लिपिस्थान माधोपुर।

प्रति नं० २. पत्र संख्या ४. साइज ११॥×४॥ इञ्च।

प्रति नं० ३ पत्र संख्या १०. साइज ११॥×५॥ इञ्च।

शांतिचक्र पूजा।

रचयिता पंडित श्री धर्मदेव। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ३० साइज १२×५॥ इञ्च।

प्रति नं० २ पत्र संख्या १८ साइज ८॥×४॥ इञ्च। लिपि संवत् १८०८. लिपिस्थान जोबनेर (जयपुर) लिपिकर्त्ता पं० उदयराम।

शान्तिनाथ पुराण।

रचयिता भट्टारक श्री सकलकीर्त्ति। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या २५८. साइज ११॥×४ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर ८ पक्तियां और प्रति पक्ति मे ३६–४० अक्षर।

प्रति नं० २. पत्र संख्या १५३ साइज १२॥×५ इञ्च। अन्त के दो पृष्ठ नहीं है।

प्रति नं० ३. पत्र संख्या २०४. साइज १०×६ इञ्च। लिपिशक संवत् १६७७

शांतिनाथ पुराण।

रचयिता अज्ञात। पत्र संख्या १४७. भाषा संस्कृत गद्य। साइज १०॥×४॥ इञ्च। विषय–भगवान शान्तिनाथ का जीवन चरित्र।

शारदीनाममाला।

रचयिता उपाध्याय श्री हर्षकीर्त्ति। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ३८. साइज १०×४॥ इञ्च। प्रत्येक

पृष्ठ पर ६. पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में २४-३० अक्षर। लिपि संवत १७६६

प्रति नं० २ पत्र संख्या १७४ साइज ११॥×६ इञ्च। प्रशस्ति नहीं है। प्रति प्राचीन मालूम देती है।

प्रति नं० ३. पत्र संख्या ११६ साइज १२॥×५॥ इञ्च। प्रति अपूर्ण।

शान्तिलहरी।

रचयिता पंडित श्री सूर्यचन्द्र। भाषा संस्कृत। पृष्ठ संख्या १६ साइज १०×४॥ इञ्च। इसका दूसरा नाम वैराग्य लहरी भी है। ग्रन्थ समाप्ति के समय कवि ने अपना परिचय दिया है

शारदास्तवन।

रचयिता अज्ञात। भाषा हिन्दी। पत्र संख्या २. साइज ११॥×५ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर १३ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ५०-५६ अक्षर। लिपि संवत १८४०.

शारदास्तवन।

रचयिता अज्ञात। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या १. साइज ११×४॥ इञ्च।

शारंगधर संहिता।

रचयिता श्री शारंगधराचार्य। भाषा संस्कृत। पृष्ठ संख्या ७१ साइज १२×५॥ इञ्च। लिपि संवत १८४२. विषय-आयुर्वेद।

प्रति नं २. पत्र संख्या १४. साइज १२×५॥ इञ्च। प्रति अपूर्ण है। सटीक।

शिवभद्र काव्य।

रचयिता अज्ञात। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ४. साइज १०॥×४॥ इञ्च।

शिवारुतविचार।

रचयिता श्री गार्ग। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या २ साइज १०॥×४ इञ्च। लिपि संवत् १६१२. लिपि कर्त्ता श्री क्षेम कीर्त्ति।

शिशुपालवध।

रचयिता महाकवि माघ। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ७३. साइज ६॥×४ इञ्च। लिपि संवत् १७५६.

प्रति नं० २. पत्र संख्या ७७. साइज १०॥×४॥ इञ्च। प्रति प्राचीन है।

प्रति नं० ३ पत्र संख्या २०४ साइज १०॥×४॥ इञ्च। प्रति सटीक है। टीका का नाम वल्लभ तथा टीकाकार का नाम वल्लभसूरि है।

प्रति नं० ४. पत्र संख्या १३५. साइज ११॥×५ इञ्च।

प्रति नं० ५ पत्र संख्या ४२. साइज ११॥×५ इञ्च। केवल ६ सर्ग है अन्तिम पृष्ठ नहीं है।

प्रति नं० ६. पत्र संख्या २८३. साइज ११॥×४॥ इञ्च। प्रति एक दम नवीन है।

प्रति नं० ७ पत्र संख्या पत्र संख्या ८२. साइज १२×४ इञ्च। केवल मूल मात्र है।

प्रति नं० ८ पत्र संख्या १७. साइज ११×४॥ इञ्च। लिपि संवत् १६८४ लिपिकर्त्ता मुनि रामकीर्ति। केवल १६ वा सर्ग है।

शीघ्रबोध।

रचयिता श्री काशीनाथ भट्टाचार्य। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या १६. साइज १०॥×४॥ इञ्च। लिपि संवत् १८८० विषय-ज्योतिष।

प्रति नं० २ पत्र संख्या ११ साइज ६॥×५॥ इञ्च।

प्रति नं० ३. पत्र संख्या ११. साइज ६॥×४॥ इञ्च प्रति अपूर्ण तथा जीर्णशीर्ण है।

शील प्राभृत।

रचयिता आचार्य कुन्दकुन्द। भाषा प्राकृत। पत्र संख्या ३. साइज १०×५ इञ्च। प्रति में लिंग प्राभृत भी है।

शीलांग पच्चीसी।

रचयिता श्री दलाराम। भाषा हिन्दी। पत्र संख्या २. पद्य संख्या २५.

शीलोपदेश रत्नमाला।

रचयिता श्री सोमतिलक सूरि। भाषा संस्कृत। पृष्ठ संख्या १६६. साइज ११×४॥ इञ्च। विषय-शील कथाओं का वर्णन। लिपि संवत १६६०.

श्लोकयोजन।

रचयिता श्री पद्माकर दीक्षित। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ३. साइज ११॥×४॥ इञ्च। लिपि संवत १७६६.

श्लोकवार्त्तिक।

रचयिता आचार्य श्री विद्यानन्दि भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ५७४. साइज ११×६ इञ्च। लिपिसंवत १७६५. ग्रन्थ श्लोक संख्या २२०००. विषय–तत्त्वार्थ सूत्र का गद्य में महा भाष्य है। लिपि सुन्दर और स्पष्ट है।

प्रति नं० २. पत्र संख्या ३८८. प्रारम्भ के ३ पृष्ठ तथा अन्तिम पृष्ठ नहीं है। लिपि सुन्दर है।

श्रावक लक्षण।

रचयिता पंडित मेधावी। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ३. साइज ११।।×५।। इञ्च। पंडित मेधावी के धर्मसंग्रह मे से उक्त अश लिया गया है। इसमे ११ प्रतिमाओं का कथन किया गया है।

श्रावकाचार।

रचयिता श्री पद्मनन्दी। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ४१. साइज ११।।×४।। इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर १३ पंक्तियां और प्रत्येक पंक्ति मे ३८–४२ अक्षर। लिपि काल संवत् १५६४. प्रशस्ति अच्छी दी हुई है।

प्रति नं० २. पत्र संख्या ८६. साइज ११×४।। इञ्च। लिपि संवत १६५४ द्वि० असोज सुदी १०. लिपि-स्थान अजमेर।

प्रति नं० ३. पत्र संख्या ७७. प्रति अपूर्ण है।

श्रावकाचार भाषा।

रचयिता आचार्य वसुनन्दि। भाषा प्राकृत हिन्दी। भाषाकार–पं०दौलतरामजी। पत्र संख्या १३४ साइज ८।।×५।। इञ्च। गाथा संख्या ५४६. लिपि संवत् १८०८.

श्रावकाचार।

रचयिता ब्रह्म श्रीजिनदास। भाषा हिन्दी। पत्र संख्या ११।।×५।। इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति मे ३६–४० अक्षर। लिपि संवत् १८२०. लिपिस्थान वृंदावन।

श्रावकाचार।

रचयिता श्री पूज्यपाद स्वामी। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ६. साइज ८।।×४।। इञ्च। पद्य संख्या १०३. लिपि सवत् १६७५. लिपिकार पांडे मोहन। लिपि स्थान देहली।

प्रति नं० २. पत्र संख्या ६. साइज १०×४।। इञ्च। लिपिसंवत् १६५६.

श्रावकाचार।

सटीक। रचयिता–भट्टारक पद्मनन्दि। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ४. साइज ११×४।। इञ्च। लिपि

संवत् १७१२. लिपि स्थान देवपल्यनगर।

श्रावकव्रतसार।

रचयिता पंडित रइधू। भाषा प्राकृत। पत्र संख्या ६१ प्रत्येक पृष्ठ पर १० पंक्तियां और प्रति पंक्ति में ३६-४२ अक्षर। लिपि संवत् अज्ञात। प्रथम ६१ से आगे के पत्र नहीं है।

श्रावकाचार।

रचयिता पंडित श्रीचन्द। भाषा अपभ्रंश। पत्र संख्या १२३ साइज ११॥x५ इञ्च। लिपि संवत् १५८६. लिपिस्थान चम्पावती। प्रशस्ति अपूर्ण है। लिपिकर्ता ने कुंवर श्री ईसरदास के शासन काल का उल्लेख किया है। अन्तिम पृष्ठ फटा हुआ है।

श्रावकाचारदोहा।

रचयिता अज्ञात। भाषा प्राकृत। पत्र संख्या ७ साइज ११x५ इञ्च। गा. संख्या २२२, विषय-सम्यग्दर्शन ज्ञान और चरित्र का वर्णन।

श्रीपाल चरित्र।

रचयिता श्री परिमल्ल। भाषा हिन्दी (पद्य) पत्र संख्या १२५. साइज १०x५। इञ्च। सम्पूर्ण पद्य संख्या २३००. रचना संवत्-१७ वीं शताब्दी। लिपि संवत् १७६४. ग्रन्थ समाप्ति के बाद कवि का परिचय भी दिया हुआ है।

श्रीपालचरित्र।

रचयिता पंडित रइधू। भाषा अपभ्रंश। पत्र संख्या १२८. साइज १०॥x५ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर ६ पंक्तियां और प्रति पंक्ति में ३०-३५ अक्षर। प्रति लिपि संवत १६३१. लिपिस्थान टोंक।

प्रति नं० २. पत्र संख्या १००. साइज ८॥x६ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर १४-१६ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में २८-३४ अक्षर। रचना संवत् १६४६. प्रति अपूर्ण है १०० पृष्ठ से आगे नहीं हैं। ग्रन्थ की भाषा बहुत ही सरल है।

श्रीपाल चरित्र।

रचयिता पंडित नरसेन। भाषा प्राकृत। पत्र संख्या ४८. साइज १०x५। इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर ६ पंक्तियां और प्रति पंक्ति में ३३-३८ अक्षर। लिपि संवत् १५६६.

प्रति नं० २. पत्र संख्या ३७. साइज ११x५॥ इञ्च। लिपि संवत् १६३२.

प्रति नं० ३ पत्र संख्या ३३. साइज ११×६ इञ्च।

प्रति नं० ४. पत्र संख्या ४३ साइज ११×५॥ इञ्च। लिपि संवत् १५८४. लिपिस्थान दौलतपुर।

प्रति नं० ५. पत्र संख्या २६. साइज ११×५। इञ्च। लिपि सवत १५१२.

प्रति नं० ६. पत्र संख्या ४१. साइज १०×५ इञ्च।

प्रति नं० ७. पत्र संख्या ४८. साइज १०×४॥ इञ्च। प्रतिलिपि संवत सवत् १५७६. लिपिस्थान टोंक।

श्रीपाल चरित्र।

रचयिता श्री जगन्नाथ कवि। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ५०. साइज ११×५ इञ्च। रचना काल– संवत् १७०० आसोज सुदी दशमी।

प्रति नं० २. पत्र संख्या २८ साइज १२×५ इञ्च। लिपि सवत् १६०६.

श्रीपाल चरित्र।

रचयिता ब्रह्म नेमिदास। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ११२. साइज ६×४ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर ६ पंक्तियां और प्रति पंक्ति में २८–३२ अक्षर। रचना सवत् १५८५. कवि ने अपना परिचय लिखा है लेकिन वह अधूरा है।

श्रीपाल चरित्र।

रचयिता भट्टारक श्री सकलकीर्त्ति। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या २६. साइज ११।×४। इञ्च। लिपि सवत् १५८६ श्रावण सुदी १३. विषय–महाराजा श्रीपाल का जीवन चरित्र।

प्रति नं० २ पृष्ठ संख्या ४०. साइज ११।×४ इञ्च। प्रति अपूर्ण है।

श्रुतस्कंध।

ब्रह्म हेमचन्द्र। भाषा अपभ्रंश। पत्र संख्या ४. साइज ११।×५ इञ्च। विषय–सिद्धान्त। बाइ गूजीर के पढने के लिये उक्त ग्रन्थ की प्रतिलिपि की गई।

प्रति नं० २. पत्र संख्या १४. साइज १०×४॥ इञ्च।

प्रति नं० ३. पत्र संख्या ६. साइज १०×४॥ इञ्च।

श्रुतस्कंधपूजा।

रचयिता भट्टारक श्री त्रिभुवन कीर्त्ति। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ३. साइज ११।×५॥ इञ्च। लिपि सवत् १६६४. ब्रह्मचारी अखयराज के पढने के लिये पूजा की प्रतिलिपि की गयी।

प्रति नं० २. पत्र संख्या १०. साइज १०॥×४॥ इञ्च।

प्रति नं० ३. पत्र संख्या ७. साइज ६×६॥ इञ्च।

श्रेणिक चरित्र।

रचयिता लक्ष्मीदास चादवाड। भाषा हिन्दी। पत्र संख्या ११४ साइज १०॥×५॥ इञ्च। रचना संवत् १७३३ लिपि संवत् १८०८.

श्रेणिकचरित्र।

ग्रन्थकर्त्ता जयमित्रहल। भाषा अपभ्रंश। पत्र संख्या ७८. साइज १०×५। इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर ६ पंक्तियां और प्रत्येक पंक्ति में २८-३५ अक्षर। लिपिसंवत १५८०. ११ परिच्छेद हैं। ग्रन्थ साधारण अवस्था में है। ७७ पृष्ठ के एक भाग पर कुछ नहीं लिखा है।

श्रेणिकचरित्र।

रचयिता मुनि शुभचन्द्र। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ६१. साइज ११×५ इञ्च। लिपि संवत १७२०

प्रति नं० २ पत्र संख्या ११३. साइज १०॥ इञ्च। अन्तिम एक पृष्ठ नहीं है।

प्रति नं० ३. पत्र संख्या १०८. साइज ६॥×४ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर १० पंक्तियां और प्रत्येक पंक्ति में ३८-४४ अक्षर। लिपि संवत १८४७.

प्रति नं० ४. पत्र संख्या १७३ साइज १०×४ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर ८ पंक्तियां और प्रति पंक्ति में ३२-३६ अक्षर। प्रतिलिपि संवत १८०८.

श्रेणिकरास।

रचियता ब्रह्म श्री जिनदास। भाषा-हिन्दी। पत्र संख्या ५२. साइज ६॥×४। इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पंक्तियां तथा प्रत्येक पंक्ति में २६-३२ अक्षर।

शृंगार शतक।

रचयिता-श्री भर्तृहरि। भाषा-संस्कृत। पत्र संख्या १८. साइज ११॥५ इञ्च।

ष

षट्कर्मोपदेशरत्नमाला।

रचयिता श्री अमरकीर्त्ति। भाषा अपभ्रंश। पत्र संख्या ६५ १०॥×५ इञ्च। प्रतिलिपि संवत १८७१.

प्रतिलिपि बहुत प्राचीन होने पर भी सुन्दर और स्पष्ट है।

प्रति नं० २ पत्र संख्या ११३ साइज ६×५॥ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर १३ पंक्तियां और प्रत्येक पंक्ति ३३–३७ अक्षर। प्रतिलिपि संवत् १५६२.

प्रति नं० ३. पत्र संख्या १०५. साइज १०॥×५॥ इञ्च। प्रतिलिपि संवत् १५५८. प्रति प्राचीन है। बहुत पृष्ठों के अक्षर एक दूसरे से मिल गये हैं।

प्रति नं० ४ पत्र संख्या १३७. साइज ११॥×५ इञ्च। लिपि संवत् १८०६ लिपिस्थान जयपुर। श्री पं० रायचन्दजी के शिष्य श्री सवाईराम ने प्रतिलिपि बनायी।

प्रति नं० ५. पत्र संख्या १६२. साइज ११॥×४॥ इञ्च। लिपि संवत् १६६१. लिपिस्थान पनवाड़ा। श्री ब्रह्मचारी श्रीचन्द ने श्री लालचन्द के द्वारा प्रतिलिपि बनवायी।

प्रति नं० ६. पत्र संख्या १६१. साइज ११॥×५ इञ्च। प्रति अपूर्ण। १६१ से आगे के पृष्ठ नहीं हैं।

प्रति नं० ७. पत्र संख्या १४७. साइज ११×५ इञ्च। लिपि संवत् १७६६. लिपिस्थान बसवा। प्रारम्भ के ७५ पृष्ठ नहीं हैं।

प्रति नं० ८. पत्र संख्या १०० साइज १२×६ इञ्च। प्रति अपूर्ण है। १०० से आगे के पृष्ठ नहीं है।

प्रति नं० ९. पत्र संख्या ८३ साइज १०×५ इञ्च। प्रतिलिपि संवत् १५५३.

प्रति नं० १०. पत्र संख्या १०४ साइज ११×५॥ इञ्च। लिपि संवत् १५६६.

प्रति नं० ११ पत्र संख्या १३४ साइज १०॥×४॥ इञ्च। लिपि संवत् १५७६. लिपिस्थान नागपुर। प्रति अपूर्ण है। प्रथम २ पृष्ठ तथा मध्य के कितने ही पृष्ठ नहीं है।

प्रति नं० १२. पत्र संख्या १२३ साइज १०×४ इञ्च। प्रति अपूर्ण है। प्रारम्भ के तथा अन्त के पृष्ठ नहीं है।

षट्कर्मरास।

रचयिता श्री ज्ञानभूषण। भाषा अपभ्रंश। पत्र संख्या ४. साइज १०॥×५ इञ्च। गाथा संख्या ५२.

प्रति नं० २. पत्र संख्या ६. साइज ११×५ इञ्च।

षट्पञ्चासिका।

रचयिता अज्ञात। पत्र संख्या २० भाषा संस्कृत। साइज ६॥×४ इञ्च। सूत्रों की टीका भी है। सात अध्याय हैं। लिपि संवत् १६६३ विषय–ज्योतिष।

षट्पाद।

रचयिता–अज्ञात। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ४ साइज १०॥×४ इञ्च। लिपिकार गणि-धर्मविमल।

षट् पाहुड ।

रचयिता आचार्य कुन्दकुन्द । भाषा प्राकृत । पत्र संख्या ३४ साइज ११×४॥ इञ्च । लिपि संवत १७६३. लिपिस्थान सांगानेर (जयपुर) ।

प्रति नं० २. पत्र संख्या ४४. साइज १०॥×४॥ इञ्च । लिपि संवत् १५६४. लिपिस्थान चंपावती । लिपिकर्त्ता श्री नथमल । लिपिकार ने राठौर वंश के राजा श्री वीरमद्य के नाम का उल्लेख किया है ।

प्रति नं० ३. पत्र संख्या ६८. साइज ११॥×५ इञ्च । लिपि संवत १७५१ लिपिकर्त्ता श्री कुंअरदास ।

प्रति नं० ४. पत्र संख्या २०. साइज ११×४॥ इञ्च । लिपि संवत् १७४७. प्रति मूलमात्र है ।

प्रति नं० ५. पत्र संख्या २३ साइज ११॥×४॥ इञ्च । प्रति मूलमात्र है ।

प्रति नं० ६ पत्र संख्या १६५. साइज १२×५ इञ्च । प्रति सटीक है । टीकाकार आचार्य श्री श्र- ग ।र । लिपि संवत् १७६५.

षट् पाहुड सटीक ।

मूलकर्त्ता आचार्य श्री कुन्दकुन्द टीकाकार सूरिवर श्री श्रुतसागर । भाषा प्राकृत-संस्कृत । पत्र संख्या १८६ साइज ११×५ इञ्च । लिपि संवत् १५८५. भट्टारक प्रभाचन्द्र के शिष्य मण्डलाचार्य श्री धर्मचन्द्र के लिये प्रतिलिपि हुई थी ।

षट् पाहुड सटीक ।

मूलकर्त्ता आचार्य कुन्दकुन्द । टीकाकार पंडित मनोहर । भाषा प्राकृत-संस्कृत । पत्र संख्या ४१. साइज ११×५॥ इञ्च । लिपि संवत १७६०.

षट्पाद ।

रचयिता अज्ञात । लिपिकार श्री धर्मविमल गणि । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ६ साइज १०×४॥ इञ्च । विषय-काव्य ।

षट्दर्शनसमुच्चयटीका ।

टीकाकार । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ६४. साइज १०॥×४॥ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर २१ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ६५-७० अक्षर । अन्तिम पृष्ठ नहीं है ।

षोडशकारणकथा ।

रचयिता-अज्ञात । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या १०. साइज ६॥×४॥ इञ्च । विषय दशलक्षण और सोलह कारण की कथा

प्रति नं० २. पत्र संख्या १०×४ इञ्च ।

षोडशकारणकथा ।

रचयिता अज्ञात । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या १०. साइज १०॥×४॥ इञ्च । पद्य संख्या १२६. दश धर्मों की कथायें हैं।

षोडशकारण व्रतोद्यापन ।

रचयिता मुनि श्री ज्ञानसागर । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ३५. साइज १०×५॥ इञ्च ।

ह

हनुमंतकथा ।

रचयिता ब्रह्मराइमल । भाषा हिन्दी । पत्र संख्या ६०. साइज ८॥×६ इञ्च । रचना संवत् १६१६. लिपि संवत् १७१६. भविष्यदंत कथा से आगे ६७ वे पृष्ठ से यह कथा शुद्ध होती है।

हनुमच्चरित्र ।

रचयिता श्री ब्रह्मजित भाषा संस्कृत । पत्र संख्या १००. साइज ११×४॥ श्लोक प्रमाण २०००. लिपि संवत् १८७४. प्रति नवीन है। श्री हनुमानजी का जीवन चरित्र वर्णित किया गया है।

प्रति न० २. पत्र संख्या ८४. साइज ११×५ इञ्च । लिपि संवत् १५७२.

प्रति न० ३ पत्र संख्या ८१. साइज ११॥×४॥ इञ्च ।

प्रति नं० ४. पत्र संख्या ६७ साइज ११×४॥ इञ्च ।

प्रति न० ५. पत्र संख्या ६५. साइज ११×५ इञ्च ।

प्रति न० ६. पत्र संख्या ७३. साइज ११×४ इञ्च । लिपि संवत् १८२६. टौंक नगर में भट्टारक सुरेन्द्रकीर्त्ति ने प्रतिलिपि बनाया ।

प्रति न० ७. पत्र संख्या १२२. साइज ११॥×४॥ इञ्च । लिपि संवत् १६८०. प्रति सुन्दर और स्पष्ट है।

प्रति नं० ८. पत्र संख्या ६७. साइज ११॥×५ इञ्च । लिपि संवत् १६४६ अषाढ सुदी १३. लिपि-स्थान कोटा । ग्रन्थ के अन्त मे है ।

हरिवंश पुराण ।

रचयिता श्री खुशालचन्द । भाषा हिन्दी (पद्य) । पत्र संख्या २४८. प्रत्येक पृष्ठ पर १० पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ४४ अक्षर । रचना संवत् १७८०. लिपि संवत् १८६०.

हरिवंशपुराण।

मूलकर्त्ता आचार्य जिनसेन। भाषाकार श्री शालिवाहन। पत्र संख्या १२६ साइज ८x५ इञ्च। पद्य संख्या ३१६१. रचना संवत् १६६४ लिपिसंवत् १७४६. गुटका नं० ३० ३१६१ पद्यों वाला हिन्दी भाषा का अपूर्व ग्रन्थ है।

हरिवंशपुराण भाषा।

रचयिता अज्ञात। भाषा हिन्दी गद्य, पत्र संख्या ६६. साइज ११x५ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर १० पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति पर ३८-४४ अक्षर। प्रति अपूर्ण है। ६६ से आगे के पृष्ठ नहीं है। ब्रह्म जिनदास कृत हरिवंश को भाषा में अनुवाद है।

हरिवंशपुराण।

रचयिता भट्टारक श्रुतकीर्त्ति। भाषा अपभ्रंश। पत्र संख्या ४१७ साइज ६x५ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर १३ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति मे ३८-४५ अक्षर। प्रतिलिपि संवत् १५५२. ग्रन्थ के अन्त में पेज की प्रशस्ति ग्रन्थकार द्वारा लिखी हुई है।

हरिवंशपुराण।

रचयिता ब्रह्म जिनदास। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ३५५ साइज १२x५॥ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर ६ पंक्तियां और प्रति पंक्ति मे ३५-४५ अक्षर। प्रतिलिपि संवत् १६६१ लिपिस्थान राजमहल नगर।

प्रति नं० २. पत्र संख्या २६७. साइज ११॥x५ इञ्च।

प्रति नं० ३. पत्र संख्या २०. साइज १२॥x६ इञ्च। प्रति अपूर्ण। २० पृष्ठ से आगे के नहीं है।

प्रति नं० ४. पत्र संख्या २२३. साइज १२॥x६॥ इञ्च। लिपि संवत् १८०३. लिपिस्थान जयपुर। प्रति सुन्दर है।

हरिवंशपुराण।

रचयिता श्री जिनसेनाचार्य। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ४६५ साइज १२॥x६ इञ्च।

प्रति नं० २ पत्र संख्या २४० साइज ११x४॥ इञ्च। प्रति अपूर्ण है।

प्रति नं० ३. पत्र संख्या ४२०. साइज १०॥x४॥ इञ्च। रचना काल शक संवत् ७०५ लिपिकाल संवत् १६४०.

प्रति नं० ४. पत्र संख्या २५०. साइज १२॥x५ इञ्च। प्रतिलिपि संवत् १४६६.

प्रति नं० ५. पत्र संख्या ३३५. साइज ६×४॥ इञ्च। लिपि संवत् १७४२. प्रशस्ति है। ग्रन्थ जीर्ण हो चुका है।

प्रति नं० ६ पत्र संख्या २६६. साइज ११॥×४॥ इञ्च। लिपि संवत १८२७. प्रथम ५० पृष्ठ नहीं है।

प्रति नं० ७ पत्र संख्या २६८ साइज ११×४॥ इञ्च। आदि के ८६ तथा अन्त के २६८ से आगे पृष्ठ नहीं हैं। ग्रन्थ जीर्ण शीर्ण हो गया है।

प्रति नं० ८ पत्र संख्या २६७. साइज १२×५॥ इञ्च। लिपि संवत १५५५. प्रशस्ति है।

प्रति नं० ९. पत्र संख्या २६७ साइज ११×६ इञ्च। प्रशस्ति नही है।

हरिवंशपुराण।

रचयिता ब्रह्म श्री नेमिदत्त। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या २१६. साइज ११॥×६ इञ्च। लिपि संवत् १६७४ लिपिस्थान चीजवाड।

हरिषेणचरित्र।

भाषा अपभ्रंश। पत्र संख्या २४ साइज १०×४॥ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर ६ पंक्तियां और प्रति पंक्ति में २८-३५ अक्षर। प्रतिलिपि संवत १५८३.

हास्यार्णवनाटक।

रचयिता अज्ञात। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ७. साइज ११॥×५॥ इञ्च। नाटक बहुत छोटा है। लिपि संवत १८२० लिपिस्थान सवाई जयपुर। लिपिकर्ता भट्टारक श्री सुरेन्द्रकीर्ति।

हेम कौमुदी।

रचयिता आचार्य हेमचन्द्र। भाषा संस्कृत। पृष्ठ संख्या २५८. साइज १०×४॥ इञ्च। चन्द्रप्रभा नामक टीका सहित है। लिपि संवत् १७५६.

होलिका चौपई।

रचयिता श्री छीतर ठोलिया। भाषा हिन्दी। पत्र संख्या १२. साइज ८×४ इञ्च। पद्य संख्या १०२. रचना संवत १६०७ लिपि संवत १८११ लिपिस्थान जयपुर। लिपिकार प० हेमचन्द्र।

प्रति नं० २ पत्र संख्या ६ साइज ११॥×५॥ इञ्च। रचना संवत् १६६० लिपिकर्ता श्री दयाराम। लिपिस्थान मालपुरा (जयपुर)।

हेमविधानशांति ।

रचयिता श्री उपाध्याय व्योम रम । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या १३३. साइज १०॥×५॥ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर १० पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति मे २४-३० अक्षर । लिपि संवत् १८६८. विषय-प्रतिष्ठा शास्त्र ।

क्ष

क्षत्रचूडामणि ।

महाकवि वादीभसिंह विरचित । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ४३ साइज १०॥×५॥ इञ्च । लिपि सवत् १८३३

प्रति नं० २ पत्र संख्या ४५. साइज ११×४॥ इञ्च । लिपि संवत १६४४

प्रति नं० ३ पत्र संख्या ४०. साइज ११॥×४॥ इञ्च । लिपि संवत १५९६ अन्तिम प्रशस्ति वाला पृष्ठ नहीं है ।

क्षेत्रपाल पूजा ।

रचयिता भट्टारक श्री सुरेन्द्रकीर्त्ति । भाषा संस्कृत । पृष्ठ संख्या २ साइज ११×५ इञ्च । लिपि संवत १८३९ लिपिस्थान साम्भोपुर ।

प्रति नं० २ पत्र संख्या ३. साइज ११॥×४ ॥ इञ्च ।

त्र

त्रिलोक प्रज्ञप्ति ।

रचयिता श्री नेमिचन्द्राचार्य । भाषा प्राकृत । पत्र संख्या १६७. साइज १२॥×५ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर १३-१७ पंक्तियां और प्रति पंक्ति में ४२-५८ अक्षर । लिपि सवत १५१९ अन्त मे एक ७८ श्लोकों वाली प्रशस्ति है । ग्रन्थ अपूर्ण है । शायद दो ग्रन्थों को मिला कर एक ग्रन्थ कर दिया है अथवा ग्रन्थ के फट जाने से दूसरे पत्रों मे लिखवाकर दिया है ।

प्रति नं० २. पत्र संख्या ३७ साइज १२×५॥ इञ्च । प्रति अपूर्ण ।

त्रिलोकप्रज्ञप्ति ।

भाषा प्राकृत । पत्र संख्या ६३ साइज ११×५ इञ्च । लिपि संवत १५७६

त्रिलोकसार पूजा ।

रचयिता अज्ञात । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ११२. साइज ११×४॥ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर ११

पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३२–३८ अक्षर। ग्रन्थ में तीनों लोको के चैत्यालय, स्वर्ग, विदेहक्षेत्र आदि सभी को पूजा दे रखी है।

प्रति नं० २. पत्र संख्या ६७. साइज ११॥×५॥ इञ्च।

त्रिलोकसार।

रचयिता सिद्धान्त चक्रवर्त्ति श्री नेमिचन्द्राचार्य। भाषा प्राकृत। पत्र संख्या २८ साइज ११×४॥ इञ्च। लिपि संवत् १७२५.

त्रिलोकसार दर्शन कथा। ११

रचयिता श्री खड्गसेन। भाषा हिन्दी (पद्य)। पत्र संख्या १०८ साइज ११×५॥ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर १४ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति मे ३४-४० अक्षर। रचना संवत् १७१३ चैत्र सुदी पंचमी। लिपि सवत १७६८ पोष सुदी १३. श्री कुन्दकुन्दाचार्य कृत त्रिलोकसार का पद्यों मे अनुवाद किया गया है। पद्य बहुत ही सरल भाषा मे है। ग्रन्थ के अन्त मे ग्रन्थकर्त्ता ने अपना परिचय दे रखा है। ग्रन्थ के कई पृष्ठ एक दूसरे से चिपके हुये है। ग्रन्थ की प्रतिलिपि उदयपुर मे आचार्य श्री सकलकीर्त्ति के शासन काल मे हुई थी।

त्रिलोकसार सटीक।

मूलकर्त्ता सिद्धान्त चक्रवर्त्ति श्री नेमिचन्द्राचार्य। टीकाकार श्री बहुश्रुताचार्य। भाषा प्राकृत-सस्कृत। पत्र संख्या ११५. साइज १०×४॥ इञ्च। विषय–तीनों लोको का वर्णन।

प्रति न० २. पत्र सख्या ८५. साइज १२×५॥ इञ्च। लिपि संवत् १५६० भादवा बुदि ११ प्रथम पृष्ठ नहीं है। कितने ही पृष्ठ फट गये हैं।

त्रिलोकसार भाषा।

रचयिता श्री चतुर्भुज। भाषा हिन्दी। पत्र संख्या १६० साइज ११×५॥ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पंक्तियां और प्रति पंक्ति में ३२–३८ अक्षर। रचना संवत् १७१३. लिपि सवत १७८६. लिपिस्थान नरायणा (जयपुर) कवि ने अपना परिचय अच्छा दे रखा है।

त्रिंशच्चतुर्विंशतिपूजा।

रचयिता–आचार्य–शुभचन्द्र। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ४८. साइज १०॥×४॥ इञ्च। विषय–तीस चौबीसियों की पूजा। लिपिस्थान–उदयपुर। प्रारम्भ के २ पृष्ठ नहीं हैं।

त्रिकाल चतुर्विंशति जिनपूजा ।

रचयिता श्री आचार्य शुभचन्द्र । पत्र संख्या २७. भाषा संस्कृत । साइज ११।।×५।। इञ्च ।

प्रति नं० २. पत्र संख्या ४८. साइज ११×४ इञ्च । लिपि संवत् १८१०. प्रारम्भ के २ पृष्ठ नहीं हैं ।

त्रिकाल चौबीसी पूजा ।

रचयिता अज्ञात । भाषा अपभ्रंश । पत्र संख्या १०. साइज १२×५।। इञ्च ।

त्रिपंचाशक्रियाव्रतोद्यापन ।

रचयिता श्री देवेन्द्र । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या १२. साइज १०।।×४। इञ्च । लिपि संवत् १६६८. लिपिकर्त्ता आ० श्री रत्नचन्द्रजी ।

त्रिफलाविचार ।

रचयिता अज्ञात । भाषा हिन्दी । पत्र संख्या ३१. साइज ६।।×४। इञ्च । विषय-आयुर्वेद ।

त्रिविक्रमशती ।

रचयिता श्री हर्ष । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या २५. साइज १०।।×५ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर १३ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३२-३८ अक्षर । लिपि संवत् १६५८. प्रति सटीक है । टीका का नाम सुबुद्धि है ।

त्रिषष्टिस्मृतिपुराणसार ।

रचयिता पं० आशाधर । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ३६. साइज १०।।×४। इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर ६ पंक्तियां और प्रति पंक्ति में २४-३० अक्षर । प्रशस्ति है ।

प्रति नं० २ पत्र संख्या ३६. साइज १०।।×४।। इञ्च । प्रति अपूर्ण है ।

त्रिषष्टिशलाका ।

रचयिता अज्ञात । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ३७. साइज १०×५ इञ्च । प्रति अपूर्ण है ।

त्रिमती सूत्र ।

रचयिता श्रीधराचार्य । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या १२. साइज १०×४।। इञ्च । विषय-गणित प्रति अपूर्ण है । १२ से आगे के पत्र नहीं हैं ।

प्रति नं० २. पत्र संख्या १६. साइज १०×४।। इञ्च । प्रति अपूर्ण है ।

त्रेपन क्रिया कोश ।

रचयिता श्री किशनसिंह । भाषा हिन्दी । पत्र संख्या १६५. साइज ८॥×६ इञ्च । रचना संवत १७८४. प्रारम्भ के ७ पृष्ठ दीमक ने खा रखे है । कोश के अन्त मे ग्रन्थकर्त्ता ने अपना परिचय भी दे रखा है ।

प्रति नं० २ पत्र संख्या ७४. साइज १०×६ इञ्च । लिपि संवत १८२६.

त्रेपनक्रियाकोश ।

रचयिता अज्ञात । भाषा हिन्दी । पत्र संख्या ४४. साइज ११×४॥ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर १३ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ४४-५० अक्षर । प्रति अपूर्ण है अन्तिम पृष्ठ नहीं है ।

ज्ञ

ज्ञातृधर्मकथांग ।

भाषा प्राकृत । पृष्ठ संख्या ६०. साइज १२×४ इञ्च । प्रति अपूर्ण है । ६१ से पहिले के पृष्ठ नहीं है । लिपि संवत् १६००. लिपिकर्त्ता श्री अजयगणि ।

प्रति नं० २ पृष्ठ संख्या ६६ साइज १२॥×४॥ इञ्च । प्रति अपूर्ण है ।

ज्ञानांकुश ।

रचयिता अज्ञात । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ३. साइज ६॥×४ इञ्च । पद्य संख्या ४०

ज्ञानार्णव भाषा ।

रचयिता श्री विमलगणि । भाषा हिन्दी (पद्य) । पत्र संख्या ४७ साइज १३×६ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति पर ४२-४८ अक्षर । ग्रन्थ अपूर्ण है ।

ज्ञानार्णव ।

रचयिता आचार्य शुभचन्द्र । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या १७५ साइज १०॥×४॥ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर ८ पंक्तियां और प्रति पंक्ति मे २२-२६ अक्षर । लिपि संवत् १६६६.

प्रति नं० २. पत्र संख्या ११० साइज ११×५ इञ्च ।

प्रति नं० ३ पत्र संख्या ६३ साइज १०॥×५ इञ्च ।

प्रति नं० ४ पत्र संख्या ७६. साइज १२×६ इञ्च । लिपि संवत १६०२. लिपिस्थान अजमेर । श्री ब्रह्म धर्मदास ने अपनी पुत्री हीरा के पढने के लिये प्रति लिपि करवाई । ग्रन्थ दीमक लग जाने से जीर्ण शीर्ण हो चुका है ।

प्रति नं० ५. पत्र संख्या ६२. साइज ११×६ इञ्च। लिपि संवत १८६६

प्रति नं० ६. पत्र सख्या १६०. साइज ११×५ इञ्च। लिपि संवत १६०४

प्रति नं० ७ पत्र संख्या ८०. साइज १०॥×५ इञ्च।

प्रति नं० ८. पत्र सख्या ११७. साइज ११॥×५ इञ्च। लिपि सवत् १६५० लिपिस्थान मालपुरा।

ज्ञानार्णव गद्यटीका।

रचयिता ब्रह्म श्री श्रुतसागर। भाषा सस्कृत। पत्र सख्या १२ साइज १०॥×४ इञ्च। लिपि सवत् १७२७. टीका नाम तत्त्व प्रकाशिनी।

प्रति नं० २ पत्र सख्या ६ साइज ८॥×५ इञ्च।

प्रति नं० ३. पत्र सख्या १० साइज ११×४ इञ्च।

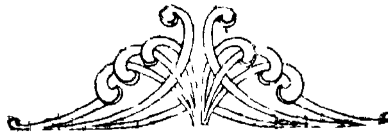
ज्ञानसार।

रचयिता श्री पद्मसिहाचार्य। भाषा प्राकृत। पृष्ठ सख्या ४ साइज १०×३॥ इञ्च। रचना संवत १०८६ गाथा सख्या ६३.

ज्ञानसूर्योदयनाटक।

रचयिता श्री वादिचन्द्र। भाषा सस्कृत। पत्र संख्या ३१ साइज १०॥×५ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति पर ४०-४६ अक्षर। रचना संवत १६४८. लिपि संवत १८३५.

प्रति नं० २. पत्र सख्या २६. साइज १०॥×४॥ इञ्च। प्रति अपूर्ण है। प्रथम और अन्तिम पृष्ठ नहीं हैं।



श्री दि. जैन अतिशय क्षेत्र श्री महावीर-शास्त्र भण्डार

चान्दनगांव (जयपुर, राजस्थान)

ग्रन्थ-सूची

अ

१. अजितनाथ पुराण।

रचयिता श्री अरुणमणि। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ४२८. साइज १०॥×४॥ इञ्च। लिपि संवत् १६१६.

२. अध्यात्मतरंगिणी।

मूलकर्ता आचार्य सोमदेव। भाषाकार अज्ञात। भाषा—हिन्दी गद्य। पत्र संख्या ५६. साइज १२×४॥ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर ६ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ४४—४८ अक्षर। प्रति अपूर्ण है। ५६ से आगे के पृष्ठ नहीं हैं। भाषा सरल तथा सुन्दर है।

प्रति नं० २. पत्र संख्या १५. साइज ११॥×५ इञ्च। केवल मूल भाग है।

३. अनागारधर्मामृत।

रचयिता महापंडित आशाधर। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ८५. साइज १२×५॥ इञ्च। लिपि संवत् १५८१।

प्रति नं० २. पत्र संख्या १२५. साइज ११×४॥ इञ्च। लिपि संवत् १६१२ जेठ सुदी ५. प्रशस्ति है। प्रथम पृष्ठ तथा अन्तिम पृष्ठ नहीं है।

४. अनंतव्रतोद्यापन।

रचयिता श्री गुणचंद्र सूरि। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या २१. साइज ११॥×५॥ इञ्च। प्रति नवीन है।

५ अनंतव्रतोधापनपूजा ।

रचयिता आचार्य श्री गुणचन्द्र । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ४०. साइज १०॥x४॥ इञ्च प्रशस्ति है । लिपि स्थान जयपुर ।

६ अनुभव प्रकाश भाषा ।

भाषाकार–अज्ञात । पत्र संख्या ३७ साइज १२x५॥ इञ्च । लिपि संवत् १६८०. लिखावट सुन्दर है ।

७ अनेकार्थसंग्रह

भाषाकार अज्ञात । भाषा हिन्दी । पत्र संख्या ४४. साइज १२x४॥ इञ्च । लिपि संवत १८३८ ।

८ अंगुलास्तोत्र ।

पत्र संख्या ३ भाषा संस्कृत । उक्त स्तोत्र मार्कंडेय पुराण मे से लिया गया है ।

९ अम्बिका कल्प ।

रचयिता आचार्य शुभचन्द्र । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ४५. साइज ८॥x६ इञ्च । लिपि संवत १९१२. लिपि कर्त्ता पं० चुन्नीलाल । विषय–मन्त्र शास्त्र ।

१० अरिष्टाध्याय ।

रचयिता अज्ञात । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ११. साइज १०x४॥ इञ्च । लिपि संवत् १५५५. लिपि कर्त्ता पं० हरीसिंह ।

११ अर्हद्देव महाभिषेकविधि ।

रचयिता महा पंडित आशाधर । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ६५. साइज १०॥x४ इञ्च । लिपि संवत १५०८ ।

१२ अवजद पाशा केवली ।

भाषा हिन्दी । पत्र संख्या ६. साइज १०x५॥ इञ्च । भव्यजीव को प्रश्नकर्त्ता मान करके प्रश्नों का जवाब दिया गया है । प्रति प्राचीन है ।

प्रति नं० २. पत्र संख्या १०. साइज १०x४॥ इञ्च । इस प्रति की हिन्दी शुद्ध है

प्रति नं० ३. भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ६. साइज १०x४ इञ्च । प्रति जीर्ण हो चुकी है

प्रति नं० ४. पत्र संख्या ३. साइज ११॥x५॥ इञ्च ।

प्रति नं० ५. पत्र संख्या ८. साइज १०×५ इञ्च।

प्रति नं० ६. पत्र संख्या ६. साइज १२×५॥ इञ्च। प्रति पूर्ण है। जिल्द बंधी हुई है।

१३ अवधूतगीता।

संग्रह कर्ता अज्ञात। भाषा संस्कृत। पृष्ठ संख्या ७२. साइज ६×४ इञ्च। आठ स्तोत्र का संग्रह है।

१४ अष्टशती।

रचयिता श्री भट्टाकलंक देव। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ६०. साइज १४×७॥ इञ्च। प्रति नवीन है।

१५ अष्ट सहस्री।

रचयिता आचार्य विद्यानन्दि। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ३१६. साइज १२॥×५॥ प्रती नवीन है। लिखावट सुन्दर है।

प्रति नं० २ पत्र संख्या १८२ साइज १४×७॥ इञ्च। प्रति अपूर्ण है।

आ

१६ आगम सार सिद्ध पूजा।

रचयिता भट्टारक श्री भानुकीर्ति। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या २१३. साइज १३×५। लिपि संवत् १८८० लिपि कर्त्ता नरेंद्रकीर्ति।

१७ आदित्यवार कथा।

रचयिता श्री गंगामल। भाषा हिन्दि पत्र। संख्या १४. साइज ६×५ इञ्च। सम्पूर्ण पद्य संख्या १५३ लिपि संवत १८२७. लिपि स्थान वृंदावन। लिपि कर्त्ता पंडित उदयचंद। प्रशस्ति है।

१८ आदि पुराण।

रचयिता महाकवि पुष्पदंत। भाषा अपभ्रंश। पत्र संख्या २६६. साइज ११॥×५ इञ्च। लिपि संवत १५३७ लिपिकर्त्ता साधू मल्ल। लिपि कर्त्ता ने कतुबखा के शासन काल का उल्लेख किया है। प्रशस्ति दी हुई है। प्रति जीर्ण है।

प्रति नं० २. पत्र संख्या २८७ साइज ११॥×४॥। लिपि संवत् १५८५ लिपि कर्त्ता ने बादशाह बाबर का नामोल्लेख किया है।

प्रति नं० ३ पत्र संख्या २६६. साइज १२×५॥ इञ्च। लिपि संवत् १६१६. प्रशस्ति है। लिपिस्थान मालिकपुर। लिपि कर्त्ता श्री भुवन कीर्ति।

इ

१६ इन्द्रध्वजपूजा ।

रचयिता श्री विश्वभूषण । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ७. साइज १०×४॥ इञ्च । प्रति पूर्ण है लेकिन जीर्ण अवस्था मे है । अन्तिम पृष्ठ पर कागज चिपका हुआ है जिससे अन्त की पंक्तियां पढने मे नहीं आती ।

२० इन्द्रप्रस्थप्रबंध ।

लिपि कर्त्ता अज्ञात । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या १७ साइज १०×४॥ इञ्च । विषय-इन्द्रप्रस्थ (देहली) पर शासन करने वाले राज वंशो का परिचय दिया हुआ है ।

२१ इन्द्रमाला परिधापन विधि ।

भाषा संस्कृत । पत्र संख्या २ साइज ६॥×४ इञ्च । उक्त पाठ प्रतिष्ठापाठ मे से लिया गया है ।

२२ इष्टोपदेश सटीक ।

टीका कार कर्त्ता श्री विनयचन्द्र मुनि । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ३६ साइज ११×४ इञ्च । लिपि संवत १५४१ लिपि कर्त्ता भट्टारक ज्ञान भूषण । लिपि स्थान गिरिपुर । लिपि कर्त्ता ने राजा गंगादास के नाम का उल्लेख किया है ।

उ

२३ उत्तरपुराण ।

रचयिता महाकवि पुष्पदन्त । भाषा अपभ्रंश । पत्र संख्या ३२१ साइज ११॥×५ इञ्च । लिपि संवत १५३६. लिपिकर्त्ता साधु मल्हू । लिपि कर्त्ता सुलतान बहलोल लोदी के शासन काल का उल्लेख किया है। प्रति सुन्दर है । लिपिकर्त्ता के द्वारा लिखी हुई प्रशस्ति भी है ।

२४ उत्तर पुराण ।

रचयिता गुणभद्राचार्य । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ४८० साइज ११॥×५ इञ्च । लिपि संवत १६१०. ग्रन्थ कर्त्ता तथा लिपि कर्त्ता दोनो के द्वारा प्रशस्तियां लिखी हुई है । प्रति पूर्ण है ।

२५ उपदेश रत्नमाला ।

रचयिता आचार्य श्री सकल भूषण । भाषा संस्कृत पत्र संख्या ३६६. साइज ६॥×५ इञ्च । प्रति सटीक है । लिपि संवत १७०२ चैत सुदी १४ बीतवार । प्रति पूर्ण है तथा लिखावट अच्छी है ।

२६ उपासकाध्ययन ।

रचयिता आचार्य प्रभाचन्द्र देव । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ६. साइज १०×४ इञ्च । लिपि संवत् १५७८. लिपिकर्त्ता मुनि श्री नेमिचन्द्र ।

२७ उमास्वामि श्रावकाचार भाषा ।

भाषाकर्त्ता हिसार निवासी श्री हलायघ । भाषा हिन्दी गद्य संख्या ७२. साइज ६×७॥ इञ्च ।

२८ उष्मभेद ।

रचयिता श्री महेश्वरकवि । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ६ साइज १०×४ इञ्च । लिपि संवत १८४८ पद्य संख्या ६५ । विषय—व्याकरण

ऋ

२९ ऋषिमंडल पूजा ।

रचयिता श्री गुणनन्दि । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या १८. साइज ११×४॥ इञ्च । लिपि संवत १८५६. लिपि स्थान तक्षकपुर ।

प्रति नं० २. पत्र संख्या १२. साइज ११×५ प्रति अपूर्ण है । प्रारम्भ के पृष्ठ नहीं है । किसी ग्रन्थ में से उक्त पूजा के अलग पृष्ठ निकाले लिये गये है ।

प्रति नं० ३. पत्र संख्या १०. साइज १२×६ इञ्च । प्रति पूर्ण है ।

३० ऋषिमंडल स्तोत्र ।

लिपिकर्त्ता मुनि श्री मेघ विमल । भाषा संस्कृत । पृष्ठ संख्या २. पद्य संख्या ७६. प्रति सुन्दर नहीं है।

ए

३१ एकाक्षर नाममालाका ।

रचयिता महाकवि अमर । पत्र संख्या ३. साइज १०×४ इञ्च । लिपि संख्या १५१४. चैत्र बुदि २ बृहस्पतिवार ।

प्रति नं २. पत्र संख्या ७ साइज ११॥×५ इञ्च ।

क

३२ कथा कोश सग्रह ।

इस सग्रह मे निम्न लिखित कथाये हैं—

नाम	रचयिता	भाषा	पत्र	रचना, स०	लिपि सवत्
आदित्यवार कथा	×	हिन्दी	३		×
,,	श्रुतसागर	,,	१८	१७८६	१६३४
श्रावण द्वादशी कथा	×	,,	८	×	×
षोडश कारण व्रत कथा	ब्रह्म जिनदास	,,	६	×	×
अष्टाह्निका व्रत कथा	प० बुधजन	,,	६	१८८१	×
अशोक रोहिणी कथा	श्रुतसागर	सस्कृत	५	×	×
रोहणी व्रत कथा	भानुकीर्ति	,,	६	×	१८८८
नत व्रत पूजा	×	,,	१७	×	×
अनत चतुर्दशी व्रत कथा	×	,,	१४	×	×
पचमी व्रत कथा	हर्षकीर्ति	,,	७	×	×
पुरन्दर व्रत पूजा	×	,,	५	×	×
पुष्पाजलि व्रतोद्यापन पूजा	प० गगादास	,,	६	×	×
,,	भ० रत्नकीर्ति	,,	६	×	×
सुखसम्पत्ति गुण पूजा	×	,,	४	×	×
,,	भ० रत्नचन्द्र	,,	५	×	१८८२
द्वादशी व्रतोद्यापन पूजा	भ० देवेन्द्रकीर्त्ति	,,	२१	×	×
कोकिला पचमी विधान	×	,,	६	×	×
भक्तामर पूजा	भ० सोमकीर्त्ति	,,	६	×	×
कल्याणक उद्यापन	भ० सुरेन्द्रकीर्त्ति	,,	२४	×	१८८७
पचमास चतुर्दशी व्रतोद्यापन पूजा	,,	,,	४	×	,,
मुक्तावली पूजा	×	,,	४	×	×
आदित्य व्रतोद्यापन पूजा	भ० जयसागर	,,	५	×	×

३३ कथा संग्रह भाषा ।

भाषा कर्त्ता अज्ञात । भाषा हिन्दी गद्य । साइज ८x५ इञ्च ६ कथाओं का संग्रह है । हिन्दी भाषा विशेष शुद्ध नहीं है ।

३४ कर्मदहन पूजा ।

भाषा संस्कृत । पत्र संख्या १२ साइज ११॥x६ इञ्च ।

३५ कर्मप्रकृति ।

रचयिता श्री नेमिचन्द्राचार्य । भाषा प्राकृत । साइज १२x५ इञ्च । गाथा संख्या १६१ प्रति प्राचीन है ।

प्रति नं० २. पत्र संख्या १६. साइज १०॥x५ इञ्च । लिपि सवत् १८७८ लिपि स्थान जयपुर । लिपि कर्त्ता ने महाराजा जयसिंह का उल्लेख किया है ।

प्रति नं० ३. पत्र संख्या १४. साइज १२x४॥ इञ्च । लिपि सवत् १८४७ लिपि स्थान आमेर । लिपि कर्त्ता भट्टारक श्री सुरेन्द्र कीर्त्ति ।

३६ कर्म विपाक विचार भाषा ।

भाषाकार अज्ञात । भाषा हिन्दी गद्य । पत्र संख्या ५७३. साइज ४०॥x५॥ इञ्च । लिपि सवत् १६३१

३७ कल्याण मन्दिर प्रकटन विधि कथा ।

भाषा हिन्दी । पत्र संख्या १५. साइज ६x४ इञ्च । पद्य संख्या ६०. कल्याण मन्दिर स्तोत्र की किस प्रकार रचना हुई इसकी कहानी वर्णित है ।

३८ कलशविधि ।

भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ६ साइज ११x५ इञ्च । लिपि सवत् १८६१ श्री चपालालजी ने उक्त विधि की प्रतिलिपि करवायी । लिखावट सुन्दर है ।

३९ कवि कर्पटी ।

रचयिता कवि श्री शंखद्ध । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ११. साइज १०॥x५ इञ्च लिपि कर्त्ता भट्टारक श्री शक्रदेव । प्रति पूर्ण है ।

४० कविराज चूडामणि ।

रचयिता श्री विष्णुदास । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या १०. साइज १०x५ इञ्च । विषय श्रृंगार रस का वर्णन ।

४१ क्रियाकलाप सटीक।

टीकाकार आचार्य प्रभाचन्द्र। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या १२१ साइज ६॥×५ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर १३ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३१-३४ अक्षर। लिपि संवत १५६२ लिपिकर्त्ता द्वारा प्रशस्ति लिखी हुई है।

४२ क्रियाकोष भाषा।

भाषाकार श्री पं० दौलतरामजी। भाषा हिन्दी। पत्र संख्या १४१ साइज ६×६ इञ्च। रचना सम्वत् १७६५ लिपि संवत १८०७. प्रति नवीन है। प्रशस्ति है।

प्रति नं० २. पत्र संख्या ६८. साइज ११॥×५ इञ्च। लिपि संवत् १८५२. प्रति नवीन है।

४३ कुवलयानंद।

रचयिता श्री अप्पय दीक्षित। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ६३. साइज १०॥×४॥ इञ्च। लिपि संवत् १८४६. लिपि कर्त्ता भट्टारक श्री सुरेन्द्रकीर्त्ति।

४४ कौतुक रत्नावली।

संग्रहकर्त्ता जानकीदास। भाषा संस्कृत हिन्दी। पत्र संख्या ८७. साइज १०×५ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ४७-५० अक्षर। लिपि संवत १८५४ अनेक मन्त्र विद्याओं के बारे में लिखा है।

ग

४५ गणितसार संग्रह।

रचयिता श्री महावीराचार्य। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या १८ साइज १४×६॥ इञ्च। प्रति अपूर्ण है।

गुटके

गुटका नं० १ पत्र संख्या २० साइज ५×५ गुटके में केवल एकी भाव स्तोत्र तथा पृथ्वीभूषण विरचित पद्मावती स्तोत्र ही है।

गुटका नं० २. पत्र संख्या २० साइज ५×४ इञ्च। गुटके में केवल चक्रेश्वरी देवी सबीज स्तोत्र है।

गुटका नं० ३ संख्या ७५. साइज १०॥×५॥ इञ्च। प्रारम्भ के १५. पत्र नहीं है। गुटके में निम्न उल्लेखनीय सामग्री है।

१. योगसार
२. योगाभ्यास क्रिया
३. प्रश्नोत्तर माला

४. पिंड स्थान प्ररूपक
५. कल्याणालोचन　　ब्रह्मारिजित कृत।
६. चतुर्विंशति स्तुति　　मुनि श्री माघनन्दि।
७. तत्त्वार्थ सूत्र　　प्रभाचन्द्राचार्य।

गुटका नं० ४ संग्रह कर्त्ता अज्ञात। पत्र संख्या २६६, साइज ६x४ इञ्च। प्रति नवीन है। प्रारम्भ के ७६ पृष्ठ नहीं है।

गुटके मे निम्न सामग्री है—

१. पार्श्वनाथ जिन स्तोत्र　　भाषा हिन्दी
२. शान्ति नाम　　"　　"
३. आदित्यवार कथा　　"
४. समाधि मरण　　"
५ बारह मासा　　"
६. चौबीस ठाणा
७. चौबीस तीर्थंकर वर्णावली
८. धर्म विलास
९. मंगल म

गुटका नं० ५. लिपिकर्त्ता श्री दौलतराम। भाषा हिन्दी। लिपि संवत १८२२ पत्र संख्या २००, साइज ६x६ इञ्च। गुटके में निम्न सामग्री है—

१ क्रियाकोष　　भाषा
२. श्रावकाचार कथा　　"
३. पट्लेखा　　"

गुटका नं० ६. पत्र सख्या ५१ साइज ११x४ इञ्च। अनेक उपयोगी चर्चाओं तथा ज्ञातव्य वार्ता का संग्रह है। इनकी कुल संख्या ५१ है।

गुटका नं० ७. संग्रहकर्त्ता पं० मोहनलाल। पत्र संख्या ३५ साइज ८x५॥ इञ्च। लिपि संवत् १८७३. गुटके मे निम्न विषय हैं—

१. आदित्यवार की कथा
२. पंच पर्वों की कथा

३ मुनिसुव्रत नाथ की स्तुति
४ द्रव्य संग्रह की २१ गाथाओं की टीका

गुटका नं० ८. लिपि कर्त्ता पं० जगदेवजी। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या १२७ साइज ४॥×५ इञ्च। लिपि संवत १६३० वैशाख सुदी ५ गुरुवार। गुटके में सहस्रनाम स्तोत्र तत्त्वार्थ सूत्र तथा अन्य स्तोत्र और पूजायें आदि हैं।

गुटका नं० ६. लिपिकर्त्ता अज्ञात। भाषा संस्कृत-हिन्दी। पत्र संख्या ३८ साइज ६×४ इञ्च। गुटके में पंच मंगल (हिन्दी) ऋषि मंडल स्तोत्र, पद्मावती पूजा तथा बीस विद्यमान तीर्थंकर पूजा आदि है।

गुटका नं० १०. लिपिकर्त्ता पं० हेमराज। भाषा संस्कृत हिन्दी। पत्र संख्या १७२. साइज ५×४ इञ्च। लिपि संवत १७६२। गुटके में निम्न सामग्री है—

१ ऋषि मंडल स्तोत्र	संस्कृत
२ अनंत व्रत रासो	हिन्दी
३. अनंत व्रत पूजा	संस्कृत
४ पल्य विधान	हिन्दी
५ काका बत्तीसी	„
६ पद संग्रह	„
७. मेघकुमार की चौपाई	„
८ अनंत चतुर्दशी अष्टक (पूजा)	संस्कृत

गुटका नं० ११. लिपिकर्त्ता श्री नेमिचन्द्र। भाषा संस्कृत-हिन्दी। पत्र संख्या २२०. साइज ६×५ इञ्च। लिपि संवत १६२२। गुटके में निम्न सामग्री है—

		रचनाकार
१ पंच परमेष्ठी गुण	भाषा हिन्दी	चन्द्रसागर
२. श्रावक क्रिया भाषा	„	×
३. ऋषीश्वर पूजा	„	×
४. त्रिकाल चतुर्विंशति कथा	„	×
५. त्रिलोक पूजा	„	सुरतराम
६. बारहखडी	„	×
७. पद संग्रह	„	×
८. पूजा स्तोत्र	„	×

गुटका नं० १२. लिपिकर्त्ता श्री सवाईराम। भाषा हिन्दी संस्कृत। पत्र संख्या १२५ लिपि सं न १८४६. गुटके में स्तुति तथा पूजा के अतिरिक्त चौदह गुणस्थान चर्चा भी है।

गुटका नं० १३ लिपिकर्त्ता श्री सुखलाल। भाषा हिन्दी पत्र संख्या १२६. साइज ६x६ इञ्च। लिपि संवत् १८४०. गुटके मे पूजा स्तोत्रों के अतिरिक्त कुछ पद व गीत भी है जिनकी रचना सवत १७४६. है। ये भजन पंडित विनोदीलाल तथा भैया भगवतीदास आदि के हैं।

गुटका नं० १४. पत्र संख्या २१. भाषा हिन्दी। लिपि कर्त्ता श्री मुन्शीलाल। लिपि संवत् १६८३।

गुटके में निम्न रचनायें हैं—

१. चतुर्विंशति जिन पूजा
२. वर्द्धमान जिन पूजा
३. कल्याणमन्दिर स्तोत्र भाषा
४. निर्वाण काण्ड भाषा
५. दुःखहरण विनती
६ समाधि मरण
७. स्तुति

गुटका नं० १५. लिपिकर्त्ता अज्ञात। पत्र संख्या २१८ भाषा संस्कृत। साइज ६x५ इञ्च। गुटके मे कोई उल्लेखनीय सामग्री नहीं है। केवल स्तोत्र पूजा पाठ आदि का ही संग्रह है।

गुटका नं० १६. लिपिकर्त्ता अज्ञात। भाषा हिन्दी संस्कृत। पत्र संख्या ३२६. साइज ७x६ इञ्च। गुटका प्राचीन है लेकिन कोई उल्लेखनीय सामग्री नहीं है।

गुटका नं० १७. लिपिकर्त्ता सघी श्री वीहरजी। भाषा हिन्दी संस्कृत। पत्र संख्या ४०५. साइज ६x५ इञ्च। लिपि संवत शाके १६७१ गुटके मे पूजा, स्तोत्र आदि का ही संग्र० है।

गुटका नं० १८. लिपिकर्त्ता अज्ञात। पत्र संख्या १६. साइज ८x४ इञ्च। प्रति प्राचीन है। गुटके में भक्तमर. कल्याण मन्दिर स्तोत्र है। महाकवि बनारसीदास का कल्याण मन्दिर स्तोत्र है।

४६ गोम्मटसार जीवकाण्ड सटीक।

रचयिता नेमिचन्द्राचार्य। टीकाकार अज्ञात। भाषा प्राकृत। संस्कृत पत्र संख्या १२. साइज १२x५॥ इञ्च। प्रारम्भ मे संस्कृत मे प्रारम्भिक आचार्यों का परिचय दिया गया है। जीवकाण्ड के प्रथम अध्याय पर ही संस्कृत में विशद रूप से टीका की गयी है।

४७ गोम्मटसार जीवकाण्डभाषा ।

भाषकार पं० टोडरमलजी । भाषा हिन्दी गद्य । पत्र संख्या ४०१ साइज ११×७ इञ्च । कर्णाटक लिपि में टीका लिखी गयी है । प्रारम्भ में टीकाकार ने अपना विस्तृत परिचय दिया है ।

प्रति नं० २. पत्र संख्या ५६५ साइज ११×७ इञ्च । केवल ४०२ से ५६५ तक के पृष्ठ हैं । यह कर्मकाण्ड की प्रति है ।

४८ गोम्मटसार भाषा ।

भाषाकार पंडित टोडरमलजी । भाषा हिन्दी गद्य पत्र संख्या ६६४. साइज १३×८॥ लिपि स्थान १८८२. पंडित घासीरामजी के पढ़ने के लिये उक्त ग्रन्थ की प्रति लिपि की गयी। प्रति पूर्ण है । लिखावट सुन्दर है ।

४६ गोम्मटसार वृत्ति ।

भाषा संस्कृत-प्राकृत । पत्र संख्या २५५. साइज ११॥×५॥ इञ्च । गाथाओं की संस्कृत में टीका है । लिपि संवत् १७४४. लिपि स्थान श्री संग्रामपुर । १४७ से १८६ तक के पृष्ठ नहीं है ।

घ

५० घंटाकर्ण कल्प ।

रचयिता अज्ञात । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या १६ साइज ६×५ इञ्च । प्रति जीर्ण हो गयी है ।

प्रति नं० २ पत्र संख्या ४. साइज १०×४ इञ्च । संस्कृत से हिन्दी में अनुवाद है । लिपि संवत १८८६ ।

च

५१ चतुर्गति वर्णन ।

रचयिता अज्ञात । भाषा हिन्दी । पत्र संख्या ८. साइज ६×५ इञ्च । गोम्मटसार मूलाचार आदि शास्त्रों के आधार पर चारों गतियों के सुख दुख का वर्णन किया गया है ।

५२ चतुर्भंगी वर्णन ।

रचयिता अज्ञात । भाषा हिन्दी गद्य । पत्र संख्या २१३. प्रति अपूर्ण है पृष्ठ संख्या २०८ से २१२. तक के पृष्ठ नहीं है । गुटका नं० २ ।

५३ चतुर्दशी स्तोत्र ।

भाषकार श्री रतनलाल । भाषा हिन्दी पद्य । पत्र संख्या २२, साइज १२×८ इञ्च । लिपि संवत १६८६ प्रति नवीन है । लिखावट सुन्दर है ।

५४ चतुर्विंशति जिन पूजा ।

रचयिता श्री बख्तावरसिंह । भाषा हिन्दी । पत्र संख्या ६७ साइज ११×६ इञ्च । लिपि संवत् १६३३ जेठ बुदि ३. प्रति जीर्णावस्था में है । अन्त में कवि ने अपना अच्छा परिचय दिया है रचना संवत् १८६७ है ।

प्रति नं० २. पत्र संख्या ६६ साइज १२×७ इञ्च लिपि संवत १६०७. प्रथम पृष्ठ नहीं है ।

५५ चतुर्विंशति जिन पूजा ।

रचयिता कविवर श्री वृन्दावन । भाषा हिन्दी । पत्र संख्या ४५ साइज १२×८ इञ्च । लिपि संवत १६२२. अन्त में लिपि कर्त्ता ने अपना परिचय दिया है । प्रति पूर्ण है । लिखावट सुन्दर है ।

प्रति नं० २ पत्र संख्या ५७. साइज ११×७ इञ्च । लिपि संवत् १६३५ ११ वां पृष्ठ नहीं है ।

प्रति नं० ३. पत्र संख्या ४४ साइज १२×५॥ इञ्च । लिपि संवत १८८८ लिपि स्थान जयपुर । लिपिकर्त्ता बसतरावजी ।

५६ चतुर्विंशति जिन पूजा ।

रचयिता श्री सेवाराम । भाषा हिन्दी । पत्र संख्या ५५. साइज ६॥×५॥ इञ्च । रचना संवत् १८५४. लिपि संवत १८७१. प्रति पूर्ण है । कवि ने अन्त में अपना परिचय भी दिया है ।

प्रति नं० २ पत्र संख्या ४२ साइज ११॥×५ इञ्च । प्रति पूर्ण है । लिखावट सुन्दर है ।

५७ चतुर्विंशति जिन पूजा ।

रचयिता अज्ञात । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ४२. साइज १०॥×४॥ इञ्च । प्रथम पृष्ठ नहीं है । भाषा सुन्दर तथा सरल है ।

५८ चतुर्विंशति जिन स्तुति सटीक ।

भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ४१. साइज १०॥×४॥ इञ्च । वर्तमान चौबीस तीर्थंकरों की स्तुति है तथा उसकी वृहद टीका भी है ।

५६ चतुर्विंशति पूजा ।

रचयिता श्री चौ० रामचन्द्र । भाषा हिन्दी । पत्र संख्या ६५. साइज १०×६॥ इञ्च । लिपि संवत १८५४. लिपि कर्त्ता प० मिश्रलालजी । प्रति पूर्ण है ।

प्रति नं० पत्र संख्या ६५. साइज १०×७ इञ्च । लिपि संवत् १६३५. प्रति पूर्ण है ।

६० चंदना चरित्र ।

रचयिता आचार्य शुभचन्द्र । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ३२. साइज १०×४॥ इञ्च । लिपि संवत् १८३१. भट्टारक श्री सुरेन्द्रकीर्त्ति ने ग्रन्थ की प्रतिलिपि बनायी है ।

६१ चंद्रप्रभकाव्य ।

रचयिता श्री वीरनन्दि । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या १४५ साइज १०॥×५ इञ्च । प्रति नवीन है । लिखावट सुन्दर है ।

प्रति नं० पत्र संख्या ६३ साइज १०×४॥ इञ्च । प्रति प्राचीन है ।

६१ चरचसार ।

रचयिता पंडित शिवजीलालजी । भाषा हिन्दी गद्य । पत्र संख्या ४३६ साइज १०॥×४॥ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर १० पंक्तियां हैं तथा प्रति पंक्ति में ३४-३८ अक्षर । प्रति विशेष प्राचीन नहीं है ।

६२ चरचाशतक ।

भाषाकार श्री द्यानतरायजी । भाषा हिन्दी । पत्र संख्या ४२५ साइज १०॥ ७॥ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर १३ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३८-३५ अक्षर । मध्य भाग के कुछ पत्र गल गये है । रचना संवत १८४२. लिपि संवत १८७७ श्री विहारीलाल के सुपुत्र श्री हीरालाल के पढने के लिये ग्रन्थ की प्रतिलिपि तय्यार की गयी ।

प्रति नं० २ पत्र संख्या ५४. साइज ७५. इञ्च । लिपि संवत १६५६ ।

६३ चरचासमाधान ।

रचयिता पं० भूधरदासजी । भाषा हिन्दी . पत्र संख्या ५८ साइज १२×६॥ इञ्च । लिपी संवत १८७० ग्रन्थ के अन्त में भाषाकार ने अपना परिचय भी दे रखा है ।

६४ चाणक्यनीति शास्त्र ।

लिपिकर्त्ता विद्यार्थी जीवराम । पत्र संख्या २७ साइज ६×५ इञ्च । लिपि संवत १८८०. केवल द्वितीय अध्याय से लेकर अष्टम अध्याय तक है ।

प्रति नं० २ पृष्ठ संख्या १६ साइज ७×५॥ इञ्च । केवल तीसरा अध्याय है ।

प्रति नं० ३ पत्र संख्या १६ साइज १०×४॥ इञ्च । प्रति अपूर्ण है ।

६५ चिन्तामणि पत्र ।

रचयिता पं० दामोदर । भाषा संस्कृत । पृष्ठ संख्या १६ साइज १०×४ इञ्च । विषय–मंत्र शास्त्र । अजैन मंत्र शास्त्र है ।

६६ चौबीस ठाणा ।

रचयिता श्री नेमिचन्द्राचार्य । भाषा प्राकृत । पत्र संख्या ३६ साइज १२×५ इञ्च । लिपि संवत

१८४७ भट्टारक श्री सुरेंद्र कीर्त्ति ने ग्रन्थ की प्रतिलिपि बनायी। प्रति सटीक है। कठिन शब्दों का अर्थ संस्कृत में दे रखा है।

ज

६७ जगसुन्दरी प्रयोगमाला।

रचयिता श्री मुनि यशः कीर्त्ति। भाषा अपभ्रंश। पत्र संख्या ११२ साइज ११×५ इञ्च। विषय वैद्यक।

६८ जम्बूद्वीप प्रज्ञप्ति।

रचयिता-अज्ञात भाषा संस्कृत। पृष्ठ संख्या २०. साइज ११॥×४॥ इञ्च प्रत्येक पृष्ठ पर १४ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति मे ४६,५० अक्षर। लिपि संवत १४६२ माह सुदी १५. लिपि कर्ता ने प्रशस्ति लिखी है। लिपि स्थान तक्षकगढ। लिपि कर्त्ता ने सोल की वंशोत्पन्न राज सेहूबदेव के राज्य का उल्लेख किया है।

६९ जम्बूस्वामीचरित्र।

रचयिता ब्रह्म श्री जिनदास। भाषा संस्कृत। पृष्ठ संख्या १०६ साइज ११×४॥ इञ्च। लिपि संवत् १६३०. लिपि स्थान जयपुर। ग्रन्थकर्त्ता और लिपिकार दोनों ही के द्वारा की प्रशस्तिया लिखी हुई है। प्रति पूर्ण है।

प्रति न० २. पत्र संख्या २०६. साइज १०॥×५ इञ्च। लिपि संवत १६६२. लिपि कर्त्ता ने आमेर के महाराजा मानसिंह का उल्लेख किया गया है। अन्तिम पृष्ठ नहीं है।

७० जलयात्राविधि।

पत्र संख्या २ भाषा संस्कृत। साइज ११॥×५ इञ्च। प्रति प्राचीन है।

७१ जातककर्मपद्धति।

रचयिता श्री श्रीपति। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ५. साइज ६॥×४॥ इञ्च। लिपि संवत १६३७.

प्रति न० २. पत्र संख्या ६ साइज ६॥×४॥ इञ्च। लिपि संवत १६४५.

७२ जिनांतर।

लिपिकर्त्ता पं० चिंतामणी। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ६. लिपि संवत १७०८. विषय तीर्थंकरों के समयान्तर आदि का वर्णन किया।

७३ जिनबिंब प्रवेशविधि ।

भाषा संस्कृत । पत्र संख्या १. साइज १०x४ इञ्च । उक्त विधि प्रतिष्ठापाठ में से ली गयी है ।

प्रति नं० २. पृष्ठ संख्या ११ साइज १०x४ इञ्च । प्रति पूर्ण है । बिम्ब प्रतिष्ठा विधि भी है ।

७४ जिनयज्ञकल्प ।

रचयिता महा पंडित आशाधर । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या १३४ साइज ११x४ इञ्च । लिपि संवत १४६४ सावण सुदी ६ लिपि कर्त्ता ने एक अच्छी प्रशस्ति लिखी है । मंडलाचार्य श्री धर्मचन्द्र के पढने के लिये ग्रन्थ की प्रतिलिपि गयी । प्रति की जीर्णावस्था में है ।

प्रति नं० २. पत्र संख्या ८६ साइज ११॥x४॥ इञ्च । लिपि संवत १६१० मंडलाचार्य श्री धर्मचन्द्र के शिष्य श्री नेमिचन्द्राचार्य ने ग्रन्थ की प्रतिलिपि बनायी ।

७५ जीवन्धर चरित्र ।

रचयिता भट्टारक श्री शुभचन्द्र । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या १२५. साइज १२॥x६ इञ्च । लिपि संवत १८६२. प्रशस्ति है ।

७६ जैनलोकोद्धारक तत्वदीपक ।

रचयिता अज्ञात । भाषा हिन्दी गद्य । पत्र संख्या २१. साइज १२x६ इञ्च । विषय-धार्मिक । प्रति नवीन है ।

७७ जैनविवाहविधि ।

रचयिता पंडित तुलसीराम । भाषा हिन्दी । पत्र संख्या १७ साइज १२x४॥ इञ्च । पंडितजी ने लिखा है कि विवाह विधि का अन्य जैनाजैन विधियों को देखने के पश्चात् बनाया गया है ।

७८ जैनविवाहविधि ।

रचयिता अज्ञात । भाषा संस्कृत । पृष्ठ संख्या ७२ साइज ६x४ इञ्च । प्रति सुन्दर है । जिल्द बंधी हुई है ।

प्रति नं० २ पत्र संख्या ६ साइज ११॥x५॥ इञ्च । विवाह विधि संक्षेप में है ।

७९ जैनशान्तिमंत्र ।

भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ५ साइज १०॥x२ इञ्च । प्रति पूर्ण है । अन्तिम पृष्ठ के एक भाग पर पर कुछ कागज चिपका हुआ है ।

८० जैन सिद्धान्त उद्धरण ।

संग्रहकर्ता अज्ञात । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या १७. साइज १०॥×४ इञ्च । अजैन ग्रन्थों मे जैन सिद्धान्त के उद्धरणों को दिखलाया गया है।

८१ ज्योतिषसारसंग्रह ।

रचयिता श्री मुंजादित्य । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ८. साइज ११×५॥ इञ्च । लिपि संवत १८३८. लिपिकर्त्ता भट्टारक श्री सुरेंद्रकीर्त्ति ।

ण

८२ णमोकार पूजोद्यापन ।

रचयिता श्री अक्षराम । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ५ साइज ११×५ इञ्च । प्रशस्ति दी हुई है ।

त

८३ तत्त्वार्थसूत्र ।

रचयिता श्री उमास्वामी । भाषा संस्कृत । भट्टारक श्री देवेन्द्रकीर्त्ति ने उक्त शास्त्र की प्रति लिपि बनायी । प्रति सुनहरी अक्षरों मे लिखी हुई है। शास्त्र के दोनों ओर के कागजों पर सुन्दर वृक्षों के चित्र भी हैं।

८४ तत्त्वार्थसूत्र भाषा ।

भाषाकार अज्ञात । पत्र संख्या ७०. साइज ११×५ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति मे ३३–३६ अक्षर । भाषा सरल तथा सुन्दर है । लिपि संवत १६१२ आसोज बुदी १ लिपि कर्त्ता पं० शालिग्राम ।

प्रति नं० २ पत्र संख्या ६०. साइज १०॥×६॥ इञ्च । प्रति नवीन है । लिपि संवत १६७५ ।

८५ तत्त्वार्थसूत्रवृत्ति ।

वृत्तिकार श्री श्रुतसागर । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या २६१ साइज ११॥×५॥ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर १२ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति मे ४४–४७ अक्षर । लिपि संवत १७४०. लिपिकर्त्ता बाबा सावलदास । पांडे श्री लक्ष्मीदास ने ग्रंथ की प्रतिलिपि बनायी । प्रति सुन्दर तथा स्पष्ट है ।

प्रति नं० २ पत्र संख्या ४५ साइज १०॥×५ इञ्च । प्रति अपूर्ण है । पंचम अध्याय तक ही ग्रंथ है।

८६ तत्त्वार्थसूत्रवृत्ति ।

वृत्तिकार श्री योगदेव । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ८२. साइज ११॥×५ इञ्च । सूत्रों का अर्थ सरल

संस्कृत भाषा में दे रखा है। प्रति प्राचीन है। अन्त में वृत्तिकार ने अपना परिचय भी दे रखा है।

प्रति नं० २. वृत्तिकार भट्टारक श्री सकलकीर्ति। पत्र संख्या ७४. साइज ११॥×५॥ इञ्च। लिपि संवत १८३२ संस्कृत पद्यों में सूत्रों का अर्थ दे रखा है।

८७ तत्वज्ञान तरंगिणी।

रचयिता भट्टारक श्री ज्ञान भूषण। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या २८ साइज १०॥×६॥ इञ्च। लिपि संवत १८०७, लिपि स्थान उदयपुर।

८८ तीर्थवंदना।

भाषा हिन्दी। पत्र संख्या ५ साइज ९×६ इञ्च। प्रायः सभी तीर्थों का स्तवन किया गया है।

८९ तीर्थंकरस्तोत्र।

भाषा संस्कृत। पत्र संख्या २ साइज १०॥×५ इञ्च। लिपि संवत १९१६।

९० तेरह द्वीप पूजा।

रचयिता अज्ञात। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या २९५ साइज १०॥×४॥ इञ्च। लिपि संवत १९२४. लिपि कर्त्ता नन्दराम। लिपि स्थान जयपुर। प्रति नवीन है।

द

९१ दत्तात्रययंत्र।

भाषा संस्कृत पत्र संख्या ३९. साइज९×३ इञ्च। प्रति पूर्ण है। विषय-मंत्र शास्त्र है।

९२ दंडक की चौपई।

रूपकार पं० दौलतराम। भाषा हिन्दी। पत्र संख्या ६० साइज ९॥×४ इञ्च। प्रति नवीन है अन्तिम पत्र पर एक कागज चिपका हुआ है।

९३ दर्शनकथा।

रचयिता पं० भारमल्ल। भाषा हिन्दी पद्य। पत्र संख्या २५ साइज १२×८॥ इञ्च। प्रति नवीन है। लिपि सुन्दर है।

९४ दशलक्षण कथा।

रचयिता श्री लोकसेन। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ११. साइज १०×४ इञ्च। लिपि संवत १८९०।

९५ द्रव्य संग्रह सटीक।

टीकाकार श्री ब्रह्मदेव। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ६३. साइज १२×५॥ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर १० पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३६-४० अक्षर। प्रति प्राचीन पूर्ण है।

९६ दान कथा।

रचयिता पं० भारमल। भाषा हिन्दी पद्य। पत्र संख्या ४४. साइज १०॥×५ इञ्च। प्रती नवीन है।

ध

९७ धन्यकुमारचरित्र।

रचयिता भट्टारक श्री सकलकीर्त्ति। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ४८ साइज १२×४॥ इञ्च। प्रति पूर्ण तथा सुन्दर है।

प्रति नं० २ पत्र संख्या ४७. साइज ८॥×५॥ इञ्च। प्रति अपूर्ण है।

९८ धन्यकुमारचरित्र।

मूलकर्त्ता ब्रह्मनेमिदत्त। भाषाकर्त्ता श्री खुशालचन्द। भाषा—हिन्दी (पद्य)। पत्र संख्या ५७ साइज १२×५॥ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर १० पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में २८-३२ अक्षर। भाषा सरल और अच्छी है। अन्त में भाषाकार ने अपना परिचय भी दे रखा है। सम्पूर्ण पद्य संख्या ८३६ है।

९९ धर्मकुंडलि भाषा।

भाषाकर्त्ता श्री बालमुकुन्द। भाषा हिन्दी गद्य। पत्र संख्या ४०. साइज १०×८ इञ्च। रचना संवत १९२१. लिपि संवत १९३०।

१०० धर्मचरचा वर्णन।

रचयिता अज्ञात। भाषा हिन्दी (गद्य) पत्र संख्या २०. साइज १०॥×५ इञ्च। विषय धार्मिक चर्चाओं का वर्णन। लिपि संवत १९२२. भाषा विशेष अच्छी नहीं है।

१०१ धर्म चक्रपूजनविधान।

रचयिता श्री यशोनन्दिसूरि। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या २५. साइज ११×४॥ इञ्च। प्रति पूर्ण तथा सुन्दर है। अन्त में आचार्य धर्म भूषण को नमस्कार किया गया है।

प्रति नं० २. पत्र संख्या १७. साइज ११×५॥ इञ्च। प्रति पूर्ण तथा सुन्दर है।

१०२ धर्मपरीक्षा ।

रचयिता श्री जगदत्त गौड । भाषा हिन्दी । पत्र संख्या १२४. साइज ६॥x६ इञ्च । रचना स्थान धामपुर । प्रति नवीन है ।

१०३ धर्मपरीक्षा भाषा ।

रचयिता श्री मनोहरलाल । भाषा हिन्दी पद्य । पत्र संख्या ८६ साइज ११x५ इञ्च । लिपि संवत १८७६ भाषाकर्त्ता ने एक वृहत प्रशस्ति दे रखी है ।

१०४ धर्मप्रबोध ।

रचयिता अज्ञात । भाषा हिन्दी गद्य । पत्र संख्या २८. साइज ६x४॥ इञ्च । विषय-स्याद्वाद सिद्धान्त का समर्थन । अनेक जैनाजैन ग्रन्थों के उदाहरणों द्वारा यह सिद्ध किया है कि स्याद्वाद सिद्धान्त को अपनाना कल्याण मार्ग को पकड़ना है । भाषा अच्छी है । प्रति प्राचीन मालूम देती है । लिपि संवत १९१३. प्रथम पृष्ठ नहीं है ।

१०५ धर्मप्रश्नोत्तर श्रावकाचार ।

रचयिता अज्ञात । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ८८. साइज १०॥x५ इञ्च । श्लोक संख्या १५०० । लिपि संवत १६४५ ।

१०६ धर्मरत्नाकर ।

रचयिता श्री जयसेन सूरि । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या १४३. साइज ११x४ इञ्च प्रशस्ति है ।

१०७ धर्मशर्माभ्युदय सटीक ।

टीकाकार पंडित यशःकीर्त्ति । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या २२६. प्रारम्भ के १५६ पृष्ठ नहीं है । अन्तिम पृष्ठ नहीं हैं ।

प्रति नं० २. पत्र संख्या २१६. साइज ११x४ इञ्च । प्रति पूर्ण तथा प्राचीन है । टीका का नाम संदेह ध्वांतदीपिका ।

१०८ धर्मसार ।

रचयिता श्री पंडित शिरोमणिदास । भाषा हिन्दी । पत्र संख्या ६६. साइज १०x५॥ इञ्च । रचना संवत १७३२. लिपि संवत १६१७. दशधर्मों के अतिरिक्त अन्य सिद्धान्तों का भी वर्णन है । प्रति पूर्ण है । लिखावट सुन्दर है ।

१०६ धर्मोपदेश श्रावकाचार ।

रचयिता ब्रह्म श्री नेमिदत्त । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ३०, साइज १०।×४॥ इञ्च । लिपि संवत १७४८ लिपिस्थान मालपुरा ।

न

११० नंदीश्वरबृहत्पूजा ।

रचयिता अज्ञात । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या १६७, साइज १०×५ इञ्च । प्रति अपूर्ण है । प्रारम्भ और अन्त के पृष्ठ नहीं है ।

१११ नयचक्रवृत्ति ।

वृत्तिकार भट्टारक श्री सुरेन्द्रकीर्ति । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ४२, साइज १२×६ इञ्च । प्रति पूर्ण है ।

११२ नवग्रहपूजा ।

रचयिता अज्ञात । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ६, साइज ११॥×५॥ इञ्च । पूजा मे काम आने वाली सामग्री की सूची भी दे रखी है । नवग्रहों का एक चित्र भी है ।

११३ नवग्रहपूजा विधान ।

रचयिता अज्ञात । भाषा हिन्दी । पृष्ठ संख्या १२, साइज १०॥×७॥ इञ्च । प्रति पूर्ण है ।

११४ नागकुमार पंचमीकथा ।

रचयिता श्री मल्लिषेणसूरि । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या १६, साइज १०॥×४॥ इञ्च ।

११५ नागश्री की कथा ।

रचयिता ब्रह्म श्री नेमिदत्त । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या १४, साइज ११×५ इञ्च । लिपि संवत १८७३, रात्रिभोजन त्याग का उदाहरण है ।

११६ नाममाला ।

रचयिता श्री धनंजय । भाषा संस्कृत । पृष्ठ संख्या २७, साइज ६×४ इञ्च । लिपि संवत् १८०४ विषय-शब्दकोष ।

प्रति नं० २, पत्र संख्या ३५, साइज ११॥×५ इञ्च । प्रति अपूर्ण है ।

११७ न्यायदीपिका।

रचयिता धर्मभूषणाचार्य। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ३१. साइज १०×४ इञ्च। लिपि संवत् १७१३. लिपिस्थान जयपुर।

प्रति नं० २. पत्र संख्या ६७. साइज ११॥×५ इञ्च। प्रति नवीन है। अक्षर बहुत मोटे २ लिखे हुये हैं।

११८ निशिभोजनकथा।

र० पं० भूरामल। भाषा हिन्दी। पत्र संख्या २८ साइज ६×४॥ इञ्च। लिपि संवत् १६४६ लिखावट सुन्दर है।

प्रति नं० २. पत्र संख्या १७. साइज १०॥×४॥ इञ्च।

११६ नीतिसार।

रचयिता श्री इन्द्रनन्दि। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ५. साइज १०॥×४॥ इञ्च। ग्रन्थ अभी तक अप्रकाशित है।

१२० नेमिनाथपुराण।

रचयिता ब्रह्म श्री नेमिदत्त। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या १७४ साइज १०×४॥ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३५–३८ अक्षर। ग्रन्थकर्त्ता तथा लिपिकर्त्ता दोनों ने ही प्रशस्ति लिखी है। लिपिकर्त्ता ने तीन पृष्ठ की प्रशस्ति लिखी है। लिपि संवत् १७०३ फागुण सुदी पंचमी।

प्रति नं० २ पत्र संख्या १५५. साइज ११×५ इञ्च। लिपि संवत् १८६८ लिपि कर्त्ता पं० उदयलाल।

१२१ नेमीश्वर गीत।

रचयिता श्री वल्हव। भाषा अपभ्रंश। पत्र संख्या १५. साइज १०×४॥ इञ्च। लिपि संवत् १६५०. रचना प्राचीन है। भाषा हिन्दी से बहुत कुछ मिलती जुलती है।

प

१२२ पद संग्रह।

इस संग्रह में निम्न रचनायें हैं—

(१) वीर भजनावलि। रचयिता श्री देवचन्द्र। भाषा हिन्दी। पत्र संख्या ६. साइज ६॥×४ इञ्च।

(२) अढाई रासा। रचयिता श्री विनयकीर्त्ति। भाषा हिन्दी। पत्र संख्या ४. साइज ६×४ इञ्च। लिपि कर्त्ता अतरलाल।

(३) राजुल पच्चीस। रचयिता विनोदीलाल। भाषा हिन्दी। पत्र संख्या ११. साइज ६×४ इञ्च। लिपि कर्त्ता यति गुमानीराम।

(४) तीन स्तुति। भाषा हिन्दी। पत्र संख्या ८.

(५) षट् रस व्रत कथा। भाषा हिन्दी। पत्र संख्या ४.

(६) नरक दुःख वर्णन। भाषा हिन्दी। पत्र संख्या ४. साइज ६×५ इञ्च।

(७) चौबीस बोल। भाषा हिन्दी। पत्र संख्या ४. लिपिकर्त्ता पं० बख्तराम।

(८) कपट पच्चीसी। रचयिता श्री रायचन्द्र। भाषा हिन्दी। पत्र संख्या १

(९) उपदेश पच्चीसी। भाषा हिन्दी। पत्र संख्या ३

(१०) सुभाषित दोहा। भाषा हिन्दी। पत्र संख्या ३. पद्य संख्या ७०.

(११) नौरत्न। भाषा हिन्दी। पत्र संख्या ३ साइज ६×४ इञ्च।

(१२) प्रतिमा बहत्तरी। भाषा हिन्दी। पत्र संख्या १३. रचयिता पं० शूलराम। रचना संवत १८०२

(१३) साधु वंदना। रचयिता महाकवि बनारसीदास। पत्र संख्या १०

(१४) शिक्षा पद। भाषा हिन्दी। पत्र संख्या १०. साइज ८×३।। इञ्च।

(१५) त्रयोदशमार्गी रासा। रचयिता श्री धर्मसागर। भाषा हिन्दी। पत्र संख्या १० लिपि कर्त्ता श्री गंगाबक्स। भाषा सुन्दर है।

१२३ पद्मनन्दि श्रावकाचार।

रचयिता श्री पद्मनन्दि। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ७१. साइज ११×४ इञ्च। लिपि संवत १५८६. प्रशस्ति है।

१२४ पद्मपुराण भाषा।

भाषाकार पं० दौलतरामजी। भाषा हिन्दी गद्य। पत्र संख्या ५३३. साइज १२×७ इञ्च। रचना संवत १८२३. लिपि संवत १९७२. प्रारम्भ के ३६८ पृष्ठ नही है।

१२५ पद्मपुराण।

रचयिता श्री रविषेणाचार्य। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ८५८. साइज १६×६ इञ्च। लिपि संवत १७४७. प्रशस्ति है। पत्र २०० से ४०० तक नहीं है।

प्रति नं० २. पत्र संख्या ५८६. साइज ११×५ इञ्च। लिपि संवत १६६८ माघ बुदी तेरस। प्रति सटीक है।

प्रति नं० ३. पत्र संख्या ८२६ साइज १०×५ इञ्च। रचयिता ब्रह्म श्री जिनदास। लिपि संवत् १६१२ प्रशस्ति है। उक्त पुराण दो वेष्टनों में बंधा हुआ है।

१२६ पद्मपुराण।

भाषाकार अज्ञात। भाषा हिन्दी गद्य। पत्र संख्या २०६ साइज ११॥×५॥ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर १४ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ५३-५६ अक्षर। प्रति अपूर्ण है। ८८ वे पर्व से आगे नहीं है।

प्रति नं० २. पत्र संख्या ५५७. साइज १०॥×७॥ इञ्च प्रति अपूर्ण है।

१२७ पद्मावती स्तोत्र।

रचयिता अज्ञात। भाषा संस्कृत। पृष्ठ संख्या ३. साइज १०×५ इञ्च। पद्य संख्या

प्रति नं० २. पत्र संख्या ४. साइज ६॥×५ इञ्च। प्रति पूर्ण है।

प्रति नं० ३. पत्र संख्या ७. साइज १०॥×४॥ इञ्च। उद्यापन की विधि भी दे रखी है।

१२८ परमात्मप्रकाश।

रचयिता आचार्य श्री योगीन्द्रदेव। भाषा प्राकृत। पृष्ठ संख्या ६७ साइज १०×४॥ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर ८ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३४-३८ अक्षर। लिपि संवत् १६२० कार्त्तिक सुदी १२ बृहस्पतिवार। आचार्य श्री हेमकीर्त्ति के सदुपदेश से सेठ भोवाणी के पढने के लिये ज्योतिषाचार्य श्री महेश ने ग्रन्थ की प्रतिलिपि बनायी। ग्रन्थ पूर्ण तथा सुन्दर है।

१२६ परमात्म प्रकाश।

भाषाकार—पं० दौलतरामजी। पत्र संख्या २८६. साइज १०॥×५ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर ६ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३१-३५ अक्षर। मूल ग्रन्थ की टीका श्री ब्रह्मदेव ने संस्कृत भाषा में बनायी तथा उसी टीका के आधार पर पं० दौलतरामजी ने हिन्दी भाषा में सरल अर्थ लिखा। लिपि संवत् १८८१ आषाढ सुदी ३ बृहस्पतिवार। दीवाण श्री जयचन्दजी छाबड़ा के सुपुत्र श्री ज्ञानचन्द्र तथा उनके सुपुत्र चोखचन्दजी पन्नालालजी ने उक्त ग्रन्थ की प्रतिलिपि बनवायी।

प्रति नं० २. साइज ११॥×८ इञ्च। पत्र संख्या १३३. लिपि संवत् १६१२. लिपि स्थान—जयपुर। श्री धनजी पाटणी साली वालों ने उक्त ग्रन्थ की प्रतिलिपि बनवायी।

१३० पंचकल्याण।

रचयिता भट्टारक श्री सुरेन्द्रकीर्त्ति। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या २६ साइज १०॥×४॥ इञ्च।

१३१ पंचपरमेष्ठि पूजा।

रचयिता श्री यशोनन्दि। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ५६. साइज ११।।x५।। इञ्च। लिपि संवत १८६८ प्रशस्ति है।

प्रति न० २ पत्र संख्या ३५. साइज १०।।x५ इञ्च। लिपि संवत १६२०

१३२ पंचम रोहिणी पूजा।

रचयिता श्री केशवसेन। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ६. साइज ११।।x५।। इञ्च। लिपि संवत् १८३६. लिपिकर्त्ता भट्टारक सुरेन्द्र कीर्त्ति।

१३३ पंचमास चतुर्दशी व्रतोद्यापन।

रचयिता भट्टारक श्री सुरेंद्रकीर्त्ति। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ५ साइज १०।।x५ इञ्च।

१३४ पंचमुखीहनुमानकवच।

भाषा संस्कृत। पत्र संख्या २ साइज १५x७।। इञ्च। विषय—मन्त्र शास्त्र। प्रति पूर्ण है।

१३५ पंचस्तवनावचरि।

लिपिकर्त्ता श्री जेठमल। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ३५ साइज १०x६ इञ्च। लिपि संवत १६०६. भक्तामर, कल्याणमन्दिर, एकीभाव, विषापहार भूपालचतु विंशति स्तवनों का संग्रह है।

१३६ पंचास्तिकाय।

भाषा प्राकृत। पृष्ठ संख्या ७६ साइज १२x५ इञ्च। प्रति जीर्ण हो चुकी है। प्रति सटीक है।

प्रति न० २ पृष्ठ संख्या ४१ साइज ११x४।। इञ्च। लिपिकर्त्ता श्री चन्द्रसूरि।

१३७ पंचसंग्रह।

रचयिता अमितगत्याचार्य। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ६६. साइज ११x४।। इञ्च। लिपि संवत १५०७ लिपिस्थान गोपाचलदुर्ग। लिपिकर्ता ने महाराजाधिराज श्री डूंगरसिंह का उल्लेख किया है। प्रति पूर्ण है।

१३८ प्रबोधसार।

भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ३९. साइज ६x३।। इञ्च। विषय–श्रावकाचार। प्रति पूर्ण है।

१३८ प्रतापकाव्य ।

रचयिता भट्टारक श्री शकदेव । भाषा संस्कृत । पृष्ठ सख्या ११६. साइज १०×५ इञ्च । लिखावट सुन्दर है । जिल्द बधी हुई है ।

१३० प्रतिष्ठा पाठ सामग्री विधि ।

भाषा सस्कृत । पत्र सख्या १६३ मडलाचार्य श्री चन्द्रकीर्ति के उपदेश से प्रतिलिपि की गयी । प्रति मे अनेक चित्र भी है तथा यन्त्रों के आकार भी दे रखे हैं ।

१४० प्रतिष्ठासार ।

रचयिता आचार्य वसुनन्दि । भाषा सस्कृत । पत्र सख्या २७. साइज १०॥×४ इञ्च । लिपि संवत १५१७ जेठ बुदी ६ सोमवार । प्रति की दशा अच्छी है ।

१४१ प्रद्युम्न चरित्र ।

रचयिता श्री महासेनाचार्य । भाषा सस्कृत । पत्र सख्या १०४ साइज १०×४॥ इञ्च । लिपि संवत १५५८ लिपिकर्त्ता मुनि रत्नकीर्त्ति । प्रशस्ति है । दश सर्ग है ।

१४२ प्रद्युम्नचरित्र ।

रचयिता श्री महासेनाचार्य । भाषा सस्कृत । पत्र सख्या १०४. साइज ११×४॥ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर १० पक्तिया तथा प्रति पक्ति मे ३३-३६ अक्षर । सर्ग सख्या १४. लिपि सवत १५१८ लिपिस्थान टोडा । ग्रन्थ पूर्ण है लेकिन जीर्णावस्था मे है ।

१४३ प्रद्युम्नचरित्र ।

रचयिता आचार्य श्री सोमकीर्त्ति । भाषा सस्कृत । पत्र संख्या २१५ साइज १०॥×५ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पक्तिया तथा प्रति पक्ति मे ३५-३८ अक्षर । लिपि संवत १६११. ग्रन्थकार तथा लिपिकार दोनों के द्वारा ही लिखी हुई प्रशस्तिया है । ग्रन्थ की हालत विशेष अच्छी नहीं है ।

१४४ प्रमेयरत्नमाला ।

रचयिता श्री माणिक्य नन्दि । भाषा सस्कृत । पत्र संख्या २६. साइज १२॥×५ इञ्च । लिपि सवत १५७१. प्रशस्ति है ।

प्रति न० २. पत्र सख्या २१. साइज ११॥×५॥ इञ्च । प्रति अपूर्ण है ।

४५ प्रश्नोत्तर श्रावकाचार ।

रचयिता श्री बुलाकीदास । भाषा हिन्दी पद्य । पत्र संख्या १८६. साइज १०।।×५ इञ्च । प्रति अपूर्ण है ।

१४६ प्रश्नोत्तर श्रावकाचार ।

रचयिता भट्टारक श्री सकलकीर्त्ति । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या १२२. साइज ११×५ इञ्च । लिपि संवत १६७२. प्रति पूर्ण है । लिपिकर्त्ता द्वारा लिखी हुई प्रशस्ति है ।

१४७ प्रायश्चित ग्रंथ ।

रचयिता श्री इंद्रनन्दि । भाषा प्राकृत । पृष्ठ संख्या १३. साइज ११।।×४।। इञ्च । लिपि संवत १८४६. लिपिस्थान जयपुर ।

१४८ प्रायाश्चित विनिश्चय वृति ।

वृत्तिकार श्री नन्दिगुरु । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ६६. साइज १२×५ इञ्च । लिपि संवत १८२६ ग्रन्थ श्वेताम्बर सम्प्रदाय का है । लिपिस्थान जयपुर ।

१४९ प्रायश्चित शास्त्र ।

रचयिता अज्ञात । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ७. साइज १०×४।। इञ्च । पद्य संख्या ६.

१५० प्रायश्चितविधान ।

भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ७. साइज ६×४ इञ्च । लिपि संवत १६५५ भट्टारक श्री महेंद्रकीर्त्ति जी ने अपने पढ़ने के लिये उक्त विधान की प्रतिलिपि की थी । पद्य संख्या ८८.

१५१ पाण्डव पुराण ।

रचयिता पंडित भूधरदासजी । भाषा हिन्दी पद्य । पत्र संख्या ११३. साइज १०×७।। इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पंक्तिया तथा प्रति पंक्ति में २६-३२ अक्षर । रचना संवत १७८६ लिपि संवत् १६१८. प्रति पूर्ण है तथा शुद्ध है । लिपिकर्त्ता श्री छीतरमल । प्रशस्ति है ।

१५२ पाण्डव पुराण ।

रचयिता श्री पं० बुलाकीदास । भाषा हिन्दी पद्य । पत्र संख्या ३२४. साइज ११×५।। इञ्च । लिपि संवत् १६०४. प्रति नवीन तथा सुन्दर है ।

१५३ पार्श्वनाथ चरित्र ।

रचयिता भट्टारक श्री सकलकीर्त्ति । भाषा संस्कृत । पृष्ठ संख्या १०६ साइज १२×५॥ इञ्च । लिपि संवत १८०३. लिपि स्थान जयपुर । महाराजा श्री ईश्वरीसिंहजी के शासनकाल में श्री धनराज जी ने उक्त ग्रन्थ की प्रतिलिपि करवायी ।

१५४ पार्श्वनाथ पुराण ।

रचयिता पं० भूधरदास । भाषा हिन्दी पद्य । पत्र संख्या ६६. साइज १२×५॥ इञ्च । रचना संवत् १७८६. लिपि संवत १८८८ लिपि स्थान उणियारा । श्री [illegible]चन्दजी उक्त ग्रन्थ की प्रतिलिपि करवायी ।

१५५ पार्श्वनाथरासो ।

रचयिता ब्रह्मवस्तुपाल । भाषा हिन्दी । पत्र संख्या ३६ साइज १०×५॥ इञ्च । रचना संवत १६५६. प्रशस्ति है । प्रति नवीन है ।

१५६ पिंडस्थान ध्यान निरूपण भाषा ।

मूलकर्त्ता आचार्य शुभचन्द्र । भाषाकार अज्ञात । पत्र संख्या ११ साइज ६॥×३॥ इञ्च । उक्त प्रकरण ज्ञानार्णव में से लिया गया है ।

प्रति नं० २. पत्र संख्या ३१. साइज ११×५ इञ्च । ध्यान का वर्णन संस्कृत में है । प्रति अपूर्ण है ।

१५७ पुण्याश्रव कथाकोष ।

रचयिता श्री रामचन्द्र मुमुक्षु । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ४७ साइज ११॥×५ इञ्च । प्रशस्ति है । प्रति पूर्ण तथा नवीन है ।

१५८ पुण्याश्रवकथाकोष ।

भाषा हिन्दी । पृष्ठ संख्या ७७. साइज ११×६८ इञ्च । लिपि संवत १८५६ लिपि स्थान जयपुर ।

१५९ पुण्याश्रव कथाकोश ।

रचयिता अज्ञात । भाषा हिन्दी । पत्र संख्या २८६. साइज ११॥×५॥ इञ्च । लिपि संवत् १८८८. लिपिकर्त्ता श्री चेनराम ।

१६० पुरुषपरीक्षा ।

रचयिता श्री विद्यापति । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ७८. साइज ११×४ इञ्च । कथा साहित्य की

तरह विषय का वर्णन किया गया है। लिपि संवत १८६०. चार परिच्छेद हैं। ग्रन्थ पूर्ण है। चाणक्य और राक्षस के सन्देशों का आदान प्रदान किया गया है। गद्य भाषा मे होने से ग्रन्थ का विशेष महत्त्व है।

१६१ पुरुषार्थानुशासन।

रचयिता श्री गोबिन्द। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ७३. साइज ११×५ इञ्च। प्रारम्भ के तीन पृष्ठ नहीं है। प्रशस्ति तीन पृष्ठ की है।

अन्तिम भाग इस प्रकार है—

इति गोबिन्द रचिते पुरुषार्थानुशासने कायस्थ माथुर वंशावतंस लक्ष्मण नामांकिते मोक्षार्थस्यान नाम षष्टमोवसरः।

१६२ पुष्पांजलि व्रतोद्यापन।

रचयिता धर्मचन्द्र के शिष्य श्री गंगादास। पत्र संख्या ८. साइज ११॥×६ इञ्च लिपि संवत १६६५.

१६३ पूजा संग्रह।

भाषा हिन्दी। पत्र संख्या २१. साइज ६×६॥ इञ्च। आदिनाथ, अजितनाथ तथा संभवनाथजी की पूजा है।

प्रति नं० २ पत्र संख्या ५० साइज ६×६॥ इञ्च। प्रति प्राचीन है। प्रति म निम्न पूजायें है।

१ चतुर्विंशतिपाठ

२ चन्द्रप्रभपूजा

३ मल्लिनाथ पूजा

प्रति नं० ३ पत्र संख्या ४४. साइज १२×८ इञ्च। चतुर्विंशति जिनपूजा रामचन्द्र कृत है। प्रति जीर्ण हो चुकी है।

प्रति नं० ४. पत्र संख्या ४१. साइज ११॥×६ इञ्च। आदिनाथ से नेमिनाथ तक की पूजायें है।

प्रति नं० ५. पत्र संख्या ४२ साइज ११×६ इञ्च। भाषा संस्कृत। आदिनाथ से पार्श्वनाथ तक पूजायें है।

प्रति नं० ६. पत्र संख्या ४६. साइज १३॥×८॥ इञ्च। भाषा हिन्दी। आदिनाथ से अरहनाथ तक की पूजायें है।

१६४ पूजा संग्रह

इस संग्रह मे निम्न लिखित पूजायें हैं—

पूजा नाम	भाषा	पत्र संख्या	लिपि सवत्
ती र्थोदक विधान	संस्कृत	५	१८८२
अक्षयनिधि पूजा	"	४	"
सूत्र पूजा	"	२	×
अष्टाह्निका पूजा	"	१६	१६२४
द्वादशाग पूजा	हिन्दी	१३	×
रत्नत्रय पूजा	सस्कृत	६	×
सिद्धचक्र पूजा	"	८	×
[illegible] थंकर पूजा	"	३	×
देवपूजा	हिन्दी	१०	×
[illegible] ह मंत्रपूजा	सस्कृत	६	×
सि द्ध पूजा	"	५	×

१६५ पूजापाठ सग्रह ।

संग्रहकर्त्ता अज्ञात। भाषा हिन्दी। पत्र सम्या ४७. साइज १०॥×५ इञ्च। प्रति अपूर्ण है। अन्तिम पत्रों के अतिरिक्त २,४४,४५,४६ के पृष्ठ भी नहीं हैं।

१६६ पूजा सामग्री संग्रह।

लिपिकर्त्ता अज्ञात। पत्र संख्या ४. इस संग्रह में विविध पूजा प्रतिष्ठाओं के अवसर पर सामग्री की सूची तथा प्रमाण दिया है।

प्रति नं० २. पत्र संख्या २१. साइज १०॥×४ इञ्च।

ब

१६७ ब्रह्मविलास।

रचयिता भैया भगवतीदास। भाषा हिन्दी (पद्य)। पत्र संख्या १६५. साइज १२×४ इञ्च। लिपि संवत् १६५६. प्रति पूर्ण है। लिखावट सुन्दर नहीं है।

१६८ बीस तीर्थंकर पूजा।

रचयिता श्री छीतरदास। भाषा हिन्दी। पृष्ठ संख्या ६६. साइज १२॥×८ इञ्च। लिपि संवत १६७६. प्रति नवीन है लिखावट सुन्दर है। पूजायें अलग २ हैं। अन्त में ग्रन्थकर्त्ता ने प्रशस्ति भी लिखी है।

१६६ बुधजनसतसई।

रचयिता पं० बुधजन। भाषा हिन्दी पृष्ठ संख्या ७५. साइज १०॥×७॥ इञ्च।

भ

१७० भगवती आराधना।

रचयिता श्री शिवार्य। भाषा प्राकृत। पत्र संख्या ७४३ साइज १०×४॥ इञ्च। प्रति नवीन है।

१७१ भजनावलि।

संग्रहकर्त्ता श्री दुर्गालाल। भाषा हिन्दी। पत्र संख्या ६०. साइज १२×५॥ इञ्च। अनेक भजनों का संग्रह है।

१७२ भट्टारक पट्टावली।

पृष्ठ संख्या ६. भाषा हिन्दी। भट्टारकों की नामावली दी हुई है। उनके भट्टारक होने का समय स्थान आदि का भी उल्लेख है।

प्रति नं० २. पत्र संख्या ११. साइज १०×६ इञ्च।

प्रति नं० ३. पत्र संख्या ३. साइज ११×४॥ इञ्च।

प्रति नं० ४. पत्र संख्या ३ साइज ११×५ इञ्च।

प्रति नं० ५. पत्र संख्या ११. साइज १०॥×५ इञ्च। भट्टारकों का विस्तृत परिचय दिया हुआ है।

१७३ भक्तामर स्तोत्र वृत्ति।

वृत्तिकार ब्रह्मरायमल्ल। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ३८. साइज १०॥×५ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ १० पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३६-४० अक्षर। प्रति पूर्ण है।

१७४ भक्तामरस्तोत्र।

प्रति सटीक है। मन्त्रों सहित है। मन्त्रों के चित्र तथा विधि आदि सभी लिखी हुई है। पत्र संख्या ७५. साइज १०॥×७ इञ्च। तीसरे पद्य से ४१ वें पद्य तक है।

प्रा। न० २. पत्र संख्या ७५. साइज ६x५ इञ्च। प्रति पूर्ण है।

१७५ भक्तामरस्तोत्र मंत्र विधि।

भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ७७ साइज ६x३॥ इञ्च। मंत्र बोलने वाले आदि सभी के लिये विधि दे रखी है।

१७६ भक्तामर भाषा।

भाषाकर्त्ता श्री नथमल। भाषा हिन्दी पद्य। पत्र संख्या ६०. साइज ६x६ इञ्च। रचना १८७६. लिपि संवत १८७६ प० रतनचन्दजी के शिष्यलाल ने प्रतिलिपि बनायी।

१७७ भर्तृहरिशतक।

भाषाकार महाराज श्री सवाई प्रतापसिंह जी। भाषा हिन्दी पद्य। पत्र संख्या ४७ साइज ४x३॥ इञ्च। प्रथम पत्र नहीं है। लिपि सपि संवत १६१७

१७८ भाव संग्रह।

रचयिता श्री वामदेव। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ३६. साइज १०॥x५ इञ्च। लिपि संवत् १६१७. प्रशस्ति है।

१७९ भावसार संग्रह।

रचयिता श्री चामुण्डराय। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ६६. साइज १०॥x४॥ इञ्च। लिपि संवत् १७७२. लिपिकर्त्ता भट्टारक श्री देवेन्द्रकीर्ति। लिपिस्थान आमेर (जयपुर)

१८० भैरव पद्मावती कल्प।

रचयिता श्री मल्लिषेण। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ४६ साइज १५x७ इञ्च। प्रति सटीक है। प्रशस्ति है। विषय-मन्त्र शास्त्र। प्रथम चार पत्र नहीं हैं।

म

१८१ मदन पराजय।

रचयिता श्री जिनदेव। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ६७ साइज १०x३॥ इञ्च। प्रति पूर्ण है।

१८२ महापुराण।

रचयिता पुष्पदंत। भाषा अपभ्रंश। पत्र संख्या ५६३. साइज १२x५ इञ्च। लिपि संवत १६०६.

लिपिकर्त्ता ने अन्त में विस्तृत प्रशस्ति दे रखी है। ग्रन्थ पूर्ण है। आचार्य श्री जयकीर्त्ति ने उक्त ग्रन्थ की प्रतिलिपि बनवायी।

१८३ महापुराण भाषा।

भाषाकर्त्ता अज्ञात। भाषा हिन्दी (गद्य)। पत्र संख्या ४२५. साइज १२॥×५॥ इञ्च। लिपि संवत् १८०३. कोटा निवासी श्री गूजरमल निगोत्या ने उक्त पुराण की प्रतिलिपि करवायी।

१८४ महीपाल चरित्र।

रचयिता महाकवि श्री चारित्र भूषण मुनि। भाषा संस्कृत। पत्र सख्या ३१ साइज १०×४ इञ्च। सम्पूर्ण पद्य सख्या ६६५. प्रति शुद्ध तथा सुन्दर है। प्रशस्ति है।

प्रति नं० २. पत्र संख्या ३८. साइज ११×५॥ इञ्च।

१८५ महीपालचरित भाषा।

भाषाकार श्री नथमल। भाषा हिन्दी गद्य। पत्र सख्या ३८. साइज १३×७॥ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर १५ पक्तियां तथा प्रत्येक पृष्ठ पर ४२-४४ अक्षर। ग्रन्थ पूर्ण है। भाषाकार द्वारा लिखित प्रशस्ति है। रचना संवत १६१८. लिपि संवत १६८२. लिखावट सुन्दर है।

१८६ महीपाल चरित्र भाषा।

भाषाकर्त्ता अज्ञात। भाषा हिन्दी गद्य। पत्र संख्या ५३. साइज १२×८ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर ६३ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३५-३८ अक्षर। महाकवि चारित्र भूषण द्वारा रचित सस्कृत काव्य का हिन्दी अनुवाद है। हिन्दी प्राचीन होने पर भी अच्छी है। प्रति बिलकुल नवीन है।

१८७ मिथ्यात्व निषेधन।

रचयिता महाकवि बनारसीदास। भाषा हिन्दी गद्य। पृष्ठ संख्या २८. साइज ११×६ इञ्च। मिथ्यात्व का अनेक उदाहरणों द्वारा खंडन किया गया है। प्रारम्भ के ८ पृष्ठों का एक तरफ का भाग फटा हुआ है।

१८८ मूलाचार।

रचयिता श्री वट्टि केलाचार्य। भाषा प्राकृत। पत्र संख्या १५२. साइज ११×५॥ इञ्च। प्रति पूर्ण है। लिखावट अच्छी है।

१८९ मूलाचार भाषा ।

भाषाकर्त्ता श्री नन्दलाल और ऋषभदास । भाषा हिन्दी गद्य । पत्र संख्या ७४२. साइज १०॥×४॥ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर ९ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३१-३४ अक्षर । रचना संवत् १८८८. लिपि संवत् १९२५. भाषाकर्त्ता ने अपना विस्तृत परिचय दिया है । जयपुर के दीवान श्री अमरचन्द का भी उल्लेख किया है ।

१९० मूलाचार प्रदीपक ।

रचयिता आचार्य श्री सकलकीर्त्ति । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या १३७ साइज १२×४॥ लिपि संवत् १८८३. लिपिकर्त्ता ने रामपुरा के महाराजा श्री किशोरसिंह का नामोल्लेख किया है । लिपिकर्त्ता श्री [illegible]चंद । प्रति सुन्दर है ।

य

१९१ यशोधर चरित्र ।

रचयिता महाकवि पुष्पदंत । भाषा अपभ्रंश । पत्र संख्या १०८. साइज ११॥×५ इञ्च । अपभ्रंश से संस्कृत में भी उल्था दे रखा है ।

१९२ यशोधर चरित्र ।

रचयिता श्री वासवसेन । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ५६. साइज १०×४॥ इञ्च । प्रति प्राचीन है ।

१९३ यशोधर प्रदीप ।

भाषा संस्कृत । पत्र संख्या १५. साइज १०×४॥ इञ्च । प्राकृत से संस्कृत में टीका है । लिपिकर्त्ता पं० गेगा ।

१९४ यशस्तिलक चम्पू ।

रचयिता महाकवि श्री सोमदेव । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ३१५. साइज ११×५ इञ्च । प्रति प्राचीन है ।

प्रति नं० २. पत्र संख्या ४६. साइज १२×५ इञ्च । प्रति अपूर्ण है ।

१९५ यशोधरचरित्र भाषा ।

भाषाकर्त्ता पंडित लक्ष्मीदास । भाषा हिन्दी (पद्य) । पत्र संख्या ६६. साइज १०॥×६ इञ्च । रचना संवत् १७८१. भाषाकर्त्ता ने अपना परिचय अन्त में लिखा है ।

१९६ योगचिंतामणि ।

रचयिता भट्टारक श्रीअमरकीर्त्ति । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या १२८ लिपि सवत १७६७. लिपि स्थान टोंक ।

१९७ युगादिदेवस्तवन पूजा विधान ।

रचयिता आचार्य पद्मकीर्त्ति । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या १०. साइज ११×५ इञ्च । लिपि सवत १८००. लिपिस्थान जिहानाबाद ।

१९८ रत्नकरण्ड श्रावकाचार ।

रचयिता पं० श्री श्रीचन्द । भाषा अपभ्रंश । पत्र संख्या १११ साइज ११×५ इञ्च । लिपि सवत १५१६

१९९ रत्नकरण्ड श्रावकाचार ।

रचयिता स्वामी समन्तभद्र । भाषा संस्कृत । पत्र सख्या २० साइज १०×५ इञ्च । प्रति सटीक है । टीकाकार का नाम प्रभाचन्द्र है ।

प्रति नं० २ पत्र सख्या १३ साइज १०॥×४॥ इञ्च । लिपि संवत १६३०

२०० रत्नकरण्डश्रावकाचार सार्थ ।

मूलकर्त्ता समन्तभद्राचार्य । भाषाकार अज्ञात । पत्र सख्या ५६ साइज ८×८ लिपि सवत १६६५

२०१ रसमञ्जरी ।

रचयिता श्री भानुदत्तमिश्र । भाषा सस्कृत । पत्र संख्या ४१. साइज ११×५ इञ्च । प्रति पूर्ण है ।

२०२ रात्रि भोजन परित्याग कथा ।

रचयिता ब्रह्म श्री नेमिदत्त । भाषा सस्कृत । पत्र सख्या ६५. साइज ८॥×६ इञ्च ।

२०३ रामसनेही उत्पत्ति वर्णन ।

पृष्ठ संख्या ७. भाषा हिन्दी । साइज ६×५ इञ्च । रामसनेही साधुओं की उत्पत्ति का वर्णन है ।

२०४ रोट तीज कथा ।

पत्र संख्या ५, भाषा हिन्दी गद्य । लिपिकर्त्ता मुन्शीलाल जैन । लिखावट सुन्दर है ।

२०५ रोहिणीव्रतकथा।

रचयिता श्री गणि देवेन्द्रकीर्ति। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ५ साइज १०||x५ इञ्च।

ल

२०६ लग्नचन्द्रिका।

रचयिता पं० काशीनाथ। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या २५ साइज १२x५|| इञ्च। लिपि संवत १८४२ लिपिकर्ता श्री रामचन्द्र।

२०७ लघुशान्तिविधान।

रचयिता पं० आशाधर। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ११ साइज १०||x५ इञ्च। लिपि संवत् १८३६ लिपिकर्त्ता ने प्रशस्ति में महाराजा सवाई जयसिंह का उल्लेख किया है। लिपिकर्त्ता श्री नेणसुख।

२०८ लब्धिसार।

रचयिता नेमिचन्द्राचार्य। पत्र संख्या १४१ भाषा प्राकृत-संस्कृत। साइज १०x५|| इञ्च। जय-धवला नामक महाग्रन्थ में से लब्धिसार के विषय को लिया गया है। गाथाओं का अर्थ संस्कृत में अच्छी तरह दे रखा है। प्रति नवीन है। लिपि संवत १८७३

२०९ लोकनिराकरण रास।

रचयिता श्री रत्नभूषण। भाषा हिन्दी। पत्र संख्या ३१ साइज ११||x५ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर ६ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३२-३६ अक्षर। रचना संवत १६२७ लिपिसंवत १७१०. अन्त में ग्रन्थकर्ता ने अपना परिचय दिया है। ग्रन्थ प्राचीन है, ग्रन्थ की हालत विशेष अच्छी नहीं है।

व

२१० वज्रकुमार महामुनिकथा।

रचयिता ब्रह्म श्री नेमिदत्त। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या १६. साइज ८||x६ इञ्च।

२११ वरांगचरित्र।

रचयिता भट्टारक श्री वर्द्धमानदेव। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ६८. साइज १०x५ इञ्च। श्लोक संख्या १३८२ सर्ग संख्या १३ चरित्र पूर्ण है तथा सुन्दर लिखा हुआ है।

२१२ वसुनन्दीश्रावकाचार ।

भाषाकार भट्टारक श्री देवेन्द्रकीर्त्ति । भाषा हिन्दी गद्य । पत्र संख्या ४२१. साइज ११×५।। इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति मे ३२-३५ अक्षर । प्रति अपूर्ण है । ४२१ से आगे के पृष्ठ नहीं हैं । भाषाकर्त्ता ने दौलतरामजी की बचनिका का उल्लेख किया है । भाषा स्पष्ट तथा सुन्दर है ।

प्रति नं० २. पृष्ठ संख्या ३७४. साइज १२×५।। इञ्च । प्रति अपूर्ण है ३७४ से आगे के पृष्ठ नहीं हैं ।

प्रति नं० ३. संख्या ३३६ से ३४४. साइज १२×५।। इञ्च । ग्रन्थ का अन्तिम भाग है ।

२१३ व्रत कथा संग्रह ।

संग्रह कर्त्ता अज्ञात । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या १५ साइज १०।।×५ इञ्च । संग्रह मे निम्न कथायें हैं—

षोडश कारण व्रत कथा
मेघमाला व्रत ,,
चंदन षष्ठी व्रत ,,
लब्धि विधान ,,
पुरंदर विधान ,,

२१४ व्रतसार संग्रह ।

संग्रह कर्त्ता अज्ञात । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या २६ साइज १०×५ इञ्च । संग्रह मे समन्तभद्र, प्रभाचन्द्र, यशः कीर्त्ति आदि आचार्यों की कृतियो का संग्रह है ।

२१५ व्रत कथा कोश भाषा ।

मूल कर्त्ता आचार्य श्रुतसागर । भाषाकार श्री ···· ··· दास । भाषा हिन्दी पद्य । पत्र संख्या १३७ रचना संवत १७८७. प्रशस्ति दी हुई है । २४ कथायें हैं ।

२१६ वर्तमान चौबीसी का पाठ ।

रचयिता कविवर देवीदास । भाषा हिन्दी पत्र संख्या १०३. साइज १०×६ इञ्च । विषय-पूजा पाठ । अन्तिम पत्र पर कागज चिपके हुये होने के कारण लिपि काल वगैरह पढने में नहीं आ सकते हैं ।

प्रति नं० २. पत्र संख्या ६०. साइज १०×५।। इञ्च । रचना संवत् १८२१. पाठ कर्त्ता ने अन्त में अपना परिचय भी दे रखा है ।

२१७ वर्द्धमानपुराण भाषा ।

मूलकर्त्ता आचार्य सकलकीर्त्ति । भाषाकार अज्ञात । भाषा हिन्दी गद्य पद्य । पत्र संख्या १२३ साइज ११॥×८॥ प्रत्येक पृष्ठ पर १४ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३६-४३ अक्षर । प्रति अपूर्ण है । प्रति ज्यादा प्राचीन नहीं है ।

प्रति नं० २ पत्र संख्या १३६ साइज १०॥×४ इञ्च । लिपि संवत् १६४६ ।

२१८ वर्द्धमानमहाकाव्य ।

रचयिता महाकवि श्री असग । भाषा संस्कृत, पत्र संख्या १२० साइज १०॥×४। इञ्च लिपि संवत् १७३६ पंडिताचार्य श्री तुलसीदास के पढने के लिये आचार्य वर्य श्री उदय भूषण ने यह काव्य की प्रति लिपि बनायी । प्रति जीर्ण हो गयी है ।

२१९ [illegible]द्यापन श्रावकाचार ।

रचयिता पंडित प्रवरसेन । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ३१ साइज १०॥×४ इञ्च । लिपि संवत् १५४१. प्रशस्ति अपूर्ण है ।

२२० व्रतोद्यापनश्रावकविधान ।

रचयिता प० अभ्रदेव । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या २२ साइज ११॥×४॥ इञ्च । रचना संवत् १८३६ । ग्रन्थ कर्त्ता ने अन्त में अपना परिचय भी दिया है ।

२२१ वाग्भट्टालंकार ।

भाषा संस्कृत । पत्र संख्या २४. साइज १०॥×४॥ इञ्च । लिपि संवत् १७२४. लिपिकर्त्ता मुनि श्री रविभूषण । प्रति पूर्ण तथा नवीन है ।

२२२ वास्तुपूजा ।

भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ६ साइज १०॥×४ इञ्च । लिपि संवत् १७६८, लिपिकर्त्ता श्री [illegible]राज । उक्त पूजा प्रतिष्ठापाठ में से ली गयी है ।

२२३ विजयपताकायंत्र ।

भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ६ साइज १४×५ इञ्च । विषय मंत्र शास्त्र । मंत्र का चित्र भी दे रखा है ।

२२४ विदग्धमुखमंडन सटीक ।

पृष्ठ सख्या ६०. साइज ६॥×३॥ इञ्च । प्रति पूर्ण है । लिपि संवत् १७०३. अक्षर मिटने लग गये हैं तथा पढने मे नहीं आते है ।

२२५ विद्यानुवाद ।

रचयिता अज्ञात । भाषा सस्कृत । पत्र सख्या ७३. साइज १५॥×७ इञ्च । प्रति अपूर्ण है । ७३ से आगे के पृष्ठ नहीं हैं । विषय—मन्त्र शास्त्र ।

२२६ विद्यानुवाद पूजा समुच्चय ।

रचयिता अज्ञात । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या १०४ साइज १०×४ इञ्च । लिपि संवत १४८७ लिपि कर्ता श्री टीला । प्रशस्ति दी हुई है । ग्रन्थ महात्मा प्रभाचन्द्र को भेट किया गया था । विषय—मन्त्र शास्त्र ।

२२७ विमानशुद्धिपूजा ।

रचयिता यति श्री चन्द्रकीर्त्ति । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ११. साइज ८॥×७ इञ्च । लिपि संवत् १८६० ।

प्रति नं० २. पत्र सख्या १०. साइज १०॥×५ इञ्च । लिपि संवत १८८२ लिखावट अच्छी है ।

२२८ विवाहपटल ।

लिपिकर्त्ता प० रेखा । पत्र संख्या २६ भाषा संस्कृत । साइज १०×५॥ इञ्च । लिपि संवत १७०६. लिपिस्थान चाटसू ।

२२९ विवेक विलास ।

रचयिता श्री जिनदत्त सूरि । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या १०३. साइज १०॥×४ इञ्च । लिपि संवत् १५८२ प्रति जीर्ण शीर्ण अवस्था मे है ।

२३० वैद्य जीवन ।

रचयिता श्री लोलम्भिराज । भाषा संस्कृत । पृष्ठ संख्या २१. साइज ११×५ इञ्च । प्रति पूर्ण है । अध्याय पाच है ।

प्रति नं० २. पृष्ठ सख्या ३२. साइज १०×७ इञ्च । प्रति पूर्ण है ।

२३१ वैद्यमनोत्सवभाषा ।

भाषाकर्त्ता श्री चैनसुख । भाषा हिन्दी गद्य । पृष्ठ संख्या २८ साइज ११×५ इञ्च । लिपि संवत १८२६. प्रति पूर्ण है ।

२३२ वैराग्य मणि माला ।

रचयिता ब्रह्म श्री चन्द्र । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ६ साइज १०॥×४ इञ्च । पद्य संख्या ७१

२३३ बृहद् गुर्वावलीपूजा ।

रचयिता श्री स्वरूपचंद । भाषा हिन्दी । पत्र संख्या ३५. साइज १०॥×५ इञ्च । प्रति पूर्ण तथा सुन्दर है ।

२३४ बृहद् शान्तिविधान ।

भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ४६ साइज १०॥×४॥ इञ्च । लिपि संवत १८८१ लिपिकर्त्ता ने प्रशस्ति भी लिखा है ।

श

२३५ शब्दभेदप्रकाश ।

भाषा संस्कृत । पत्र संख्या २० साइज ११×५॥ इञ्च । लिपिकर्त्ता प० रत्नसुख । प्रति नवीन तथा पूर्ण है ।

२३६ शलाका निरोहणनिष्कामनविधि ।

भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ७ साइज ११×४ इञ्च । प्रति जीर्ण शीर्ण हो चुकी है ।

२३७ शांतिनाथपुराण ।

रचयिता मुनि श्री असग । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ६१. साइज १२×५॥ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर १२ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३५-४२ अक्षर । प्रति प्राचीन किन्तु सुन्दर है । श्लोक संख्या २७३१.

२३८ शांतिनाथपुराण ।

रचयिता आचार्य श्री सकलकीर्ति । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या १७५. साइज १२×५ इञ्च । लिपि संवत् १८५२ लिपिकर्त्ता प० विद्याधर ।

२३९ शान्तिपूजा विधान।

भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ६. साइज १०॥×४॥ इञ्च। अनेक देवी देवताओं को पूजा मे निमन्त्रित किया गया है तथा उनको शान्ति के लिये प्रार्थना को गयी है। प्रति पूर्ण है। लिखावट अच्छी है।

२४० शील कथा।

रचयिता पं० भारमल। भाषा हिन्दी पद्य। पत्र संख्या ५६ साइज १०॥×५ इञ्च। प्रति पूर्ण है।

२४१ शीलकथा।

भाषा हिन्दी पद्य। पत्र संख्या २१. साइज १२॥×७ इञ्च। लिपि संवत १९८५ प्रति नवीन है। लिखावट सुन्दर है।

२४२ श्रावकाचार।

रचयिता अज्ञात। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या १४ साइज १०×५॥ इञ्च। श्रावकाचार के विषय मे संक्षेप रूप में वर्णन किया गया है।

२४३ श्रावकाचार।

रचयिता आचार्य अमितिगति। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ४० साइज १२×५॥ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर १५ पंक्तिया तथा प्रति पंक्ति मे ४५-५८ अक्षर। लिपि संवत १६६१ ग्रन्थ पूर्ण है।

२४४ श्रीपाल कथा।

रचयिता अज्ञात। भाषा हिन्दी गद्य। पत्र संख्या ४५ साइज ११×५॥ इञ्च। लिपि संवत १९२८. लिपि स्थान जयपुर।

२४५ श्रीपाल चरित्र।

रचयिता श्री नरसेन। भाषा अपभ्रंश। पत्र संख्या ४१ साइज १०॥×४॥ इञ्च। लिपि संवत १५९३. लिपि स्थान गोपाचल गढ।

२४६ श्रीपाल चरित्र।

रचयिता श्री कविवर परिमलल्ल। भाषा हिन्दी पद्य। पत्र संख्या ७८ साइज १२॥×८॥ इञ्च। सम्पूर्ण पद्य संख्या ३००० ग्रन्थ कर्ता ने अन्त मे अपना परिचय लिखा है। प्रशस्ति मे अकबर के शासन काल का भी उल्लेख किया है। प्रति नवीन है।

प्रति नं० २ पत्र संख्या ८२. साइज १२॥×८॥
प्रति नं० ३, पत्र संख्या ८६. प्रति नवीन है।

२४७ श्रीपाल चरित्र।

रचयिता भट्टारक श्री सकलकीर्त्ति। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ३१ साइज १०×४॥ इञ्च। सम्पूर्ण पद्य संख्या १८०४. लिपि संवत १६४६ श्री पद्मकीर्त्ति के शिष्य केशव ने ग्रंथ की प्रतिलिपि बनवायी। प्रति पूर्ण है लेकिन जीर्णावस्था में है।

२४८ श्रीपाल चरित्र भाषा।

भाषाकार श्री विनोदीलाल। भाषा हिन्दी (पद्य) पत्र संख्या ८१ साइज ११॥×४॥ इञ्च। सम्पूर्ण पद्य संख्या १३५४. रचना संवत १७५०. लिपि संवत १८१६ प्रति पूर्ण है लेकिन अन्तिम पृष्ठ फटा हुआ है। ग्रन्थ के अन्त में भाषाकार ने एक विस्तृत प्रशस्ति लिखी है जिसमें अपने वंश परिचय के अतिरिक्त तत्कालीन बादशाह तथा उसके राजशासन का भी उल्लेख किया है।

२४९ श्रुतस्कंध पूजा।

लिपिकर्त्ता श्री मनोहर। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ४ साइज १०॥×४ इञ्च। लिपि संवत १७८४

२५० श्रुतसागर व्रत कथाकोष।

रचयिता श्री श्रुतसागराचार्य। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ८८ साइज ११॥×४ इञ्च। लिपि संवत १८०७ लिपिकर्त्ता पं० रायचंद। २४ कथायें है। प्रति की अवस्था साधारण है।

२५१ श्रेणिक चरित्र।

रचयिता श्री शुभचन्द्राचार्य। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या १२२. साइज ११×४ इञ्च। लिपि संवत १६५२. ग्रन्थकार तथा लिपिकार दोनों के द्वारा ही प्रशस्तियां दी हुई है। ग्रन्थ पूर्ण है।

२५२ श्रेणिक चरित्र भाषा।

भाषाकार भट्टारक श्री विजयकीर्त्ति। भाषा हिन्दी (पद्य)। पृष्ठ संख्या ६४ साइज १२×५॥ इञ्च। रचना संवत १८२७. लिपि संवत १८६४. प्रशस्ति दी हुई है। प्रति पूर्ण तथा सुन्दर है।

ष

२५३ षट् दर्शनसमुच्चय सटीक।

रचयिता श्री हरिभद्रसूरि। टीकाकार श्री गुणरत्नाचार्य। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ११५. साइज

६॥×६॥ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर १६ पंक्तियां तथा प्रति पक्ति मे ४०–४४ अक्षर।

२५४ षट् पाहुड़ सटीक।

टीकाकार श्री श्रुतसागर। पत्र संख्या १६४. साइज १०×५ इञ्च। लिपि संवत १८३१. दीवान नंदलाल ने भट्टारक श्री सुरेंद्रकीर्त्ति जी के लिये ग्रन्थ की प्रतिलिपि करवायी। लिपि स्थान–जयपुर। प्रति पूर्ण है तथा सुन्दर है।

२५५ षट् पाहुड।

रचयिता कुन्दकुन्दाचार्य। भाषा प्राकृत। पत्र सख्या ६१. साइज १२×५॥ इञ्च। संस्कृत मे अनुवाद भी है।

२५६ षोडशकारणोद्यापन पूजा।

रचयिता श्री सुमतिसागर देव। भाषा सस्कृत। पत्र सख्या १६. साइज ११×५ इञ्च।

स

२५७ सग्रहणी सूत्र।

रचयिता श्री हेमसूरि। भाषा प्राकृत। पत्र संख्या ५७. साइज ११×५॥ इञ्च। लिपि संवत १७८४ ग्रथ श्वेताम्बर संप्रदाय का है। अनेक प्रकार के चित्रो के द्वारा स्वर्ग नरक के सिद्धान्तों को समझाया गया है।

२५८ सप्तव्यसन कथा।

रचयिता अज्ञात। भाषा सस्कृत। पत्र संख्या ३४४. साइज ८×६॥ प्रत्येक पृष्ठ पर ६ पक्तियां तथा प्रति पक्ति मे २२–२६ अक्षर। प्रति अपूर्ण है। प्रति सटीक है। सात व्यसनों पर अलग ७ कथायें है। भाषा सुन्दर तथा सरल है।

२५६ सप्तव्यसन कथा।

रचयिता आचार्य सोमकीर्त्ति। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ३०. साइज ८॥×६ इञ्च। प्रति अपूर्ण है अन्तिम पत्र नही है।

प्रति नं० २. पत्र सख्या ८६. साइज ११×५॥ इञ्च।

२६० सप्तऋषिपूजा।

रचयिता भट्टारक श्री विश्वभूषण। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या २०. साइज १०॥×४॥ इञ्च।

प्रति नवीन है।

प्रति नं० २ संख्या १६. साइज १०×४।। इञ्च। प्रति पूर्ण है। इसी पूजा की दो प्रति और हैं।

२६१ समयसारसटीक।

मूलकर्त्ता आचार्य कुन्दकुन्द। टीकाकार श्री अमृत चन्द्राचार्य। भाषा प्राकृत-संस्कृत। पत्र संख्या १३५ साइज १२×५।। इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर ७ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३४-३८ अक्षर। प्रति नवीन है। लिखावट सुन्दर है। टीका का नाम आत्मख्याति है।

२६२ समयसार नाटक।

रचयिता महाकवि बनारसीदास। भाषा हिन्दी। पत्र संख्या ७२. साइज ११।।×५।। इञ्च। लिपि संवत् १६७५ प्रति पूर्ण है।

प्रति नं० २ पत्र संख्या ७६. साइज १२×४।। इञ्च। लिपि संवत् १७१३ माह बुदी १३

प्रति नं० ३. पत्र संख्या ८४. साइज ६×८।। इञ्च। प्रति प्राचीन है। प्रथम पृष्ठ तथा ७८ से ८४ तक के पृष्ठ नये जोड़े गये हैं।

प्रति नं० ४ पत्र संख्या २६३. साइज ११।।×६।। इञ्च। पद्यों का गद्य में भी अर्थ है। अक्षर बहुत मोटे हैं। प्रत्येक पृष्ठ पर ५ पंक्तियां ही हैं। लिपि संवत् १६४५.

प्रति नं० ५, पत्र संख्या ७८, साइज १०।।×४ इञ्च। प्रति प्राचीन है।

प्रति नं० ६. पत्र संख्या १७१. साइज १०।।×५ इञ्च। संस्कृत टीका की हिन्दी में अर्थ लिखा गया है। भाषा गद्य में है। लिपि संवत् १७२३. लिपिस्थान चाटसू।

२६३ समवसरणविधान।

रचयिता पंडित रूपचन्दजी। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ७६ साइज १०।।×४।। इञ्च। लिपि संवत् १८७६. प्रशस्ति लिपिकर्त्ता तथा ग्रन्थकर्त्ता दोनों की लिखी हुई है।

प्रति नं० २. पत्र संख्या ६८. साइज १०।।×५।। इञ्च। लिपि संवत् १८८१.

२६४ समाधि शतक।

रचयिता श्री पूज्यपाद स्वामी। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या २१. साइज १२×५ इञ्च। प्रति पूर्ण है।

२६५ सम्मेद शिखर महात्म्य।

रचयिता श्रीमन् दीक्षितदेव। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ११४. साइज १०×५।। इञ्च। लिपि संवत् १८६७

२६६ सर्वार्थसिद्धि ।

रचयिता श्री पूज्यपाद स्वामी। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या १४१. साइज १०॥×५ इञ्च। लिपि संवत् १५७२. प्रशस्ति है। प्रति पूर्ण है।

२६७ सहस्रनामजिनपूजा।

स्तोत्रकर्त्ता आचार्य जिनसेन। पूजाकर्त्ता श्री धर्म्मभूषण। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ७४. प्रत्येक पत्र पर १० पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति मे ३८-४२ अक्षर। लिपि संवत् १८८१. लिपिकर्त्ता पंडित चोखारामजी। प्रति नवीन है।

२६८ सहस्रगुणीपूजा।

रचयिता साधु श्री पीथा। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ७० साइज १०×४ इञ्च। प्रति पूर्ण तथा नवीन है।

२६९ सागर धर्मामृत।

रचयिता महापंडित आशाधर। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या १४६. साइज १०॥×५ इञ्च। लिपि संवत् १८१६. लिपिकर्त्ता प० गुमानीराम। प्रति सटीक है। टीका का नाम कुमुदचन्द्रिका है।

प्रति नं० २ पत्र संख्या ६६ साइज १०॥×५॥ इञ्च। लिपि संवत १६११ प्रति नवीन है। लिखावट सुन्दर है। लिपिकर्त्ता द्वारा लिखी हुई। प्रशस्ति भी है।

प्रति नं० ३. पत्र संख्या १२६ साइज १०॥×७ इञ्च। लिपि संवत् १७७१. लिपिकर्त्ता भट्टारक श्री जगत्कीर्त्तिजी। लिपिकर्त्ता ने महाराजा जयसिंहजी जयपुर का उल्लेख किया है। प्रति सटीक है।

२७० सामायिकपाठ।

भाषाकार श्री श्यामलाल। भाषा हिन्दी पद्य। पत्र संख्या ३५. साइज ६×४ इञ्च। रचना संवत् १७४६ लिपि संवत १६२१. भाषाकार ने अपना परिचय भी दिया है।

२७१ समायिक पाठ भाषा।

मूलकर्त्ता आचार्य प्रभाचन्द्र। भाषाकार श्री त्रिलोकेंद्रकीर्त्ति। भाषा हिन्दी गद्य। रचना संवत् १८६१ भाषा विशेष अच्छी नहीं है। प्रति पूर्ण है।

२७२ सामायिक वचनिका।

भाषा कर्त्ता अज्ञात। हिन्दी गद्य। पत्र संख्या ६३. लिपि संवत् १७२० लिपि स्थान चाटसू।

२७३ सामुद्रिकशास्त्र।

भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ६. साइज १२×४॥ इञ्च। लिपि संवत् १८३८

प्रति नं० २. पत्र संख्या ७. साइज ११×५ इञ्च। लिपि संवत् १८४४.

२७४ सार चतुर्विंशतिका।

रचयिता भट्टारक श्री सकलकीर्त्ति। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या १२६. साइज १०॥×४॥ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर ६ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति मे ३६–३६ अक्षर। विषय–स्तुति आदि। लिपि संवत् १८४८.

२७५ सार संग्रह।

संग्रहकर्त्ता अज्ञात। भाषा प्राकृत–हिन्दी। पत्र संख्या १२. साइज १०×५॥ इञ्च। इसमें निम्नलिखित प्रकरण हैं।

१ ज्ञानसार।
२ तत्त्वसार।
३ चारित्रसार।
४ भावनाबत्तीसी।
५ द्वादसी गाथा।

२७६ सार्द्धद्वयद्वीपपूजा।

रचयिता पं० आशाधर। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ६२. साइज १२×७ इञ्च। प्रति पूर्ण है। लिखावट सुन्दर तथा स्पष्ट है।

२७७ सिंदूर प्रकरण।

रचयिता श्री कौरपाल बनारसीदास। भाषा हिन्दी। पत्र संख्या २३. साइज ६॥×५ इञ्च।

२७८ सुकुमालचरित्र भाषा।

भाषाकार अज्ञात। भाषा हिन्दी गद्य। पत्र संख्या २२. साइज १०×६ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर १२ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति मे २४–२८ अक्षर। लिपि संवत् १८६७ आषाढ सुदी ६, लिपिस्थान चम्पावती। श्री भागचन्दजी के पढने के लिये ग्रन्थ की प्रतिलिपि करायी गयी।

२७९ सुकुमाल चरित्र भाषा।

भाषाकार श्री गोकुल नैन गोलापूर्व। भाषा हिन्दी गद्य। पत्र संख्या ४५ साइज १३×७॥ इञ्च। प्रति नवीन है लिपि सुन्दर है।

२८० सुकुमालचरित्र।

रचयिता भट्टारक श्री सकलकीर्त्ति। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ३२. साइज १२×५॥ इञ्च। श्लोक संख्या ११००. लिपि संवत १८८६ ग्रन्थ पूर्ण है। प्रथम दो पृष्ठ नही है।

२८१ सुगन्ध दशमी व्रतकथा।

रचयिता ब्रह्मज्ञान सागर भाषा हिन्दी। पत्र संख्या ७ साइज ६×४॥ इञ्च। पद्य संख्या ४५.

२८२ सूक्तिमुक्तावली।

रचयिता श्री सोमप्रभाचार्य। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या १५ साइज १०॥×४ इञ्च। प्रति पूर्ण है।

२८३ सुभौमचरित्र।

रचयिता भट्टारक श्री रत्नचन्द्र। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ५१. साइज १०×४॥ इञ्च। लिपि संवत १६५८.

२८४ सुभाषितरत्नसंदोह।

रचयिता श्रीमितगत्याचार्य। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ५७. साइज १०×४॥ इञ्च। प्रति पूर्ण है।

प्रति नं० २ पत्र संख्या ७५ साइज ११×५ इञ्च। प्रति नवीन है।

२८५ सुभाषितार्णव।

भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ६७. साइज १०×४॥ इञ्च। लिपि संवत १६५८. प्रति प्राचीन है।

२८६ सूतकविधान।

लिपिकर्त्ता श्री किशनलाल। भाषा हिन्दी। पत्र संख्या २. साइज ६॥×४॥ इञ्च। लिपि संवत १६१५.

२८७ स्तोत्र संग्रह।

इस संग्रह में निम्न स्तोत्र है।

स्तोत्र नाम	भाषा	संख्या पत्र
चौसठ योगिनी स्तोत्र	संस्कृत	२
पार्श्वजिनस्तोत्र	,,	१
पद्मावती स्तोत्र	,,	६

ऋषिमंडल महास्तोत्र	,,	६
एकीभावस्तोत्र	हिन्दी	५
कल्याण मन्दिर स्तोत्र	,,	६
अपराध क्षमा स्तोत्र	संस्कृत	१०
विषापहार स्तोत्र	हिन्दी	५
भक्तामर स्तोत्र	संस्कृत	६
,, सटीक (श्री मेघ)	,,	२५
पद्मावती पटल	,,	७
समवशरण स्तोत्र	,,	८
एकीभाव स्तोत्र (भूधरदास)	,,	१२

२८८ स्तोत्र संग्रह ।

संग्रहकर्त्ता अज्ञात । भाषा हिन्दी । पृष्ठ संख्या १७ । साइज ६×३॥ इञ्च । संग्रह में निम्न विषय हैं-

१ अकृत्रिम चैत्यालय
२ भक्तामर स्तोत्र
३ विषापहार स्तोत्र
४ धानतराय जी के पद

प्रति नं० २ । पत्र संख्या ११ । साइज १०×५॥ इञ्च । २ से चार तक के पृष्ठ नहीं है ।

१ ऋषि मंडल स्तोत्र
२ लक्ष्मी स्तोत्र
३ पद्मावती स्तोत्र
४ भक्तामर स्तोत्र
५ पन्द्रह का मंत्र

२८९ स्तोत्र संग्रह ।

संग्रहकर्त्ता पं० सदासागर । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या १७७ । साइज १०॥×५॥ इञ्च । संग्रह में स्तोत्र, आदि हैं जिनकी सूची ग्रन्थ में दे रखी है । प्रति की अवस्था ठीक है ।

२९० स्वयम्भुस्तोत्र ।

भाषाकार श्री धानतराय जी । पत्र संख्या ४ । साइज ७×५ इञ्च । लिपि संवत् १९५६ । लिपिकर्त्ता श्री देवलाल ।

२६१ स्वामिकार्त्तिकेयानुप्रेक्षा ।

रचयिता भट्टारक श्री शुभचन्द्र । भाषा प्राकृत-संस्कृत । पत्र संख्या १६४ । साइज ८x६ इञ्च । लिपि संवत १८६४ । लिपिकर्त्ता श्री नानगराम ।

ह

२६२ हनुमंतकथा ।

रचयिता ब्रह्मरायमल । भाषा हिन्दी पद्य । पत्र संख्या ४४. साइज १३x७ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर १२ पंक्तिया तथा प्रति पंक्ति मे ३२-३४ अक्षर । रचना संवत १६१६. प्रति पूर्ण है । लिखावट सुन्दर है ।

प्रति नं० २. पत्र संख्या ६४. साइज ११x४॥ इञ्च । लिपि सवत १७८४. लिपिकर्त्ता प० दयाराम ।

२६३ हनुमच्चरित्र ।

रचयिता श्री ब्रह्मजित । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ५४ साइज ११॥x६ इञ्च । लिपि सवत १८०५. लिपिस्थान जयपुर । बारह सर्ग है । प्रति पूर्ण है ।

२६४ हरिवंश पुराण ।

रचयिता ब्रह्म जिनदास । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या २०२. साइज १२x५॥ इञ्च । लिपि संवत १८१६.

२६५ हरिवंश पुराण टिप्पण ।

टिप्पणी कर्त्ता अज्ञात । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ३८ साइज १०x४ इञ्च । लिपि संवत १५५५. उक्त पुराण का सार दे रखा है ।

२६६ होली प्रबन्ध ।

रचियता श्री कल्याणकीर्त्ति । भाषा हिन्दी पद्य । पत्र संख्या ४ साइज १०॥४॥ इञ्च । लिपि संवत् १७२५. रचना प्राचीन है ।

२६७ हैमीनाममाला ।

रचयिता श्री हेमचन्द्राचार्य । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ४७. साइज १२x४ इञ्च । लिपि संवत १८४६. लिपिस्थान उणियारा (जयपुर) लिपिकर्त्ता भट्टारक श्री सुरेंद्रकीर्त्ति ।

त्र

२६८ त्रिकांडशेष।

रचयिता श्री पुरुषोत्तम देव। भाषा संस्कृत। पत्र सख्या ३५ साइज ११×५॥ इञ्च। लिपि संवत १८३४.

२६६ त्रिपंचाशत्क्रिया व्रतोद्यापन।

रचयिता श्री विक्रम स्वामी। भाप संस्कृत। पत्र सख्या २७. साइज ११×५ इञ्च। रचना संवत १६४० प्रथम १० पत्र नहीं हैं।

३०० त्रिलोकपूजा।

रचयिता अज्ञात। भाषा संस्कृत। पत्र सख्या २८६. साइज १०॥×५ इञ्च। सभी तरह की पूजाओं का संग्रह है। लिपि संवत् १६१७.

३०१ त्रिलोकसार।

रचयिता श्री नेमिचन्द्राचार्य। भाषा प्राकृत। पृष्ठ संख्या ७६. साइज १२×५ इञ्च। प्रति पूर्ण है। १,४४,५७ वे पृष्ठ पर सुन्दर चित्र है। प्रति प्राचीन है। लिपिकर्त्ता श्री स्वरूपचन्द।

प्रति नं० २ पृष्ठ सख्या ८. साइज ११॥×५ इञ्च। प्रारम्भ मे लिपिकर्त्ता ने छोटे २ अक्षर तथा अन्त म मोटे २ अक्षर लिखे हैं।

३०२ त्रिलोकसारभाषा।

भाषाकर्त्ता अज्ञात। भाषा हिन्दी गद्य। पत्र संख्या ५० साइज १२×५॥ इञ्च। प्रति अपूर्ण है। ५० से आगे के पृष्ठ नहीं हैं।

३०३ त्रैलोकसार सटीक।

टीकाकार माधवचन्द्र त्रैविद्य। भाषा प्राकृत संस्कृत। पत्र सख्या १७१. साइज १०॥×४॥ इञ्च। प्रति नवीन है।

प्रति नं० २ पत्र सख्या १६५. साइज ११॥×४॥ इञ्च। लिपि संवत १६७२. टीकाकार श्री सागरसेन।

प्रति नं० ३. पत्र सख्या ८१. साइज ११॥×५॥ इञ्च। लिपिकर्त्ता श्री सुरेन्द्रकीर्ति। प्रथम पृष्ठ पर ५ सुन्दर चित्र हैं।

३०४ त्रिवर्णाचार ।

रचयिता आचार्य सकलकीर्ति । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ४८ साइज १०x५ इञ्च । अधिकार पांच हैं । लिपि संवत १६३४ लिपिकर्त्ता बोदीलाल ।

प्रति नं० २ पत्र संख्या ४० साइज १२x४।। इञ्च । प्रति अपूर्ण है । ४० से आगे के पृष्ठ नहीं है ।

३०५ त्रिवर्णाचार ।

रचयिता अज्ञात । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ७४ साइज १०।।x५ इञ्च ।

३०६ त्रैलोक्य प्रदीप ।

रचयिता इन्द्रवामदेव । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ६६. अध्याय तीन हैं । लिपि संवत १८७५. वैशाख बुदी १४. प्रति पूर्ण है ।

प्रति नं० २ पत्र संख्या ८६ साइज १०x५।। इञ्च । लिपि संवत १४३६ लिपिस्थान योगिनीपुर । लिपिकर्त्ता ने फिरोजशाह तुगलक के शासन काल का उल्लेख किया है । लिखावट सुन्दर है ।

३०७ त्रैलोक्य स्थिति ।

भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ११. साइज ११x५।। इञ्च । लिपि संवत १८७३. लिपिकर्त्ता नैणसागर । तीनों लोकों के आकार प्रकार सम्बन्धी विषय को रेखागणित द्वारा समझाया गया है ।

ज्ञ

३०८ ज्ञानार्णवसार ।

रचयिता आचार्य श्रुतसागर । भाषा संस्कृत गद्य । पत्र संख्या ६. साइज १२x५।। इञ्च । लिपि संवत् १७८५. लिपिकर्त्ता प० मनोहरलाल । लिपिस्थान आमेर । संक्षिप्त रूप से ज्ञानार्णव का सार दिया हुआ है ।

प्रति नं० २. पत्र संख्या १३. साइज ११।।x५ इञ्च ।

